ऋषि चिंतन के सान्निध्य में

२

• श्रीराम शर्मा आचार्य
• भगवती देवी शर्मा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

ऋषि चिंतन के सान्निध्य में

(अखण्ड ज्योति १९६७-१९९० से संकलित)

(भाग—२)

लेखक

वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

एवं

वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

प्रकाशक

युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट

गायत्री तपोभूमि, मथुरा—२८१००३

फोन : ०५६५-२५३०१२८, २५३०३९९

मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९

फैक्स नं०-२५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१३ मूल्य—१२०.००

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at

www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि
मथुरा (उ० प्र०)

लेखक :
पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

पुनरावृत्ति सन् २०१३

मुद्रक :
युग निर्माण योजना प्रेस
गायत्री तपोभूमि, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

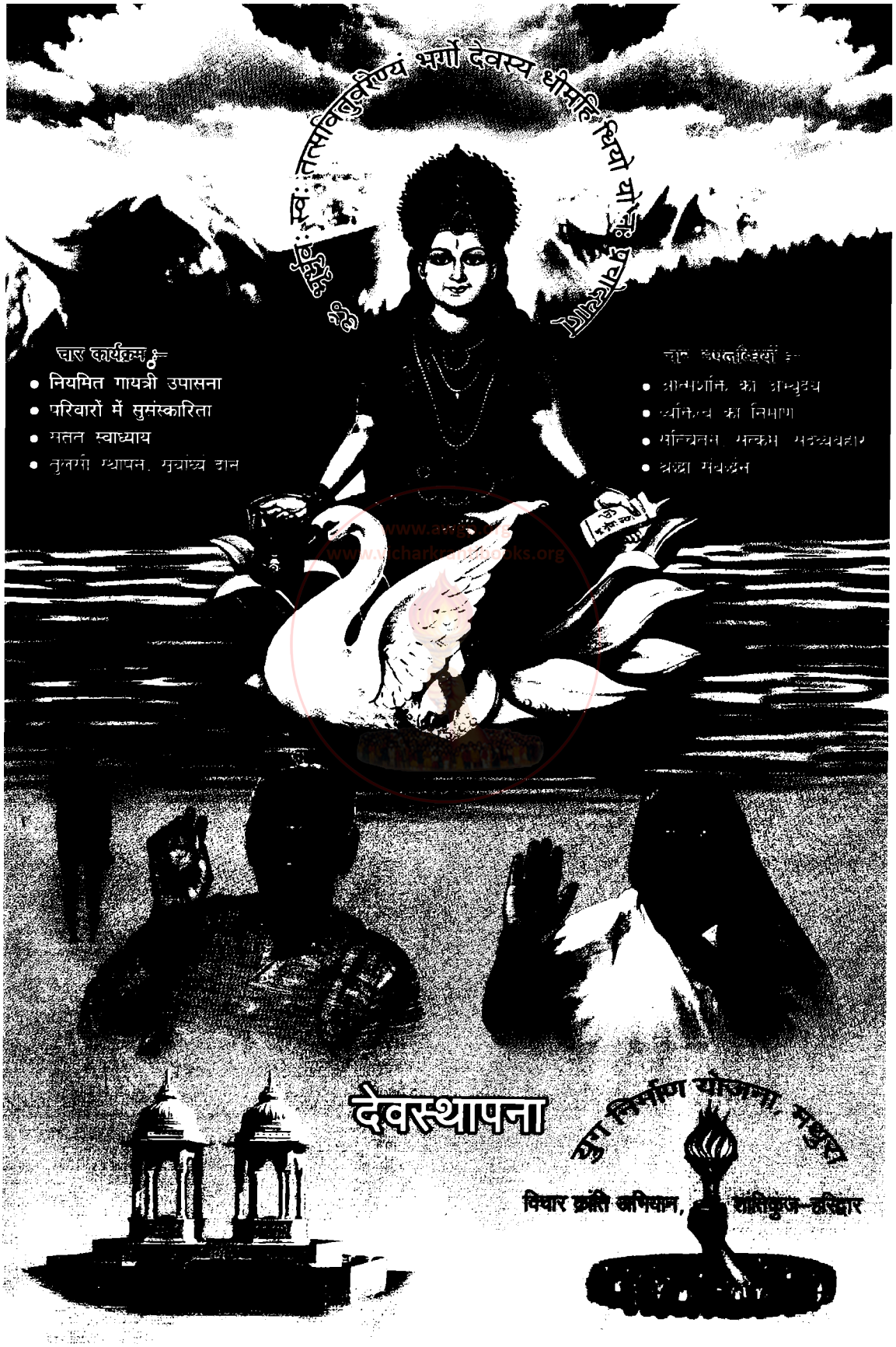

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मनिवेदन

व्यक्तित्व एवं विचारस्तर को सत्प्रवृत्तियों से ओत-प्रोत करना ही युग निर्माण आंदोलन का प्रयोजन है। जनमानस में इसी तथ्य को गहराई तक प्रतिपादित किया जाए। हमारा भावनात्मक स्तर सुधरे, तो बाह्य जीवन की समस्त परिस्थितियाँ सुधर जाएँगी, समस्त अवरोध दूर हो जाएँगे और समस्त कष्टों से त्राण मिल जाएगा। हमारा ज्ञानयज्ञ अभियान इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए है कि जनसाधारण का विचारस्तर, भावस्तर, दृष्टिकोण, जीवनोद्देश्य एवं क्रिया-कलाप मानवोचित गौरव के अनुसार बदल दिया जाए।

व्यक्ति का परिवर्तन उसके विचारों का परिवर्तन ही है। आस्थाएँ बदलने से व्यक्ति का दृष्टिकोण बदलता है। उसकी सारी क्रियापद्धति ही बदल जाती है। असली परिवर्तन दृष्टिकोण का, विचारधाराओं का ही है, जिसके आधार पर व्यक्ति ही नहीं समाज, संसार और युग सब कुछ बदल जाता है। यह भलीभाँति समझ लिया जाना चाहिए कि व्यक्ति और कुछ नहीं विचारणाओं और आस्थाओं का प्रतीक मात्र है। उसकी समस्त गतिविधियाँ उसकी अंत:निष्ठा की प्रतिविंब हैं। यदि हमें उत्कृष्ट व्यक्ति, उत्कृष्ट समाज एवं उत्कृष्ट युग अपेक्षित हो, तो उसका एकमात्र उपाय यही है कि हर मनुष्य को उत्कृष्ट विचारधाराओं से लगातार संबंध रखने की एक सुनिश्चित व्यवस्था बनाई जाए। उत्कृष्ट विचारणाओं से प्रभावित व्यक्ति ही उत्कृष्ट रीति-नीति स्थिर रूप से अपना सकते हैं। उन्हीं की संख्या-वृद्धि उत्कृष्टता के नए युग का सृजन कर सकती है। स्वाध्याय से, सत्संग से, मनन-चिंतन से जैसे भी बन पड़े वैसे यह प्रयत्न करना चाहिए कि हमारा मस्तिष्क उच्च विचारधारा में निमग्न रहे। यदि इस प्रकार के विचारों में मन लगने लगे, उनकी उपयोगिता समझ पड़ने लगे, उनको अपनाते हुए आनंद का अनुभव होने लगे, तो समझना चाहिए कि आधी मंजिल पार कर ली गई।

स्वाध्याय में प्रमाद न करें। भावनाओं, विचारणाओं को प्रेरणा देने का मुख्य आधार स्वाध्याय ही है। शास्त्रकारों ने भोजन, स्नान एवं शयन की भाँति ही स्वाध्याय को भी नित्यकर्म माना है। आत्मशोधन और आत्मनिर्माण का सबसे प्रधान विधान स्वाध्याय ही माना गया है। स्वाध्याययुक्त साधना से ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है। हम में से प्रत्येक को स्वाध्याय के लिए नित्य कुछ समय निश्चित रूप से निकालना चाहिए। स्वाध्याय वही कहा जाएगा, जो हमारी जीवन की समस्याओं पर, आंतरिक उलझनों पर प्रकाश डालता है और मानवता को उज्ज्वल करने वाली सत्प्रवृत्तियों को अपनाने की प्रेरणा देता है।

सच्चा स्वाध्याय वही है, जिससे हमारी चिंताएँ दूर हों, हमारी शंका-कुशंकाओं का समाधान हो। मन में सद्भाव और शुभ संकल्पों का उदय हो तथा आत्मा को शांति का अनुभव हो। स्वाध्याय को विचार-परिष्कार का साधन कहा गया है। वह किसी योग साधना से कम नहीं है। इसमें वैसी ही एकाग्रता, तन्मयता और ग्रहणशीलता होनी चाहिए जैसी कि सफलता के इच्छुक योग साधक में। जो भी पढ़ा जाए, धीरे-धीरे पढ़ा जाए, शांतिपूर्वक पढ़ा जाए। थोड़ा पढ़ा जाए लेकिन उस पर चिंतन-मनन अवश्य किया जाए ताकि वह हमारी भावना और विचारधारा का अंग बन जाए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन से प्रेम करने वाले हर व्यक्ति को ज्ञान का महत्त्व समझना चाहिए। अपने अंदर जिज्ञासु भाव विकसित करना चाहिए और उसके लिए अनिवार्य स्वाध्याय को जीवन में अनिवार्य स्थान देना चाहिए। सच्चे अर्थों में स्वाध्याय को अपनाने वाला व्यक्ति महानता का अधिकारी अवश्य बना है और आगे भी बनता रहेगा। पवित्र विचारों से हमारा अणु-अणु प्रबल बनता है। शरीर में छिपे हुए विष, रोग के कीटाणुओं की अपवित्रता दूर होती है। बुद्धि की मलिनता हटती है, चित्त के ऊपर अधिकार जमाए हुए काम, क्रोध, लोभ, मोह, भ्रम, चिंता आदि आंतरिक शत्रुओं की सत्ता मिटती है। भीतर और बाहर जो मलिनता छाई रहती है, वह अनेक प्रकार के रोग, शोक की जड़ है। उसी से ब्रह्मतेज नष्ट होता है।

'ऋषि चिंतन के सान्निध्य में' परम पूज्य गुरुदेव के मौलिक विचारों का प्रस्तुतीकरण है। सद्विचारों के माध्यम से महामानव कैसे किसी समय विशेष में जन समुदाय को एक विशिष्ट लक्ष्य की ओर मोड़ देते हैं, इसका परिचय इन छोटे-छोटे विचार सार रूपी संदेशों द्वारा मिलता है। 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के सन् १९६७ से सन् १९९० तक प्रकाशित लेखों में से महत्त्वपूर्ण चिंतनपरक विचारों का संकलन इस ग्रंथ में किया गया है। आत्मविज्ञान से लेकर व्यावहारिक अध्यात्म के हर क्षेत्र को स्पर्श करने वाले गागर में सागर के समान बहुमूल्य विचारों को इस ग्रंथ में प्रस्तुत किया गया है। विभिन्न विषयों पर विचारों को पढ़कर मन विधेयात्मक चिंतन की गंगोत्री में डुबकी लगाने लगता है। आज आवश्यकता ऐसे ही सद्विचारों के प्रवाह की है, जो कलियुग के सूक्ष्मजगत् में संव्याप्त प्रदूषित प्रवाह से जूझने की सामर्थ्य दे सकें। यही प्रयास इस संकलन में किया गया है। हम सबका यह प्रयास होना चाहिए कि युगऋषि की प्रखर एवं चमत्कारिक लेखनी से उद्धृत यह चिंतन जन-जन तक पहुँच सके। इस हेतु इस ग्रंथ का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है। पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, "सहस्रों बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़ने से एक ऐसा सूत्र पढ़ना अच्छा है, जिससे तत्त्वज्ञान की प्राप्ति हो। बुद्धिमान मनुष्य छोटे और बड़े सब ग्रंथों का सार ग्रहण करें, जैसे भौंरा फूलों का रस ग्रहण करता है।" समय की कमी के कारण बड़े ग्रंथ पढ़ना आज सबके लिए सुलभ नहीं है। इस ग्रंथ में एक वर्ष के ३६५ दिन के लिए ३६५ सूत्र (प्रत्येक पृष्ठ पर दो सूत्र) दिए गए हैं, ताकि इस ग्रंथ का एक सूत्र नित्यप्रति पढ़ा जाए, उस पर चिंतन-मनन करके ऋषि चिंतन पर श्रद्धा रखकर उसे अपने व्यवहार में उतारा जाए, तो कुछ ही समय में मानव से महामानव बनना संभव है। यह विचारधारा लौकिक एवं पारलौकिक उन्नति में पूर्ण समर्थ और व्यक्ति के दोष, विकार एवं त्रुटियों को दूर करने में अवश्य सहायक होगी। यह ग्रंथ सभी संप्रदायों, देशों, जातियों एवं मान्यताओं वालों के लिए उपयोगी है।

इस ग्रंथ के स्वाध्याय से हम अपना, अपने परिवारीजनों का जीवन सफल बनाएँ। अपने परिचितों, स्वजनों, स्नेहीजनों, रिश्तेदारों एवं अतिथियों को सभा-सम्मेलनों, विवाह संस्कार, जन्मदिवस किसी पर्व-त्योहार पर उपहार में भेंट किया जाए, ताकि अपने परिकर में भी समान विचारधारा फैले और हमारा उस विचारधारा के वातावरण में समायोजन करना आसान हो जाए। हमारा आत्मीय पाठक बंधुओं से निवेदन है कि इस ग्रंथ की अधिकाधिक प्रतियाँ समाज में फैलाने में अपना हर संभव सहयोग करें।

व्यवस्थापक

युग निर्माण योजना, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतिम संदेश

अस्सी वर्ष जी गई लंबी सोद्देश्य शरीर-यात्रा पूरी हुई। इस अवधि में परमात्मा को हर पल अपने हृदय और अंत:करण में प्रतिष्ठित मानकर एक-एक क्षण का पूरा उपयोग किया है। शरीर अब विद्रोह कर रहा है। यों उसे कुछ दिन और घसीटा भी जा सकता है, पर जो कार्य परोक्ष मार्गदर्शक सत्ता ने सौंपे हैं, वे सूक्ष्म और कारण शरीर से ही संपन्न हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में कृशकाय शरीर से मोह का कोई औचित्य नहीं।

'ज्योति बुझ गई' यह भी नहीं समझा जाना चाहिए। अब तक के जीवन में जितना कार्य इस स्थूल शरीर ने किया है, उससे सौ गुना सूक्ष्म अंत:करण से संभव हुआ है। आगे का लक्ष्य विराट है। संसार भर के छह अरब मनुष्यों की अंतश्चेतना को प्रभावित और प्रेरित करने, उनमें आध्यात्मिक प्रकाश और ब्रह्मवर्चस जगाने का कार्य पराशक्ति से संभव है। परिजन, जिन्हें हमने ममत्व के सूत्र से बाँधकर परिवार के रूप में विस्तृत रूप दे दिया है, संभवत: स्थूल नेत्रों से हमारी काया को नहीं देख पाएँगे, पर उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि इस शताब्दी के अंत तक, जब तक सूक्ष्म शरीर कारण के स्तर तक न पहुँच जाए, हम शांतिकुंज परिसर व प्रत्येक परिजन के अतं:करण में विद्यमान रहकर अपने बालकों में नवजीवन और उत्साह भरते रहेंगे। उनकी समस्या का समाधान उसी प्रकार निकलता रहेगा, जैसा कि हमारी उपस्थिति में उन्हें उपलब्ध होता। हमारे आपसी संबंध अब और भी प्रगाढ़ हो जाएँगे, क्योंकि हम बिछुड़ने के लिए नहीं जुड़े थे। हमें एक क्षण के लिए भुला पाना आत्मीय परिजनों के लिए कठिन हो जाएगा। ब्रह्मकमल के रूप में हम तो खिल चुके, किंतु उसकी शोभा और सुगंधि के विस्तार हेतु ऐसे अगणित ब्रह्मबीज-देवमानव उत्पन्न करने जा रहे हैं, जो खिलकर समूचे संस्कृति-सरोवर को सौंदर्य सुवास से भर सकें, मानवता को निहाल कर सकें।

ब्रह्मनिष्ठ आत्माओं का उत्पादन, प्रशिक्षण एवं युग निर्माण के महान कार्यों में उनका नियोजन बड़ा कार्य है। यह कार्य हमारे उत्तराधिकारियों को करना है। शक्ति हमारी काम करेगी तथा प्रचंड शक्ति-प्रवाह अगणित देवात्माओं को इस मिशन से अगले दिनों जोड़ेगा। उन्हें संरक्षण, स्नेह देने और सँवारने का कार्य माता जी संपन्न करेंगी। हम सतयुग की वापसी के सरंजाम में जुट जाएँगे। जो भी संकल्पनाएँ नवयुग के संबंध में हमने की थीं, वे साकार होकर रहेंगी। इसी निमित्त कायपिंजर का सीमित परिसर छोड़कर हम विराट घनीभूत प्राण ऊर्जा के रूप में विस्तृत होने जा रहे हैं।

देव समुदाय के सभी परिजनों को मेरे कोटि-कोटि आशीर्वाद, आत्मिक प्रगति की दिशा में अग्रसर होने हेतु अगणित शुभकामनाएँ।

— श्रीराम शर्मा आचार्य

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगऋषि परम पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

बड़प्पन और महानता लगभग असंबद्ध और प्रतिकूल हैं। एक को खोकर ही दूसरे को पाया जा सकता है। सद्गुरु के मार्गदर्शन ने उन्हें विवेक दिया, विश्वास दिया और साहस दिया। इन तीन अवलंबनों को पाकर वे महानता की राह पर चल पड़े। कौन क्या कहता है, यह उन्होंने सुना ही नहीं। महानता की राह पर ही जीवनपर्यंत उँगली पकड़कर छोटे बच्चों को चलाते रहे। उनके मार्गदर्शक की कृपा को सराहा जाए या शिष्य की समर्पणभरी निष्ठा को। दादा गुरु ने अपना तप और आत्मबल शिष्य पर उड़ेल दिया और शिष्य ने अपना आपा और अस्तित्व ही उन्हें समर्पित कर दिया। तन तो तुच्छ है, अपनी कोई इच्छा तक शेष नहीं रहने दी। जो मार्गदर्शक की इच्छा वही अपनी इच्छा। तर्क-कुतर्क की कोई गुंजाइश ही नहीं। दुनियाँ वाले आरंभ से ही हँसते थे और उसी क्रम में उनकी कसौटी पर हम लोग भी हँसी और उपहास के पात्र बने हैं। जहाँ तृष्णा, कामना और अहंता की पूर्ति ही लाभ, सौभाग्य और वरदान माना जाता हो, वहाँ गुरुदेव की ही तरह सच्चे अध्यात्मवादी को उपहास का पात्र बनना ही पड़ेगा। यहाँ हर चीज मूल्य देकर खरीदी जाती है। भौतिक संपदाओं की कीमत पर ही आत्मिक विभूतियाँ खरीदी जाती हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

हिमालय पिता ने गुरुदेव का व्यक्तित्व विनिर्मित किया। गुण, कर्म और स्वभाव की उत्कृष्टता उसी की देन है। शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन उन्हें पिता का दिया हुआ है। दृष्टिकोण में उत्कृष्टता, लक्ष्य की ऊँचाई, सर्वतोमुखी प्रतिभा, अविचल साहस और अटूट धैर्य जैसी दिव्य संपदाओं को लेकर ही वे ऊँचे उठे और महामानव के स्तर तक पहुँचे। यदि ऊपर से यह अनुग्रह न मिला होता, तो अपने बलबूते इतना उपार्जन करना तो दूर, इतनी सफलता मिलना असंभव नहीं तो कठिन अवश्य था।

साधनों की दृष्टि से उन्हें असमर्थ और असहाय ही कहना चाहिए। पैसे की दृष्टि से हाथ खाली, माँगने में इतना संकोच, जिससे किसी को आवश्यकता का पता भी न चले। भरपूर विज्ञापन न करने के कारण धनी लोगों की उपेक्षा आदि अनेक बाधक कारणों के रहते हुए भी उनकी योजनाएँ धन के अभाव में रुकी नहीं। इसे उनके मार्गदर्शक की प्रत्यक्ष अनुकंपा ही कहना चाहिए। बोलने में उन्हें रुकावट होती, पर जब भाषण देने खड़े होते, तो जिह्वा पर सरस्वती आ विराजती। लेखनी का जादू भरा संपादन रहता। लेखनी मस्ती पैदा करती और उसमें स्फुरण जाग पड़ती। उनका लिखा जिसने पढ़ा, प्रभावित हुए बिना न रहा। इस लेखनी का ही चमत्कार है, जिसने करोड़ों को उनके प्रवाह में बहने और साथ उड़ने के लिए विवश कर दिया। वैज्ञानिक अध्यात्मवाद के नए प्रतिपादन ने संसार भर में हलचल पैदा कर दी। संगठन की क्षमता, रचनात्मक कार्यक्रमों की योजना, भावी महाभारत

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

की व्यूह रचना जिस दूरदर्शिता के साथ की जाती है और सफलता की प्रतिक्रिया तत्काल परिलक्षित होती है, उसके पीछे गुरुदेव की अपनी प्रतिभा नहीं, वरन निश्चित रूप से उनके महान मार्गदर्शक का अनुदान ही मूल कारण है। युग निर्माण अभियान की जो कुछ भी सफलता दृष्टिगोचर होती है, उसे उनके मार्गदर्शक का अनुदान माना जाए। यह अनुदान गुरुदेव ने कीमत चुकाकर पाया था, पात्रता सिद्ध करने पर मिला था।

ब्रह्मवर्चस, आत्मबल और ऋषितत्त्व उन्हें गायत्री माता से ही प्यार-उपहार में मिला था। वे धनी नहीं थे, पर उनकी दिव्य संपदा का पारावार नहीं था। अपने निकट आने वाले किसी को खाली हाथ नहीं जाने देते। जो भी समीप आया, माता जैसी उदार अंतरात्मा ने पहले उसकी व्यक्तिगत व्यथा, चिंता और कठिनाई को समझने की कोशिश की और अपनी सामर्थ्य के अनुसार सहायता में कोई कंजूसी नहीं की। किसी पर एहसान करने के लिए नहीं, चमत्कार दिखाकर और फिर उससे कुछ काम निकालने की बात कभी स्वप्न में भी नहीं सूझी। रोते हुए आने वाले हँसते हुए लौटे। ये भौतिक, मानसिक और आत्मिक अनुदान जो बादलों की तरह निरंतर बरसते रहे, आखिर कहाँ से आते? ये अनुदान वेदमाता के थे। ब्रह्मवर्चस और ऋषितत्त्व की सारी संपदा इन्हें गायत्री माता के कोष से मिलती रही। हिमालय पिता ने व्यक्तित्व, मार्गदर्शक ने कृतित्व और गायत्री माता ने ब्रह्मवर्चस प्रदान किया। ये तीनों ही चीजें उन्होंने कष्ट सहकर ही नहीं खरीदीं, वरन इस उपलब्धि का प्रयोग मात्र लोकमंगल के लिए करने की शर्त के साथ स्वीकार किया।

गुरुदेव की आत्मीयता का विकास ही है, जिसने लाखों व्यक्तियों को मजबूत रस्सी के साथ जकड़कर उनके साथ बाँध दिया। विद्वत्ता, प्रतिभा, भाषण, लेखन, संगठन और आंदोलन आदि बहुत छोटे आधार हैं। यह कला दूसरों को भी अच्छी तरह आती है, पर वे इतना सघन कुटुंब कहाँ बना पाते हैं। उनकी कला केवल आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। ऐसे व्यक्तित्व किसी को घनिष्ठ आत्मीयता से बाँध लेने और उनसे साहसपूर्ण कार्य करा सकने में समर्थ नहीं होते। पूज्य गुरुदेव ने हिमालय के वातावरण में अंतर्मुखी होकर प्रकृति के कण-कण में व्याप्त दिव्यता को पढ़ा, समझा और वे तत्त्वदर्शी के स्तर तक पहुँचे।

कष्टपीड़ितों और अभावग्रस्तों को उनका अनुदान सदा मिलता रहा। रोते को हँसाने में उन्हें मजा आता। यह उनका सबसे बड़ा विनोद-व्यसन कहा जा सकता है। जिन्हें वे कुछ ऊँचा उठा देखते, उनकी कामनाओं और तृष्णाओं को तृप्त नहीं, वरन समाप्त करते और उन्हें बड़प्पन से छुड़ाकर महानता में संलग्न करते। जिन्हें और भी ऊँचा समझते उन्हें और भी ऊँचा उपहार देते। अहंता और तृष्णा छोड़े बिना ब्रह्मवर्चस मिलता नहीं। जिसे सबसे अधिक प्यार करते, उसकी तृष्णा और अहंता छीनकर अपने सदृश बनाने का प्रयास करते। मनुष्य में देवत्व के उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण का स्वप्न उन्होंने इसी आधार पर देखा। स्वर्ग की ज्ञान-गंगा को धरती पर लाने के प्रयास

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

में भगीरथ की तरह जूझते रहे और गायत्री माता की दिव्य सत्ता उन्हें मुक्त हस्त से सहायता प्रदान करती रही।

स्वर्ग, मुक्ति, सिद्धि और विभूति की कामनाएँ उनके लिए निरर्थक थीं। बार-बार जन्म लेना, मरना और निरंतर सर्वतोभावेन परमात्मा के इशारों पर चलते रहना ही उनका लक्ष्य था, जिसने उन्हें दिव्य माता, दिव्य पिता और दिव्य गुरु की महान उपलब्धियाँ देकर अनाथ से सनाथ बनाया।

अखंड दीपक पर पुरश्चरणों की शृंखला संपन्न करते हुए उन्होंने भावना क्षेत्र में यह निष्ठा परिपक्व की कि जीवन को ज्वलंत दीपशिखा की तरह अंतरंग एवं बहिरंग क्षेत्र में प्रकाश उत्पन्न करने के लिए तिल-तिल जलते रहने की प्रक्रिया व्यवहार में लाई जाए। यदि दीप उपकरण के साथ-साथ वे आत्मज्योति को प्रकाशवान बनाने का लक्ष्य सामने रखकर न चले होते, तो उनकी अखण्ड ज्योति भी मात्र रोशनी पैदा करने का तुच्छ-सा प्रयोजन पूरा कर सकी होती।

गुरुदेव की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने आस्तिकता की गरिमा को अपने जीवन की प्रयोगशाला में यथार्थ सिद्ध किया और उन लोगों का मुँह बंद किया जो इसे भ्रम या छद्म कहते रहे। गुरुदेव ने अपने लेखों और प्रवचनों में ही नहीं, आचरण की भाषा में भी यह कहा कि यदि देवसान्निध्य, ईश्वरीय अनुग्रह और आत्मबल अभीष्ट है, तो सबसे प्रथम चरण दृष्टिकोण के परिष्कार का उठाया जाना चाहिए। अपने को मात्र शरीर और मन से बना मांसपिंड मानकर वासना-तृष्णा के, पेट-प्रजनन के तुच्छ प्रयोजनों में ही संलग्न नहीं रहना चाहिए, वरन कुछ आत्मकल्याण की, मानवीय गरिमा की एवं जीवनोद्देश्य की बात भी सोचनी चाहिए और उसके लिए कुछ कारगर प्रयत्न भी करने चाहिए।

पूज्य गुरुदेव के संकल्प के साथ गुरु का बल और महाकाल का आश्वासन था कि वे किसी से भी बिना सहायता माँगे विचारक्रांति का माहौल तैयार करेंगे। उन्होंने सब कुछ दाँव पर लगा दिया। कुछ धनपति वित्तीय समूहों ने उनके शुभ संकल्प को सुनकर धनराशि देने की बात कही, तो उन्होंने अस्वीकार कर दी। यह उनके ब्राह्मणत्व को एक चुनौती थी। हम सब भी इसी प्रकार लोभ-मोह में ग्रस्त, पेट-प्रजनन में व्यस्त, वासना-तृष्णा का पशु जीवन जीने से इनकार कर दें। हम भी युगऋषि के आदर्शों को अपनाने का साहस करें।

यदि युग निर्माण परिवार के सदस्य ऐसे ही लोभ-मोह में ग्रस्त, पेट-प्रजनन में व्यस्त और वासना-तृष्णा का पशु जीवन जीकर मर जाते हैं, तो यह गुरुदेव के लिए भी लज्जा की बात है और इस परिवार के लिए भी कलंक की। हाथी के बच्चे बकरों के शक्ल में दीखें, इसमें उपहास हाथी का भी है और बच्चों का भी। परिवार जब बन ही गया है, तो शोभा इसी में है कि उसका स्तर भी कुलपति के अनुरूप रहे। हर अभिभावक की अपनी संतान के प्रति ऐसी ही इच्छा रहती है। युग निर्माण परिवार का प्रत्येक सदस्य महामानवों की ऐतिहासिक भूमिका निभा सके, वे इसी उधेड़-बुन में लगे रहे। पूज्य गुरुदेव अपना तप और पुण्य देकर आत्मिक लालच भी इसीलिए पूरा करते रहे कि आगे चलकर संभवत: हम बालक उनके आदर्शों को अपनाने का साहस करें। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतिम संदेश

जिन चरणों में अपने आप को समर्पित किया, उनके बिना जीवन का एक-एक क्षण पीड़ा के पहाड़ की तरह बीत रहा है। जिस दिन उनके पास आई, उस दिन का पहला पाठ था—पीड़ित मानवता की सेवा और देव संस्कृति का पुनरोदय, सो अपने आप को उसी में घुला दिया। यद्यपि यह एक असह्य वेदना थी तथापि महाप्रयाण से पूर्व परमपूज्य गुरुदेव की आज्ञा थी कि अपने उन बालकों की उँगली पकड़कर उन्हें मिशन की सेवा के मार्ग पर सफलतापूर्वक आगे बढ़ा दूँ, जिन्हें अगले दिनों उत्तरदायित्व सँभालने हैं। पिछले चार वर्षों में मिशन जिस तरह आगे बढ़ा, वह सबके सम्मुख है, जो मैं देख रही हूँ। आगे का भविष्य तो इतना उज्ज्वल है, जिसे कल्पनातीत और चमत्कार कहा जा सकता है। उसके लिए जिस पुरुषार्थ की आवश्यकता है, हमारे बालक अब उसमें पूर्णतया प्रशिक्षित हो गए हैं।

शरीर-यात्रा अब कठिन हो रही है। उनके जाने के पश्चात से आज तक एक क्षण भी ऐसा नहीं बीता, जब वे आँखों से ओझल हुए हों। घनीभूत पीड़ा अब आँसू रोक नहीं पा रही, सो मुझे उन विराट तक पहुँचना अनिवार्य हो गया है। यह न समझें कि हम स्वजनों से दूर हो जाएँगे। परम पूज्य गुरुदेव की सूक्ष्म और कारण सत्ता में विलीन होकर हम अपने आत्मीय कुटुंबियों को अधिक प्यार बाँटेंगे, उनकी सुख-सुविधाओं में अधिक सहायक होंगे।

हमारा कार्य अब सारथी का होगा। दुष्प्रवृत्तियों से महाभारत का मोर्चा अब पूरी तरह हमारे कर्त्तव्यनिष्ठ बालक सँभालेंगे। सभी क्रिया-कलाप न केवल पूर्ववत संपन्न होंगे, वरन विश्व के छह अरब लोगों के चिंतन, जीवन, व्यवहार, दृष्टिकोण में परिवर्तन और मानवीय संवेदना की रक्षा के लिए और अधिक तत्पर होकर कार्य करेंगे। हम तब तक रुकें नहीं, जब तक धरती पर स्वर्ग और मनुष्य में देवत्व का अभ्युदय स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर न होने लगे।

—माता भगवती देवी शर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

वंदनीया माताजी के जन्म के साथ ही भविष्यवक्ताओं ने बताया कि एक दैवी सत्ता शक्ति रूप में उनके घर आई है। साधारण से असाधारण बनती हुई यह ऐसे उत्कर्ष को प्राप्त होगी कि करोड़ों व्यक्तियों की श्रद्धा का पात्र बनेगी। हजारों-लाखों व्यक्ति इस अन्नपूर्णा के द्वार पर भोजन करेंगे। कोई भी, कभी भी इसका आशीर्वाद पा लेगा, तो वह खाली हाथ नहीं जाएगा।

एक ऐश्वर्यशाली संपन्न घर में जन्म लेने के बावजूद सादगी भरा जीवन ही उन्हें पसंद था। रेशमी कीमती वस्त्रों की तुलना में गांधी बाबा की बात कहकर सभी को खादी अपनाने की प्रेरणा देतीं और स्वयं भी वही पहनतीं। औरों को भोजन कराने, उनका आतिथ्य करने, उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार में वे सबसे आगे बढ़कर चलतीं। जिसने भी एक बार उनके हाथों प्यार भरे स्पर्श के साथ भोजन कर लिया, वह उन्हें सदा याद रखता। विवाह के बाद बड़ी प्रतिकूल परिस्थितियों में वे उस जमींदार घराने में पहुँची, जहाँ आचार्य जी ओढ़ी हुई गरीबी का जीवन जी रहे थे। जैसा पति का जीवन, वैसा ही अपना जीवन। जहाँ उनका समर्पण, उसी के प्रति अपना भी समर्पण। यही संकल्प लेकर वे जुट गईं, कंधे से कंधा मिलाकर पूर्वजन्मों के अपने आराध्य इष्ट के साथ। २४ वर्षों के २४ महापुरश्चरणों का उत्तरार्द्ध चल रहा था। जब गायत्री तपोभूमि की स्थापना का समय आया, तब पूज्य गुरुदेव १०८ कुंडीय यज्ञ कर २४ वर्षीय अनुष्ठान की समाप्ति करना चाह रहे थे। स्वयं अपनी ओर से पहल करके वंदनीया माताजी ने अपने सारे जेवर अपने आराध्य के कार्य को सफल बनाने के लिए दे दिए। माताजी ने लिखा है, ''परिजनों की इस माँ ने अपने जीवन का हर क्षण एक समर्पित शिष्य की तरह जिया है। अपने आराध्य की हर इच्छा को पूरा करने का अथक प्रयास किया है। प्रत्यक्ष दृश्यपटल पर यदि हम दिखाई न भी पड़ें, तो हमारा कृतित्व जो अब तक गुरुसत्ता की अनुकंपा से बन पड़ा है, सबके लिए प्रेरणा का केंद्र बना रहेगा एवं हमारे बच्चे उत्तराधिकारी बनते हुए, आदर्शों के क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा करते हुए उज्ज्वल भविष्य समीप लाते दिखाई पड़ेंगे, ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है।''

गुरुदेव के तप की प्रभा जहाँ अपने तीव्र आकर्षण से चकाचौंध करती है, वहाँ वंदनीया माताजी का अपरिमित वात्सल्य हृदय की गहराइयों को तृप्त करता है। माताजी और गुरुदेव के रहस्यमय जीवन की अबूझ पहेली भले ही समझ में न आए, पर इतना अवश्य है कि यदि माताजी न होतीं, तो मिशन का इतना विस्तार संभवत: न होता। यानि कि शक्ति न होती, तो शायद शिव अपना लीला-विस्तार न कर पाते। पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''माताजी भगवान के वरदान की तरह हमारे जीवन में आईं। उनके बगैर मिशन के उदय और विस्तार की कल्पना करना तक कठिन था। उन्होंने अपने आने के पहले दिन

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

से ही स्वयं को तिल-तिल गलाने का व्रत ले लिया। विरोध का तत्त्व तो उनमें जैसे था ही नहीं। यदि वे चाहतीं, तो साधारण स्त्रियों की तरह मुझ पर रोज नई फरमाइशों के दबाव डाल सकती थीं। ऐसे में न तो तपश्चर्या बनती और न लोकसेवा के अवसर हाथ लगते। फिर जो कुछ आज तक हो सका, उसका कहीं नामोनिशान तक नहीं होता।''

वंदनीया माताजी ने लिखा है, ''जहाँ तक कष्ट सहने का प्रश्न है, सारा जीवन तितिक्षा के अभ्यास में ही लगा है। गुरुदेव की छाया में रहकर अधिक नहीं, तो इतना तो सीखा ही है कि आगत आपत्तियों के समय धैर्य, साहस और विवेक को दृढ़तापूर्वक अपनाए रहना चाहिए। व्यथा को इस तरह दबाए रहना चाहिए कि समीपवर्ती किसी अन्य को उसका आभास न होने पाए। मानव जीवन सुखों के साथ दु:खों का भी युग्म है। संपत्ति ही नहीं विपत्ति भी भगवान मानव कल्याण के लिए भेजते हैं। गुरुदेव के संपर्क में ऐसे पाठ पढ़ती रही हूँ कि रुदन को मुस्कान में कैसे बदला जाना चाहिए?''

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''माताजी का दर्जा ऊँचा बैठता है, क्योंकि उनका स्नेह-सहयोग ही नहीं, वात्सल्य भी हमने भरपूर पाया है। हमें वे बहुत उदारतापूर्वक परिपोषण देती रही हैं। उनका मूल्यांकन तुलनात्मक दृष्टि से कम नहीं किया जा सकता। वे अनवरत रूप से सहधर्मिणी रही हैं। उनके कारण हमें निजी जीवन में भी धर्मधारणा पर अडिग रहने और दूसरों को उस दिशा में चला सकने में असाधारण सहायता मिली है। एक शब्द में उन्हें सजल श्रद्धा कहा जा सकता है। उनकी काया में है तो हाड़-मांस ही, पर कोई कण ऐसा नहीं है, जिसमें श्रद्धा कूट-कूटकर न भरी हो। संपर्क में आने वाले हमारी प्रज्ञा से निष्ठावान नहीं बने हैं, वरन उनकी श्रद्धा के साथ वात्सल्य पाकर निष्ठावान बने हैं। मिशन को अग्रगामी बनाने में किसने, कितना योगदान किया, जब इसका लेखा-जोखा भगवान के घर लिया जाएगा, तो कदाचित मूर्द्धन्यों में माताजी का नाम ही अग्रणी होगा। कभी सोचते हैं कि यदि वे साथ न रही होतीं, तो इतना सब कर पाते क्या, जो कर सके। उनके वात्सल्य ने हमारी ही तरह समूचे गायत्री परिवार को, उनके माध्यम से दूरवर्ती वातावरण को कृतकृत्य किया है।''

महाप्रयाण के पूर्व माताजी ने कहा था, ''निरंतर प्यार, ममत्व बाँटकर ही हमने यह संगठन खड़ा किया था। तुम सब इसी जिम्मेदारी को निभाना। मिशन का भविष्य निश्चित ही उज्ज्वल है। मुझे अपने पुत्र-पुत्रियों पर पूरा विश्वास है कि स्नेह की डोर में परस्पर बँधे इस मिशन के संस्थापकों व दैवी संचालन तंत्र के नियामक ऋषिगणों के द्वारा निर्धारित लक्ष्य अवश्य पूरा होगा।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरुदेव ने लिखा है, ''मिशन को बढ़ाने में माताजी ने हमारे बाँए या दाँए हाथ की नहीं, हृदय की भूमिका निभाई है। उन्हीं की भावनाओं के संचार से मिशन पलता और बढ़ता रहा है। औरों की तरह हम भी उनका प्यार-दुलार पाकर धन्य हुए हैं, अन्यथा इतने आघातों के चलते कौन जाने हम कब टूट-बिखरकर चकनाचूर हो गए होते। वे भावनामयी हैं, प्यार तो जैसे उनके रोम-रोम में बसता है। उन्हें हमारी तरह बातें बनाना तो नहीं आता, पर ममत्व लुटाने में वे हमसे बहुत आगे हैं। भले ही हमारी तरह वे बौद्धिक चातुर्य की धनी न हों, किंतु ममता की पूँजी उनके पास हमसे कई गुनी अधिक है। इसी कारण हम उन्हें सजल श्रद्धा कहते हैं। मिशन के प्रत्येक परिजन ने उन्हें इसी रूप में अनुभव किया है। वे बेटा-बेटी और बहू का मोह इतनी आसानी से छोड़कर हरिद्वार के जंगल में बसने के लिए तैयार हो जाएँगी, इसका मुझे भी विश्वास न था। मैंने अपने मन के असमंजस को छिपाते हुए जब उनसे शांतिकुंज में तप-साधना की बात कही, तो वे बिना एक पल की देर लगाए, तुरंत तैयार हो गईं। हमें भी उनके इस साहस भरे समर्पण को देखकर आश्चर्य-मिश्रित प्रसन्नता हुई।''

वंदनीया माताजी ने हम लोगों के लिए लिखा है, ''श्रवणकुमार की तरह मुझे व मेरी गुरुसत्ता को घर-घर पहुँचाओ। घर-घर तक नूतन चेतना का संदेश पहुँचाओ। कर दो आलोकित युग चेतना के प्रकाश से हिमालय से विंध्याचल, विंध्याचल से सतपुड़ा दंडकारण्य एवं अरावली से कन्याकुमारी तक के हर क्षेत्र को। इन पावन सरिताओं की हर बूँद को व मातृभूमि को सांस्कृतिक दासता से मुक्ति दिलाकर इसे पुनः देव संस्कृति की चेतना से अनुप्राणित कर दो। आगे तुम्हें और भी बड़े-बड़े कार्य करने हैं। सारे राष्ट्र को जगाना है। तुम सभी मेरे वरिष्ठ पुत्रों में से हो। अब इस परिवार संस्था में अहंकारियों का कोई स्थान नहीं है। तुम सभी अच्छे हो, मुझे आशा है कि तुम में से किसी का अहंकार टकराएगा नहीं व टीम-भावना के साथ तुम काम करते चले जाओगे। स्वभाव में जहाँ कहीं भी थोड़ी-बहुत कमियाँ हैं, उन्हें दूर कर अच्छी आदतों में बदलने की कोशिश करो। अपनी-अपनी योग्यता बढ़ाओ। तुम समर्पण करोगे, तो गुरुजी की आवाज ही तुम्हारे चोगे से निकलेगी। तुम सबको देखना है कि आगे क्या होता है, जो काम होंगे, वे माताजी नहीं बेटे जी करेंगे। ये और भी शानदार होंगे। अब हम मिशनरी भावना की तरह फैलते चले जाएँगे। देखते-देखते कई गुना हो जाएँगे। तुम में से विवेकानंद निकलेंगे, दयानंद निकलेंगे और देखते जाओ तुम से वह करा लेंगे, जो तुमने सोचा भी नहीं था।''

❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री का दर्शन

गायत्री उपासना में तप साधना के वे सभी तत्त्व विद्यमान हैं, जिनके आधार पर लोगों की आस्थाएँ बदलती हैं, जनमानस का परिष्कार होता है, जीवन को सचेतन बनाने वाली प्राण ऊर्जा विकसित होती है और मानवीय सुख-शांति की परिस्थितियाँ मुखरित होती हैं। गायत्री को त्रिपदा कहा गया है, जिसका एक अर्थ यह भी होता है कि इस उपासना से मनुष्य अभाव, अशक्ति और अज्ञान से मुक्ति पाता है। शरीर, समाज और लोक-व्यवहार में क्या उचित है, क्या अनुचित? इस बात को सीखता है, तदनुसार अपना जीवनक्रम निर्धारित करता है। दुःख के यही तीन कारण हैं। इन्हीं तीनों चरणों की भ्रष्टता मनुष्य को पतित करती है। यदि वह व्यवस्थित हो जाते हैं, तो फिर उस कोलाहल, अशांति और सर्वनाश की विभीषिकाओं से स्वतः ही बचा जा सकता है। इस प्रयोग को प्राचीनकाल में सर्वाधिक सफलता मिली थी। इसलिए मनीषियों ने एक मत से गायत्री उपासना को राष्ट्रीय उपासना के रूप में स्वीकार किया था।

गायत्री युग निर्माण का मूल आधार है। गायत्री को प्राणों के उत्कर्ष की साधना भी कहते हैं। इस उपासना से अंतरंग गतिमान होता है, उसमें छाई मलिनता, अंधकार और अविवेक दूर भागते हैं। सृष्टि की यथार्थ अभिव्यक्ति होने से मनुष्य करने योग्य करता है और सोचने योग्य सोचता है। भावनाओं में देवत्व का विकास और कृतित्व में शुचिता व पवित्रता का समावेश होता है। जहाँ लोगों की भावनाएँ शुद्ध और पवित्र होंगी, वहाँ के समाज में सर्वत्र शांति, सुव्यवस्था, प्रसन्नता और संतोष भरे जीवन की निर्झरिणी प्रवाहित हो रही होगी। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवसंस्कृति की माता—गायत्री

भारतीय संस्कृति में प्रतीकवाद का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सबके लिए सरल, सीधी पूजापद्धति का आविष्कार करने का श्रेय भारत को ही प्राप्त है। पत्थर, मिट्टी, धातु, चित्र इत्यादि की प्रतिमा को मध्यस्थ बनाकर हम सर्वव्यापी अनंत शक्तियों और गुणों से संपन्न परमात्मा को अपने सम्मुख उपस्थित देखते हैं। भावुक भक्तों, विशेषत: नारी-उपासकों के लिए तो किसी प्रकार की मूर्ति का आकार रहने से उपासना में बड़ी सहायता मिलती है। मानस-चिंतन और एकाग्रता की सुविधा को ध्यान में रखते हुए प्रतीक रूप में मूर्तिपूजा की योजना बनी है। साधक अपनी श्रद्धा के अनुसार भगवान की कोई भी मूर्ति चुन लेता है और साधना करने लगता है। उस मूर्ति को देखकर हमारी अंतश्चेतना ऐसा अनुभव करती है, मानो साक्षात भगवान से ही हमारा मिलन हो रहा है। मूर्तिपूजा में भावना प्रधान और प्रतिमा गौण है, तो भी प्रतिमा को ही यह श्रेय देना पड़ेगा कि वह भगवान की भावनाओं का उद्रेक और संचार विशेष रूप से हमारे अंत:करण में करती है।

गायत्री दूरदर्शी विवेक प्रज्ञा की देवी, नारी में देवत्व की विशिष्टता का भान, उसके प्रति पवित्रतम श्रद्धा-सद्भावना की धारणा, वाहन हंस नीर-क्षीर विवेक, उचित-अनुचित के वर्गीकरण की प्रखरता, दाग-धब्बे रहित धवल कलेवर, मोती चुगने अथवा लंघन करने की प्रवृत्ति, श्रेष्ठतम को ही स्वीकार करने की प्रतिज्ञा, एक हाथ में पुस्तक, स्वाध्याय में अगाध रुचि, दूसरे हाथ में कमंडल, जल की शीतलता और प्रामाणिक पात्रता से भरा-पूरा स्वभाव।

ऋतंभरा प्रज्ञा का ही नाम गायत्री है। ऋतंभरा प्रज्ञा क्या है ? वह प्रज्ञा, वह धारणा, वह निष्ठा जो आदमी को ऊँचा उठा देती है, ऊँचा उछाल देती है, जिसकी प्रेरणा से आदमी ऊँची बातों पर विचार करता है और ऊँचा उठता चला जाता है, उसे ऋतंभरा प्रज्ञा कहते हैं। गायत्री का वाहन हंस है। हंस एक प्रतीक है। हंस वह व्यक्ति है, जिसकी दृष्टि ऋतंभरा प्रज्ञा के अनुकूल है। हंस कीड़े नहीं खाता, वह मोती चुगता है। जो ठीक है, उचित है उसी को करेगा, जो अनुचित है उसके बगैर काम नहीं चलेगा, तो मर जाएगा, भूखा रह लेगा, चाहे मरना ही क्यों न पड़े, पर न तो कुछ अनुचित करेगा और न अभक्ष्य खाएगा। हंस उस व्यक्ति का नाम है, जो नीर और क्षीर का भेद करना जानता है। इसे ही जाग्रत करने के लिए गायत्री साधना की जाती है। छोटे बालक को बताया जाता है कि गायत्री माता हंस पर सवारी करती है और

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हाथ में पुस्तक और कमंडल लिए रहती है। गायत्री माता सिद्धियों और चमत्कारों की देवी है, वह शांति और वरदान की देवी है। वह ऐसी देवी है, जिसको प्राप्त करने के बाद और कुछ प्राप्त करना बाकी नहीं रह जाता।

गायत्री माता जवान स्त्री है। जवान स्त्री के प्रति हमारे अंदर मातृ-बुद्धि पैदा हो, आँखों में शुद्धता, पवित्रता का भाव पैदा हो, इसीलिए गायत्री माता को जवान स्त्री के रूप में बनाया गया है। पूजा के माध्यम से हम अपनी चरित्रनिष्ठा, विचारशीलता और आंतरिक उदारता का विकास करते हैं। उपासना इसी के लिए की जाती है।

गायत्री माता वेदमाता है। सारे वेदों का जन्म गायत्री से ही हुआ है। उसी ने सारी संस्कृति और सभ्यता को जन्म दिया। अतः गायत्री माता वेदमाता बनी। इसके बाद गायत्री माता देवमाता बनी। हिंदुस्तान के निवासी देवता थे। वे स्वयं तो कम खाते थे, पर दूसरों को अधिक खिलाते थे। यहाँ के नागरिकों ने सारी दुनियाँ को अपनी संपदा बाँट दी, इसलिए वे देवमानव कहलाए। अकेले खाते समय उन्हें मन में अप्रसन्नता होती और दूसरों को खिलाते समय वे प्रसन्न होते। जब गायत्री माता हमारे हृदय में उदय होती है, तो हमारे जीवन को चमकाकर रख देती है। वह हमारे विचारों में परिवर्तन कर देती है। हमें केवल अपना परिवार ही नहीं, सारा समाज और देश दिखलाई पड़ता है और हम देवता बनते चले जाते हैं। गायत्री माता हंस पर बैठकर कमंडल लेकर नहीं आती। वह करुणा के रूप में, दया के रूप में हमारे अंदर आती है। यही उसका स्वरूप है, जो हमें देवता बनाकर चला जाता है और हम देवता जैसा जीवन जीने लगते हैं। गायत्री माता की कृपा से हम लोकमंगल हेतु अपनी बुद्धि, धन और समय को लगाने लगते हैं। हमारा जीवन धन्य हो जाता है। सारे संसार में गायत्री मंत्र का विस्तार हो। यह मात्र हिंदुओं तक ही सीमित न रहे, यह ब्राह्मणों का ही होकर न रह जाए, बल्कि विश्वमानव का मंत्र बने। विश्वमाता से मतलब है कि सारा विश्व एक नए आधार पर एक होने जा रहा है। एक नई संस्कृति आ रही है। एक नया सार्वभौम धर्म आ रहा है। सारी दुनियाँ इस एक ही केंद्र के ऊपर इकट्ठी होने जा रही है। हम सब एक आचार संहिता और एक मातृभाव में बँधने जा रहे हैं। गायत्री माता ईमानदारी, नेकनीयती, सज्जनता और शराफत की देवी है। हंस इसका वाहन है। गायत्री माता की स्थापना करके हम राजहंस पैदा करना चाहते हैं। गायत्री उपासकों में राजहंस की वृत्ति पैदा करना चाहते हैं।

❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री महामंत्र की विलक्षण शक्ति

गायत्री महामंत्र के जप से उत्पन्न पराध्वनि सारे वातावरण के परमाणुओं को कँपा देने की शक्ति से ओत-प्रोत है। इस महामंत्र की अपार शक्ति का लाभ कोई भी उठा सकता है। शर्त एक ही है कि वह उन शिक्षाओं पर, उस आचरण पर भी चले, जिसका इस महामंत्र के एक-एक अक्षर में संकेत है। उन आदर्शों पर चले बिना उल्लेखनीय सफलता के द्वार अवरुद्ध ही पड़े रहेंगे। गायत्री महामंत्र के जप द्वारा ऐसी चेतन शक्ति का उद्भव होता है, जो जपकर्त्ता के शरीर एवं मन में विचित्र प्रकार की हलचलें उत्पन्न करती है और अनंत आकाश में उड़कर विशिष्ट व्यक्तियों को, विशेष परिस्थितियों को तथा समूचे वातावरण को प्रभावित करती है। मंत्र का लाभ वे ही उठा सकते हैं, जिन्होंने व्यक्तित्व को भीतर और बाहर से, विचार और आचार से परिष्कृत कर लिया हो। साधक का अंत:करण और व्यक्तित्व जितना निर्मल होगा, उपासना उतनी ही सफल होगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देव संस्कृति का दर्शन—गायत्री मंत्र

गायत्री मंत्र एक फिलॉसफी है। इसे हम जीवन जीने की कला कह सकते हैं। वह सोचने का एक तरीका है, जीवनयापन करने की एक पद्धति है, समाज के गठन का तरीका है, विश्व की शांति का मूल मंत्र है। अगर हम इसे अपनाकर चलेंगे, तो हम अच्छी दुनियाँ की कल्पना कर सकते हैं। अच्छी दुनियाँ हमें फिर देखने को मिल सकती है, जैसी कि प्राचीनकाल में देखने को मिलती थी। गायत्री एक दिव्य ज्ञान है। इसे देवमाता कहते हैं। इसकी उपासना से मनुष्य देवता बन जाता है। इसे विश्वमाता भी कहते हैं। गायत्री की फिलॉसफी सबको जाननी चाहिए। अगर इसे हम समझ गए तथा उस रास्ते पर हम चलने का प्रयास कर सके, तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है।

गायत्री के २४ अक्षरों में धर्म, नीति, जीवन, कला एवं लोक-व्यवहार की बड़ी ही महत्त्वपूर्ण शिक्षा भरी हुई है। इस शिक्षा को भली प्रकार हृदयंगम कर लेने से वह उद्देश्य पूरा हो सकता है। धर्मग्रंथों का उद्देश्य मनुष्य के विचार, भाव, लक्ष्य एवं दृष्टिकोण को शुद्ध करना है, जिससे उसकी शारीरिक एवं मानसिक क्रियाएँ सतोगुणी एवं धर्मसंगत होने लगें। यह प्रक्रिया गायत्री के अक्षरों में छिपी हुई महान शिक्षाओं के अपनाने से हो सकती है। इसलिए गायत्री को वेद-शास्त्रों का निचोड़ कहा गया है। गायत्री का मर्म, अर्थ समझने से धर्म-ग्रंथों का विशद् अध्ययन करने का लाभ मिल सकता है।

ॐ—प्रकृति के अंतराल में प्रतिक्षण एक ध्वनि उत्पन्न होती है, जो 'ॐ' शब्द से मिलती-जुलती है। सूक्ष्म प्रकृति इस ईश्वरीय नाम का प्रतिक्षण जप और उद्घोष करती है, इसलिए यह अकृत्रिम, स्वयं घोषित, ईश्वरीय नाम सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। आस्तिकता का अर्थ है—सतोगुणी, दैवी, ईश्वरीय, पारमार्थिक भावनाओं को हृदयंगम करना। नास्तिकता का अर्थ है—तामसी, आसुरी, शैतानी, भोगवादी, स्वार्थपूर्ण वासनाओं में लिप्त रहना।

ॐ में तीन अक्षर मिले हुए हैं—अ उ म्। अ का अर्थ है—आत्मपरायण शरीर के विषयों से मन हटाकर आत्मानंद में रमण करना। उ का अर्थ है—उन्नति। अपने को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक, आत्मिक संपत्तियों से संपन्न करना। म का अर्थ है—महानता। क्षुद्रता, संकीर्णता, स्वार्थपरता, इंद्रियलोलुपता को छोड़कर प्रेम, दया, उदारता, सेवा, त्याग, संयम एवं आदर्श के आधार पर जीवनयापन की व्यवस्था बनाना। इन तीनों अक्षरों में जो शिक्षा है, उसे अपनाकर व्यावहारिक रूप से 'ॐ' की, ईश्वर की उपासना करनी चाहिए।

भूः—हम शरीर नहीं, प्राण हैं, आत्मा हैं। शरीर को प्रधानता देना और आत्मा की उपेक्षा करना, यह भौतिकवाद है। आत्मा को प्रधानता देना और शरीर की उचित रक्षा करना, यह अध्यात्मवाद है। गायत्री कहती है कि हम आत्मा हैं, इसलिए हमारा सर्वोपरि स्वार्थ आत्मपरायणता में है। हमें आत्मवादी बनना चाहिए और आत्मकल्याण, आत्मचिंतन, आत्मोन्नति एवं आत्मगौरव की सबसे अधिक चिंता करनी चाहिए। आत्मकल्याण के लिए, आत्मोन्नति के लिए, आत्मगौरव के लिए प्रयत्नशील रहें और समाज सेवा द्वारा विराट पुरुष विश्वमानव परमात्मा की पूजा करें।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भुवः—हमें कर्मयोग का संदेश देता है, क्योंकि इसी आधार पर समस्त प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाया जा सकता है। हम बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता और विवेकपूर्वक निर्णय करें कि हमें सत्परिणाम के लिए, जीवन-विकास के लिए क्या करना है, जो करना हो, उसमें तत्परतापूर्वक जुट जाएँ। यदि अपना कर्त्तव्यपालन किया जा रहा है, तो असफलता में दुखी या सफलता में हर्षोल्लास होने का कोई कारण नहीं। फल देने वाली शक्ति दूसरी है। हम तो अपना कर्त्तव्य पूरा करें। यह भावना अनासक्त योग है। जो इस दृष्टिकोण से सोचता है, वह सदा प्रसन्न ही रहता है। दुःख या कष्ट में भी उसे अप्रसन्नता का कोई कारण दिखाई नहीं पड़ता।

स्वः—मन को अपने में अंदर स्थिर रखो। अपने भीतर दृढ़ रहो। घटनाओं और परिस्थितियों को जल-तरंगें समझो, उनमें क्रीड़ा-कलोल का आनंद लो। अनुकूल और प्रतिकूल दोनों ही स्थितियों का रसास्वादन करो, किंतु उनके कारण अपने को उद्विग्न, अस्थिर, असंतुलित मत होने दो। इन हर्ष-शोक की बाल-क्रीड़ाओं में न उलझे रहकर, हमें आत्मपरायण होना चाहिए। स्वः को पहचानना चाहिए। आत्मचिंतन, आत्मविश्वास, आत्मगौरव, आत्मनिष्ठा, आत्मसाधन, आत्मोन्नति, आत्मनिर्माण, ये वे कार्य हैं, जिनमें हमारी इच्छाशक्ति, कल्पनाशक्ति व क्रियाशक्ति का उपयोग होना चाहिए, क्योंकि अंदर का मूल केंद्र, उद्गम स्रोत आत्मा ही है। आत्मस्थित मनुष्य का अंतःस्थल स्वस्थ होने से वह सदा प्रसन्न रहता है।

तत्—जीवन और मरण के रहस्य को समझो, भय और आसक्ति रहित होकर जिओ और वास्तविकता के सुदृढ़ आधार पर अपनी गतिविधियों का निर्माण करो। यदि हम जीवन के क्षणों का सदुपयोग करें, उसकी हर एक घड़ी को केवल आत्मलाभ के सच्चे स्वार्थ के लिए लगाएँ, तो चाहे आज, चाहे कल जब भी मृत्यु सामने आएगी, किसी भी प्रकार का पश्चात्ताप या दुःख न करना पड़ेगा।

सवितुः—सूर्य के समान तेजस्वी बनो। सप्त बलों को अपनी जीवन रथ में जुता रखो। अपने भाग्य के, अपनी परिस्थितियों के निर्माता हम स्वयं है। अपनी क्षमता के आधार पर अपनी हर एक इच्छा और आवश्यकता को पूरा करने में हम पूर्ण समर्थ हैं। १. शरीरबल, २. बुद्धिबल, ३. विद्याबल, ४. धनबल, ५. संगठनबल, ६. चरित्रबल, ७. आत्मबल, ये सात बल जीवन को प्रकाशित, प्रतिष्ठित, संपन्न और सुस्थिर बनाने के लिए आवश्यक हैं।

वरेण्यं—हम अनिष्ट को छोड़कर श्रेष्ठ चिंतन करें, अशुभ चिंतन को त्यागकर शुभ चिंतन अपनाएँ, जिससे मानसिक कुढ़न एवं असंतोष से छुटकारा मिले और सर्वत्र हर परिस्थिति में आनंद ही आनंद उपलब्ध हो। किसी मनुष्य की आंतरिक महानता ही उसकी श्रेष्ठता का कारण होती है। हम महान बनें, श्रेष्ठ बनें, संपत्तिवान बनें, पर उसकी आधारशिला भौतिक वस्तुओं पर नहीं, आत्मिक स्थिति पर निर्भर होनी चाहिए।

भर्गो—मनुष्यों को निष्पाप बनना चाहिए। पापों से सावधान रहना चाहिए। पापों के दुष्परिणाम को देखकर उनसे घृणा करें और निरंतर उनको नष्ट करने के लिए संघर्ष करते रहें। यदि पवित्रता की दिशा में हमारा प्रयत्न जारी रहे, तो संसार के समस्त कष्टों एवं भव-बंधनों से छूटकर हम जीवनमुक्ति का स्वर्गीय आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देवस्य—अशुद्ध दृष्टिकोण से बचकर शुद्ध विचारधारा को अपनाएँ। असुरता की नीति छोड़कर देवत्व की गतिविधियों को स्वीकार करें। उन क्षणिक सुखों, आकर्षणों और प्रलोभनों से बचें, जो भविष्य में दु:ख देने वाले हों, जिनके कारण आत्मा को पतन के गहरे गर्त में गिरना पड़ता हो। गायत्री कहती है कि हम देवतत्त्व को विकसित करें, देवत्व को प्रोत्साहन दें। दैवी आत्मसंकेतों का अनुसरण करें।

धीमहि—हम अपने अंदर सद्गुणों को धारण करें। अपने स्वभाव को नम्र, मधुर, शिष्ट, निर्भीक, दयालु, पुरुषार्थी, निरालस्य, श्रमशील बनाएँ तथा व्यवहार में उदारता, सचाई, ईमानदारी, निष्कपटता, भलमनसाहत, न्यायपरायणता, समानता तथा उद्योगशीलता का परिचय दें। उन सभी गुणों, विशेषताओं और योग्यताओं को अपनाएँ, जिनके द्वारा स्वास्थ्य, कीर्ति, प्रतिष्ठा, उच्च पद, धन-वैभव आदि की प्राप्ति होती है। छब्बीस दैवी संपदाएँ गीता में बताई गई हैं। इनको संक्षेप में कहना चाहें, तो वे हैं—१. अनुत्तेजना, २. स्वच्छता, ३. विचारशीलता, ४. सहिष्णुता, ५. संयम, ६. शक्ति संचय, ७. उदारता एवं ८. कर्त्तव्यपरायणता। इन गुणों को अपने स्वभाव और अभ्यास में लाना, यह एक उच्चकोटि का धन उत्पन्न करना है।

धियो—किसी भी पुस्तक या व्यक्ति की अपेक्षा विवेक का महत्त्व अधिक है, इसलिए जो बात बुद्धिसंगत हो, विवेकसम्मत हो, अपने योग्य हो, उचित हो, केवल उसी को ग्रहण करना चाहिए। विवेक की कसौटी पर कसकर हम बुराई-भलाई की हर जगह परख कर सकते हैं। हम विवेकवान बनें। विवेक को अपनाएँ। विवेक की कसौटी पर कसकर अपने विचार और कर्मों का निर्धारण करें।

यो न:—हमारी जो भी शक्तियाँ एवं साधन हैं, वे कम हों अथवा अधिक हों, उनके न्यून से न्यून भाग को अपनी आवश्यकता के लिए प्रयोग में लाएँ और शेष को निस्स्वार्थ भाव से अशक्त व्यक्तियों में बाँट दें। जोड़ने और भोगने की मृगतृष्णा में न भटकें। अपनी आवश्यकताएँ कम-से-कम रखें। उन्हें पूरा करने के पश्चात बची हुई शक्ति का अधिक से अधिक भाग अपने निर्बल, पिछड़े हुए, अविकसित, निर्धन, अल्पबुद्धि, अशिक्षित लोगों को अपेक्षाकृत अधिक ऊँचा उठाने में खरच करें। यह ईश्वरीय कार्य में हाथ बँटाना और अपनी बुद्धिमत्ता, दूरदर्शिता एवं कर्त्तव्यपरायणता का प्रमाण देना है। यह आत्मसंयम और परमार्थ का दैवी मार्ग हमें 'यो न:' द्वारा बताया गया है। इस पर चलने वाला गायत्री उपासक जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करके रहता है।

प्रचोदयात्—हे भगवान! आप हमें प्रेरणा दीजिए। हमारी बुद्धि को प्रेरित कीजिए। जब बुद्धि में प्रेरणा उत्पन्न हो गई, तो सारे धन, वैभव पैरों तले स्वयं ही लोटेंगे। यदि प्रेरणा नहीं है, तो कुबेर का खजाना पाकर भी आलसी लोग उसे गँवा देंगे। गायत्री के 'प्रचोदयात्' शब्द में एकमात्र सद्बुद्धि को प्रेरित करने की याचना परमात्मा से की गई है। आप किसी को निरुत्साहित मत कीजिए। किसी को ऐसी बात मत कहा कीजिए, जिससे वह आत्मविश्वास खो बैठे, निराशा के गर्त में गिर जाए, वरन आगे बढ़ने में हर एक को प्रोत्साहित किया कीजिए। ऐसा ज्ञान देना, जिससे मनुष्य के विचार ऊँचे उठते हों, आत्मा को सन्मार्ग की ओर प्रोत्साहन मिलता हो, सबसे बड़ा दान है। अपने को प्राणवान बनाएँ। दूसरों में प्राण-संचार करें। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा

है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी।
शीघ्र मिटनी है इन्हीं से, विश्व की तम-यामिनी॥

है यहीं पर चेतना, है धूप की ऊष्मा यहीं,
शांति-शीतलता नहीं, अन्यत्र है ऐसी कहीं,
प्रेरणा-आत्मानुशासन का सलिल-संगम यहीं,
कर्म और सद्भावना का है विमल उद्गम यहीं,
श्रेष्ठ चिंतन की यहीं सत्प्रेरणा सुखदायिनी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥

है यहीं पर स्रोत अविरल ज्ञान और सुविवेक का,
है यहीं संयम प्रबल आवेश, भावोद्रेक का,
ज्ञान-गरिमा है यहीं पर, भाव-भीनी भक्ति भी,
है गहन गुरुदृष्टि, तो मातृत्व की है शक्ति भी,
मनुजता होगी इन्हीं की, अब सहज अनुगामिनी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥

है यहाँ अनुपम समन्वय, बुद्धि और सद्भाव का,
संगठन संभव यहीं पर है हरेक बिखराव का,
इन्हीं दो सक्षम प्रतीकों की समन्वित शक्ति से,
लोकमंगल हो सकेगा, विश्व में हर व्यक्ति से,
बह सकेगी मनों की मरुभूमि में मंदाकिनी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥

रखेगा विज्ञान पर अध्यात्म, अनुशासन यहीं,
भ्रष्ट मन में भर सकेगा, शुभ सृजन-चिंतन यहीं,
मानवी मन में सहज, देवत्व का होगा उदय,
श्रेष्ठता-आदर्श की, दुष्प्रवृत्ति पर होगी विजय,
कल समूचा विश्व इस उपकार का होगा ऋणी।
है प्रखर प्रज्ञा दिवाकर, सजल श्रद्धा चाँदनी॥

—शचींद्र भटनागर

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा

प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ, युगऋषि पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के जीवन-दर्शन के दो मुख्य बिंदु हैं। प्रखर प्रज्ञा मानव मस्तिष्क के असीम सामर्थ्य, बुद्धितत्त्व का प्रतीक है। इसी प्रकार सजल श्रद्धा हृदय की सरल, तरल, रागात्मक भाव-संवेदना का सांकेतिक प्रतीक है। संक्षेप में इन्हें बुद्धि और हृदय कह सकते हैं। गायत्री परिजन गुरुदेव को प्रखर प्रज्ञा और वंदनीया माताजी को सजल श्रद्धा का स्वरूप मानते हैं जो प्रकारांतर से ठीक ही है।

जयशंकर प्रसाद के सुप्रसिद्ध महाकाव्य 'कामायिनी' में इन दो तत्त्वों को श्रद्धा और इड़ा के रूप में चित्रित किया गया है। श्रद्धा और इड़ा के द्वंद्वात्मक संघर्ष में ही मनु (मन) का आध्यात्मिक विकास हुआ है। मानव मन श्रद्धा से विमुख हो इड़ा की शरण में जाकर अपूर्व भौतिक विकास करता है, किंतु इड़ा के साथ दुराचार करने की चेष्टा में स्वनिर्मित आयुधों से ही आहत हो जाता है। श्रद्धा पुनः उसे मिलती है और आध्यात्मिक शांति का मार्ग दिखलाती है। श्रद्धा और इड़ा के समन्वय से जड़-चेतन की समरसता और आत्मिक आनंद की प्राप्ति होती है।

महर्षि अरविंद के दर्शन में इस समन्वय को चेतनावाद कहा गया है। मानव-मन की सूक्ष्म चेतना, हृदय और बुद्धि के समन्वय से एक नए समाज और नए लोक का निर्माण कर सकती है। परमपूज्य गुरुदेव ने अपने जीवन-दर्शन में अरविंद की अतिचेतना को आगे बढ़ाते हुए प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा के समन्वय की संकल्पना की है, जिसके द्वारा मानव के चरित्र में दैवीय गुणों का प्रादुर्भाव होगा। इसे वे मानव में देवत्व का उदय कहते हैं। इस स्थिति के बाद यह धरती स्वर्ग की काल्पनिक विभूतियों से प्रत्यक्ष रूप में भर जाएगी, इसे वे धरती पर स्वर्ग का अवतरण कहते हैं। मानव के विकास की यह संकल्पना ही गुरुदेव के दर्शन का प्राणबिंदु है।

हम इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं, तो १९वीं सदी के प्रारंभ में यूरोप का अभूतपूर्व औद्योगिक विकास हुआ। इसे औद्योगिक क्रांति का नाम दिया गया। इस क्रांति ने मनुष्य को इतनी सुख-सुविधाएँ प्रदान कीं, जिससे लगने लगा कि अब धरती पर स्वर्ग के अवतरण की वेला आ गई है। औद्योगिक क्रांति में मनुष्य के बुद्धितत्त्व (प्रखर प्रज्ञा) के अवदान ही प्रमुख थे। मनुष्य का हृदय पक्ष (सजल श्रद्धा) उपेक्षित हो गया था, इसलिए यह विकास केवल भौतिक रहा, जिससे मानव में देवत्व का उदय नहीं हो सका। मनुष्य की क्रूरता और धनलोलुपता ने प्रथम विश्वयुद्ध को जन्म दिया। विज्ञान के समस्त अनमोल अवदान विनष्ट हो गए। यह विनाश सजल श्रद्धा की उपेक्षा का परिणाम था।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद भी मनुष्य की चेतना ने अपनी भूल को स्वीकार नहीं किया और विज्ञान ने बुद्धितत्त्व के सहारे नए यांत्रिक युग के नूतन क्षितिज का निर्माण किया। इसे प्रौद्योगिकी क्रांति कहते

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हैं। प्रौद्योगिकी के विकास ने मनुष्य के लिए फिर एक नई सभ्यता का द्वार खोल दिया, किंतु यह विकास भी एकांगी ही रहा। सजल श्रद्धा यहाँ भी उपेक्षित ही रही। यूरोप के कुछ देश विशेषकर जर्मनी और इटली ने प्रौद्योगिकी के माध्यम से जो कुछ गौरव प्राप्त किया, उसने हिटलर और मुसोलिनी जैसे तानाशाहों को जन्म दिया। सजल श्रद्धा की उपेक्षा से मानव में देवत्व का उदय न हो सका। धरती पर स्वर्ग-अवतरण की कल्पना तो दूर विश्व ने द्वितीय महायुद्ध की संरचना कर डाली। विश्व की संपूर्ण अर्थव्यवस्था चरमरा गई। सजल श्रद्धा के अभाव में विज्ञान की महान उपलब्धियाँ नकारात्मक हो गईं।

आज मानव सभ्यता कंयूटर युग में पहुँच चुकी है। संचार के साधनों ने संपूर्ण विश्व को एक परिवार का रूप दे दिया है। यह युग विज्ञान का चरम उत्कर्ष काल है। मनुष्य के हाथ में परमाणु शक्ति की अलौकिक उपलब्धि आ चुकी है। यह पृथ्वी अब मनुष्य को नया आवेग और नया रस नहीं दे रही है। इसलिए उसकी मेधा किसी नए लोक की खोज में अंतरिक्ष की ओर निहार रही है। हमारे रॉकेट चंद्रमा और मंगल की ओर दौड़ने लगे हैं, लेकिन मनुष्य की यह विजय उसकी वास्तविक विजय नहीं है। वास्तविक विजय तो तब होगी, जब वह मनुष्य की दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त कर लेगा। यह कार्य सजल श्रद्धा के विकास से ही संभव है। यह चिंता का विषय है कि हम आज भी सजल श्रद्धा को नहीं अपना सके। इसलिए संपूर्ण वैभव पाकर भी मनुष्य दरिद्र, चिंतित और भयभीत है। भविष्य के प्रति इतना अनिश्चय, जीवन के प्रति इतना संत्रास और भावनाओं के प्रति इतनी क्रूरता मनुष्य में पहले कभी नहीं उपजी थी।

हम जानते हैं कि आज संसार परमाणु बम की ढेरी पर बैठा है। एक चिनगारी मानव सभ्यता को विनष्ट कर सकती है। विभिन्न राष्ट्रों ने इतने परमाणु बम बना लिए हैं कि मानव सभ्यता को अनेक बार नष्ट किया जा सकता है। ऐसा क्यों हुआ? हम प्रगति के मार्ग में कहाँ भटक गए? इन प्रश्नों का उत्तर एक ही है—सजल श्रद्धा की उपेक्षा और प्रखर प्रज्ञा का एकांगी विकास। यह भय तभी समाप्त होगा, जब हम प्रखर प्रज्ञा का समन्वय सजल श्रद्धा के साथ करेंगे। परमाणु शक्ति चाहे कितनी ही प्रबल क्यों न हो, वह स्वयं बम के रूप में परिवर्तित नहीं हो सकती। मनुष्य की दुर्भावना ही इसे बम का रूप देती है। यदि मनुष्य चाहे तो परमाणु बम को अतल सागर में विसर्जित कर सकता है, इसलिए सजल श्रद्धा से पूर्ण मानव चेतना ही मानव सभ्यता को भयमुक्त कर सकती है। आज हम २१वीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं। नई सभ्यता, नई संस्कृति का स्वर्णिम विहान महाकाल के मस्तक पर प्रकाशवान हो रहा है। यह नवयुग के नवनिर्माण की वेला है। हम प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा के समन्वय से नई भू-संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं। परमपूज्य गुरुदेव के विराट चिंतन में प्रखर प्रज्ञा और सजल श्रद्धा की संकल्पना इसी रूप में प्रस्फुटित हुई। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बुझा सकेगी इसे न झंझा

युगऋषि ने युग का तम हरने, क्रांति मशाल जलाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

एक बार भर दिया हृदय-रस, इसमें ऋषि ने अपना।
और सदा प्रज्वलित रहे, देखा है ऐसा सपना॥
यह युग-व्यापी अंधकार, तब ही तो मिट पाएगा।
और रोशनी का वर्चस्व, प्रतिष्ठित हो जाएगा॥

तुम्हीं इसे प्रज्वलित रखोगे, ऐसी आस लगाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

अतः याद रखना है, इसका स्नेह न चुकने पाए।
भले हमारे रक्त-कोष की, बूँद-बूँद चुक जाए॥
हृदय न हो संकीर्ण, कोष अपना खाली करने में।
प्राण न सकुचाएँ जग में, अपना प्रकाश भरने में॥

हृदय-राग से हो सिंचित, जो अरुण लालिमा छाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

संकल्पों की दृढ़ता इसको, थामे सदा रहेगी।
तम का अंतिम संस्कार कर, जय की कथा कहेगी॥
ऊँचा सदा रहेगा हाथ, न नीचे कभी झुकेगा।
लक्ष्यप्राप्ति से पूर्व न, सृजन-कारवाँ कभी रुकेगा॥

बुझा सकेगी इसे न झंझा, पछुआ या पुरवाई।
दृढ़ता की परिचायक, इसको थामे सुदृढ़ कलाई॥

— माया वर्मा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल

जनमानस का भावनात्मक नवनिर्माण करने के लिए जिस विचारक्रांति की मशाल इस ज्ञानयज्ञ के अंतर्गत जल रही है, उसके प्रकाश में अपने देश और समाज का आशाजनक उत्कर्ष सुनिश्चित है। स्वतंत्र चिंतन के अभाव ने हमें मूढ़ता और रूढ़िवादिता के गर्त में गिरा दिया। मानसिक दासता ने हमें हर क्षेत्र में दीन-हीन और निराश-निरुपाय बनाकर रख दिया है। इस स्थिति को बदले बिना कल्याण का और कोई मार्ग नहीं। मानसिक मूढ़ता में ग्रसित समाज के लिए उद्धार के सभी द्वार बंद रहते हैं। प्रगति का प्रारंभ चिंतन से होता है। लाभ में विवेकवान रहते हैं। समृद्धि साहसी के पीछे चलती है। इन्हीं सत्प्रवृत्तियों का जनमानस में रोपण और अभिवर्द्धन करना अपनी विचारक्रांति का एकमात्र उद्देश्य है। ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल इसी दृष्टि से प्रज्वलित की गई है।

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है, ''नवनिर्माण की लाल मशाल में हमने वर्चस्व का तेल टपकाकर उसे प्रकाशवान रखा है। अब परिजनों की जिम्मेदारी है कि वे उसे जलती रखने के लिए हमारी ही तरह अपने अस्तित्व के सार-तत्त्व को टपकाएँ। परिजनों पर यही कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व छोड़कर इस आशा के साथ हम विदा हो रहे हैं कि महानता की दिशा में कदम बढ़ाने की प्रवृत्ति अपने परिजनों में घटेगी नहीं बढ़ेगी ही।

गायत्री तपोभूमि स्थित युग निर्माण योजना का केंद्र हमारी जलाई हुई मशाल को भविष्य में हमसे भी अच्छी तरह जलाए रखने में समर्थ होगा। इस ईश्वरीय प्रयोजन के पीछे भगवान का, हमारे गुरुदेव का, हमारा तथा उत्तराधिकारियों के भावभरे पुरुषार्थ का जो प्रचंड बल है, वह उसे घटने या गिरने न देगा। अभियान गतिशील होगा और विश्वमानव के भविष्य को उज्ज्वल बनाने में ऐतिहासिक भूमिका प्रस्तुत करेगा।

समर्थ गुरुदीक्षा दे सकने योग्य अभी कोई अनुचर हम नहीं छोड़ सके हैं। असमर्थ व्यक्ति यह महान उत्तरदायित्व अपने कंधों पर उठा लेंगे, तो उनकी कमर टूट जाएगी और जो उनका आश्रय लेगा, वह डूब जाएगा, इसलिए भविष्य में गायत्री मंत्र की दीक्षा लेनी आवश्यक हो, तो लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु बनाया जाए। उक्त संस्कार संकल्प को कोई भी करा सकेगा, पर वह स्वयं गुरु न बन सकेगा। जैसे सिक्खों में गुरुग्रंथ साहब और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में ध्वज को ही गुरु के रूप में अंगीकार किया गया है, उसी प्रकार गायत्री परिवार युग निर्माण अभियान के अंतर्गत लाल मशाल के प्रतीक को ही गुरु के रूप में मान्यता दी जाती है। ज्ञानक्रांति की लाल मशाल युग शक्ति के प्रतीक

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के रूप में विकसित हुई है। इस प्रतीक और उसके साथ जुड़े विचार-दर्शन की जानकारी सबको होनी चाहिए। जनसमूह-भली चाह, अच्छी सोच वाले सभी वर्गों के नर-नारी हैं। हाथ-समूह की संगठित शक्ति है। मशाल-नवसृजन का संकल्प है। लौ-नवसृजन के लिए दिव्य ऊर्जा अनुदान है। प्रभा मंडल-ईश्वरीय चेतना का सतत संरक्षण है।

ज्ञानयज्ञ की लाल मशाल में मेरे हर प्रियजन को कुछ श्रद्धा-स्नेह डालते ही रहना है, इसे किसी भी कीमत पर बुझने नहीं देना है। इस अनुरोध की ओर से मुँह मोड़कर हम उस कृपणता का ही परिचय देंगे, जिसमें आत्मधिक्कार और लोकोपवाद की भर्त्सना की जलन ही पल्ले बँधेगी।

इन दिनों स्रष्टा की अदम्य और प्रचंड अभिलाषा एक ही है कि इस सड़ी दुनियाँ को बदलने में कायाकल्प जैसा नया सुयोग बनाया जाए। यही है इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य। यही है मनुष्य में देवत्व का उदय और प्रतिभा-परिष्कार का महाभियान। इसी को लोग विचारक्रांति की लाल मशाल का प्रज्वलन भी कहते हैं। इस दैवीय उत्कंठा की पूर्ति में जो जितना सहायक बनेंगे, वे उतना ही अपने को समग्र रूप से कृतकृत्य हुआ अनुभव करेंगे।''

हमारा संकल्प

लक्ष्य विशाल विस्तृत है। जनमानस के परिष्कार के लिए प्रज्वलित ज्ञानयज्ञ की, विचारक्रांति की, लाल मशाल के टिमटिमाते रहने से काम नहीं चलेगा। उसके प्रकाश को प्रखर बनाने के लिए जिस तेल की आवश्यकता है, वह पूज्य गुरुदेव की प्रत्येक संतान के भावभरे त्याग से निचोड़ा जा सकेगा। मनुष्य में देवत्व का उदय संसार के समस्त उत्पादनों की तुलना में अधिक महत्त्वपूर्ण उपार्जन है। इस कृषि कर्म में हमें शीत व वर्षा की परवाह न करके निष्ठावान कृषक की तरह लगना चाहिए। धरती पर स्वर्ग का अवतरण एक नंदन वन खड़ा करने के समान है।

पूज्य गुरुदेव के आदर्शों की रक्षा और युग निर्माण योजना के विश्वव्यापी प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी हमें सौंपी गई है। हम प्रतिज्ञा करते हैं कि इस जिम्मेदारी को गायत्री तपोभूमि एवं शांतिकुंज के सभी कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षाओं को भुलाकर परस्पर एक शक्ति, एक मन होकर काम करके पूरा करेंगे। परम पूज्य गुरुदेव ने हमारे हाथों में जो नवजागृति की मशाल सौंपी है। जब तक हमारे शरीरों में रक्त की एक भी बूँद शेष रहती है, तब तक उसे बुझने न देंगे, भले ही अपना सारा जीवन ही जल-खप जाए। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगऋषि की जन्मभूमि—युगतीर्थ आँवलखेड़ा

युगतीर्थ आवँलखेड़ा, आगरा जिले का जलेसर रोड पर स्थित छोटा-सा गाँव है, जहाँ आश्विन कृष्णा त्रयोदशी संवत् १९६८ (२० सितंबर १९११)को युगपुरुष पं० श्रीराम शर्मा ने जन्म लिया। एक श्रीमंत ब्राह्मण परिवार, जहाँ धन की कोई कमी नहीं थी, पूरा परिवार संस्कारों से अनुप्राणित, पिता भागवत के प्रकांड पंडित, बहुत बड़ी जागीर के मालिक। आज जहाँ पूज्यवर की स्मृति में एक विराट स्तंभ की, एक चबूतरे की तथा उनके कर्तृत्व रूपी शिलालेखों की स्थापना हुई है, वहीं पूज्यवर ने शरीर से जन्म लिया था। समीप बनी दो कोठरियाँ जो काल-प्रवाह के क्रम में गिर-सी गई थीं, जीर्णोद्धार कर वैसी ही निर्मित कर दी गईं हैं, जैसी उनके समय में थी। जन्मभूमि का कण-कण उस दैवी सत्ता की चेतना से अनुप्राणित है। उनके हाथ से खोदा कुआँ, जिसे पूरे गाँव का एकमात्र मीठे जल वाला कुआँ माना गया, वह अभी भी है, उनके हाथ से रोपा नीम का पेड़, वह बैठक जहाँ स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में सब बैठकर चर्चा करते थे, आज भी उन दिनों की याद दिलाते हैं। पास में ही दो कोठरियाँ हैं, जिनमें से एक कक्ष में वह स्थान है, जहाँ दीपक के प्रकाश में से सूक्ष्मशरीरधारी उनकी गुरुसत्ता प्रकट हुई थी तथा जिसने उनके जीवन की दिशाधारा का १९२६ के बाद के क्रम का निर्धारण कर दिया था। यह सब देखकर मस्तिष्क-पटल पर वह दृश्य उभर आता था, जिसे गुरुसत्ता ने कभी देखा था व जो गायत्री परिवार की स्थापना का मूल आधार बना। आँवलखेड़ा में ही उनकी माताजी की स्मृति में स्थापित माता दानकुँवरि इंटर कॉलेज है, जो उनके द्वारा दान दी गई जमीन में प्रदत्त धनराशि द्वारा विनिर्मित है। १९६३ से चल रहे इस इंटर कॉलेज से कई मेधावी छात्र निकलकर आत्मनिर्भर बने हैं, वह उच्च पदों पर पहुँचे हैं।

१९७९-८० में गायत्री शक्तिपीठ एवं कन्या इंटर कॉलेज की स्थापना का ताना-बाना बुना जाने लगा, जो एक विशाल शक्तिपीठ तथा आस-पास के ग्रामों की बालिकाओं के पठन-पाठन की व्यवस्था करने वाले, उन्हें सुशिक्षित, संस्कारवान, आत्मावलंबी बनाने वाले माता भगवती देवी कन्या महाविद्यालय का रूप ले चुका है। शासन द्वारा वंदनीया माताजी की स्मृति में माता भगवती देवी राजकीय चिकित्सालय प्रारंभ किया गया है। पूज्यवर की जन्मभूमि पर तत्कालीन प्रधान मंत्री पी.वी. नरसिंहराव ने कीर्तिस्तंभ का लोकार्पण १९९५ में किया। गायत्री शक्तिपीठ पर गोशाला, स्वावलंबन एवं साधना की गतिविधियाँ चल रही हैं। यहाँ पूज्यवर १९३६-३७ तक ही रहे, कुछ दिन आगरा रहकर १९४०-४१ में मथुरा चले गए। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा

अखण्ड ज्योति संस्थान, घीयामंडी, मथुरा में स्थित है। परमपूज्य गुरुदेव सीमित साधनों में अपने अखण्ड दीपक के साथ आगरा से आकर यहीं रहने लगे। यहीं से क्रमशः आत्मीयता विस्तार की जन-जन तक अपने क्रांतिकारी चिंतन के विस्तार की प्रक्रिया 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका, जो आगरा से ही आरंभ कर दी गई थी, इसकी 'गायत्री चर्चा' स्तंभ व अन्यान्य लेखों की पंक्तियों के माध्यम से संपन्न होने लगी। व्यक्तिगत पत्रों द्वारा उनके अंतस्तल को स्पर्श कर एक महान स्थापना का बीजारोपण होने लगा। यही वह स्थान है, जहाँ आकर अगणित दुखी, तनावग्रसित व्यक्तियों ने गुरुदेव के स्पर्श से नए प्राण पाए तथा उनके व परम वंदनीया माताजी के हाथों से भोजन-प्रसाद पाकर उनके अपने होते चले गए।

हाथ से बने कागज पर छोटी टेड्रिल मशीनों द्वारा यहीं पर 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका छापी जाती थी। एक छोटी-सी कोठरी में जहाँ अखण्ड दीपक जलता था, वहीं पर आज भी पूजाघर विर्निमित है। यह कोठरी अंदर से वैसी ही रखी गई है, जैसी पूज्यवर के समय १९४२-४३ में रही होगी। तब से लेकर आगामी ३० वर्ष का साधनाकाल-लेखनकाल पूज्यवर का इसी घीयामंडी के भवन में छोटी-छोटी दो कोठरियों में गहन तपश्चर्या के साथ बीता। तपोभूमि निर्माण की पृष्ठभूमि यहीं बनी, १९५८ के सहस्र कुंडीय यज्ञ की आधारशिला यहीं रखी गई, यहीं सारी योजनाएँ बनी एवं विधिवत गायत्री परिवार बनता चला गया।

रोज आने वाले पत्रों को स्वयं परम वंदनीया माताजी पढ़ती जातीं एवं पूज्यवर इतनी ही देर में जवाब लिखते जाते, यही सूत्र संबंधों के सुदृढ़ बनने का आधार बना। हर परिजन को तीन दिन में जवाब मिल जाता, शंका समाधान हो पत्र चला जाता। देखते-देखते एक विराट गायत्री परिवार बनता चला गया। गायत्री महाविज्ञान के तीनों खंड जो आज संयुक्त रूप से छापा गया है, युग निर्माण परक साहित्य, आर्षग्रंथों के भाष्य को अंतिम आकार देने का कार्य यहीं संपन्न हुआ। जन सम्मेलनों, छोटे-बड़े यज्ञों एवं १००८ कुंडीय पाँच विराट यज्ञों, विदाई सम्मेलन की पूज्यवर ने यहीं से रूपरेखा बनाई। स्थायी रूप से इस घर से १९७१ की २० जून को विदा लेकर हरिद्वार शांतिकुंज चले गए। विचारक्रांति के बीज इसी भूमि में ऋषियुग्म ने बोए और सींचे थे।

यहाँ 'अखण्ड ज्योति' पत्रिका के प्रकाशन, विस्तार, डिस्पैच आदि का एक विराट तंत्र स्थापित है। इस स्थान पर दर्शनार्थी परमपूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी के सूक्ष्म रूप में उपस्थित होने का अनुभव करते हैं। परमपूज्य गुरुदेव के द्वारा लिखा गया, बोला गया एक-एक शब्द यहाँ से प्रकाशित ७० बड़े ग्रंथों में वाङ्मय का प्रकाशन एवं प्रसार-वितरण यहीं से हो रहा है। पीड़ित और गरीब की सेवा के लिए यहाँ एक औषधालय चलाया जाता है। जहाँ आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, एलोपैथिक, यज्ञचिकित्सा, योग-प्राणायाम, फिजियोथैरेपी आदि की व्यवस्था से सैकड़ों पीड़ितजन यहाँ से स्वास्थ्य-लाभ प्राप्त करते हैं। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युगऋषि की कर्मभूमि—गायत्री तपोभूमि, मथुरा

इसे परमपूज्य गुरुदेव की चौबीस महापुरश्चरणों की पूर्णाहुति पर की गई स्थापना माना जा सकता है, जिसे विनिर्मित ही गायत्री परिवाररूपी संगठन के विस्तार के लिए किया गया था। इसकी स्थापना से पूर्व चौबीस सौ तीर्थों के जल व रज को संग्रहीत करके यहाँ उनका पूजन किया गया। एक छोटी किंतु भव्य यज्ञशाला में हिमालय के महान सिद्धयोगी की धूनी से ७०० वर्ष पुरानी अखण्ड अग्नि स्थापित की गई तथा एक गायत्री महाशक्ति का मंदिर विनिर्मित किया गया। यहाँ पर १०८ कुंडीय गायत्री महायज्ञ में जून १९५३ में पहली बार पूज्यवर ने साधकों को मंत्रदीक्षा दी। यहीं पर १९५६ में नरमेध यज्ञ तथा १९५८ में विराट सहस्र कुंडीय यज्ञायोजन संपन्न हुए। हिमालय प्रवास से लौटकर पूज्य आचार्यश्री ने युग निर्माण योजना के शतसूत्री कार्यक्रम एवं सत्संकल्प की तथा युग निर्माण विद्यालय के एक स्वावलंबन प्रधान शिक्षा देने वाले तंत्र के आरंभ होने की घोषणा की। यह विधिवत १९६४ से आरंभ किया गया एवं अभी भी सफलतापूर्वक चल रहा है। जिस कक्ष में परमपूज्य गुरुदेव सभी से मिला करते थे, अब वह साधना स्थली में परिवर्तित कर दिया गया है।

२०-०४-१९५६ से २४-०४-१९५६ तक नवरात्र के समय चल रहे १०८ कुंडीय (नरमेध यज्ञ) महायज्ञ हुआ। इसमें ५-६ हजार व्यक्तियों द्वारा १२५ लाख आहुतियाँ दी गई तथा पूर्ण रूप से लोकमंगल के लिए जीवनदानियों की शृंखला इसी महायज्ञ से आरंभ हुई। इसी अवसर पर गुरुदेव-माताजी द्वारा जेवर, पुस्तक, प्रेस, जमीन आदि भौतिक पदार्थ गायत्री माता को दान किए गए।

२३-११-१९५८ से २६-११-१९५८ तक इस युग के महानतम सहस्र कुंडीय गायत्री यज्ञ का संपादन हुआ, जिसमें ४ लाख व्यक्तियों ने भाग लिया। गायत्री तपोभूमि मथुरा की एक शाखा गुजराती भाषा में प्रकाशित साहित्य के प्रचार-प्रसार हेतु अहमदाबाद में गायत्री ज्ञानपीठ, पाटीदार सोसाइटी, जूनावाडज में स्थित है। गायत्री माता अंगल-बगल के कक्ष में क्रमशः पूज्यवर गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी की प्रतिमाओं एवं चरणपादुकाओं की स्थापना की गई है। पूज्य गुरुदेव के कमरे में २४०० तीर्थों का जल-रज तथा अस्थिकलश भी रखा गया है। इसके साथ ही वंदनीया माताजी के कमरे में २४०० करोड़ मंत्रलेखन की स्थापना है।

गायत्री तपोभूमि से दो मासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। 'युग निर्माण योजना' मासिक हिंदी में तथा 'युग शक्ति गायत्री' गुजराती में प्रकाशित होती है। इसके अतिरिक्त समस्त युग साहित्य का प्रकाशन-मुद्रण युग निर्माण योजना प्रेस में होता है। कार्य के विस्तार एवं स्थान के अभाव के कारण बिरला मंदिर के समीप वृंदावन रोड पर युग निर्माण योजना विस्तार केंद्र का निर्माण किया गया है। प्रकाशन का पूरा कार्य यहीं से होता है।

गायत्री तपोभूमि के आश्रम में आश्रमवासियों, गरीबों, असहायों के लिए एक चिकित्सालय है, जहाँ आयुर्वेदिक, होमियोपैथिक, एलोपैथिक, योग प्राणायाम, प्राकृतिक चिकित्सा, फिजियोथैरेपी तथा पैथोलोजी का कार्यकुशल एवं योग्य चिकित्सकों तथा सहायकों के द्वारा किया जाता है। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गायत्री तीर्थ, शांतिकुंज, हरिद्वार

शांतिकुंज, सप्तसरोवर क्षेत्र में हरिद्वार-ऋषिकेश मार्ग पर सड़क के किनारे स्टेशन से छह किलोमीटर दूरी पर स्थित एक विशाल दर्शनीय गायत्री तीर्थ है। यहाँ पूज्य गुरुदेव सन् १९७१ से महाप्रयाण १९९० तक तथा वंदनीया माताजी १९९४ तक रहे।

भारतीय संस्कृति के तत्त्वदर्शन, गायत्री एवं यज्ञ के तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने वाला जाग्रत तीर्थ लाखों गायत्रीसाधकों का गुरुद्वारा है। यहाँ पर गायत्री माता का एक भव्य मंदिर तथा सप्तऋषियों की प्रतिमाओं की स्थापना है। परमपूज्य गुरुदेव आचार्य पं० श्रीराम शर्मा द्वारा प्रज्वलित किया गया अखण्ड दीप सन् १९२६ से अहर्निश अपनी ऊर्जा विकीर्ण कर रहा है।

यहाँ हिमालय की एक दिव्य विराट प्रतिमा स्थापित की गई है। देव संस्कृति दिग्दर्शन में मिशन के वर्तमान स्वरूप व भावी योजनाओं का चित्रण किया गया है। आश्रम की यज्ञशालाओं में नित्य नियमित हजारों साधक गायत्री यज्ञ संपन्न करते हैं। सभी प्रकार के संस्कार यहाँ नि:शुल्क संपन्न कराए जाते हैं। यहाँ एक भटके हुए देवता का मंदिर भी है। सभी आगंतुकों की शारीरिक, मानसिक जाँच-पड़ताल निष्णात चिकित्सकों के द्वारा यहाँ नि:शुल्क की जाती है एवं आहार, साधना तथा वनौषधि संबंधी परामर्श दिया जाता है। यहाँ के नौ दिवसीय संजीवनी साधना सत्र वर्ष भर संपादित होते रहते हैं। ये सत्र १ से ९, ११ से १९, २१ से २९ की तारीखों में प्रति माह चलते हैं। एक मास के युगशिल्पी सत्रों में भावनाशील कार्यकर्त्ता नैतिक, बौद्धिक तथा सामाजिक क्रांति का परिपूर्ण शिक्षण लेने प्रतिमास आते हैं। शिक्षण, निवास एवं भोजन की व्यवस्था नि:शुल्क है।

जन-जन में सुसंस्कारिता संवर्द्धन तथा आस्था-संवर्द्धन हेतु शांतिकुंज से प्रज्ञा टोलियाँ देश-विदेश में भेजी जाती हैं। आर्थिक क्रांति के अंतर्गत स्वावलंबन विद्यालय है, जिसमें छोटे कुटीर उद्योगों से उपार्जन का नि:शुल्क शिक्षण दिया जाता है। शांतिकुंज एक ऐसी स्थापना है, जिसे सच्चे अर्थों में युगतीर्थ कहा जा सकता है। यहाँ आने वाला व्यक्ति कृतकृत्य होकर जाता है एवं नैसर्गिक सौंदर्य तथा आध्यात्मिक ऊर्जा से अनुप्राणित वातावरण में बार-बार आने के लिए लालायित रहता है।

नैतिक, बौद्धिक, सामाजिक क्रांति का उद्देश्य लेकर प्रतिवर्ष टोलियाँ देशभर में भेजी जाती हैं, जो संगीत, प्रवचन, यज्ञ, कर्मकांड के माध्यम से कार्य करती हैं। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान, हरिद्वार

शांतिकुंज से लगभग आधा किलोमीटर दूर गंगातट पर स्थित इस संस्थान के स्वरूप को चार बिंदुओं में स्पष्ट किया जा सकता है—१. आदिमाता गायत्री की चौबीस शक्तिधाराओं के मंदिर, २. वैज्ञानिक अध्यात्म की प्रयोगशाला, ३. संदर्भ पुस्तकालय, ४. समर्पित वैज्ञानिकों का समुदाय।

गायत्री महामंत्र के चौबीस अक्षरों में चौबीस प्रकार की साधनाओं का विधान-विज्ञान समाविष्ट है। इनमें बारह गायत्री की वैदिक साधनाओं की दिशा निर्देशित करती हैं। इनके अतिरिक्त बारह गायत्री की तांत्रिक साधनाओं की अधिष्ठात्री हैं। युगऋषि पूज्य गुरुदेव ने अपने साधना जीवन में इन सभी चौबीस शक्तियों के परम रहस्यों का ज्ञान प्राप्त किया था। शोध संस्थान के भूमितल पर इन चौबीस शक्तियों के भव्य मंदिर हैं, जिन्हें स्वयं गुरुदेव ने १९७९ की ५ जून गायत्री जयंती की पावन वेला में प्रतिष्ठित किया था। प्रत्येक मंदिर के दोनों ओर उस विशेष महाशक्ति की उपासना में प्रयोग किए जाने वाले यंत्र-मंत्र एवं प्रयोगविधि तथा उसकी फलश्रुति का सांकेतिक विवरण दिया हुआ है। मंत्र-विज्ञान एवं यंत्र-विज्ञान के सभी तत्त्वों का समग्र समावेश होने के कारण थे सभी मंदिर अध्यात्म विद्या के जिज्ञासुओं को विशिष्ट अनुभूतियाँ प्रदान करते हैं।

आधुनिकतम कंप्यूटराइज्ड उपकरणों से सुसज्जित एक प्रयोगशाला के मुख्यतया तीन आयाम हैं—१. यज्ञ चिकित्सा की प्रयोगशाला, २. आध्यात्मिक साधनाओं द्वारा शरीर, प्राण और मन अर्थात समग्र जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का मापन करने वाली प्रयोगशाला, ३. वनौषधि अनुसंधानाशाला और उससे जुड़ा दुर्लभ जड़ी-बूटियों का वनौषधि उद्यान।

पुस्तकालय में हिंदू, मुसलिम, पारसी, ईसाई, बौद्ध, ताओ आदि विभिन्न धर्मों के साहित्य के अतिरिक्त तंत्र, ज्योतिष, आयुर्वेद, दर्शन, इतिहास, संस्कृति, आधुनिक चिकित्सा विज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिक विज्ञान, खगोलशास्त्र आदि अनेक विषयों की लगभग ५०,००० पुस्तकों का बहुमूल्य संग्रह है। इन संदर्भ ग्रंथों के अतिरिक्त पुस्तकालय में विविध दुर्लभ पांडुलिपियों के अलावा लगभग १०० विविध विश्वकोश संग्रहीत हैं। इन्हीं के साथ ३०० विश्वविख्यात पत्रिकाएँ अपने साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक आदि क्रम से आती हैं।

शोध संस्थान में कार्यरत शोधकर्मियों के दो वर्ग हैं। पहला वर्ग मनीषियों का है—इस वर्ग में वे लोग हैं, जो जीवन के सामाजिक, राजनीतिक एवं दार्शनिक पहलू के अध्ययन तथा शोध में संलग्न हैं, दूसरा वर्ग वैज्ञानिकों का है—इसमें वे लोग हैं, जो यज्ञ चिकित्सा, वनौषधि, अनुसंधान तथा मानवीय व्यक्तित्व पर आध्यात्मिक साधनाओं के प्रभाव पर कार्य कर रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि इनमें से कोई वेतनभोगी कर्मचारी नहीं है, अपितु सभी गुरुदेव के आदर्शों के लिए समर्पित हैं।

❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार

देव संस्कृति विश्वविद्यालय शांतिकुंज द्वारा स्थापित उत्तराखंड शासन के एक्ट से स्थापित, भारत सरकार के विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) से मान्यता प्राप्त व श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट शांतिकुंज द्वारा वित्तपोषित विश्वविद्यालय है। युवाओं का तीर्थ, अनेक विशेषज्ञ स्तर की युवा प्रतिभाओं के संकल्पों का लक्ष्य है देव संस्कृति विश्वविद्यालय। महाकाल के दिव्य संरक्षण में शनैः-शनैः अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता वह विश्वविद्यालय, जिसकी उल्लेखनीय सेवाओं को राष्ट्र के शीर्ष महानुभावों ने सराहा। वह विश्वविद्यालय, जो अपनी स्थापना के पहले दशक में ही भारत के कोने-कोने तथा राष्ट्र की सीमाओं के पार विश्व के नामी-गिरामी देशों के चिंतकों, शिक्षाविदों, समाजसेवियों, युवाओं के ध्यानाकर्षण का केंद्रबिंदु बना।

विश्वविद्यालय परिसर की भव्यता व दिव्यता आगंतुकों को बेहद आकर्षित करती है। रमणीक आम्रकुंजों के मध्य निर्मित हैं—श्रीराम भवन एवं चैतन्य भवन सहित आर्यभट्ट, भारद्वाज, आनंदमयी, अगस्त्य, अरविंद, पाणिनि, संघमित्रा, निवेदिता, कण्व, शौनक, संदीपनि, गौतम, फार्मेसी और सेन्ट्रल स्टोर आदि के विशाल भवन। भव्य ऑडिटोरियम मृत्युंजय सभागार और गायत्री विद्यापीठ का विशाल भवन, पी.एच-डी. नियंत्रण का मुख्य केंद्रबिंदु 'कुलाधिपति कुटीर' अपनी विशेष छटा बिखेरता है। मध्य में स्थापित मुक्ताकाशीय विशाल ध्यान-स्थल एवं प्रज्ञेश्वर महाकाल व सिद्धेश्वर साधना स्थली की महिमा-गरिमा अकथनीय है।

अनूठे पाठ्यक्रम, बढ़ती लोकप्रियता—विश्वविद्यालय ने योग विज्ञान, क्लीनिकल साइकोलॉजी, कंप्यूटर साइंस, एनीमेशन जैसे अभिनव पाठयक्रम शुरू किए, जिनमें गहराई भी है और व्यापकता भी। शोधार्थियों ने अपने शोध के माध्यम से साइको-स्प्रीच्युअल मॉडल का विकास किया। योग विज्ञान और मनोविज्ञान सहित विभिन्न विषयों में १७५ पी.एच-डी. शोधार्थी शोधरत हैं, ७५ शोधार्थियों को पी.एच-डी. अवार्ड की जा चुकी हैं। फत्रकारिता, भारतीय संस्कृति, पर्यटन, कंप्यूटर साइंस, बी.एड., शिक्षा, एनीमेशन एंड विजुएल इफेक्ट्स, धर्म विज्ञान, समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन, जल संरक्षण, उद्यमिता विकास, हस्तकरघा प्रौद्योगिकी, अंगरेजी विभाग आदि की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं।

पूर्णतः आवासीय इस विश्वविद्यालय के पाठयक्रमों का विवरण निम्नवत है—

०२ वर्षीय पाठयक्रम—एम.एस-सी. (योग विज्ञान एवं समग्र स्वास्थ्य), एम.ए. (व्यावहारिक योग एवं मानव उत्कर्ष), एम. एस-सी., एम.ए. (नैदानिक मनोविज्ञान), एम. ए. (प्राचीन भारतीय इतिहास एवं संस्कृति), एम. ए. (पर्यटन प्रबंधन), एम. ए. (पत्रकारिता एवं जनसंचार), एम. ए. (व्यावहारिक शिक्षा), एम.एस-सी. (कंप्यूटर साइंस)। ०१ वर्षीय पाठयक्रम : पी.जी. डिप्लोमा (मानव चेतना एवं योग चिकित्सा), पी.जी. डिप्लोमां (पत्रकारिता एवं जनसंचार), डिप्लोमा (३-डी एनीमेशन एण्ड विजुअल इफेक्ट्स) एवं बी.एड.। ०६ मासीय प्रमाणपत्र पाठयक्रम : धर्म विज्ञान, समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा (पी.जी. एवं यू.जी. सर्टीफिकेट कोर्स), उद्यमिता विकास (स्वावलंबन), जल संसाधन संरक्षण एवं प्रबंधन,फाउण्डेशन ऑफ विजुअल इफेक्ट्स (कंपोसिटिंग) हस्तकरघा प्रौद्योगिकी। ०३ वर्षीय पाठयक्रम : बी.ए. एवं बी. एस-सी.।

भारत सरकार के दूरस्थ शिक्षा परिषद द्वारा स्वीकृत दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम पाँच विषयों-योग प्रवेशिका, व्यक्तित्व परिष्कार, भारतीय संस्कृति, स्वास्थ्य संरक्षण एवं परिवार प्रबंधन में सर्टीफिकेट कोर्स तथा योग विज्ञान में एकवर्षीय पी.जी डिप्लोमा के साथ उत्तराखंड भर में विस्तार ले रहा है। उत्तराखण्ड सरकार के उच्च शिक्षा विभाग ने देसंविवि के दूरस्थ शिक्षाकेंद्र प्रांत के सभी डिग्री कॉलेजों में खोलने के निर्देश दिए हैं। ❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

* हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
* शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
* मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
* इंद्रियसंयम, अर्थसंयम, समयसंयम और विचारसंयम का सतत अभ्यास करेंगे।
* अपने आप को समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।
* मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
* समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
* चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
* अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
* मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
* दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
* नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
* संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य-प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।
* परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
* सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
* राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
* मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
* 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

❐

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक लाभ ही सर्वोपरि लाभ है

आध्यात्मिक जीवन आत्मिक सुख का निश्चित हेतु है। अध्यात्मवाद वह दिव्य आधार है, जिस पर मनुष्य की आंतरिक तथा बाह्य दोनों प्रकार की उन्नतियाँ एवं समृद्धियाँ अवलंबित हैं। सांसारिक उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए भी जिन परिश्रम, पुरुषार्थ, सहयोग, सहकारिता आदि गुणों की आवश्यकता होती है, वे सब आध्यात्मिक जीवन के ही अंग हैं। मनुष्य का आंतरिक विकास तो अध्यात्म के बिना हो ही नहीं सकता।

अध्यात्मवाद जीवन का सच्चा ज्ञान है। इसको जाने बिना संसार के सारे ज्ञान अपूर्ण हैं और इसको जान लेने के बाद कुछ भी जानने को शेष नहीं रह जाता। यह वह तत्त्वज्ञान एवं महाविज्ञान है, जिसकी जानकारी होते ही मानव-जीवन अमरतापूर्ण आनंद से ओत-प्रोत हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान से पाए हुए आनंद की तुलना संसार के किसी भी आनंद से नहीं की जा सकती क्योंकि इस आत्मानंद के लिए किसी आधार की आवश्यकता नहीं होती। वस्तुजन्य मिथ्या आनंद वस्तु के साथ ही समाप्त हो जाता है, जबकि आध्यात्मिकता से उत्पन्न आत्मिक सुख जीवनभर साथ तो रहता ही है, अंत में भी मनुष्य के साथ जाया करता है। वह अक्षय और अविनश्वर होता है, एक बार प्राप्त हो जाने पर फिर कभी नष्ट नहीं होता। शरीर की अवधि तक तो रहता है, शरीर छूटने पर भी अविनाशी आत्मा के साथ संयुक्त रहा करता है।

— अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६७ पृष्ठ २

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मानसिक शक्ति नष्ट न होने दीजिए

विपत्ति आने पर मनुष्य अपनी जितनी शक्ति को उद्विग्न और अशांत रहकर नष्ट कर देता है, उसका एक अंश भी यदि वह शांत-चित्त रहकर कष्टों को दूर करने में व्यय करे तो शीघ्र ही मुक्त हो सकता है।

आपत्तियों के आने पर घबराना नहीं चाहिए। मनुष्य धैर्यपूर्वक उपाय करने के बजाय, अपनी सारी क्षमताओं को व्यग्र और विकल होकर नष्ट कर देता है। किंकर्त्तव्यविमूढ़ बनकर 'क्या करें,' 'कहाँ जाएँ', 'कैसे बचें' आदि वितर्कना करते हुए बैठे रहते हैं, जिसमें आई हुई विपत्ति भी सौगुनी होकर उन्हें दबा लेती है।

जीवन में जो भी दुःख-सुख आए, उसे धैर्यपूर्वक तटस्थ भाव से सहन करना चाहिए। सुख और दुःख दोनों को अपने ऊपर से ऐसे गुजर जाने देना चाहिए जैसे वे कोई राहगीर हैं, जिनसे अपना कोई संबंध नहीं।

मनुष्य की मानसिक शांति और बौद्धिक संतुलन, दो ऐसी अमोघ शक्तियाँ हैं, जिनके बल पर विकट से विकट परिस्थिति का भी सामना किया जा सकता है। विपत्तियाँ आती हैं और चली जाती हैं, परिस्थितियाँ बदल जाती हैं।

जीवन को सुखी और संतुष्ट बनाए रखने के लिए मनुष्य को चाहिए कि प्रत्येक अवस्था में अपनी मानसिक शांति को भंग न होने दे।

— अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६७ पृष्ठ ६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इच्छाशक्ति के चमत्कार

जहाँ तक इच्छाओं का संबंध है, सदिच्छाएँ ही इच्छाओं की सीमा में आती हैं। सदिच्छाओं की शक्ति अपरिमित है। कोई अच्छा कार्य करने अथवा उदात्त लक्ष्य प्राप्त करने की कामना रखने वाला लाख विरोधों एवं असुविधाओं के होने पर भी अपने ध्येय पर पहुँच ही जाता है।

सदाशयी में एक स्थायी लगन होती है, जिससे वह अपने ध्येय के प्रति निष्ठावान होकर अपनी समग्र शक्तियों को लगाकर प्रयत्न में लगा रहता है। इच्छा एवं प्रयत्न की एकता उसमें एक अलौकिक सहायता-स्रोत का उद्घाटन कर देती है, जिससे उसके प्रयत्नों में निरंतरता, तीव्रता और अमोघता बढ़ती जाती है और वह क्षण-क्षण ध्येय की ओर उत्तरोत्तर अग्रसर होता जाता है।

सदिच्छावान व्यक्ति में आशा, उत्साह, साहस और सक्रियता की कमी नहीं रहती और जिसमें इन सफलतावाहक गुणों का समावेश होगा, असफलता उसके पास आ ही नहीं सकती। असद् इच्छाएँ जहाँ अपने विषैले प्रभाव से मनुष्य की शक्ति का नाश करती हैं, वहाँ सद्-इच्छाएँ उनमें नवीन स्फूर्ति, नया उत्साह और अभिनव आशा का संचार किया करती हैं।

एक इच्छा, एक निष्ठा और शक्तियों की एकता मनुष्य को उसके अभीष्ट लक्ष्य तक अवश्य पहुँचा देती है। इसमें किसी प्रकार के संदेह की गुंजाइश नहीं। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६७ पृष्ठ १६*

युग निर्माण आंदोलन और उसका प्रयोजन

संसार में अगणित प्रकार के क्लेश, कलह, दुःख, दारिद्रय एवं शोक-संताप इसलिए उत्पन्न होते और बढ़ते हैं कि लोग अनीतिमूलक भौतिकवाद को अपने दृष्टिकोण में सम्मिलित कर लेते हैं। यह भूल जब तक सुधारी न जाएगी, तब तक रोग बढ़ता ही रहेगा और विपन्न से विपन्नतम विभीषिकाओं का सर्वनाशी सृजन करता चला जाएगा। इस अवरोध की चिकित्सा एक ही हो सकती है कि जिस कारण व्यथा उपजी थी, उसे हटाया जाए। भौतिकवादी मान्यताओं का तिरस्कार कर उनके स्थान पर अध्यात्मवादी दृष्टिकोण के प्रतिष्ठापन द्वारा ही आंतरिक जीवन में सुख-समृद्धि का लाभ लिया जा सकता है। इसी तथ्य को जनमानस में प्रविष्ट करते रहना साधु-ब्राह्मणों का, अवतार-देवदूतों का एकमात्र उद्देश्य रहा है। पतनोन्मुख मानव स्वभाव पर नियंत्रण करने के लिए इस धर्मतंत्र को तत्त्वदर्शी-मनीषियों द्वारा सदा ही किसी न किसी रूप में गतिशील रखना पड़ता है। जब स्थिति अधिक विपन्न हो जाती है, तब उसे विशेष रूप से, विशेष विधि-व्यवस्था के साथ कार्यान्वित किया जाता है। आज यही किया जा रहा है। युग निर्माण आंदोलन का प्रयोजन यही है कि जनमानस में इस तथ्य को गहराई तक प्रतिष्ठापित किया जाए। हमारा भावनात्मक स्तर सुधरे तो बाह्य जीवन की समस्त परिस्थितियाँ सुधर जाएँगी, समस्त अवरोध दूर हो जाएँगे और समस्त कष्टों से त्राण मिल जाएगा।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६७ पृष्ठ ३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण आंदोलन का प्रयोजन

युग निर्माण की आधार भूमिका मान्यताओं एवं विचारणाओं का परिवर्तन है। दुर्भावनाओं की दुष्प्रवृत्तियों को अपनाकर हमने नरक का, कलियुग का वरण किया है। इस ढर्रे को बदलकर जब सद्भावनाओं का, सत्प्रवृत्तियों का मार्ग अपनाया जाएगा तो कोई कारण नहीं कि स्वर्ग का, सतुयग का वरदान उपलब्ध न किया जा सके। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। भगवान ने वह सुविधा और स्वतंत्रता उसे दी है जिसके अनुसार वह इच्छानुसार मार्ग का अवलंबन लेकर कडुए-मीठे फल चखने का अनुभव ले सके। कुमार्ग पर चलकर कडुए फल चखने, ठोकरें खाने का अनुभव लिया जा चुका, अब पीछे लौटकर सत्पथ पर चलने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। सर्वनाश के गर्त में गिरने की अपेक्षा पीछे लौटना ही श्रेयस्कर समझा जाएगा। अनीति करके अधिक कडुए परिणाम देखने का साहस अब लोगों में रह भी नहीं गया है, इसलिए भूल तो सुधारनी ही पड़ेगी, पीछे तो हटना ही होगा, राह तो बदलनी ही होगी। वर्तमान संध्याकाल इसी परिवर्तन की वेला का है। इस हेर-फेर की घड़ी में, प्रसव वेला में हमें चतुर दाई की भूमिका अदा करनी है। युग निर्माण आंदोलन का यही प्रयोजन है। प्रकृति नये युग का प्रजनन कर रही है। इस कष्टकारक घड़ी में उनका बड़ा उत्तरदायित्व है जो संघर्ष वेला को सुव्यवस्थित बना सकने में समर्थ हैं। हमें इसी भूमिका का संपादन करना चाहिए।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६७ पृष्ठ १५

प्रतिकूलताओं की चुनौती स्वीकार कीजिए

अपनी दयनीयता का दोष परमात्मा को देने से कहीं अच्छा है कि अपने अपरिश्रमी स्वभाव को दिया जाए। वह समदर्शी परम पिता परमात्मा कभी किसी के साथ अन्याय नहीं करता। उसके पास देने के लिए जो दया का कोश है, उसका भाग वह सबको पात्रता के अनुसार न्यायपूर्वक ही देता है। जगत में आकर जो पुरुषार्थी एवं आत्मविश्वासी व्यक्ति अपनी पात्रता की वृद्धि कर लेते हैं, निश्चय ही वे उसकी कृपा का अधिक अंश पा लेते हैं। परमात्मा मनुष्य के प्रयत्नपात्र को अपनी कृपा से लबालब भरे रहता है। अपनी प्रयत्नहीनता को दोष न देकर परमात्मा को दोष देना, उसकी न्यायशीलता में एक अक्षम्य अशिष्टता तथा धृष्टता है। यह उनकी इस दुष्ट भावना का भी फल होता है कि आशा की ओर से अंधे होकर निराशा का हाथ पकड़े हुए जीवन का मार्ग टटोलकर ठोकरें खाते फिरते हैं। यह उनकी इस धृष्टता का ही परिणाम है कि उनका विश्वास, सौभाग्य के प्रति होने के स्थान पर दुर्भाग्य के प्रति दृढ़ रहता है। अपना कल्याण चाहने वाले प्रत्येक व्यक्ति का पावन कर्त्तव्य है कि वह परमात्मा को दोष देने के बजाय, उसकी कृपा में न्यूनता खोजने के बजाय अपने निष्क्रिय स्वभाव, अनुपयोगी प्रवृत्ति एवं निराशापूर्ण विश्वासों को दोष दे और अपनी कमियों, त्रुटियों एवं न्यूनताओं की खोज करे और उन्हें दूर कर लेने का प्रयत्न करे।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६७ पृष्ठ १४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति-पथ के तीन प्रमुख अवरोध

आवेश प्रधान व्यक्ति का हर काम उतावली से भरा होता है। वह अपने कामों में आवश्यक धैर्य तथा संतुलन नहीं रख पाता। समय से पूर्व फल की आकांक्षा करने पर जब वह पूरी नहीं होती, तब उत्तेजित होकर खीझ उठता है। तब वह या तो अपने कर्त्तव्य-कर्म से चिढ़ने लगता है अथवा समाज को दोषी मानकर द्वेष करने लगता है और बदले में अपने विरोधी पैदा कर लेता है।

आवेश प्रधान व्यक्ति की बेल कभी सिरे नहीं चढ़ती। उसकी अस्त-व्यस्त गति उसके पैरों को उलझाती रहती है। उसके काम बिगड़ते अथवा कुरूप होते रहते हैं, जिससे उसे एक दिन स्वयं अपने से अरुचि हो सकती है और तब किसी ऊँचे लक्ष्य को पाना तो क्या सामान्य जीवन भी खिन्नता से भर जाता है।

आवेश निश्चय ही एक मानसिक रोग है। जिसका उपचार धैर्य, संतुलन तथा स्थिरता ही है। यदि आप में आवेश की दुर्बलता है तो पहले अभ्यास एवं प्रयत्नपूर्वक उसे धैर्य, संतुलन तथा स्वयं से स्थानापन्न कर लीजिए, तब शांतिपूर्वक अपना लक्ष्य निर्धारित करिए। दिशा का निर्णय करिए और सोचे हुए सुनियोजित कार्यक्रम के अनुसार गंतव्य की ओर कदम बढ़ाइए।

असहनशील व्यक्ति मार्ग की उन बाधाओं तथा विरोधों से उस प्रकार नहीं निपट सकता जिस प्रकार प्रगति के महत्त्वाकांक्षी के लिए संभव है। विरोधों का विरोध करना होता है। अवरोधों को धकेलना होता है।

— अखण्ड ज्योति-अप्रेल १९६७ पृष्ठ १९

मानव जीवन का अनुपम सौभाग्य

मानव जीवन भगवान की दी हुई सर्वोत्तम विभूति है। इससे बड़ा वरदान और कुछ हो ही नहीं सकता। सृष्टि के समस्त प्राणियों को जैसे शरीर मिले हैं, जैसे सुविधा-साधन प्राप्त हैं, उनकी तुलना में मनुष्य की स्थिति असंख्य गुनी श्रेष्ठ है। दूसरे जीवों का सारा समय और श्रम केवल शरीर-रक्षा में ही लग जाता है। फिर भी वे ठीक तरह उस समस्या को हल नहीं कर पाते। इसके विपरीत मनुष्य को ऐसा अद्भुत शरीर मिला है, जिसकी प्रत्येक इंद्रिय आनंद और उल्लास से भरी-पूरी है। उसे ऐसा मन मिला है जो पग-पग पर हर्षोल्लास का लाभ ले सकता है। उसे ऐसी बुद्धि मिली है जो साधारण पदार्थों से अपनी सुख-सुविधा के साधन विनिर्मित कर सकती है। मानव प्राणी को जैसा परिवार, समाज, साहित्य तथा सुख-सुविधाओं से भरा-पूरा वातावरण मिला है, वैसा और किसी जीव को प्राप्त नहीं है।

इतना बड़ा सौभाग्य उसे अकारण ही नहीं मिला है। भगवान की इच्छा है कि मनुष्य उसकी इस सृष्टि को अधिक सुंदर, अधिक सुखी, अधिक समृद्ध और समुन्नत बनाने में उसका हाथ बँटाए। अपनी बुद्धि, क्षमता और विशेषता से अन्य पिछड़े हुए जीवों की सुविधा का सृजन करे और परस्पर इस तरह का सद्व्यवहार बरते, जिससे इस संसार में सर्वत्र स्वर्गीय वातावरण दृष्टिगोचर होने लगे।

— अखण्ड ज्योति-मई १९६७ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिन खोजा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ

मनुष्य जीवन जैसी अमूल्य निधि फिर मिलेगी इसकी कोई निश्चित सुविधा नहीं हैं। इसी जीवन में दिन रहते कुछ काम बना लिया जाए, इसी में बुद्धिमानी है। पचास-साठ अथवा सौ वर्ष के जीवन को कामनाओं की पूर्ति में ही लगाए रखा जाए तो उसमें मानव जीवन की क्या सफलता, शक्तियों का क्या सदुपयोग रहा। भोग-वासनाएँ दु:ख का कारण मानी गईं हैं। अन्य जन्मों में उनके दुष्परिणाम होते हों या न होते हों, इसे चाहे कोई माने या न माने, पर वासनाएँ इसी जीवन में मनुष्य को तंग करती हैं। अत: इन्हें कदापि उचित नहीं ठहराया जा सकता। यह बात बहुत गहराई तक विचार लेनी चाहिए। एक बार अवसर निकल जाने के बाद में फिर पछतावा ही शेष रहता है। बुद्धिमान लोग समय रहते ही अपने लक्ष्य को पूरा करने का प्रयास करते हैं।

ईश्वर सब जगह विद्यमान है। उसे ढूँढ़ने में कठिनाई नहीं, कठिनाई तो सिर्फ अपना अहंकार मारने में है। अपने आप को साध लिया जाए, व्रत, संयम और तपश्चर्या की आग में अपना अहंकार विगलित कर दिया जाए तो सर्वत्र ईश्वर-ही-ईश्वर दिखाई देने लगता है।

जब तक मन में मैल है, ईश्वर का प्रकाश कैसे दिखाई देगा ? जब तक अपने स्वार्थ से ही छुटकारा नहीं मिलता, तब तक परमात्मा की याद कैसे आ सकती है ? इस संसार में पाने के लिए पहले अपना सब कुछ खोना पड़ता है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९६७ पृष्ठ १२*

क्या हमारे लिए यही उचित है ?

केवल अपने लिए ही जीना मानव जीवन का निकृष्टतम दुरुपयोग है। जो केवल अपने लिए ही पैदा हुआ, अपने लिए ही बढ़ा और आप ही खा-खेलकर चला गया, ऐसा व्यक्ति अपनी दृष्टि में सफल भले ही बनता रहे, वह असफल ही माना जाएगा।

इस सृष्टि में सफल जीवन उसका है जो दूसरों के काम आ सके। बादल समुद्र से जल ढोकर लाते हैं और प्यासी धरती को परितृप्त करने में लगे रहते हैं। समुद्र की महानता को सुरक्षित रखने के लिए नदियाँ उसमें अपनी आत्मसमर्पण करते रहने की परंपरा को तोड़ती नहीं। फूल खिलते हैं दूसरों को हँसाने के लिए, पौधे उगते हैं दूसरों के प्रयोजन पूर्ण करने के लिए। वायु चँवर ढुलाते रहने की अपनी पुण्य-प्रक्रिया से समस्त जड़-चेतन को प्रमुदित करती रहती है। इसमें इनका अपना क्या स्वार्थ ? सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्र इस जगती को अहर्निश प्रकाश प्रदान करते हुए भ्रमण करते हैं, यही जीवन की उपयोगिता एवं सार्थकता है।

सृष्टि का प्रत्येक जड़ परमाणु और कीट-पतंग जैसा प्रत्येक जीवधारी अपनी स्थिति से दूसरों का हितसाधन करता है। पशु दूध देते और परिश्रम से हमारी सुविधाएँ बढ़ाते हैं। जब छोटे-छोटे जीव-जंतु तक परोपकार का व्रत लेकर जीवनयापन करते हैं, तब क्या मनुष्य जैसे बुद्धिमान और विकसित प्राणी के लिए यही उचित है कि वह अपने लिए ही जिए ? *—अखण्ड ज्योति-जून १९६७ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अडिग निष्ठा के साथ कार्यक्षेत्र में उतरें

अनिश्चयी स्वभाव वाले लोग परावलंबी ही होते हैं। उन्हें अपनी बुद्धि पर न तो विश्वास होता है और न अपने निर्णय में पूरी आस्था। अनिश्चय एवं एकनिष्ठा के अभाव में आदमी अस्त-व्यस्त हाथ-पैर मारता हुआ अपनी सारी शक्ति को बिखेर देता है, जबकि किसी सफलता के लिए शक्तियों का संगठित एवं एकाग्र होना बहुत आवश्यक है।

सफलता पानी है तो दृढ़ निश्चयी बनिए। एक बार विवेकपूर्वक जो निश्चय कर लिया जाए, उसे पूरा करने में अपनी सारी शक्तियाँ संगठित रूप से नियोजित कर दीजिए। निश्चय करने से पूर्व अपने हितैषियों, मित्रों एवं शुभचिंतकों से परामर्श कर लेना ठीक हो सकता है, किंतु निश्चय हो जाने के बाद किसी के कहने से उसे बदलना अदृढ़ता का द्योतक होगा। अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुरूप जो काम उठाएँ, उसे पूरा करके ही मानिए। आपकी दृढ़ता निश्चय ही आपका कार्य सफल करेगी और आत्मविश्वास, योग्यता एवं सफलता में वृद्धि करेगी।

इस प्रकार निरालस्य होकर साहसपूर्वक तत्परता के साथ अडिग उद्योग करते हुए इस सिद्धांत में आस्था रखिए कि पुरुषार्थ मेरा अधिकार है और फल परमात्मा का। आप अवश्य उन्नति करेंगे और जीवन में मनोवांछित सफलता के अधिकारी बनेंगे। *—अखण्ड ज्योति-जून १९६७ पृष्ठ १३*

संसार का नवीन धर्म—अध्यात्म

उच्च मनोवृत्ति के व्यक्ति स्वाभिमान तथा धर्मरक्षा के लिए अवसर पड़ने पर 'रोटी' के प्रश्न की उपेक्षा कर देते हैं और अनेक बार उनको इस कार्य में अपने प्राण भी गँवा देने पड़ते हैं।

हम मानते हैं कि उपर्युक्त उदाहरण किसी विशेष परिस्थिति और विशेष व्यक्तियों के लिए ही हैं। साधारण व्यक्ति भूखा रहकर अथवा कोई हानि सहन करके आध्यात्मिकता का अनुयायी नहीं बन सकता तो भी अन्य लोगों से सत्य, न्याय और सहानुभूति का व्यवहार करना, किसी के साथ वैसा व्यवहार न करना जैसा कि हम अपने लिए नहीं चाहते, अध्यात्म के ऐसे नियम हैं, जिनको सही मानने में किसी को आपत्ति नहीं हो सकती। व्यक्ति का हित, समाज का हित, संसार का हित इसी पर निर्भर है। यह कोई जरूरी बात नहीं कि सब लोग अपना धर्म, जातीयता, भाषा, पहिनावा छोड़कर एकसे बन जाएँ, पर अपनी संस्कृति, धर्म की रक्षा करते हुए हमें दूसरे की संस्कृति और धर्म का भी आदर करना चाहिए। कलह या संघर्ष की वृद्धि तब होती है, जब मनुष्य दुराग्रह या पक्षपात के कारण उचित को छोड़ अनुचित का समर्थन करता है। इसलिए यदि हम संसारव्यापी शांति, सुख, प्रगति के पक्षपाती हैं और चाहते हैं कि हम स्वयं तथा अन्य लोग सुखी जीवन व्यतीत करें तो उसके लिए आध्यात्मिक मार्ग पर चलना ही हमारा कर्त्तव्य है। इसके लिए हमारा प्रथम कर्त्तव्य यही है कि अपने सुख-दुःख के समान दूसरों के सुख-दुःख को भी समझें। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६७ पृष्ठ ४२*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर-भक्ति और जीवन-विकास

जीव या मनुष्य परमात्मा का ही दुर्बल और विकृत भाव है। दरअसल जीव कोई वस्तु नहीं, परमात्मा ही अनेक रूपों में प्रतिभाषित हो रहा है। जब तक हमारी कल्पना जीवभाव में रहती है, तब तक अपनी शक्ति और सामर्थ्य भी वैसी ही तुच्छ और कमजोर दिखाई देती है। ईश्वर-भक्ति से कीट के अंग-परिवर्तन जैसा प्रारंभिक कष्ट तो अवश्यंभावी है, किंतु जीव का विकास सुनिश्चित है। प्रारंभ में वह स्वार्थ, परमार्थ, माया, ब्रह्म, लोक और परलोक की मोह-ममता में परेशान रहता है। कीट जिस तरह भ्रमर का गुंजन पसंद तो करता है, किंतु वह अंहभाव छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता, उसी प्रकार जीव का अंहभाव में बने रहना प्रारंभिक स्थिति है, उसके लिए जिद करना, मचलना साधना की प्रारंभिक अवस्था है। उसे पार कर लेने पर जब वह नितांत ब्राह्मी स्थिति अर्थात तदाकार में बदल जाता है तो उसका अहंभाव एक विशाल शक्तिमान रूप में परिणत हो जाता है। वह अपने को ही ब्रह्म के रूप में देखने लगता है। 'मैं ही ब्रह्म हूँ' यह स्थिति ऐसी है जिसमें जीव की शक्तियाँ विस्तीर्ण होकर ईश्वरीय शक्तियों में बदल जाती हैं।

संसार में सुख, स्वामित्व और विकास के लिए जो वस्तु आवश्यक है, वह शक्ति भी उसे मिलती है। यह निश्चित है कि मनोवांछित सफलता और जीवन विकास का अधिष्ठाता परमात्मा ही है। उसकी भक्ति के बिना वह सब उपलब्ध नहीं हो सकता, जिसकी कामना करते हैं।

— अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६७ पृष्ठ ४

परमात्मा को जानने के लिए अपने आप को जानो

विभिन्न साधनों से तुम अपने आप को पहचानो। जिस दिन आत्मशक्ति का विश्वास जाग जाता है, उस दिन परमात्मा के अस्तित्व का विश्वास जमते देर नहीं लगती। विश्वास का जमना उतना ही आनंददायक है, जितना परमात्मा की प्राप्ति।

मनुष्य अपनी छिपी हुई शक्तियों को पहचाने बिना शक्तिशाली नहीं बन सकता। जो जैसा अपने को जानता है या जिसकी जैसी अभीप्सा है, वह पैसा ही बन जाता है। अपने को जानना, सब सिद्धियों में बड़ी सिद्धि है। लाखों में एक-दो होते हैं जो अपने को जानने का यत्न करते हैं, यत्न करने वालों में भी थोड़े-से ऐसे होते हैं जो आत्मा के अस्तित्व को पहचानने के लिए देर तक अपने आप को निर्दिष्ट किए रहते हैं। जिसने भी मनुष्य देह में जन्म लिया है, वह आत्मा के समीप पहुँचा दिया गया है, किंतु थोड़े ही हैं जो उसमें प्रवेश पाते हैं।

शरीर में काम, क्रोध, मोह, संतोष, दंड, दया आदि अनेक भावनाएँ हैं, ये सब या तो आनंद की प्राप्ति के लिए हैं अथवा आनंद में विघ्न पैदा होने के कारण है। आनंद सबका मूल है, वैसे ही आनंद सबका लक्ष्य है। लक्ष्य और उसकी सिद्धि दोनों ही आत्मा में विद्यमान हैं। जो आत्मा को ही लक्ष्य बनाकर आत्मा के ही द्वारा अपने आप को बेधता है, वह उसे पाता भी है। आत्मा ही परमात्मा का अंश है, इसलिए आत्मा का ज्ञान हो जाने पर परमात्मा की प्राप्ति अपने आप हो जाती है। *— अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६७ पृष्ठ ६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन सुंदरतापूर्वक जिएँ

जीवन को सफल एवं सार्थक बनाने के लिए मनुष्य को अपनी पूरी शक्ति, पूरे प्रयत्न तथा पूरी आयु लगा देनी चाहिए। सफलता बहुत बड़े मूल्य पर ही मिलती है, जो व्यक्ति थोड़े-से प्रयत्न के साथ ही मनोवांछित सफलता पाना चाहते हैं, वे उन लोगों जैसे ही संकीर्ण विचार वाले होते हैं, जो किसी चीज को पूरा मूल्य दिए बिना ही हस्तगत करने को लालायित रहते हैं। ऐसे लोभी-लालची व्यक्ति का चरित्र किसी समय भी गिर सकता है। वह मानवीय आदर्शों से जल्दी ही पतित हो सकता है। सदा फल की लालसा मनुष्य को मिथ्याचारी और बेईमान बना सकती है। समाज में हम ऐसे कितने ही व्यक्तियों को देख सकते हैं, जो आज काम प्रारंभ कर कल ही उसका फल चाहने लगते हैं और इसलिए नीति का त्याग कर अनीति को अपनाकर चलने लगते हैं। अनीति द्वारा पाई हुई सफलता कभी भी यथार्थ रूप में संतोषदायक नहीं होती। अनीति का धन-धान्य मनुष्य के मन, बुद्धि तथा आत्मा का पतन कर देता है, जिससे वह इतना निर्बल और कायर हो जाता है कि यत्किंचित प्रतिकूलता आने पर घबरा उठता है और शीघ्र ही जीवन से घबराकर भागने की कोशिश करता है। यथार्थ उन्नति के लिए कोई अवधि निश्चित नहीं है और न उसे करना चाहिए। उचित आदर्शों के साथ अपना कर्त्तव्य करते रहना चाहिए, समय आने पर सफलता आप-से-आप उपलब्ध हो जाएगी। सफलता के लिए आदर्शों का पतन तथा नीति का त्याग उचित नहीं। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६७ पृष्ठ ७*

विचारशक्ति का जीवन पर प्रभाव

जो आदमी अपने प्रति उच्च तथा उदात्त विचार रखता है, अपने व्यक्तित्व का मूल्य कम नहीं आँकता, उसका मानसिक विकास सहज ही हो जाता है। उसका आत्मविकास, आत्मनिर्भरता और आत्मगौरव जाग उठता है। इसी गुण के कारण बहुत से लोग जो बचपन से लेकर यौवन तक दब्बू रहते हैं, आगे चलकर बड़े प्रभावशाली बन जाते हैं। जिस दिन से आप किसी दब्बू, डरपोक तथा साहसहीन व्यक्ति को उठकर खड़े होते और आगे बढ़ते देखें, समझ लीजिए कि उस दिन से उसकी विचारधारा बदल गई और अब उसकी प्रगति कोई रोक नहीं सकता।

विचारों में व्यक्ति-निर्माण की बड़ी शक्ति होती है। विचारों का प्रभाव कभी व्यर्थ नहीं जाता। विचार परिवर्तन के बल पर असाध्य रोगियों को स्वस्थ तथा मरणासन्न व्यक्तियों को नया जीवन दिया जा सकता है। यदि आपके विचार अपने प्रति अथवा दूसरों के प्रति ओछे, तुच्छ तथा अवज्ञापूर्ण हैं तो उन्हें तुरंत ही बदल डालिए और उनके स्थान पर ऊँचे, उदात्त तथा यथार्थ विचारों का सृजन कर लीजिए। यह विचार-कृषि आपके चिंता, निराशा अथवा पराधीनता के अंधकार से भरे जीवन को हरा-भरा बना देगी। अपने व्यक्तित्व को प्रखर तथा उज्ज्वल बनाने के लिए भजन-पूजन के समान ही थोड़ा बैठकर एकाग्र मन से इस प्रकार आत्मचिंतन करिए और देखिए कि कुछ ही दिन में आप में क्रांतिकारी परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगेगा। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६७ पृष्ठ १२*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विपत्तियों को कैसे जीता जाए ?

समतापूर्ण दृष्टिकोण मनुष्य का सबसे बड़ा हितसाधक है। इसकी उपलब्धि मनुष्य को तब ही होती है, जब वह संसार की प्रत्येक कार्यविधि को ईश्वर की इच्छा मानता है। अनुकूलताओं को गले लगाने और प्रतिकूलताओं से घृणा करने वाला मनुष्य जीवन में कभी उन्नति नहीं कर सकता। संसार में एकमात्र अनुकूलताओं की आशा लेकर चलने वाले मनुष्य को विफलताओं की मरुभूमि में भटकना ही पड़ेगा। अपने संपूर्ण मन-मस्तिष्क से जो अनुकूलताओं का ही उपासक बना रहता है और प्रतिकूलताओं के लिए जरा भी स्थान नहीं रखता, उसे यथा संभाव्य प्रतिकूलता के अवसर पर विचलित होकर अस्त-व्यस्त हो जाने के लिए सदैव प्रस्तुत रहना चाहिए। अनुकूलता में प्रसन्न और प्रतिकूलता में रोने वाले व्यक्ति झूले की तरह आगे-पीछे जाते हुए एक ही स्थान पर रहते हैं, वे न आगे बढ़ पाते हैं और न उन्नति कर पाते हैं।

संसार के प्रत्येक घटनाक्रम में ईश्वरीय आदेश का दृष्टिकोण रखकर ही अपना कर्त्तव्य करते रहना चाहिए। खिन्नताओं, व्यग्रताओं, भयों और विषादों से मुक्त रहकर जो प्रत्येक परिस्थिति में परिपूर्ण रहकर कार्य करता है, वह अवश्य उन्नति के शिखर पर पहुँचता है। यह अहैतुक प्रसन्नता का दृष्टिकोण, ईश्वर में अडिग विश्वास और संसार के प्रत्येक क्रिया-कलाप को उसकी ही इच्छा समझने से उपलब्ध हो सकता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

— अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६७ पृष्ठ १८

आज की सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता और लोकसेवा

नवयुग के आगमन की संभावना स्पष्ट है। आगामी विश्वव्यापी उथल-पुथल, समग्रक्रांति की पूर्व सूचना है। अच्छा हो ईश्वर की इच्छा में अपनी इच्छा मिलाकर हम चलें। आँधी-तूफान से टकराने की अपेक्षा समय रहते अपने को झुका लें। जो अवश्यंभावी है, जो उचित है, उसके अनुकूल चलना ही ठीक है।

स्वयं तो हम बदलें ही, दूसरे उन सबको भी बदलने की प्रेरणा दें, जिनको वस्तुत: प्यार करते हैं और हित चाहते हैं। स्त्री, पुत्र, भाई, भतीजे, कुटुंबी, संबंधी, मित्र, परिजन सभी को इस प्रकार की प्रेरणा करें कि सभी अपनी रीति-नीति बदलें, सुधारें। यह कर्त्तव्य हमें इन दिनों अधिक तत्परतापूर्वक पालन करना चाहिए, क्योंकि महाकाल की भावी दंड व्यवस्था अंधाधुंध नहीं सप्रयोजन है। यदि लोग बदल जाते हैं, सुधर जाते हैं तो उस क्रूर कर्म की विशेष आवश्यकता न रह जाएगी। हमारा परिवर्तन भावी आपत्तियों को टाल सकने या घटा सकने में समर्थ हो सकता है। विश्वमानव की आज सबसे बड़ी सेवा यही हो सकती कि हम जनसाधारण को दुर्बुद्धि त्यागने और सन्मार्ग पर चलने के लिए रजामंद करने का प्रयत्न करें। युग निर्माण योजना एक ऐसा ही व्यापक कार्यक्रम है। महाकाल की इच्छा भी पूरी हो जाए और हम काल दंड के प्रहारों से बच भी जाएँ, इसका यदि कोई उपाय हो सकता है तो वह युग निर्माण योजना के क्रिया-कलापों के माध्यम से जनमानस में अभीष्ट परिवर्तन प्रस्तुत कर देना ही होगा।

— अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६७ पृष्ठ ३६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम मनस्वी और आत्मबलसंपन्न बनें

परमार्थ के लिए स्वार्थ को छोड़ना आवश्यक है। आत्मकल्याण के लिए भौतिक श्री-समृद्धि की कामनाओं में मुँह मोड़ना पड़ता है। दोनों हाथ लड्डू मिलने वाली उक्ति इस क्षेत्र में चरितार्थ नहीं हो सकती। उन बालबुद्धि लोगों से हमें कुछ नहीं कहना जो थोड़ा-सा पूजा-पाठ करके विपुल सुख-साधन और स्वर्ग-मुक्ति दोनों ही पाने की कल्पनाएँ करते रहते हैं। दो में से एक ही मिल सकता है। जिसकी कामनाएँ प्रबल हैं, वह उन्हीं की उधेड़बुन में इतना जकड़ा रहेगा कि श्रेय साधना एक बहुत दूर की मधुर कल्पना बनकर रह जाएगी। जिसे श्रेय साधना है, उसे पेट भरने, तन ढकने में ही संतोष करना होगा, तभी उसका समय एवं मनोयोग परमार्थ के लिए बच सकेगा। सृष्टि के आदि से लेकर अब तक के प्रत्येक श्रेयार्थी का इतिहास यही है। उसे भोगों से विमुख हो त्याग का मार्ग अपनाना पड़ा है। आत्मोत्कर्ष की इस कीमत को चुकाए बिना किसी का काम नहीं चला।

तीर्थयात्रा, व्रत, उपासना, कथा-कीर्तन, प्रणाम, प्राणायाम जैसे माध्यम मन बहलाने के लिए ठीक हैं, पर उनमें किसी को आत्मा की प्राप्ति या ईश्वर दर्शन जैसे महान लाभ पाने की आशा नहीं करनी चाहिए। उपासना से नहीं साधना से कल्याण की प्राप्ति होती है और जीवन साधना के लिए व्यक्तिगत जीवन में इतना आदर्शवाद तो प्रतिष्ठापित करना ही होता है जिसमें लोकमंगल के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान एवं अनुदान संभव हो सके।

— अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६७ पृष्ठ २७

प्रकाश का दायित्व हमें ही पूरा करना होगा

आज का संसार अंधविश्वासों और मूढ़ मान्यताओं की जंजीरों में जकड़ा हुआ है। इन जंजीरों से जकड़े हुए लोगों की दयनीय स्थिति पर मुझे तरस आता है। एक विचार जो मुझे दिन में निकले सूरज की तरह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि व्यक्ति तथा समाज के समस्त दु:ख उनमें समाए हुए अज्ञान के कारण ही हैं।

संसार में प्रकाश कहाँ से उत्पन्न हो? यह प्रक्रिया बलिदानों द्वारा संभव होती रही है। बलिदानी वीर अपना उदाहरण प्रस्तुत कर लोगों के सामने एक परंपरा उपस्थित करते हैं, फिर दूसरे उन पदचिह्नों पर चलने लगते हैं। प्रकाश उत्पन्न करने की यही परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। इस धरती पर जो सच्चे शूरवीर अथवा उत्तम व्यक्ति उत्पन्न होते रहे हैं, उन्होंने त्याग और बलिदान का मार्ग अपनाया, क्योंकि अपने सुख को बलिदान करने से ही दूसरे के सुख की संभावना उत्पन्न होती है। इस युग में शाश्वत प्रेम और अनंत करुणा से भरे प्रबुद्ध हृदयों की जितनी अधिक आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नहीं रही। साहसपूर्ण कदम उठाने की जितनी आवश्यकता है, उतनी पहले कभी नहीं रही।

इसलिए हे प्रबुद्ध आत्माओ! उठो, संसार दु:ख-दारिद्रय की ज्वाला में झुलस रहा है। क्या तुम्हें ऐसे समय में भी सोते रहना शोभा दे सकता है? प्रकाश आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और वह तुम्हारे जागरण एवं बलिदान से ही उत्पन्न होगा।

— अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस विषम वेला में हमारा महान उत्तरदायित्व

इस ईश्वरप्रदत्त महान वरदान का उपयोग भौतिक सुविधाएँ कमाने तक ही सीमित रखा जाए, यह उचित नहीं। इनके साथ-साथ एक नैतिक उत्तरादायित्व यह भी जुड़ा हुआ है कि एकदूसरे को सन्मार्ग पर चलने की, कुमार्ग पर बढ़ने से रोकने की जिम्मेदारी उठाएँ।

अनाचार का बढ़ना तभी संभव होता है, जब दूसरे लोग उसे सहन करते हैं अथवा रोकने में उपेक्षा बरतते हैं। दुष्टता को प्रोत्साहन उसी आधार पर मिलता है। स्वार्थपरता, संकीर्णता और कायरता, अनीति की जननी है। देखने में ये दोनों बातें साधारण-सी लगती हैं, पर वस्तुतः अनीति की जननी यही हैं। कानून की दृष्टि में जिस प्रकार हत्या, लूट, डकैती, बलात्कार आदि दंडनीय अपराध हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक दृष्टि से, ईश्वरीय कानून की दृष्टि से संकीर्ण स्वार्थपरता तक सीमित रहना और सामाजिक उत्तरदायित्वों की उपेक्षा करना भी एक भयावह पाप हैं। लोगों की इन्हीं दुष्प्रवृत्तियों के कारण व्यक्ति और समाज का पतन होता है और फिर सभी को इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ता। पिछले दिनों यही होता रहा है। शेष लोग चुपचाप अपने बिलों में बैठे-बैठे दिन गुजारते और तमाशा देखते रहे हैं। छोटे-बड़े प्रतिरोधों द्वारा रोकने के लिए जो प्रयत्न किया जा सकता था, वह नहीं हुआ है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६८ पृष्ठ ६

हम तुच्छ नहीं, गौरवास्पद जीवन जिएँ

हाड़-मांस का पुतला दुर्बलकाय मानव प्राणी शारीरिक दृष्टि से तुच्छ और नगण्य है। मामूली जीव-जंतु, पशु-पक्षी जिस तरह का निसर्ग जीवन जीते हैं, उसी तरह जिंदगी की लाश नर-पशु भी ढोते रहते हैं। इस तरह की जिंदगी जीने से किसी का जीवनोद्देश्य पूरा नहीं होता।

'विचार' ही वह शक्ति है जिसने मनुष्य को अन्य प्राणियों की तुलना में अधिक सुख-सुविधाएँ उपार्जित करने में समर्थ बनाया। विचार का यह प्रथम चमत्कार है। इससे अगला चमत्कार तब प्रारंभ होता है, जब वह विचारणा की महान शक्ति, जीवन का उद्देश्य, स्वरूप और उपयोग करने की सही जानकारी प्राप्त करने में प्रवृत्त होता है। इसी मार्ग एवं प्रयास का नाम तत्त्वज्ञान, दर्शन एवं अध्यात्म है। विचारशक्ति का मूल्य और महत्त्व जिसे विदित हो गया, वह अपनी इस ईश्वरप्रदत्त दिव्य विभूति को परम लक्ष्य की प्राप्ति में प्रयुक्त करता है। फलस्वरूप उसका सारा जीवनक्रम ही बदल जाता है, उसका प्रत्येक क्रिया-कलाप उत्कृष्टता और आदर्शवादिता से ओत-प्रोत बनता चला जाता है।

यही मानव जीवन की गौरव तथा आनंद हैं। विचारशीलता का अवलंबन लेकर जीने में ही मनुष्य जन्म की सार्थकता है। अच्छा हो हम अपनी-अपनी विचारशक्ति और जिंदगी का मूल्य समझें और गतिविधियाँ अपनाएँ जो अपने स्तर और गौरव के उपयुक्त हैं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आचरण में श्रेष्ठता का समावेश

आत्मशांति की उपलब्धि संसार के सुखों और पदार्थों के भोग से संभव नहीं। उसकी प्राप्ति तो तब होती है, जब मनुष्य के जीवन और आचरण में श्रेष्ठता का समावेश होता है। श्रेष्ठता ही आत्मशांति का एकमात्र आधार है। श्रेष्ठ आत्मा वाले व्यक्ति कितने ही गरीब और एकाकी क्यों न हों, उन्हें असंतोष की यातना सहन नहीं करनी पड़ती। विद्वान, परमार्थी, भक्त तथा परोपकारी व्यक्ति श्रेष्ठ आत्मा वाले ही होते हैं। इसी संबल के आधार पर ही तो वे अभावों से भरा अपना जीवन शांति के साथ जीते हैं और संतोष के साथ छोड़ते हैं। उन्हें किसी तरह का मनस्ताप नहीं सताता। ऋषि, मुनि, महात्मा, मनीषी, चिंतक तथा दार्शनिक व्यक्तित्व न कभी धन-वैभववान रहे हैं और न उन्होंने सांसारिक पदार्थों के भोग में ही अपना जीवन निमग्न किया। उनका जीवन सदा ही सरलतम तथा सादा रहा है। भोजन, वस्त्र और निवास जितना साधारण कोटि का हो सकता है, उनका रहा। दिनचर्या और परिश्रम उनका इतना कठोर रहा है जो किसी के लिए कष्ट के समान ही हो सकता है। आगे भी इस कोटि के व्यक्ति इसी प्रकार अभाव भरा जीवन ग्रहण करेंगे और आज भी जो जहाँ हैं, जाकर देखा जा सकता है, ऐसा ही जीवनयापन करते दिखलाई देंगे। तब भी उनके समान सुखी तथा संतुष्ट कोई दूसरे कदाचित ही रह पाते हैं। इसका केवल एक ही कारण है और वह है—उनकी आत्मश्रेष्ठता।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६८ पृष्ठ २

श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है

अपने आप को, अपनी चेतन सत्ता को पहचानना आसान बात नहीं है। विद्यमान परिस्थितियाँ ही धोखा देने के लिए पर्याप्त होती हैं, फिर जन्म-जन्मांतरों के प्रारब्ध इतने भले नहीं होते जो मनुष्य को आसनी से क्षमा कर दें। हमारा असली व्यक्तित्व इतना स्पष्ट है कि उसका भावानुभूति एक क्षण में हो जाती है, वह परदों में नहीं रहता, फिर भी वह इतना जटिल और कामनाओं के परदों में छिपा हुआ है कि उसके असली स्वरूप को जानना टेढ़ा पड़ जाता है। साधना, उपासना करते हुए भी बार-बार पथ से विचलित होना पड़ता है। ऐसी असफलताएँ ही जीवन-लक्ष्य में बाधक हैं।

श्रद्धा वह प्रकाश है जो आत्मा की, सत्य की प्राप्ति के लिए बनाए गए मार्ग को दिखाता रहता है। जब भी मनुष्य एक क्षण के लिए लौकिक चमक-दमक, कामिनी और कंचन के लिए मोहग्रस्त होता है तो माता की तरह ठंढे जल से मुँह धोकर जगा देने वाली शक्ति यह श्रद्धा ही होती है। सत्य के सद्गुण, ऐश्वर्यस्वरूप ज्ञान की थाह अपनी बुद्धि से नहीं मिलती, उसके प्रति सविनय प्रेमभावना विकसित होती है, उसी को श्रद्धा कहते हैं।

श्रद्धा के बल पर ही मलिन चित्त, अशुद्ध चिंतन का परित्याग करके बार-बार परमात्मा के चिंतन में लगा रहता है। बुद्धि भी जड़-पदार्थों में तन्मय न रहकर परमात्म ज्ञान में अधिक-से अधिक सूक्ष्मदर्शी होकर दिव्यभाव में बदल जाती है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६८ पृष्ठ १३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सर्वोत्कृष्ट परमार्थ—ज्ञानयज्ञ

ज्ञान ही मनुष्य को अन्य जीवधारियों से भिन्न तथा उत्कृष्ट बना देता है अन्यथा मनुष्य भी अन्य प्राणियों की भाँति एक साधारण जंतु ही है। ज्ञान के आधार पर ही वह अपनी मानसिक तथा शारीरिक क्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास कर उन्नति करता है और सृष्टि में परमात्मा के बाद अपना विशिष्ट स्थान बनाता है। मानवीय प्रतिभा का विकास ज्ञान द्वारा ही होता है। उसके विवेक में आध्यात्मिक प्रकाश का कारण ज्ञान ही होता है और ज्ञान के आधार पर ही मनुष्य आत्मा-परमात्मा, सत्य-असत्य, प्रकृति और पुरुष को पहचानकर उनसे संबंध स्थापित कर पाता है।

ज्ञान की महिमा अपार है। जो ज्ञानार्जन के लिए उत्सुक होता है उस पर परमात्मा की महती कृपा ही समझनी चाहिए। ज्ञान की जिज्ञासा इस बात की सूचना है कि मनुष्य का भवबंधन से त्राण पाने का संयोग आ गया है। जिन्होंने भी संसार के दु:खों से त्राण पाया है उन्होंने एकमात्र सद्ज्ञान का ही अवलंबन लिया है। संसार के दु:खों से परित्राण पाने के लिए मनुष्य को सदैव ही ज्ञान की आवश्यकता रही है। इसलिए मनुष्य को सभी यज्ञों में श्रेष्ठ ज्ञानयज्ञ का ही यजन एवं विस्तार करते रहना चाहिए। फिर उसके लिए शिक्षा, स्वाध्याय अथवा सत्संग जिसकी भी आवश्यकता हो, उसे पूरा करने में प्रमाद अथवा आलस्य नहीं करना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६८ पृष्ठ २६*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

स्वार्थ ही न सोचते रहें, परमार्थ का भी ध्यान रखें

मनुष्य बाँस की पोली बाँसुरी की तरह है, उसमें जैसी फूँक फूँकी जाती है, वैसे ही स्वर निकलते हैं। दर्पण की तरह है मनुष्य जीवन। आंतरिक मान्यताओं का स्वरूप ही उस दर्पण में दीख पड़ता है। विचारधारा जैसी फूँक फूँकती है, मनुष्य वैसा सोचता, बोलता और करता है। इसलिए समाज को बदलना हो तो व्यक्तियों को बदलना पड़ेगा। व्यक्तियों को बदलना हो तो उनकी आस्थाएँ और विचारणाएँ उलटनी पड़ेंगी। उलटे को उलटा कर देने से सीधा हो जाता है। आज उलझे हुए लोकमानस को उलट दिया जाए तो व्यापक नरक को सुव्यवस्थित स्वर्ग एवं सतयुग में बदला जा सकता है। असुर को मनुष्य और मनुष्य को देवता बनाने का जादू विचार-परिवर्तन के गर्भ में छिपा हुआ है। विचार बदल जाने को ही कायाकल्प कहते हैं। शरीरों का कल्प कठिन हैं, पर अंत:करण का कल्प पूर्णतया संभव है। अगणित दुष्ट-दुरात्मा सद्विचारों का पारस छूकर अपनी लोहे जैसी कलुषित कालिमा से मुक्त हुए हैं और बहुमूल्य स्वर्ण की तरह सम्मानित हुए हैं। समय आ गया जब कि इस जादू का व्यापक परिमाण में प्रयोग किया जाना चाहिए।

मनुष्य का अंत:करण बदल डालने से उसका बाह्य जीवन बदलेगा। व्यक्तियों के बदलने से समाज-संसार का बदलना सुनिश्चित है। समाज और कुछ नहीं व्यक्तियों का समूह मात्र ही तो है। व्यक्ति बदले या समाज बदले। समाज का, समूह का, बदलना ही युग परिवर्तन है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६८ पृष्ठ ३१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मा को देखें, खोजें और समझें

अहंकार के वशीभूत होकर शारीरिक संतुष्टि तक सीमित रहने वाले अपनी भूल को तब समझ पाते हैं, जब जीवन में पतझड़ का समय आ जाता है और शरीर पीले पत्ते की तरह गिर जाने की स्थिति में होता है। उस पटाक्षेप के समय उसे निश्चय ही संसार की असारता, असत्यता और क्षणभंगुरता का ज्ञान एवं आत्मा की चिरंतनता और अविनश्वरता की प्रतीति होती है। तब समय निकल चुका होता है। उस अंतिम समय में कुछ भी कर सकने का अवसर नहीं रहता। उस समय हाथ मल-मलकर पछताने के सिवा और कुछ भी शेष नहीं रह जाता। उस समय इस पश्चात्ताप के साथ संसार छोड़ने पर विवश होना पड़ता है कि जिस सत्य की खोज के लिए सुरदुर्लभ मानव जीवन मिला था, उसकी उपेक्षा कर हाय हम संसार की तुच्छ बातों में ही लगे रहे। हमने वह सब कुछ किया, जो नहीं करना था और वह कुछ भी नहीं किया, जो कर्त्तव्य था। उस घड़ी उस आत्मा की उपेक्षा करने वाले व्यक्ति की क्या दशा होती होगी ? उसके हृदय में किस भयानक पछतावे और विवशता की आग जलती होगी, इसे तो वही बतला सकते हैं, जिन्होंने उस स्थिति का भोग किया है।

कितना अच्छा हो कि मनुष्य आवश्यकता भर अपने सांसारिक कर्त्तव्य करता रहे और बाकी का समय अध्यात्म मार्ग से आत्मा की खोज करने में भी लगाता रहे, तो उसके लोक-परलोक एक साथ बनते चलें।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६८ पृष्ठ ७

सच्ची व चिरस्थायी प्रगति के दो अवलंबन

भौतिक प्रगति के लिए बलिष्ठ शरीर, प्रशिक्षित मस्तिष्क, आकर्षक व्यक्तित्व, अभीष्ट उपार्जन, परिपूर्ण परिवार, आवश्यक वातावरण तथा अनुकूल अवसर की अपेक्षा रहती है। यह साधन जिसे जितने मिल जाते हैं, वह उतनी ही लौकिक सफलता प्राप्त कर लेता है।

आत्मिक प्रगति का मूल्य, महत्त्व, सुख एवं प्रतिफल भौतिक सफलताओं की अपेक्षा, सहस्र गुना अधिक है। इतने पर भी उसके लिए दो ही साधन पर्याप्त हैं। एक भावनापूर्ण उपासना, दूसरा जीवन को उत्कृष्ट, अनुकरणीय बनाने की साधना। इन दोनों के लिए यदि स्थिर मति और प्रगाढ़ निष्ठा के साथ प्रयत्न किया जाए तो निस्संदेह आत्मिक प्रगति भी उसी तरह मिल सकती है, जैसी कि भौतिक प्रगति।

जीवन की महत्ता और सफलता उसकी आत्मिक प्रगति पर निर्भर है। भौतिक सफलताएँ उतनी देर ही आनंद देती हैं, जब तक कि उनकी प्राप्ति नहीं होती है। जैसे ही वह मिली कि उनका आनंद समाप्त हुआ। सच्चा और चिरस्थायी सुख और लाभ आत्मिक प्रगति पर ही अवलंबित है। इसलिए जो मानव जीवन का श्रेष्ठतम सदुपयोग करना चाहते हैं और जिस आनंद के लिए यह जन्म मिला है, उसे प्राप्त करने के इच्छुक हैं, उन्हें आत्मिक प्रगति के लिए तत्पर होना चाहिए और उसके दोनों आधारों, उपासना और साधना का अवलंबन ग्रहण करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महान अवलंबन का परित्याग न करें

मधुमक्खी और भौंरे केवल पुष्पों की समीपता से ही जीवित रह सकते हैं। जाग्रत आत्माएँ केवल उत्कृष्टता की भूमिका का रसास्वादन करने के लिए जीवन धारण करती हैं। यह स्तर कैसे प्राप्त हो ? कहाँ से प्राप्त हो ? इन प्रश्नों का उत्तर एक ही हो सकता है—ईश्वर की समीपता व उपासना। उपासना हमें वह प्रकाश और मार्गदर्शन प्रदान करती है, जिससे समस्त उत्कृष्टताओं का समुच्चय भगवान हमारे समीप आता है और अपनी श्रेष्ठताओं से हमें ओत-प्रोत कर देता है।

प्रकृति और परमेश्वर के संयोग से यह जगत् बना है। प्रकृति जड़ है। उसमें जड़ता और तमोगुण ही भरा है। स्थूल पदार्थ केवल इंद्रिय सुख दे सकते हैं। वे वासना का क्षणिक सुख और तृष्णा का भ्रम-जंजाल पैदा कर सकते हैं, उत्कृष्टता उनमें नहीं। उत्कृष्टता तो उच्चस्तरीय उस स्थिति में हैं, जिसे ईश्वर की समीपता कहते हैं। ईश्वर उत्कृष्ट है, वही हमें उत्कृष्टता प्रदान कर सकता है। संतोष और आनंद से अंत:करण को परिपूर्ण कर सकने वाली स्थिति उत्पन्न करने की क्षमता ईश्वर की समीपता में है और उसी को प्राप्त करने के लिए उपासना की जाती है। इस आवश्यक नित्यकर्म का पालन करना ही हमारे लिए उचित है। उत्कृष्टता की अनुभूतियों के संपर्क में आकर ही हम उन दैवी संपदाओं के अधिपति बन सकते हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए यह महान मानव जीवन उपलब्ध हुआ है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६८ पृष्ठ ७

व्यष्टि का समष्टि में विसर्जन

एक बीज डाला जाता है, तब वृक्ष खड़ा होता है। बीज सारे वृक्ष का मूल है। मनुष्य जीवन का भी एक वैसा ही मूल है, चाहे उसे परमात्मा कहें, ब्रह्म या चेतना शक्ति। जीवन के मूल स्रोत से बिछुड़ जाने के कारण ही मनुष्य शांति और जीवन की पवित्रता से अलग पड़ जाता है।

मनुष्य अपने आप को जीवन के मूल स्रोत के साथ संयुक्त कर देता है तो वह विशाल प्रजा के सुख-दु:ख के साथ एक तन हो जाता है। समष्टि में डूबकर व्यक्तिगत अहंता, स्वार्थ, संग्रह, हिंसा, छल की क्षुद्रताओं से बच जाता है। स्रोत के साथ एकात्म हो जाने पर मृत्यु, शून्यता और एकाकीपन का भय तिरोहित होता है।

वृक्ष का गुण है चारों ओर फैलना। हम भी फैलें। घर, परिवार, समाज, देश और विश्व के साथ प्रेम करें, स्नेह करें, आदर और सद्भाव भरें। किसी को छाया की आवश्यकता होती है, उसे छाया दें, जिसे सहारे की आवश्यकता हो, उसे सहारा दें। अपनी व्यष्टि को विश्व-आत्मा के साथ घुलाने के लिए जितना फैल सकते हों, हमें फैलना चाहिए। समष्टि में अपने को विसर्जित कर देना ही जीवन की सार्थकता एवं धर्म है।

जब हम फैलें तब भी अपने मूल स्रोत को न भूलें, नहीं तो फिर उसी जड़ता और भय में खो जाएँगे, जिससे निकलने के लिए ही मनुष्य जीवन का आविर्भाव हुआ है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९६८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर हमारा सच्चा जीवन सहचर है

अनेक लोग जरा-सा संकट आते ही बुरी तरह घबरा जाते हैं। हाय-हाय करने लगते हैं। निराश और हतोत्साहित होकर ईश्वर के प्रति अनास्थावान होने लगते हैं। यह ठीक नहीं है। आपत्तियाँ संसार में सहज संभाव्य हैं, किसी समय भी आ सकती हैं, किंतु उनसे घबराना नहीं चाहिए। उन्हें ईश्वर का अपने बच्चों के साथ एक खेल समझना चाहिए। जैसे कोई कागज का भयावह चेहरा लगाकर कभी-कभी बच्चों को डराने का विनोद किया करता है, उसी प्रकार ईश्वर भी संकट की स्थिति लाकर अपने बच्चों के साथ खेल किया करता है। उसका आशय यही होता है कि बच्चे भयावह स्थितियों के अभ्यस्त हो जाएँ और डरने की उनकी आदत छूट जाए। वे संसार में हर संकट का सामना करने के योग्य बन जाएँ। आपत्तियों को ईश्वर का खिलवाड़ समझकर डरना नहीं चाहिए।

आपत्तियाँ उन्हीं के लिए भय का कारण बनती हैं, जो ईश्वर विश्वासी नहीं होते, उनमें ईश्वर के मंगल मंतव्य का आभास नहीं देखते, अन्यथा संसार की किसी भी परिस्थिति से डरने का कोई कारण नहीं। जिसे ईश्वर की कृपा में विश्वास है, उसकी सर्वशक्तिमत्ता में अखंड आस्था है, जो उसे अपना स्वामी, सखा और माता-पिता समझता है, उसे किसी घात से डरने का क्या अर्थ? डरना तो उसे चाहिए, जिसने उस सर्वशक्तिमान का साथ छोड़ दिया है। — *अखण्ड ज्योति-मई १९६८ पृष्ठ २*

कामनाओं को नियंत्रित और मर्यादित रखें

शिथिल एवं अधूरी कामनाएँ भी अशांति का एक कारण होती हैं। शिथिल कामना वाला व्यक्ति थोड़ा-सा प्रयत्न करके बड़ी उपलब्धि चाहने लगता है और जब उसको नहीं पा सकता तो समाज अथवा परिस्थितियों को दोष देकर जीवनभर असफलता के साथ बँधा रहता है।

अपनी स्थिति के परे की कामनाएँ करना, अपने को एक बड़ा दंड देने के बराबर है। मोटा-सा सिद्धांत है, "अपनी शक्ति के बाहर की गई कामनाएँ कभी पूर्ण नहीं हो सकतीं और अपूर्ण कामनाएँ हृदय में काँटे की तरह चुभा करती हैं।" मनुष्य को अपने अनुरूप, अपने साधनों और शक्तियों के अनुसार ही कामना करते हुए अपने पूरे पुरुषार्थ को उस पर लगा देना चाहिए। इस प्रकार एक सिद्धि के बाद दूसरी सिद्धि के लिए पूर्वसिद्धि और उपलब्धियों का समावेश कर आगे प्रयत्न करते रहना चाहिए। इस प्रकार एक दिन वह कोई बड़ी कामना की पूर्ति भी कर लेगा।

निस्संदेह कामनाएँ मनुष्य का स्वभाव ही नहीं आवश्यकता भी है, किंतु इनका औचित्य, नियंत्रण, दृढ़ और प्रयत्नपूर्ण होना भी वांछनीय है। तभी यह जीवन में अपनी पूर्ति के साथ सुख-शांति का अनुभव दे सकती हैं अन्यथा अनियंत्रित एवं अनुपयुक्त कामनाओं से बड़ा शत्रु मानव जीवन की सुख-शांति के लिए दूसरा कोई नहीं है। — *अखण्ड ज्योति-जून १९६८ पृष्ठ १६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मसत्ता से संबद्ध होने का माध्यम

आत्मचिंतन जिसे आत्मज्ञान का उपाय माना गया है, अपने प्रति विचार करना ही तो है। विचारशक्ति के द्वारा ही हम अपने प्रति किसी स्थायी प्रतीति का सृजन कर सकते हैं। विचार ही वह माध्यम हैं जो आत्मा और परमात्मा के बीच संबंध-सूत्र की भूमिका पूरी किया करते हैं। अपने विचारों को विचार द्वारा देखिए और पता लगाइए कि आप किस स्थिति में हैं ? आपका जीवनयान ठीक उस पथ पर अग्रसर हो रहा है या नहीं जो परमात्मतत्त्व की प्राप्ति के सर्वोच्च लक्ष्य की ओर जाता है। यदि ऐसा है तो निरंतर चलते जाइए।

मनुष्य का सर्वोच्च लक्ष्य परमात्मतत्त्व से स्थायी संबंध स्थापित करना है। मनुष्य उस परम प्रवाह की एक अविच्छिन्न तरंग है, यह प्रतीति प्राप्त कर लेना ही आत्मज्ञान माना गया है। इसका एकमात्र उपाय आत्मचिंतन है, जिसे विचार-क्रिया भी कह सकते हैं। इस प्रकार यदि हम इस विचार का अभ्यास करते हुए लगातार आगे बढ़ते रहें—''हम स्थूल नहीं सूक्ष्म जीवन हैं, जो अजर और अमर है, जिसका सीधा संबंध उस परमात्मतत्त्व से ही रहता है, किंतु अज्ञान का अंधकार उस सत्य का अनुभव नहीं होने देता। इसलिए अब हम उस अंधकार से निकलकर प्रकाश में आ गए हैं। हमारी यह प्रतीति निरंतर बढ़ती जाती है कि हम बिंदु रूप में सिंधु और आत्मा के रूप में परमात्मा ही हैं, तो कोई कारण नहीं कि हम शीघ्र ही अपने सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त न कर लें।''

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६८ पृष्ठ ४

आत्मिक प्रगति सद्ज्ञान पर निर्भर

ज्ञानप्राप्ति का एक उपाय अनुभव भी है। सांसारिक चेष्टाओं को ध्यानपूर्वक देखा और समझा जाए। दूसरे व्यक्तियों के गुण, कर्म, स्वभाव का परिचय पाकर उनके व्यवहार का परिणाम देखा-समझा जाए और उससे शिक्षा प्राप्त की जाए। जब सत्कर्म करने वालों को सुख-शांति, संतोष और सम्मान का अधिकारी बनते देखें तो मान लेना चाहिए कि यही मार्ग हमारे चलने योग्य है।

इसी प्रकार मनुष्य अपने रहन-सहन, आचार-व्यवहार और गुण-कर्मों के परिणाम को देखकर भी शिक्षा ले सकता है। अपना सुधार कर अपने को ठीक मार्ग पर चलाकर ठीक लक्ष्य पर पहुँच सकता है। तात्पर्य यह कि सत्संग-स्वाध्याय, चिंतन-मनन और अनुभव के आधार पर व्यक्ति को सद्ज्ञान प्राप्त करने का निरंतर प्रयास करते ही रहना चाहिए।

बिना ज्ञान के न तो जीवन सफल होता है और न सार्थक। अज्ञानावस्था में भौतिक और आत्मिक दोनों जीवनों का नाश हो जाता है। इसलिए इस अंधकार से निकलकर ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर बढ़ते ही रहना चाहिए। इसमें प्रमाद अथवा आलस्य करने का अर्थ है—अपने सुर दुर्लभ मानव जीवन को नष्ट कर देना, जिसमें भौतिक उन्नति तो की ही जा सकती है, आत्मप्रकाश भी पाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६८ पृष्ठ २२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य, अनंत शक्ति का भंडार है

मनुष्य अपने आप में एक परिपूर्ण इकाई है। उसमें वे समस्त शक्तियाँ और संभावनाएँ जन्मजात रूप में विद्यमान हैं, जिनके आधार पर किसी भी दिशा में पूर्णता एवं सफलता के उच्च शिखर पर पहुँचना संभव हो सकता है।

समस्त दैवी शक्तियों का प्रतिनिधित्व मनुष्य की अंतश्चेतना करती है। प्रसुप्त पड़ी रहने पर वह भले ही अपना गौरव प्रकट न कर सके, पर जब वह जाग जाती है तो यही अंतश्चेतना व्यक्तित्व में अगणित ऐसे सद्गुण प्रस्फुटित करती है, जिनसे किसी दिशा में चमत्कार प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

बाहरी हानि-लाभ, सहयोग और अवरोध मनुष्यता की प्राप्ति एवं अवगति के उतने बड़े कारण नहीं, जितने कि अपने आंतरिक सद्गुण एवं दुर्गुण। व्यक्ति स्वयं ही अपने उत्थान, पतन का उत्तरदायी है। जिसने अपने को समझा, सँभाला और बढ़ाया, वह निश्चित रूप से प्रगति के पथ पर अग्रसर हुआ है। अपने भीतरी शक्ति-कोश को जगाने पर मनुष्य अपरिमित दिव्यशक्तियों से विभूषित हो सकता है।

बाहरी सहायता की अपेक्षा करने की तुलना में यह अच्छा है कि मनुष्य अपने भीतर छिपी सत्प्रवृत्तियों को ढूँढ़े एवं उभारे। प्रगति का सारा आधार व्यक्ति की अंतश्चेतना और भावनात्मक स्फुरणा पर ही तो अवलंबित है। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६८ पृष्ठ १*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अनंत आनंद का स्त्रोत—आध्यात्मिक जीवन

लोगों की यह धारणा भ्रांतिमूलक है कि परमात्मा किसी को सुखी अथवा समृद्धिशाली बनाता है। परमात्मा स्वयं अपने हाथ से किसी को वैसा नहीं बनाता। मनुष्य स्वयं ही अपने आचरणों से वैसा बन जाता है। जो जितना ही सर्वमूल परमात्मतत्त्व की ओर अभिमुख होकर उसके आदेशों का पालन करता जाएगा, वह उतना ही सुखी और समृद्धिशाली बनता जाएगा। इसी बात को स्पष्ट करते हुए भगवान ने गीता में कहा है—"आत्मा ही आत्मा का बंधु और आत्मा ही आत्मा का शत्रु है।" अर्थात हम स्वयं ही अपने मित्र और स्वयं ही अपने शत्रु हैं। जितने ही हम अपने अंदर प्रवाहमान परमतत्त्व के प्रति अनुकूल होते जाएँगे, जगत में हमारा और हमारे प्रति जगत का मित्रभाव बढ़ता जाएगा और जितना ही हम इसके विपरीत दिशा में आचरण करेंगे, शत्रुभाव की वृद्धि करते जाएँगे। जितना ही हम अपने आदर्शों को उन्नत और अपने हृदय को दिव्यशक्ति की ओर उन्मुख होने का अवसर देंगे, उतना ही एकात्मता से उद्भूत आनंद के अधिकारी बनते जाएँगे।

अहंकारजन्य भौतिक भावना ही दु:खों का मूल कारण है। हमारी आत्मा की परिधि जितनी संकीर्ण होती जाती है, उतनी ही घुटन हमें अनुभव होती है। इसके विपरीत ज्यों-ज्यों हम अध्यात्मवाद की ओर, आत्मा एवं परमात्मा के ऐक्य की ओर प्रसार करते जाएँगे, हम उन्मुक्त पक्षी की भाँति अनंत के आनंद-प्रवाह में बहने लगेंगे। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६८ पृष्ठ ९*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रसन्न यों रहा जा सकता है

कभी भी अनुभव किया जा सकता है कि जब हम किसी की उन्नति, सफलता अथवा उपलब्धि को ईर्ष्या-द्वेष से परे होकर देखते हैं तो हमें एक अहैतुकी तथा आत्मीय प्रसन्नता का अनुभव होता है। जिस दिन भी हमारा एक कार्य अथवा एक कथन किसी दूसरे को प्रसन्न कर देता है, वह दिन हमारे लिए बड़ा प्रसन्न दिन होता है। जब हम किसी के लिए कुछ त्याग करते हैं, तब हमारे हृदय में एक अनिर्वचनीय संतोष की पुलक उत्पन्न हो जाती है। जब हम किसी दुखी के साथ सहानुभूति प्रकट करते हैं तो हमारे स्वयं आँसू निकल आते हैं, जिनमें एक आध्यात्मिक सुख की छाया होती है। इस प्रकार कहना न होगा कि जब हम दूसरे की प्रसन्नता में अपनी प्रसन्नता का एकीकरण कर देते हैं तो हमारे लिए संसार में किसी भी परिस्थिति में अप्रसन्नता का कोई भी अवसर एवं अवकाश नहीं रह जाता।

निश्चय ही हमें प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए सौहार्द्र, सहानुभूति और सौजन्य के व्यवहार को अपने जीवन में स्थायी स्थान देना ही चाहिए। यदि हम जीवन के परमलक्ष्य प्रसन्नता जैसी महान उपलब्धि के लिए इतना छोटा तप, इतना साधारण प्रयत्न भी नहीं कर सकते तो हमें कोई अधिकार नहीं है कि हम उस आनंद के लिए लालायित हों। हमें दुखी रहना ही चाहिए और उसकी शिकायत करने की अनधिकार चेष्टा से विरत होना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६८ पृष्ठ १८*

परहित सरिस धर्म नहिं भाई

परोपकार एवं परमार्थ से विमुख रहना, समाज के साथ विश्वासघात करने के बराबर है। हम आज जो कुछ हैं या हमारे पास जो कुछ धन-संपत्ति, पद-प्रतिष्ठा और अवसर-संयोग हैं, वे सब समाज द्वारा हमारे ऊपर उपकार किए जाने का ही फल है। यदि समाज ने हमारी उपेक्षा की होती, हमारे हित से सर्वथा मुख मोड़ लिया होता तो हमारा अस्तित्व ही आपत्तिग्रस्त हो जाता। थोड़ी दूर भी अपना जीवन चल सकना कठिन हो जाता। अस्तु, समाज के प्रत्युपकार के लिए कुछ न करना कृतघ्नता ही होगी, उसकी अपेक्षाओं के प्रति विश्वासघात होगा जो कि न तो लौकिक दृष्टिकोण से शुभ है और न पारलौकिक दृष्टि से कल्याणकारी। लोक और परलोक, शरीर और आत्मा, सारे मानवीय अनुबंधों के मंगल के लिए परोपकार एवं परमार्थ में निरत रहना परमावश्यक है। इससे विमुख होना अपना वर्तमान और भविष्य दोनों को बिगाड़ लेना है। इसी तथ्य और अपने अनुभव के आधार पर ही तो महर्षि व्यास ने कहा है—

''जीवन उसी का ही सफल एवं सार्थक है, जो सदा परोपकार में प्रवृत्त रहता है। निश्चय ही परोपकारी को न पाप का भय रहता है और न पतन का। वह तो लोक अथवा परलोक सब जगह श्रेय का ही अधिकारी बनता है।'' *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६८ पृष्ठ २१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान और श्रम का संयोग आवश्यक

मनोबल का विकास ही साहस, सूझ-बूझ, कुशलता, कलाकारिता, योग्यता का प्रतीक है, किंतु केवल बौद्धिक योग्यता ही मनुष्य को पूर्णतया संतुष्ट नहीं कर पाती। हृदय और उसके उद्‌गार ही ऐसे हैं, जिनकी आवश्यकता मनुष्य ही नहीं, साधारण जीवधारियों को भी होती है। प्रेम, स्नेह, वात्सल्य, सौजन्य, श्रद्धा, निष्ठा, आस्था का स्थान मनुष्य जीवन में मानसिक शक्तियों से भी अधिक है। पढ़े-लिखे व्यक्ति यदि हृदयहीन हैं तो अपार संपत्ति और सफलता होने पर भी उनका व्यक्तिगत जीवन दुखी रहता है, पर जिन लोगों के जीवन में प्रेम, ममत्व, आत्मीयता, विश्वास की भावनाएँ होती हैं, वे अनपढ़ होने पर भी बड़े प्यारे लगते हैं। बहुत से अशिक्षित व्यक्तियों के कौटुंबिक, दांपत्य और सामाजिक संबंध बड़े मधुर होते हैं। यह सब हृदय का ज्ञान कहलाता है, उसकी आवश्यकता बौद्धिक ज्ञान से अधिक है। सांसारिक दृष्टि से दोनों ही आवश्यक हैं। जिसको उनका एक सम्मिलित रूप दिया गया है, शास्त्रकार उसे 'विद्या' कहते हैं।

आधुनिक शिक्षा केवल शिक्षा है, विद्या नहीं, जबकि जीवन के अधिकतम विकास और संतुष्टि के लिए उभयनिष्ठ स्थिति आवश्यक है। हम जो ज्ञान प्राप्त करें, वह बुद्धि विकास के साथ-साथ आत्मविकास का भी माध्यम होना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६८ पृष्ठ ३१*

जीवन की महत्ता समझें और उसका सदुपयोग करें

मनुष्य-जीवन नगण्य-सी ऐसी तुच्छ वस्तु नहीं है, जिसे हलकी दृष्टि से देखा जाए और हलके कार्यों में खरच कर दिया जाए। यह निरंतर प्रगति और निरंतर तप का परिणाम है। उसके मूल्य और महत्त्व को समझना चाहिए। यह सोचा जाना चाहिए कि इस सुअवसर का लाभ किस प्रकार उठाया जाए? ऐसे अवसर जो बार-बार हाथ नहीं आते, उपेक्षा और उपहास में गँवाने नहीं चाहिए, वरन सतर्कतापूर्वक यह चेष्टा करनी चाहिए कि उसका समुचित सदुपयोग हो और परिपूर्ण लाभ मिले।

मनुष्य-जीवन इसलिए है कि उसे पाकर जीवात्मा अपनी महान उत्कृष्टता को विकसित करके अलौकिक शांति और संतोष का आनंद-लाभ प्राप्त करे। आंतरिक उत्कृष्टता सत्कार्यों के निंरतर अभ्यास पर निर्भर है। पढ़ते-सुनते या सोचते-विचारते रहने में आत्मकल्याण की हलकी जानकारी तो प्राप्त होती है, पर उससे जीवनक्रम में किसी महानता का अवतरण होने की आशा नहीं की जा सकती। श्रेष्ठ कार्यों की शृंखला का दिनचर्या में अविच्छिन्न संबंध होना ही केवल मात्र वह उपाय है, जिससे मनुष्य ऊँचा उठता है और सफल जीवन का लक्ष्य प्राप्त कर सकने में समर्थ होता है। उचित है कि हम इस दृष्टिकोण को विकसित करें और इस सुअवसर का परिपूर्ण लाभ उठाएँ जो हमें मनुष्य-जीवन के रूप में आज उपलब्ध है। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६८ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समस्त शक्तियों का भंडार—एकाग्र मन

जीवन में सफलता के लिए मानसिक एकाग्रता की नितांत आवश्यकता है। इससे मानसिक शक्तियों का जागरण तथा परिवर्द्धन होता है किंतु इसकी सिद्धि संभव तभी है, जब मनुष्य की विचारधारा शुद्ध, प्रबुद्ध एवं उपयोगी हो। विचारों की यह विशेषता तभी प्राप्त होती है, जब मनुष्य सचाई के साथ जीवन का कोई लक्ष्य लेकर चलता है। इस प्रकार सबसे पहले अपने जीवन का एक निश्चित लक्ष्य निर्धारित किया जाए। उसी के अनुरूप विचार, चिंतन और मनन करते रहा जाए। इससे हृदय में एक गंभीरता का समावेश होगा। बाहर की सारी चंचलताएँ और अंदर की सारी चंचलताएँ नष्ट होती चलेंगी और तब मन में एकाग्रता का भाव आने लगेगा।

मन की एकाग्रता की उपलब्धि होते ही मनुष्य के अंदर सोई सारी शक्तियाँ जाग उठेंगी, जिनके बल पर वह असंभव दीखने वाले कामों को भी संभव कर सकता है। बिखरे मन और विशृंखल शक्ति से संसार में कोई भी बड़ा काम नहीं किया जा सकता। अपनी शक्तियों का नियोजित उपयोग ही वह उपाय है, जिससे किसी भी कार्य की सिद्धि प्राप्त की जाती है, किंतु इस उपाय का प्रयोग एकमात्र एकाग्र मन पर ही निर्भर है। अस्तु, मनुष्य को अभ्यास अथवा साधना द्वारा मानसिक एकाग्रता प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६८ पृष्ठ १२*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आत्मत्याग ही सर्वोच्च धर्म

जीवन का एक लक्ष्य है ज्ञान और द्वितीय सुख। ज्ञान और सुख के समन्वय का ही नाम मुक्ति है। आत्मचिंतन के द्वारा माया बंधनों और सांसारिक अज्ञान को काट लेते हैं और विषय-वासना से छूट जाते हैं तो हम मुक्त हो जाते हैं, किंतु ऐसी मुक्ति तब तक नहीं मिल सकती, जब तक सृष्टि के शेष प्राणी बंधन में पड़े हैं।

जब तुम किसी को क्षति पहुँचाते हो तो तुम अपने आप को क्षति पहुँचाते हो। तुम में और तुम्हारे भाई में कोई अंतर नहीं हैं। जिस तरह छोटे-छोटे अवयवों से मिलकर शरीर बना है, उसी प्रकार छोटे-छोटे प्राणियों से मिलकर संसार बना है। कान को दु:ख होता है तो आँख रोती है, उसी तरह समाज के किसी भी व्यक्ति का दु:ख तुम्हारे पास पहुँचता है, इसलिए केवल अपने दु:ख से मुक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती।

इस कसौटी पर जब लोगों को अपने लिए बढ़-चढ़कर अधिकार माँगते देखता हूँ तो ऐसे आदमी से मुझे बड़ी घृणा होती है। अधिकार व्यक्ति को स्वार्थी और संकीर्ण बनाते हैं। विश्व में जो कुछ अशुभ है, उसका उत्तरदायित्व प्रत्येक व्यक्ति पर है। अपने भाई से अपने को कोई पृथक नहीं कर सकता। सब अनंत के अंश हैं। सब एकदूसरे के रक्षक और सहयोगी हैं। वास्तव में वही सच्चा योगी है, जो अपने में संपूर्ण विश्व को और संपूर्ण विश्व में अपने को देखता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९६८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सबसे बड़ी सेवा

दूसरों के संकल्प और विचार जान लेना बहुत कठिन है, किंतु अपने मन की भावनाओं को बहुत स्पष्ट समझा, सुना और परखा जा सकता है। यदि औरों की सेवा करना चाहते हैं तो पहले अपनी सेवा की योजना बनाओ, अपना सुधार सबसे सरल है। साथियो! तुम जितना अपने अंत:करण का परिमार्जन और सुधार कर लोगे, यह संसार तुम्हें उतना ही सुधरा हुआ परिलक्षित होगा।

अंत:करण एक मुख है। उसे चेतना के दर्पण में देखने और परखने से उसकी मलिनताएँ भी दिखाई देने लगती हैं और सौंदर्य भी। आत्मनिरीक्षण की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि उन छोटी-छोटी मलिनताओं को दूर करें, तो एक पर्त की तरह आत्मा के अनंत सौंदर्य को प्रभावित और आच्छादित किए रहती हैं। जब वह मलिनताएँ मिट जाती हैं तो आत्मा का उज्ज्वल साफ और सुंदर स्वरूप परिलक्षित होने लगता है।

मन से प्रश्न करना चाहिए—क्या तुम भयभीत हो? क्या तुम्हें इंद्रियजन्य वासनाओं में मोह है? क्या तुम्हारे विचार गंदे हैं? यदि हाँ तो सुधार के प्रयत्न में तत्काल जुट जाओ। अपना सुधार ही संसार की सबसे बड़ी सेवा है। जिस दिन इन प्रश्नों का उत्तर 'नहीं' मिलने लगेगा, उस दिन से तुम संसार में सबसे सुखी व्यक्ति होगे।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६८ पृष्ठ १

दृष्टिकोण के अनुरूप संसार का स्वरूप

दूषित दृष्टिकोण वाला व्यक्ति साधारण-सी कठिनाई का अनुचित मूल्यांकन कर अपनी परेशानियों की वृद्धि कर लेता है। तनिक-सा अभाव, छोटा-सा रोग अथवा साधारण-सी प्रतिकूलता उसे पहाड़ जैसी भारी और भयानक दिखाई देती है। जिससे वह अनावश्यक रूप से रोता-झींकता रहता है। परिस्थितियों का प्रभाव मनोभूमि के अनुसार ही पड़ता है। आग का प्रभाव जितना सूखी लकड़ी पर पड़ता है, उतना गीली पर नहीं। बीमारी जितना शीघ्र दुर्बल को दबा लेती है, उतना शीघ्र सबल को नहीं। बलुई जमीन जितना शीघ्र पानी सोख लेती है, उतना शीघ्र दूसरी पक्की जमीन नहीं। रंग जितना गाढ़ा और शीघ्र ही महीन और श्वेत कपड़े पर चढ़ता है उतना मोटे, मैले पर नहीं। इसी प्रकार जो निर्बल दृष्टिकोण अथवा दूषित मनोभूमि के लोग हैं, जो जितना अधिक प्रतिकूलताओं के अनुकूल अपने को बनाए रहता है, वह उतना ही शीघ्र और गहराई तक उनसे प्रभावित होकर दुखी होता है।

संसार में सफलता, सुंदरता और सुख-शांति के लिए आवश्यक है कि अपना दृष्टिकोण परिमार्जित और मनोभूमि को तदनुकूल बनाए रखा जाए, अन्यथा आसक्त व्यक्ति की विकल दशा की तरह संसार की हर वस्तु, व्यक्ति और परिस्थिति से असंतोष और संताप के अतिरिक्त और कुछ न मिल सकेगा और हम संसार की सुख-शांति और सुंदरता से सर्वथा वंचित रह जाएँगे।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६८ पृष्ठ ३७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम देवत्व की ओर बढ़ें असुरता की ओर नहीं

भावनाओं के परिपोषण के लिए उन्हें कार्यरूप में परिणत करते रहना चाहिए केवल मनोरथ मात्र से तो किसी की सेवा-सहायता नहीं हो सकती। जब तक किसी रोगी को दवा लाकर न दी जाएगी और यदि आवश्यक हो तो पिलाई न जाएगी, तब तक क्या तो उसकी सेवा होगी और क्या उसे सुख अथवा संतोष मिलेगा?

किसी असहाय को जब तक हाथ देकर नहीं उठाया जाएगा, पदार्थ रूप में उसकी अपेक्षित सहायता न की जाएगी, तब तक उसका क्या दु:ख दूर हो सकेगा? भूखे को रोटी, नंगे को वस्त्र, असहाय को हाथ, अज्ञानी को विद्या, निरक्षर को अक्षर और रोगी को दवा देकर ही सुखी और शीतल बनाया जा सकता है। हमारी उदार, दयालु अथवा करुण भावनाएँ मात्र उसका न तो कोई हित कर सकती हैं और न हम ही परमार्थ पुण्य के अधिकारी बन सकते हैं।

मनुष्य की पूर्णता का चिह्न यह है कि हममें कितनी उत्कृष्ट भावनाओं का विकास हुआ है, उन भावनाओं को यथार्थरूप में परिणत करने की प्रेरणा कितनी प्रबल हुई है, हम परमार्थ कार्यों के लिए अपने कितने स्वार्थों और अधिकारों का त्याग करने में तत्पर होने लगे हैं और उस त्याग में हमें किस सीमा तक प्रसन्नता एवं संतोष मिलने लगा है? जिस दिन पूर्णरूप से हमारा स्वार्थ-परमार्थ, हमारे अधिकार-कर्त्तव्य और हमारा सुख दूसरों का सुख होकर संतुष्ट होने लगे, मानना चाहिए कि हम पूर्णता की परिधि में आ गए।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९६९ पृष्ठ ३२

पुरुषार्थी ही पुरस्कारों के अधिकारी

संपन्नता के संबंध में परमात्मा की कृपा पाने का केवल एक ही आधार है और वह है पुरुषार्थ अथवा परिश्रम। जो व्यक्ति प्रमाद त्यागकर उद्योग, परिश्रम अथवा पुरुषार्थ करते हैं, उन पर परमात्मा कृपा करता ही नहीं, उसे करनी पड़ती है। वह अपने इस नियम को इस विषय में भंग करने के लिए सक्षम नहीं हैं। यह अक्षमता उसकी अपमानता नहीं, महिमा है। जो व्यक्ति अपने बनाए नियमों की प्रति जितना भीरु और भावुक रहता है, वह उतना ही दृढ़ और महान माना जाता है। उसी व्यक्ति के बनाए विधान का मान तथा पालन होता है।

''पुरुषार्थ का पुरस्कार संपन्नता है''—यह एक ईश्वरीय नियम है। परमात्मा का बनाया हुआ, उसी का प्रेरित किया हुआ नियम है। यदि वह स्वयं ही इस विषय में स्वेच्छाचारिता बरते और इसका अपवाद करने लगे तो उसके विश्व-विधान का क्या महत्त्व रह जाएगा? एक नियम का व्यतिक्रमण विधान के सारे नियमों का महत्त्व और मानहीन बना देता है। सृष्टिचक्र नियम की धुरी पर ही घूम रहा है। यदि ईश्वर स्वयं ही उसको भंग कर दे तो उसकी यह सृष्टि, उसकी यह लीला और उसका यह निर्माण ही न नष्ट हो जाए। जो पुरुषार्थी है, परिश्रमी है, उद्योगी है, उस पर अपने नियमानुसार परमात्मा कृपा करता ही है, वह ऐसा करने को विवश है। संपन्नता और सफलता जो पुरुषार्थ का पुरस्कार है, मनुष्य का अपरिहार्य अधिकार है, कोई शक्ति अथवा कोई भी सत्ता उसे इससे वंचित नहीं कर सकेगी। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६९ पृष्ठ ३०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन को दुर्बल न बनने दें

मानसिक दौर्बल्य अथवा मनोहीनता मानव-जीवन के लिए भयानक अभिशाप है। अदम्य शारीरिक शक्ति और प्रचुर साधन होने पर भी मनोहीन व्यक्ति जीवन में असफल ही रह जाता है। जबकि मनोबली व्यक्ति सामान्य शारीरिक क्षमता और साधनों की कमी में भी अपने साहस, उत्साह और संलग्नता के बल पर क्षमता और साधनों की वृद्धि कर लेते हैं।

यदि किन्हीं कारणों से कोई मानसिक दौर्बल्य का बंदी बन गया है, तो ऐसा नहीं कि उसका यह अभिशाप दूर नहीं हो सकता है। प्रयत्न द्वारा संसार का हर काम संभव हो जाता है। यदि कोई अपने में मनोबल की कमी पाता है तो उसे चाहिए कि वह धीरे-धीरे उन कामों में पड़ना आरंभ करे, जिनसे उसे भय लगता है और अपनी सारी शक्ति को लगाकर पुरुषार्थ करे। असफल होने पर जरा भी निराश न हो और बार-बार प्रयत्न करते चले। इस प्रकार धीरे-धीरे अभ्यास द्वारा उसका मनोबल बढ़ने लगेगा और एक दिन वह सुयोग्य बन जाएगा।

मनोबल मनुष्य का प्रधान बल है। इसकी वृद्धि किए बिना जीवन के क्या सामाजिक, क्या आर्थिक और क्या आध्यात्मिक किसी भी क्षेत्र में सफलता नहीं मिल सकती। अस्तु, इस प्रधान बल को निरंतर बढ़ाते ही रहना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९६९ पृष्ठ ४५*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

प्रार्थना ही नहीं पवित्रता भी

मनुष्य प्रार्थना करते हैं, पशु नहीं, क्योंकि मनुष्य ने पिता को पहचाना है, पशु ने नहीं। जो मनुष्य परमपिता की प्रार्थना नहीं करता, वह अभी मनुष्य नहीं है। ऊपर से वह मनुष्य अवश्य है, लेकिन अंदर से पशुओं की तरह जड़ और अज्ञानी ही है। यदि कोई परमात्मा की प्रार्थना नहीं करता तो वह उसके दिए अनंत अनुदानों की अवज्ञा करता है। प्रार्थना से हमारे हृदय के कलुष ही दूर नहीं होते हैं, परमात्मा के प्यार का असीम आनंद मिलता है। प्रार्थना उद्देश्य नहीं कर्त्तव्य है।

यदि प्रार्थना करने के लिए खड़े होते समय मन में किसी के लिए विरोध आए, किसी का अपराध स्मरण हो तो उसे प्रार्थना करने से पूर्व क्षमा कर देना चाहिए। अगर तुम ऐसा नहीं करते तो मन का विरोध और आत्मा का द्वेष प्रार्थना के शब्द को दूषित कर देंगे। संसार के जितने भी प्राणी हैं, वह तुम्हारी तरह ही परमात्मा के पुत्र हैं। जिस तरह अपने दो पुत्रों को लड़ते-झगड़ते और परस्पर ईर्ष्या-द्वेष करते देखकर तुम दुःख पाते हो, उसी प्रकार परमात्मा भी तुम्हारी भावना और कर्त्तव्य रहित प्रार्थना से प्रसन्न नहीं होगा।

सबके दोष-दुर्गुण भूलकर सबकी सेवा और उन्नति की कामना करना भी प्रार्थना है। यह प्रार्थना उन सब प्रार्थनाओं से अच्छी है, जिसमें भगवान का नाम तो रहे, पर अंतःकरण की पवित्रता न रहे। प्रार्थना का बीज पवित्रता की ही भूमि पर अच्छी तरह अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित होता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन को जीतना—सबसे बड़ी विजय

किसी विचार में वह निष्ठा और वह लगन तभी आती है, जब वह मनुष्य के संपूर्ण चेतन द्वारा स्वीकृत और विवेक द्वारा प्रमाणित कर दिया जाता है। जिस विचार की शुभता में जितना ही संशय रहेगा, वह उतना ही संकल्पता से दूर रहेगा। अस्तु, इस विषय में मनुष्य को अपने विवेक से काम लेते रहना चाहिए।

मानव-मन में एक से एक चमत्कारी शक्तियों का भंडार भरा हुआ है। सद्वृत्तियों की सहायता से मन पर अधिकार होते ही मनुष्य उसकी सारी शक्तियों का स्वामी बन जाता है, किंतु शक्तियों का स्वामीभर हो जाने से महानता का प्रयोजन पूरा नहीं हो सकता। उसके लिए शक्तियों के सतत उपयोग की आवश्यकता है। जिन शक्तियों का उपयोग नहीं होता, वे कुंठित होकर नष्ट हो जाती हैं।

प्रयत्नपूर्वक मानसिक शक्तियाँ पा जाने के बाद एक बार पुन: असदाशयता का खतरा खड़ा हो जाता है। कोई भी शक्ति अपने में कोई विश्वस्त वस्तु नहीं होती। उससे जहाँ लाभ हो सकता है, वहाँ हानि भी हो सकती है। शक्ति के सदुपयोग से जहाँ मनुष्य ऊँचा चढ़ सकता है, वहाँ उसके गलत प्रयोग से वह अपनी शक्ति मनुष्य की दुश्मन बन जाती है और वह अपने शस्त्र से ही आहत हो जाता है।

मनुष्य के मनोराज्य का बहुत महत्त्व है। उसे सदाशयों द्वारा वशीभूत करके सिद्धि की ओर बढ़ाया जाना चाहिए, किंतु विकारों से सावधान रहने की आवश्यकता है। उसका एक ही उपाय है और वह यह कि शुभ संकल्पों को त्यागा न जाए।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९६९ पृष्ठ २०

मनुष्य से श्रेष्ठ और कुछ नहीं

देवता सत्कर्म करने वालों को ही चाहते हैं—इसका स्पष्ट आशय यही है कि जो मानवोचित कार्य करता है, ईश्वरीय उद्देश्य के लिए जीवनयापन करता है, देवताओं की कृपा उसी पर होती है। देवता सोते हुओं से घृणा करते हैं। देवताओं की घृणा का अर्थ है जीवन की सारी दिव्यताओं से वंचित हो जाना। संसार देवत्व से वंचित व्यक्तियों के लिए नहीं है। ऐसे असुर प्रवृत्ति वाले लोग इस धरती की गोद से शीघ्र ही उठा दिए जाते हैं। उस समय तक भी जब तक उन्हें प्रकृति द्वारा बुहार नहीं दिया जाता, उनके लिए शोक-संतापों में जलने के सिवा और कोई अधिकार नहीं रहता। प्रमाद, आलस्य और अज्ञान त्यागकर जागरण का वरण करो, प्रकाश और पावनता की ओर बढ़ो, जिससे कि मनुष्यता की सिद्धि हो और आत्मा का कल्याण।

यह दिव्य जागरण हो किस प्रकार? इसका सरल-सा उपाय यही है कि अपने वास्तविक सवरूप में विश्वास किया जाए। अपने को उस परमपिता परमात्मा का पुत्र और प्रतिनिधि अनुभव किया जाए। अपने प्रति हीनता, क्षुद्रता और निकृष्टता की सारी भावनाएँ निकाल फेंकी जाएँ। ऐसा करते ही आत्मा में सन्निहित प्रकाश का निर्झर फूट उठेगा। सारा जीवन दिव्य- चेतना से भरकर जाग उठेगा। अपनी विशालता, व्यापकता और सुंदरता का बोध होगा। चारों ओर आनंद और अमरता का आभास होने लगेगा। जीवत्व से ईश्वरत्व की ओर प्रगति होने लगेगी।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६९ पृष्ठ २२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्विचार अपनाए बिना कल्याण नहीं

मानवीय शक्तियों में विचार-शक्ति का बहुत महत्त्व है। एक विचारवान व्यक्ति हजारों-लाखों का नेतृत्व कर सकता है। विचार-शक्ति से संपन्न व्यक्ति साधनहीन होने पर भी अपनी उन्नति और प्रगति का मार्ग निकाल सकता है। विचार-शक्ति से ही महापुरुष अपने समाज और राष्ट्र का निर्माण किया करते हैं। विचार-शक्ति के आधार पर ही आध्यात्मिक व्यक्ति कठिन-से-कठिन भव-बंधनों को भेदकर आत्मा का साक्षात्कार कर लिया करते हैं। विचार-शक्ति से ही विचारों के बीच चिंतक लोग परमात्मसत्ता की प्रतीति प्राप्त किया करते हैं।

विचार, मनुष्य जीवन के बनाने अथवा बिगाड़ने में बहुत बड़ा योगदान करते हैं। मानव-जीवन और उसकी क्रियाओं पर विचारों का आधिपत्य रहने से उन्हीं के अनुसार जीवन का निर्माण होता है। असद्विचार रखकर यदि कोई चाहे कि वह अपने जीवन को आत्मोन्नति की ओर ले जाएगा तो वह अपने इस मंतव्य में कदापि सफल नहीं हो सकता। अत: असद्विचार उसे पतन की ओर ही ले जाएँगे। यह एक ध्रुव सत्य है। किसी प्रकार भी इसमें अपवाद का समावेश नहीं किया जा सकता।

अपने विचारों पर विचार करिए और खोज-खोजकर ओछे व निकृष्ट विचार निकालकर उपर्युक्त उपायों द्वारा सद्विचारों को जन्म दीजिए, बढ़ाइए और उन्हीं के अनुसार कार्य कीजिए। आप लोक में सफलता के फूल चुनते हुए, सुख और शांति के साथ आत्मकल्याण के ध्येय तक पहुँच जाएँगे।

— अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९६९ पृष्ठ २८

विचार ही चरित्र निर्माण करते हैं

यदि सुख की इच्छा है तो चरित्र का निर्माण करिए। धन की कामना है तो आचरण ऊँचा करिए, स्वर्ग की वांछा है तो भी चरित्र को देवोपम बनाइए और यदि आत्मा, परमात्मा अथवा मोक्ष-मुक्ति की जिज्ञासा है तो भी चरित्र को आदर्श एवं उदात्त बनाना होगा। जहाँ चरित्र है, वहाँ सब कुछ है,जहाँ चरित्र नहीं वहाँ कुछ भी नहीं।

चरित्र की रचना संस्कारों के अनुसार होती है और संस्कारों की रचना विचारों के अनुसार। अस्तु, आदर्श चरित्र के लिए, आदर्श विचारों को ही ग्रहण करना होगा। पवित्र कल्याणकारी और उत्पादक विचारों को चुन-चुनकर अपने मस्तिष्क में स्थान दीजिए। अकल्याणकर दूषित विचारों को एक क्षण के लिए भी पास मत आने दीजिए। अच्छे विचारों का ही चिंतन और मनन करिए। अच्छे विचार वालों से संसर्ग करिए, अच्छे विचारों का साहित्य पढ़िए और इस प्रकार हर ओर से अच्छे विचारों से ओत-प्रोत हो जाइए। कुछ भी समय में आपके उन शुभ विचारों से आपकी एकात्मक अनुभूति जुड़ जाएगी, उनके चिंतन-मनन में निरंतरता आ जाएगी, जिसके फलस्वरूप वे मांगलिक विचार चेतन मस्तिष्क से अवचेतन मस्तिष्क में संस्कार बन-बनकर संचित होने लगेंगे और तब उन्हीं के अनुसार आपका चरित्र निर्मित और आपकी क्रियाएँ स्वाभाविक रूप से आप से आप संचालित होने लगेंगी। आप एक आदर्श चरित्र वाले व्यक्ति बनकर सारे श्रेयों के अधिकारी बन जाएँगें।

— अखण्ड ज्योति-मई १९६९ पृष्ठ २४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारी महत्त्वाकांक्षाएँ निकृष्ट न हों

यदि आपकी महत्त्वाकांक्षा धनवान, यशवान अथवा बलवान बनने की है—बड़ा अच्छा है। आपको उसे मूर्तिमान करने के लिए यथासाध्य पुरुषार्थ और प्रयत्न भी करना चाहिए, फिर भी इससे पहले कि आप अपनी महत्त्वाकांक्षाओं से प्रेरित एवं परिचालित हों यह देख लीजिए, पूरी तरह विवेचन कर लीजिए कि आपकी महत्त्वाकांक्षा अशुभता के दोष से तो दूषित नहीं है। उसमें लोकरंजन, सामाजिक हित अथवा आत्मोद्धार की भावना के स्थान पर शोषण, प्रतिशोध, प्रतिहिंसा, भोग, विस्तार आदि के विषैले बीज तो सन्निहित नहीं हैं। यदि ऐसा हो तो तत्काल ही अपनी उन महत्त्वाकांक्षाओं को तिलांजलि दे दीजिए अथवा उनका सुधार-संशोधन कर डालिए, क्योंकि इससे तो लोक से लेकर परलोक तक के बनने-बिगड़ने की संभावना होती है। अपयश और अशांतिमूलक महानता से शांति, संतोष और सुखदायक है, सामान्यतया हजारों-लाखों गुना अच्छी है।

इस संबंध में आत्मविवेचना करते समय निष्पक्ष और निस्स्वार्थ रहने की आवश्यकता है। यदि आँख पर से इन आवरणों को उतारकर दिग्दर्शन न किया गया तो अपने दोष दिखाई न देगें। स्वार्थ और पक्षपात के दोष-दृष्टि को ऐसा कोण दे दिया करते हैं, जिससे असत्य-सत्य और अहित-हित दिखलाई देने लगता है और मनुष्य अपने ही दृष्टिकोण से स्वयं प्रवंचित हो जाता है। इसलिए महत्त्वाकांक्षाओं के विषय में उनके रूप और उनका विवेचन करने में बहुत ही सतर्क और सावधान रहना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-जून १९६९ पृष्ठ ३७*

निराशा का अभिशाप—परिताप

यह संसार जिसमें हम रह रहे हैं कष्ट और कठिनाइयों का घर कहा गया है। यहाँ प्रतिकूलताएँ और विषमताएँ तो आती ही रहती हैं। इनसे टक्कर लेते हुए आगे बढ़ना ही जीवन है। इसलिए निराश कभी न होना चाहिए। आशा और उत्साह की वृत्ति मानव शक्तियों के लिए संजीवनी के समान गुणकारी होती हैं। बड़े से बड़ा संकट आ जाने और कठिन से कठिन परिस्थिति खड़ी हो जाने पर भी आशा का साथ न छोड़ने वाले अंतत: विजयी होते हैं। यदि आप में किन्हीं कारणों से निराशा का भाव आ गया है तो तुरंत ही उसे निकाल डालिए। अपने साहस और उत्साह का संबल सँभालकर उठ खड़े होइए। आशा की मशाल हाथ में लेकर आगे बढ़िए। आप देखेगें कि आपका आत्मविश्वास, आपकी शक्तियाँ और क्षमताएँ जो निराशा की दशा में आपसे दूर हो गईं थी, दौड़कर फिर चली आएँगी। संसार में ऐसा कोई नहीं हैं, जिसके जीवन में केवल हास, उल्लास और आनंद के ही क्षण बने रहें। कष्ट, संकट अथवा विफलता के कारण न आते हों। तब सभी लोग हँसते-खेलते और बाधा-व्याधियों से टक्कर लेते हुए आगे बढ़ते चले जा रहे हैं। आप भी उठिए और अपनी शक्तियों के साथ आगे बढ़िए। विजय आपके साथ आएगी। केवल निराश बनकर पड़े रहने से आप प्रगति तो नहीं कर पाएँगें, साथ ही जिस स्थिति में पड़े-पड़े कष्ट भोग रहे हैं, वह भी दूर न होगी। आपके जीवन में वांछित परिवर्तन तभी आ सकेगा, जब आप निराशा से पल्लू छुड़ाकर आशावादी बनेंगे।

—अखण्ड ज्योति-जून १९६९ पृष्ठ ५०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्म ही ईश्वर-उपासना

उपासना प्रतिदिन करनी चाहिए। जिसने सूरज, चाँद बनाए, फूल-फल और पौधे उगाए, कई वर्ण, कई जाति के प्राणी बनाए, उसके समीप बैठेंगे नहीं तो विश्व की यथार्थता का पता कैसे चलेगा? शुद्ध हृदय से कीर्तन-भजन, प्रवचन में भाग लेना प्रभु की स्तुति है, उससे अपने देह, मन और बुद्धि के वह सूक्ष्म संस्थान जाग्रत होते हैं, जो मनुष्य को सफल, सद्‌गुणी और दूरदर्शी बनाते हैं, उपासना का जीवन के विकास से अद्वितीय संबंध है।

केवल प्रार्थना ही प्रभु का स्तवन नहीं है। हम कर्म से भी भगवान की उपासना करते हैं। भगवान कोई मनुष्य नहीं है, वह तो सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान क्रियाशील है, इसलिए उपासना का अभाव रहने पर भी उसके अनुशासन में कर्म करने वाला मनुष्य उसे बहुत शीघ्र आत्मसात कर लेता है। लकड़ी काटना, सड़क के पत्थर तोड़ना, मकान की सफाई, सजावट और खलिहान में अन्न निकालना, बरतन धोना और भोजन पकाना यह भी भगवान की ही स्तुति हैं। यदि हम यह सारे कर्म इस आशय से करें कि उससे विश्वात्मा का कल्याण हो। कर्त्तव्य भावना से किए गए कर्म से तथा परोपकार से भगवान उतना ही प्रसन्न होता है, जितना कीर्तन और भजन से। स्वार्थ के लिए नहीं, आत्मसंतोष के लिए किए गए कर्म से बढ़कर फलदायक ईश्वर की भक्ति और उपासना पद्धति और कोई दूसरी नहीं हो सकती।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६९ पृष्ठ १

हमारे अधिक विरोधी क्यों बनते हैं?

संकीर्ण दृष्टिकोण एक पाश के समान दु:खदायी होता है। इसको लेकर जो व्यक्ति जहाँ भी जाता है, वहाँ अपने लिए, नापसंदगी तथा असहयोग उत्पन्न कर लेता है। संकीर्ण दृष्टिकोण वाला व्यक्ति हर वस्तु तथा हर व्यक्ति का अवमूल्यन ही करता रहता है। वह किसी की विशेषता अथवा गुण देखकर सराहना करना तो जानता ही नहीं। किसी की महत्ता अथवा मान्यता स्वीकार कर सकना उसके वश की बात नहीं होती। किसी की रचना, कृति, सुंदरता अथवा सफलता से प्रभावित होने पर भी वह उसकी अभिव्यक्ति में चोरी करता है और यदि प्रभाव को प्रकट भी करता है तो किसी-किसी का कभी-कभी और तुलनात्मक दृष्टि से मूल्य एवं महत्त्व कम करके। किसी के विश्वासों, आस्थाओं, धारणाओं, निर्णयों अथवा मान्यताओं को सम्मान देना तो दूर, उनको मार्ग तक देने को तैयार नहीं होता। उसमें यह देख सकने की शक्ति नहीं होती कि कोई दूसरा व्यक्ति उसकी तरह सफल होकर आगे बढ़ जाए। ऐसे संकीर्ण व्यक्ति के प्रति लोग अहितैषी, अनुदार अथवा ईर्ष्यालु होने की धारणा बना लेते हैं और उसे संपर्क में लाने अथवा उसके संपर्क में जाने की पारस्परिकता को निरुत्साहित करने लगते हैं और यह एक प्रकार का विरोध ही है। बुद्धिमान व्यक्ति विशाल दृष्टिकोण का आश्रय देकर दूसरों को रास्ता देते और बदले में रास्ता पाकर निर्भय एवं निर्द्वंद्व जीवन का सुख उपभोग करते हैं।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९६९ पृष्ठ ५४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निकृष्टता नहीं, उत्कृष्टता ही हमें प्रभावित करे

मनुष्य जीवन की प्रमुख शक्ति का नाम है—विचारणा। हाड़-मांस की अनेक खामियों से भरे शरीर में महानता का एक ही तत्त्व है—विवेक। जिसकी विचारणा स्वस्थ है और जिसने अपना प्रकाश-केंद्र विवेकशीलता को बनाया है, वह देर-सबेर में महामानव बनकर रहेगा।

इंद्रियजन्य लिप्साओं-वासनाओं की ललकें और तृष्णाओं की आवृत्तियाँ, अहंकार एवं प्रदर्शन की प्रवृत्तियाँ इतनी प्रबल हैं कि औसत मनुष्य इन्हीं में लिपटकर रह जाता है। यह दल-दल इतना गहरा है कि जो धँसा सो फँसता ही चला गया।

स्वर्ग जैसा उदात्त दृष्टिकोण और मुक्ति जैसा निर्मल कर्तृत्व प्राप्त कर लेना ईश्वर का दर्शन, आत्म-साक्षात्कार एवं पूर्णता की लक्ष्यप्राप्ति का अंतिम चरण है। इसके लिए प्रयास करना ही साधना एवं तपश्चर्या का आधारभूत प्रयोजन है।

हमें अहर्निश अपने विचारों की उत्कृष्टता बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए और सतत सचेष्ट रहना चाहिए कि आदर्शवादी आस्थाओं के अनुरूप ही हमारी कार्यपद्धति बन सके। हमें मानवीय प्रयोजन के लिए यदि मंगलमय जीवन जीना है तो ऊँचे दृष्टिकोण से ही रीति-नीतियों का निर्धारण करना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९६९ पृष्ठ १*

सार्वभौमिक उपासना

माँ बच्चे को दूध ही नहीं पिलाती, पहले वह उसका रस-रक्त और हाड़-मांस से निर्माण भी करती है, पीछे उसके विकास, उसकी सुख-समृद्धि और समुन्नति के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है। उसकी एक ही कामना रहती है कि मेरे सब बच्चे परस्पर प्रेमपूर्वक रहें, मित्रता का आचरण करें, न्यायपूर्वक संपत्तियों का उपभोग करें, परस्पर ईर्ष्या-द्वेष का कारण न बनें। चिरशांति, विश्वमैत्री और सर्वे भवन्तु सुखिनः वे आदर्श हैं, जिनके कारण माँ सब देवताओं से बड़ी है।

हमारी धरती ही हमारी माता है, यह मानकर उसकी उपासना करें। अहंकारियों ने, दुष्ट-दुराचारियों, स्वार्थी और इंद्रिय लोलुप जनों ने मातृ-भू को कितना कलंकित किया है, इस पर भावनापूर्वक विचार करते समय आँखें भर आती हैं। हमने अप्रत्यक्ष देवताओं की तो पूजा की,पर प्रत्यक्ष देवी धरती माता के भजन का कभी ध्यान ही नहीं आया। आया होता तो आज हम अधिकार के प्रश्न पर रक्त न बहाते, स्वार्थ के लिए दूसरे भाई का खून न करते, तिजोरियाँ भरने के लिए मिलावट न करते, मिथ्या सम्मान के लिए अहंकार का प्रदर्शन न करते। संसार भर के प्राणी उसकी संतान-हमारे भाई हैं। यदि हमने माँ की उपासना न की होती तो छल-कपट, ईर्ष्या-द्वेष, दंभ, हिंसा, पाशविकता, युद्ध को प्रश्रय न देते। स्वर्ग और है भी क्या, जहाँ ये बुराईयाँ न हों, वहीं तो स्वर्ग है। माँ की उपासना से स्वर्गीय आनंद की अनुभूति होती है। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६९ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आलस त्यागें—सुसंपन्न बनें

भगवान ने मनुष्य जीवन में असंख्य महान संभावनाओं का समावेश किया है। साथ ही यह भी नियंत्रण रखा है कि उन विभूतियों का लाभ सत्पात्र ही उपलब्ध करें। कुपात्रों के हाथ में जाने पर हर वस्तु का दुरुपयोग होता है। सफलताएँ और समृद्धियाँ कुपात्र के हाथ में चली जाएँ तो देर तक टिकेंगी नहीं, जितनी देर टिकेंगी, उसे दुर्व्यसनों और उद्धत आचरणों के लिए प्रेरित करेंगी। किसी वस्तु का लाभ तो सदुपयोग करने वाला ही उठा सकता है, इसलिए सफलताएँ सत्पात्र के लिए सुरक्षित हैं और सत्पात्रता का पहला चिह्न है—श्रमशीलता। कई अनैतिक और असदाचारी भी सफलताएँ प्राप्त कर लेते हैं, भले ही पीछे उन्हें कुमार्गगामिता का दंड भुगतना पड़े, पर संसार में एक भी उदाहरण ऐसा न मिलेगा, जिसमें परिश्रम के बिना बड़ी सफलताएँ प्राप्त की गई हों। इसलिए सद्गुणों की पंक्ति में नैतिकता से भी पहला नंबर श्रमशीलता का आता है।

जिन्हें अपना भविष्य उज्ज्वल बनाने में दिलचस्पी हो, उन्हें कठोर परिश्रम करने की आदत डालनी चाहिए और समय के एक-एक क्षण को व्यस्त रखने के लिए तत्पर रहना चाहिए। यह अभ्यास क्रमशः प्रगति-पथ पर अग्रसर करता चला जाएगा और एक दिन उन्नति के उच्च शिखर तक जा पहुँचने की संभावनाएँ मूर्तिमान होकर सामने आ उपस्थिति होंगी।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६९ पृष्ठ ३३

ढलती आयु का उपयोग इस तरह करें

जीवन का लक्ष्य पूर्णता प्राप्त करना है। अपूर्णताएँ, मानवीय दुर्बलताएँ, आत्मनिरीक्षण, आत्मशोधन, आत्मसुधार एवं आत्मविकास के चार आधारों पर अवलंबित है। चिंतन और मनन के द्वारा आत्मनिरीक्षण और आत्मसमीक्षा अपने दोष-दुर्गुणों को प्रकाश में लाती है। आत्मसुधार के लिए शरीरगत बुरी आदतों और मनोगत दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करके पुराने क्रम में आमूल-चूल परिवर्तन करना पड़ता है। तपश्चर्या इसे ही कहते हैं। तप-साधना का यही उद्देश्य हैं। यह वनवास की तरह घर में रहकर भी की जा सकती है। वानप्रस्थ इसी प्रयोजन के लिए है। लोकमंगल में सेवा-साधना में संलग्न रहने से आत्मविकास होता है। जिस स्वार्थपरता के साथ हम अपने निजी प्रयोजनों में अब तक लगे रहे, उसी तत्परता के साथ लोकमंगल और परमार्थ-प्रयोजन में रस लेने लगें तो समझना चाहिए कि आत्मविकास की प्रक्रिया चल पड़ी। अपनेपन की परिधि को व्यापक बनाना, यह पूर्णता की दिशा में अग्रसर होने का मार्ग है। इसके लिए संकीर्ण, स्वार्थपरता की परिधि से निकलकर विश्वमानव की सेवा में अपने समय, मन तथा धन को नियोजित करना होता है। वानप्रस्थ साधना का यही क्रम है और भारतीय परंपरा के अनुरूप हमारा ढलता जीवन—पचास से पचहत्तर तक की आयु इसी में नियोजित होनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९६९ पृष्ठ ५२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आध्यात्मिक जीवन इस तरह जिएँ

शरीर और कुछ नहीं एक साधनमात्र है, आत्मा के उद्धार का साधन। इसकी खोज-खबर रखनी चाहिए,पर उसी सीमा तक जहाँ तक यह साधन रूप में आत्मोद्धार में सहायक हो सके। इसे स्वस्थ तथा सशक्त बनाए रखने के लिए जो भी जरूरी हो करिए पर इसकी इंद्रिय-लिप्सा की जिज्ञासा का कभी भी रंजन न करिए। इनकी सुविधा पाकर यह शरीर आलसी, प्रमादी और ढीठ बन जाता है और तब हर उस साधना में आनाकानी करने लगता है, जो आत्मा के उद्धार में आवश्यक होती है। अस्तु, देहाभिमान अथवा आसक्ति से सदा सावधान रहकर दूर रहना चाहिए।

देहासक्ति छूटते ही बाकी सारी आसक्तियाँ आप से आप छूट जाती हैं। इसका पोषण करते हुए, इसको ठीक वैसे ही भूले रहिए, जैसे इसका विसर्जन हो जाने के बाद भूल जाते हैं। ममता, मोह और माया के सारे संबंध देह तक ही हैं, इसका विस्मरण किए रहने से सारी आसक्तियाँ छूट जाएँगी और तब अंतिम समय में उनकी अनुभूति भी साथ लगी हुई न जाएगी। जीव निर्लिप्त और निर्मोहपूर्वक जाकर अनंत जीवन को ग्रहण कर लेगा।

मनुष्य का जीवन ही अंतिम नहीं है, इसके बाद एक दीर्घकालीन जीवन भी है। जिसके यापन में आवश्यक पुण्य का संबल चाहिए। इस जीवन में संचय करने के लिए अनासक्ति भाव से कर्म करते हुए जीवन चलाइए और बाद में माया-मोह तथा आसक्ति से रहित होकर संसार से यात्रा कीजिए। तभी वहाँ जाकर दीर्घकालीन सुख, संतोष की प्राप्ति होगी। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६९ पृष्ठ १३*

मनोविकार हमारे सबसे बड़े शत्रु

आप अभावग्रस्त हैं। जरूरतों से पीड़ित हैं तो इसमें क्षुब्ध अथवा असंतुष्ट रहने का क्या काम ? असंतोष आपकी इन पीड़ाओं का उपचार नहीं है। इनका उपचार है, अधिकाधिक परिश्रम एवं पुरुषार्थ। पौरुष तथा श्रमशीलता की शक्ति आपको ईश्वर की ओर से मिली ही है। उसका उपयोग करिए तथा अपनी पीड़ाओं से मुक्त हो जाइए और यदि संपन्नता की स्थिति में भी आप असंतुष्ट रहते हैं तो समझ लीजिए कि आप लोभ तथा तृष्णा के पिशाच से ग्रस्त हैं। इसका उपचार संतोष तथा उदारता ही है। अपनी वृत्ति पर विचार कीजिए, उसे बुरा समझकर त्याग दीजिए। लोभ तथा तृष्णा का उपचार उसका तिरस्कार तथा संसार की नश्वरता में विश्वास करना है। इन्हीं उपायों का अवलंब लीजिए, आप असंतोष के पिशाच से छूटकर सुखी हो जाइए।

कोई भी विपत्ति अथवा आपदा क्यों न आ जाए, भूलकर भी उद्वेग में मत बह जाइए। ईश्वर की कृपा में अखंड विश्वास रखिए। अपनी आत्मा तथा बुद्धि-विवेक का सहारा लीजिए। शांत एवं गंभीर बने रहिए। सारी आपदाएँ आप पर से ऐसे गुजर जाएँगी, जैसे किसी सुदृढ़ वृक्ष पर से तूफान निकल जाता है। उद्वेग एक मानसिक त्रुटि है, इसे नहीं रहने देना चाहिए। इसके प्रवाह से प्रेरित होकर किए गए काम बनने के बजाए बिगड़ जाते हैं। आप ईश्वर के अंश हैं। उसकी तरह स्थिर, गंभीर तथा अडिग रहकर अपना सृजन करते जाइए। आप सफलता के साथ आनंद के अधिकारी बनेंगे। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९६९ पृष्ठ ३४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रार्थना आत्मा का संबल

प्रार्थना भोजन की अपेक्षा करोड़ गुना ज्यादा उपयोगी चीज है। खाना भले ही छूट जाए, लेकिन प्रार्थना कभी न छूटनी चाहिए। प्रार्थना तो आत्मा का भोजन है। यदि हम पूरे दिन ईश्वर का चिंतन किया करें तो बहुत ही अच्छा, पर चूँकि यह सबके लिए संभव नहीं इसलिए हमें प्रतिदिन कम-से-कम कुछ समय के लिए ईश्वर- स्मरण करना ही चाहिए।

प्रार्थना करना, याचना करना नहीं है, वह तो आत्मा की सच्ची पुकार है। हम जब अपनी असमर्थता खूब समझ लेते हैं और सब कुछ छोड़कर ईश्वर पर भरोसा करते हैं, तब उसी भावना का फल प्रार्थना है। प्रार्थना या भजन जीभ से नहीं हृदय से होता है। इसी से गूँगे, तुतले, मूढ़ सभी प्रार्थना कर सकते हैं, जीभ पर अमृत हो और हृदय में हलाहल हो तो जीभ का अमृत किस काम का? कागज के गुलाब से सुंगध कैसे निकल सकती है?

प्रार्थना करने का उद्देश्य ईश्वर से संभाषण करना एवं अंतरात्मा की शुद्धि के लिए प्रकाश करना है, ताकि ईश्वर की सहायता से हम अपनी कमजोरियों पर विजय प्राप्त कर सकें। प्रार्थना मन से न हो तो सब व्यर्थ है। प्रार्थना में जो कुछ बोला जाता है, उसका मनन कर अपने जीवन को वैसे ही बनाने का प्रयत्न करना चाहिए, तभी उसका पूर्ण लाभ है। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९६९ पृष्ठ १*

शरीर का ही नहीं, आत्मा का भी ध्यान रखें

मनुष्य शरीर नहीं आत्मा है। आत्मा का स्वार्थ ही सच्चा स्वार्थ है, जिसे परमार्थ के नाम से भी पुकारा जाता है। परमार्थ-पथ पर अग्रसर होने के लिए आवश्यक है कि दैहिक संस्कारों के स्थान पर आत्मिक संस्कारों की स्थापना की जाए। इसके लिए आध्यात्मिक कार्यक्रमों को निर्धारित कर उनकी सफलता के लिए चिंतापूर्वक उसी प्रकार प्रयत्न करना होगा, जिस प्रकार भोजन, वस्त्र और घर-गृहस्थी की चिंता की जाती है।

मानव जीवन का लक्ष्य आत्मकल्याण है। इस लक्ष्य को पाने के लिए आवश्यक है कि आत्मा को शरीर के ऊपर प्रधानता दी जाए। यह क्रिया, दृष्टिकोण बदल देने से सहज में पूरी हो सकती है। हम मनुष्य हैं, शरीर ही सब कुछ है इसकी सेवा करना हमारा कर्त्तव्य है, इस प्रकार के दैहिक विचारों के स्थान पर इन विचारों को स्थापित करना होगा—हम आत्मा हैं, शरीर तो साधन मात्र है। आत्मा का कल्याण करना ही हमारा परम धर्म है, जिसका निर्वाह हर मूल्य पर करना ही है। इस प्रकार मनुष्य शारीरिक दासता से बचकर आत्मा की सेवा में समर्पित हो जाएगा। जिससे उसे यह पश्चात्ताप करने का अवसर नहीं रहेगा—"हाय मैंने अज्ञान के वशीभूत होकर अमर आत्मा की उपेक्षा कर दी और अपना सारा जीवन उस शरीर की सेवा में लगा दिया, जो नश्वर है और जिसकी दासता पतनकारी विकार देने के सिवा और कुछ नहीं दे पाती।" *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७० पृष्ठ १९*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

धर्म एक महासागर

देश, वेश और कर्मकांड से ही नहीं, धर्म की पहचान गुणों से होती है। महासागर के समान विशाल, स्पष्ट और गंभीर जीवनप्रणाली को धर्म कहते हैं।

समुद्र क्रमशः नीचा और गहरा होता गया है उसी प्रकार धार्मिक व्यक्ति क्रमशः विनयशील और आत्म-सत्यता की गहराई में उतरता चला जाता है। समुद्र का स्वभाव है स्थिरता और अपनी मर्यादा में बने रहना, धर्म भी मनुष्य को स्थिर और मानवीय मर्यादाओं का निष्ठापूर्वक परिपालन सिखाता है।

समुद्र में मृतक शरीर नहीं रहने पाता, उसी तरह जीवन के सत्य के प्रति जिनकी आस्था नहीं रही, जो जड़ हो गए हैं, धर्म उनको अपने में नहीं मिलाता, पर अनेक नदी-नद समुद्र में आकर गिरते हैं, उसने किसी को मना नहीं किया। धर्म भी वर्ण-भेद, जाति-भेद और देशकाल का भेद किए बिना प्रत्येक आत्मपरायण को अपना लेता है। समुद्र अपना रस नहीं बदलता, उसी प्रकार धर्म भी अपने सिद्धांतों पर दृढ़तापूर्वक आरूढ़ रहने की शिक्षा देता है। समुद्र में अनेक तरह के रत्न, मूँगे, मोती भरे पड़े हैं तो सेवार, खर, पतवार भी हैं। उसी प्रकार धर्म गुणों का आगार होकर भी जो तुच्छ और अवरोधक हैं, उन्हें भी प्यार करता है।

महासमुद्र को देखकर जो अपने जीवन को वैसा ही विस्तृत और महान बनाए, वही सच्चा धर्मनिष्ठ है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७० पृष्ठ १

मस्तिष्क उद्वेगग्रस्त न होने दें

ईश्वर की देन होने पर भी मस्तिष्क स्वयंसिद्ध विचारयंत्र नहीं है। इसको कल्याणकारी विचार उत्पन्न करने योग्य बनाने के लिए प्रयत्न की आवश्यकता पड़ती है। विश्वासों, मान्यताओं, कामनाओं तथा संगति आदि का मानव मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। जिसके विचार ऊँचे, मान्यताएँ वास्तविक, कामनाएँ मांगलिक और संगति साधुतापूर्ण होगी, उसका मस्तिष्क सदा स्वस्थ तथा सुफलदायक होगा। जिसके विश्वास संदिग्ध, मान्यताएँ मूढ़, कामनाएँ कुत्सित और संगति निकृष्ट कोटि की होगी, उसका मस्तिष्क शंकाओं, संदेहों, निराशाओं, कुकल्पनाओं और कुत्साओं से भरा रहेगा।

हम मनुष्य हैं, मनुष्य बनें और फिर उसके बाद देवत्व की ओर अग्रसर हों। इसके लिए हमारा प्रधान कर्त्तव्य यह है कि हम अपने विचारतंत्र का निर्माण इस प्रकार से करें कि वह सदा कल्याणकारी दिशा में ही सक्रिय रहे। कल्याण का निवास परमार्थ के सिवा और किसी में नहीं है। हम अपना निरीक्षण करें, अपने अंदर झाँकें और खोज करें कि कहीं ऐसी प्रवृत्तियाँ तो हमारे भीतर नहीं छिपी पड़ी हैं, जो हमारे आचार-विचारों को, दूसरों को दुःख देने, सताने और शोषण करने के लिए प्रेरित करती हों?

हो सकता है कि अपरिष्कार के कारण हमारे भीतर इस प्रकार की प्रवृत्तियाँ हों। यदि हैं तो हमें सत्संग, अध्ययन और चिंतन के द्वारा उन्हें निकाल बाहर करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७० पृष्ठ ४८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का अभिप्राय—दिव्य प्रेम

प्रेम की गति मनुष्यों तक ही परिमित नहीं है। मानवजाति की अपेक्षा अन्य सृष्टियों में संभवत: यह कम विकृत अवस्था में है। पुष्पों और वृक्षों को देखो। जब सूर्य अस्त हो जाता है और सब कुछ नीरव हो जाता है, तब क्षणभर के लिए शांत होकर बैठो और अपने आप को प्रकृति के साथ एक कर दो। तुम यह अनुभव करोगे कि पृथ्वी से वृक्षों की जड़ के नीचे से, प्रगाढ़ प्रेम और कामना से पूर्ण एक अभीप्सा ऊपर उठ रही है और यह अभीप्सा ऊपर की ओर बढ़ती हुई तथा वृक्षों के तंतुओं में से संचार करती हुई उनकी उच्चतम शाखाओं तक में हो रही है। कामना उस किसी वस्तु के लिए जो प्रकाश को लाती और सुख फैलाती है, उस प्रकाश के लिए जो चला गया है और जिसको वे चाहते हैं कि फिर लौट आए। वहाँ यह चाह इतनी पवित्र और तीव्र होती है कि यदि तुम वृक्षों में जो यह गति होती है, उसे अनुभव कर सको, तुम्हारी अपनी सत्ता भी उस शांति, प्रकाश और प्रेम के लिए, जो यहाँ अभी तक अभिव्यक्त नहीं है, हार्दिक प्रार्थना करने लग जाएगी।

एक बार भी यदि तुम इस विशाल, विशुद्ध और सत्य दिव्य प्रेम के संस्पर्श में आ जाओ, यदि तुम इसको थोड़ी-सी देर के लिए भी और इसके लघुत्तम रूप का ही अनुभव कर पाओ, तो तुम अवश्य ही निहाल हो जाओगे। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७० पृष्ठ १*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपने सौभाग्य को सराहते रहें

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। गुणों और पराक्रम के आधार पर संसार की कोई भी उपलब्धि संभव बनाई जा सकती है। जिस बुद्धि और परिश्रम के सहयोग से कोई दूसरा मनचाही उन्नति कर सकता है, तो हम क्यों नहीं? मेरे पास ईश्वर का दिया सब कुछ है, उसका सदुपयोग कर मैं भी आगे बढ़ूँगा तो निश्चय ही मेरा महान मंगल होगा। इस प्रकार के विचार दैवी विचार होते हैं, जो मनुष्य को श्रेय की ओर ही ले जाते हैं।

दूसरों की अपेक्षा अपने को हीन मान लेना भारी भूल है। इससे मनुष्य की कार्यकारिणी शक्तियाँ कुंठित हो जाती हैं। निराशा और निरुत्साह का भाव आता है। किसी एक ओर न देखिए, इस लंबे-चौड़े संसार में सब तरफ देखिए। आप पाएँगे कि यदि प्रभु ने आपको किन्हीं दस-बीस से कम सुविधाएँ दी हैं तो हजारों-लाखों से बढ़-चढ़कर बनाया है। साधनों की कमी से अपने को अभागा अथवा ईश्वर का अकृपा पात्र मान लेना ठीक नहीं है। यही क्या कम बड़ा सौभाग्य है कि आप मनुष्य बने हैं। आपको सुर-दुर्लभ कर्मयोनि प्राप्त हुई है। क्या परमात्मा की यह कम कृपा है कि उसने आपको अपनी चेतना का अंश देकर चैतन्य बनाया है? आपको इच्छाओं, आकांक्षाओं का प्रसाद दिया, बुद्धि, विवेक और शारीरिक बल दिया, एक चेतनापूर्ण प्रखर मन दिया है। यह सब साधन ऐसे हैं कि इसका सदुपयोग करके मनुष्य मानव से महामानव बन सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७० पृष्ठ ४०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का अर्थ

हम जी रहे हैं, इतना मात्र पर्याप्त नहीं। अपने कुटुंबियों के लिए आजीविका भी कमा रहे हैं, यह भी काफी नहीं है। हम अच्छे पिता, उत्तरदायित्व निभाने वाले पति हैं और परमात्मा का ध्यान भी नित्य नियम से करते हैं, इतना करने पर भी हम तो यही कहेंगे कि अभी भी आप जो कर रहे हैं, वह नपूर्ण है और न काफी है। यह तो जीवन की अनिवार्यताएँ हैं, विशेषता या परिपूर्णताएँ नहीं। इतना तो हममें से प्रत्येक को करना ही चाहिए।

जीवन का अर्थ है—एक ऐसी तत्परता जो निरंतर यह खोजती रहे कि कहाँ पर कुछ भलाई की जा सकती है। प्रतिक्षण और अधिक उदात्त व्यक्ति बनने और अपनी आत्मा की पवित्रता विकसित करने के लिए यदि प्रयत्नशील हैं, तब यह कहा जा सकता है कि आपके जीवन की दिशा सही है। अपने परमात्मा को केवल हृदय से ही प्रेम नहीं करना वरन सारी आत्मा, सारी बुद्धि और हाथों से भी करना चाहिए, तभी जीवन को परिपूर्ण बना सकते हैं।

हर पिछड़े हुए साथी की प्रतिदिन मदद किया कीजिए। जो सेवा-सहायता के पात्र हैं, उन्हें ढूँढ़िए और उनके लिए कुछ काम कीजिए। यह काम कितना ही छोटा हो, पर यदि आपने उसी को पूरा करने में अपना गौरव समझ लिया है और यह मान लिया है कि हमें उसके बदले में कुछ मिलने वाला नहीं है तो भी उस काम को पूरा करना ही है, ऐसी निष्ठा यदि जग गई, तब यह मान लिया जाएगा कि आपने जीवन का अर्थ ठीक समझ लिया। *—अखण्ड ज्योति-मई १९७० पृष्ठ १*

आत्मविश्वास की महती शक्ति-सामर्थ्य

आत्मा अनंत शक्तियों का भंडार होती है। संसार की ऐसी कोई भी शक्ति और सामर्थ्य नहीं, जो इस भंडार में न होती हो। हो भी क्यों न; आत्मा, परमात्मा का अंश जो होती है। सारी शक्तियाँ, सारी सामर्थ्य और सारे गुण उस एक परमात्मा में ही होते हैं और उसी से प्रवाहित हो-होकर संसार में आते हैं। अस्तु, अंश आत्मा में अपने अंशी की विशेषताएँ होनी स्वाभाविक हैं। आत्मा में विश्वास करना, परमात्मा में विश्वास करना है। जिसने आत्मा के माध्यम से परमात्मा में विश्वास कर लिया, उसका सहारा ले लिया, उसे फिर किस बात की कमी रह सकती है? ऐसे आस्तिक के सम्मुख शक्तियाँ, अनुचारियों के समान उपस्थित रहकर अपने उपयोग की प्रतीक्षा किया करती हैं।

आत्मा का शक्तिकोश अपने आप स्वयं नहीं खुलता। उसे खोलना पड़ता है। इस उद्घाटन की कुंजी है—स्वसंकेत अर्थात ऐसे विचार जिनका स्वर हो—"मैं अमुक कार्य कर सकता हूँ। मुझमें उसे पूरा कर सकने का साहस है, उत्साह है और शक्ति भी है। मुझे पुरुषार्थ से अनुराग है, उद्योग करना मेरा प्रियतम व्यसन है। संघर्ष को मैं जीवन की एक अनिवार्य प्रतिक्रिया मानता हूँ। मैं मनुष्य हूँ। मेरे जीवन का एक निश्चित उद्देश्य है। उसे पूरा करने में अपना तन, मन और जीवन लगा दूँगा। सफलता के प्रति आसक्ति और असफलता के प्रति भय मेरी वृत्ति के अवयव नहीं हैं।" *—अखण्ड ज्योति-मई १९७० पृष्ठ २३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भक्ति, ज्ञान और विज्ञान की साधना त्रिवेणी

किधर भी दृष्टि डालें उधर ही चैतन्यता दिखाई देगी। यहाँ तक कि विराट अंतरिक्ष के परमाणु भी चुप नहीं हैं। सूर्य, चंद्रमा और नक्षत्र भी अपने भीतर जो कुछ हैं, उसे विकीर्ण करते रहते हैं और बाहर से कुछ धारण करते हुए अपनी शक्ति बढ़ाते रहते हैं। बढ़ने और बँट जाने की इस अंतश्चेतना का आधार ढूँढ़ना ही ईश्वर को प्राप्त करने का विज्ञान है।

इस जगत में परमात्मा के अद्‌भुत कर्म स्थान-स्थान में हो रहे हैं, उनको देखकर ईश्वर के सामर्थ्य की कल्पना करनी चाहिए। वह ईश्वर जीवात्मा का सच्चा मित्र होने से ही जीवात्मा के हित के लिए सब कार्य इस जगत में कर रहा है। यही उसकी अपार दया है। इस दया के प्रति कृतज्ञ होना और उसका कीर्तन करना ही उसकी भक्ति है।

ज्ञानी लोग उसके इस उपकार का स्मरण करते हुए उसका ध्यान करते हैं। इससे उन्हें परमात्मा का साक्षात्कार ऐसे होता है, जैसे साधारण लोगों को सूर्य दिखाई देता है। विचार की दृष्टि से जो लोग इस जगत को देखते हैं, उनको परमात्मा का साक्षात्कार सर्वत्र होता है।

वे जाग्रत आत्माएँ जो आलस्य नहीं करतीं और सदा पुरुषार्थ में तत्पर रहती हैं, वे ही भक्ति, ज्ञान और विज्ञान की इस साधना रूपी त्रिवेणी में स्नान करती हुई सिद्धि प्राप्त करती हैं।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७० पृष्ठ १

जिसे जीना आता है, वह सच्चा कलाकार है

मानव-जीवन एक अमूल्य निधि है। यह बड़े सौभाग्य का सुअवसर है कि हम सृष्टि के किसी भी प्राणी को न मिल सकने योग्य सुअवसर को प्राप्त करें और मानव प्राणी कहलाएँ।

यह अनुपम अवसर कुत्साओं की कीचड़ और कुंठाओं के दलदल में पड़े रहकर नारकीय यातनाएँ सहते हुए मौत के दिन पूरे कर लेने के लिए नहीं है वरन इसलिए हैं कि हम परमेश्वर की इस पुण्य प्रतिकृति दुनियाँ के सौंदर्य का रसास्वादन करते हुए अपने को धन्य बनाएँ और इस तरह जिएँ, जिसमें पुष्प जैसी मृदुलता, चंदन जैसी सुगंध और दीपक जैसी रोशनी भरी पड़ी हो।

जीवन जीना एक कला है। जिसे ठीक तरह जीना आ गया, वह इस धरती का सम्मानित कलाकार है। उपलब्ध साधन-सामग्री का उत्कृष्ट उपयोग करके दिखा सकना, यही तो कौशल की कसौटी है। अधिक साधनों के अभाव और प्रस्तुत अवरोधों की चर्चा में जो प्रस्तुत उपलब्धियों की महत्ता कम करना चाहता है और यह कहता है कि यदि अमुक साधन मिल सके होते, तो अमुक कर्तृत्व प्रस्तुत करता, उसे आत्मवंचना में निरत ही कहना चाहिए। जीवन-कला से अवगत कलाकार अपने स्वल्प साधनों से ही महान अभिव्यंजना प्रस्तुत करते रहे हैं। जिसे जीना आ गया उसे सब कुछ आ गया और वही सच्चा शिल्पी है, यह मानना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७० पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विद्या ही तो सफलता का मूल आधार है

जिस प्रकार नेत्रहीन के लिए सारा संसार अंधकारपूर्ण रहता है, सुंदर दृश्यों तथा रंगों के आनंद से वह वंचित रह जाता है, उसी प्रकार ज्ञानांध के लिए भी संसार का मधुर रहस्य, ज्ञान-विज्ञान के चमत्कार, साहित्य तथा कलाओं का आनंद, युग-युग संग्रहीत ज्ञान का रसास्वादन आदि सारे सुख निरर्थक ही रहते हैं। वह इन स्वर्गीय संपदाओं के बीच भी एक पशु की तरह केवल उदरपालन की क्रिया में ही बहुमूल्य मानव-जीवन को नष्ट कर देता है। संसार से लेकर आत्मा तक के जितने सुख माने गए हैं, विद्या के अभाव में अज्ञानी पुरुष उन सबसे सर्वथा वंचित ही रह जाता है।

यदि आपको जीवन में सुख-सम्मान पाना है, अपनी आत्मा को उन्नत बनाकर परमात्मा तक पहुँचने की जिज्ञासा है, तो आज से ही विद्यारूपी धन-संचय करने में लग जाइए। यदि आपकी सांसारिक व्यस्तता आपके लिए अधिक समय नहीं छोड़ती, तो भी थोड़ा-थोड़ा ज्ञान-संचय ही करते जाइए। बूँद-बूँद करके घट भर जाता है। जीवन के जिस क्षेत्र में आपको उन्नति करने की अभिलाषा है, आप जिस प्रकार की सफलता प्राप्त करना चाहते हैं, उसी विषय एवं क्षेत्र के अध्ययन में निरत हो जाइए। यदि आपका लक्ष्य सत्यम्, शिवम्, सुंदरम है तो आप उसी से उन्नति करते हुए अंततः अपने परमलक्ष्य आत्मसाक्षात्कार तक पहुँच ही जाएँगे। —*अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७० पृष्ठ २५*

हमारी इच्छाशक्ति प्रबल एवं प्रखर हो

यदि हमें अपने जीवन को उन्नति और प्रगति के द्वारा सार्थक बनाना है तो अपनी इच्छाशक्ति को बढ़ाना और प्रबल बनाना होगा, तभी हममें दृढ़ता, साहस और कार्यक्षमता का विकास होगा। हम उत्साही, वीर और संकल्पवान बनेंगे। हममें वह कर्मठता आएगी जो जीवन-पथ की बाधाओं तथा विपत्तियों से भी कुंठित न हो सकेगी। सफलता का पथ निश्चय ही बड़ा कठिन और दुर्गम होता है। उसको सरल प्रशस्त बनाने में मनुष्य की इच्छाशक्ति का बड़ा उपयोग है। इच्छाशक्ति की दृढ़ता और प्रबलता मनुष्य को पराक्रमी, पुरुषार्थी और धीर-गंभीर बना देती है। प्रबल इच्छाशक्ति वाला जिस काम में हाथ डालता है, उसे तब तक नहीं छोड़ता, जब तक पूरा नहीं कर लेता। वह बाधाओं, विरोधों से साहसपूर्वक लड़ता हुआ बढ़ता रहता है। उन्नति और सफलता का इसके सिवा और कोई उपाय नहीं है।

संसार की सारी सफलताओं का मूल मंत्र है—प्रबल इच्छाशक्ति, इसी के बल पर विद्या, संपत्ति और साधनों का उपार्जन होता है। यही वह आधार है जिस पर आध्यात्मिक तपस्याएँ और साधनाएँ निर्भर रहती हैं। यही वह दिव्य संबल है जिसे पाकर संसार में खाली हाथ आया मनुष्य वैभव और ऐश्वर्यवान बनकर संसार को चकित कर देता है। यही वह मोहन और वशीकरण मंत्र है जिसके बल पर एक अकेला पुरुष कोटि-कोटि जन-गण को अपना अनुयायी बना लेता है।

—*अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७० पृष्ठ ३७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मों की खेती

मनुष्य-जीवन एक खेत है, जिसमें कर्म बोए जाते हैं और उन्हीं के अच्छे-बुरे फल काटे जाते हैं। जो अच्छे कर्म करता है, वह अच्छे फल पाता है, बुरे कर्म करने वाला बुराई समेटता है। कहावत है—आम बोएगा वह आम खाएगा, बबूल बोएगा वह काँटे पाएगा। बबूल बोकर जिस तरह आम प्राप्त करना प्रकृति का सत्य नहीं, उसी प्रकार बुराई के बीज बोकर भलाई पा लेने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मनुष्य-जीवन में भी इस सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता, वैसे ही बुराई का प्रतिफल बुराई न हो, ऐसा आज तक न कभी हुआ और न आगे होगा। इतिहास साक्षी है, कार्य कभी कारणरहित नहीं होते और उसी तरह कोई भी परिणाम कभी अपने आप नहीं बनते वरन वह व्यक्ति के कर्मों की कलम से लिखे जाते हैं। अच्छा या बुरा भाग्य अपने ही कर्म का फल होता है।

व्यक्ति, समाज या राष्ट्र बुराई से पनपा, यह एक भ्रम है। जीवन हर क्षण का लेखा-जोखा रखता है। जल कीचड़ से बहेगा, वह दुर्गंधरहित नहीं होगा, जल होने का भ्रम उत्पन्न करके भी वह पेय नहीं बन सकता। उसी तरह धोखे की असफलताएँ अंततः पतन और अपयश का ही कारण बनती हैं। अंत तक साथ देने वाली सफलता भलाई की है। उसी से मनुष्य का इहलोक और परलोक सुधरता है। कर्मफल तो अकाट्य है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७० पृष्ठ १

अहंकार के सर्प दंश से सदा बचे रहिए

अहंकार का एक नाम मद भी है। मद का अर्थ है—नशा। अहंकार का नशा चढ़ते ही मनुष्य मद्यपों की भाँति मतवाला हो जाता है। उसकी विभिन्न क्रियाएँ, चेष्टाएँ और भावनाएँ असंयत एवं असंतुलित हो जाती हैं। उसकी बुद्धि पर अज्ञान का अंधकार छा जाता है और तब वह न करने योग्य कामों में प्रवृत्त होने लगता है। ऐसी मदहोशी में यदि वह अपने सम्मान को सुरक्षित रखना चाहता है तो उसकी यह चाह सफल नहीं हो सकती। अभिमान उसे अपकृत्य करने के लिए प्रेरित करेगा ही। उसका प्रभाव दूसरों पर पड़ेगा ही। कोई एक-दो, चार-छह लोग उसे क्षमा कर देंगे, किंतु अंततः कोई-न-कोई माई का लाल मिल ही जाएगा, जो उसका सारा अहंकार और सारा नशा उतार ही देगा। यह एक ईश्वरीय विधान है, इसमें व्यवधान नहीं पड़ सकता। संसार में आज तक किसी घमंडी का सिर ऊँचा नहीं रहा, इसलिए इसी में बुद्धिमानी है कि मनुष्य शक्ति, संपत्ति, साधन, समर्थन, सहायक अथवा विद्या-बुद्धि, रूप-रंग, सफलता एवं उपलब्धि आदि किसी भी बात पर घमंड न करे। सब कुछ पाकर भी उसे सच्चा, शालीन, सभ्य, सुशील तथा विनम्र बना रहना चाहिए। अहंकार मनुष्य जीवन के लिए विषैला सर्प है। इसलिए इस जल बुद्बुद की तरह क्षणभंगुर जीवन की परछाइयों की तरह बनने-बिगड़ने वाली विभूतियों पर न तो कभी अभिमान करिए और न मदहोश ही होइए।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७० पृष्ठ ४०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुःख की निवृत्ति ज्ञान से ही संभव

संसार को विषवृक्ष कहा गया है, उसमें आपत्तियाँ भी कम नहीं हैं। यहाँ यंत्रवत सब कुछ चलता है, दूर रहते और न चाहते हुए भी कठिनाइयाँ आती हैं, कष्ट घेर लेते हैं। फिर सारे जीवनभर का क्रम हो जाता है, उन कठिनाइयों से लड़कर अपने लिए सुख-सुविधा की स्थिति तैयार करना। इसी प्रयत्न में सारा जीवन बीत जाता है, जब पीछे मुड़कर देखते हैं, तब पश्चात्ताप होता है कि यह जीवन कठिनाइयों में ही बीत गया। न मिला सुख और न पाई शांति, मस्तिष्क में सुखों की तृष्णा का अंबार लाद लिया।

दुःख का कारण क्या था? यह एक विचारणीय बात है। सारे जीवन के क्रिया-कलापों को जब हम प्रकृति की माया के साथ तोलते हैं, तब पता चलता है कि संसार समष्टि रूप में जैसा था, हमने उसे अज्ञानवश वैसा ही नहीं लिया वरन उसे अपने अनुकूल बनाने का प्रयत्न करते रहे। संसार इतना बड़ा है कि हम उसे अपने अनुकूल बना ही नहीं सकते थे। अपने इस अज्ञान का फल दुःख रूप में मिला। हम इतने छोटे थे कि संसार की राजी में अपनी राजी मिलाकर सुखी रह सकते थे। भीगी हुई लकड़ियों को आग नहीं जला पाती, उसी प्रकार ज्ञान से भीगे मनुष्य को मानसिक दुःख-वेदना नहीं दे सकते हैं। संसार समुद्र है, ज्ञान-युक्ति उसकी नौका, जो इस नाव पर चढ़ लेता है, उसके सांसारिक दुःख भी मिट जाते हैं और वह संसार की यथार्थ स्थिति जान लेने के कारण जन्म-मरण के बंधन से भी मुक्त हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७० पृष्ठ १

हम आसुरी वृत्तियों को नहीं दैवी वृत्तियों को अपनाएँ

मानव जीवन दैवी और आसुरी प्रवृत्तियों का एक मिला-जुला रूप है। जीवन में दोनों वृत्तियाँ सक्रिय रहने का प्रयत्न करती रहती हैं। मुक्ति के आकांक्षी व्यक्ति को चाहिए कि वह अपना सारा सहयोग दैवी प्रवृत्तियों को बढ़ाने, प्रोत्साहित करने तथा पालने में लगाए। दैवी वृत्ति के लक्षण हैं—परिश्रम, पुरुषार्थ, त्याग, प्रसन्नता, उदारता, उत्साह, आशा तथा मर्यादा आदि, जिनको ग्रहण करने से मनुष्य की आत्मा में हर्ष तथा आनंद का प्रकाश आता है और संसार-समर में एक साहसी योद्धा की तरह अविरल संघर्ष करते रहने का बल प्राप्त होता है। आसुरी प्रवृत्तियों के लक्षण हैं—आलस्य, प्रमाद, स्वार्थ-लिप्सा, निरुत्साह, निराशा, आवेश, उत्तेजना अथवा पतन की ओर अग्रसर होना।

अस्तु, मनुष्य दैवी तथा आसुरी वृत्तियों का एक समन्वित रूप है, जिसकी बंधन अथवा मुक्ति दो ही गतियाँ हो सकती हैं। यद्यपि वह शुद्ध-बुद्ध और स्वभावतः मुक्त परमात्मा का अंश है, तथापि उसे मुक्ति के साथ बंधन की संभावनाएँ देकर संसार में इसलिए भेजा गया है कि वह अपने गुणों तथा देवत्व को विकसित करने के लिए प्रतिकूलताओं से संघर्ष करता हुआ पुरुषार्थ का परिचय दे और इस प्रकार इस संसार-लीला को रोचक तथा सक्रिय बनाता हुआ अपने उस परमपिता परमात्मा का मनोरंजन करे, जिसने एकाकीपन बदलने के लिए इस विचित्र संसार-नाटक की रचना की है। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७० पृष्ठ १३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'बलमुपास्व'—बल की उपासना करो

आपके जीवन में कोई दु:ख है तो समझिए कि आपके साथ कोई निर्बलता अवश्य बँधी हुई है। शरीर की कमजोरी से रोग घेरते हैं, मानसिक कमजोरी से चिंताएँ सताती हैं, अपनी बौद्धिक क्षमताएँ दुर्बल पड़ी हों तो यह निश्चित है कि आप पराधीनता के पाश में जकड़े होंगे। अपनी उन्नति के लिए किसी और की गाँठ टटोल रहे होंगे। सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से जो जातियाँ संगठित नहीं होतीं, उन्हें ही बाहरी आक्रमण सताते हैं। कैसी भी हों, दुर्बलताएँ ही नारकीय यंत्रणाओं का कारण होती हैं, इसलिए निर्बलता पाप है। पापी व्यक्ति की तरह निर्बलों को भी पृथ्वी पर सुख से जीने का अधिकार प्रकृति नहीं देती।

ऐश्वर्य की इस संसार में कोई कमी नहीं। संपदाएँ और विभूतियाँ पग-पग पर बिछी पड़ी हैं। सुखोपभोग के साधनों के लिए भटकना नहीं पड़ता। शर्त इतनी ही है कि आपके पास उन्हें प्राप्त करने और उपभोग करने का बल और शक्ति भी है अथवा नहीं। यदि आप निर्बल हैं तो आपके पास की रही-सही संपत्ति और विभूतियाँ भी छिनने ही वाली हैं। इसलिए श्रुति कहती है—'बलमुपास्व' अर्थात बल की उपासना करो। शक्ति के अभाव में ही पाप पनपते हैं, इसलिए यदि आप शक्तिशाली नहीं हैं तो कितने ही ईश्वरभक्त क्यों न हों, पाप की वृद्धि के आप भी भागीदार हैं।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७१ पृष्ठ १

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप!

परमात्मा किसी को न कुछ दे सकता है और न किसी से कुछ लेता ही है, वह द्रष्टा मात्र है, उसकी सृष्टि का आनंद वीर लोग उठाते हैं। यह कहना चाहिए कि वह स्वयं ही वीरता के रूप में सांसारिक सुखैश्वर्यों का भोग करता है।

यह जीवन एक संग्राम है, जो प्रयत्न और पुरुषार्थ का गांडीव उठाकर युद्ध के लिए तैयार हो जाता है, वही अंत में विजय पाता है।

इंद्रियों को मारना पड़े तो मारना चाहिए, भीतर से यह अपनी सगी-संबंधी जैसी लगती हैं, पर हैं पक्की शत्रु। इनका दमन करना चाहिए। भय, निराशा, निर्बलता, अस्वस्थता, क्षणिक सुखों की आसक्ति, आलस्य, अनुत्साह, असफलता का भय—ये दुर्बलताएँ ही मनुष्य की शत्रु हैं, इनसे डरना नहीं लड़ना चाहिए। लड़ने वाला ही अंतत: विजेता होता है।

समान गुणों से प्रेम इस संसार का अटल नियम है। परमात्मा का भी नियम ऐसा ही है, वह स्वयं वीर है, बलयुक्त, शक्तिमान है। इसलिए वह अपने पुत्र मनुष्य को भी इन गुणों से युक्त देखना चाहता है। जिस मनुष्य में इतनी हिम्मत होती है कि वह संसार की उथल-पुथल, तूफानों की भड़क और बिजली की तड़क में भी घबराए नहीं, जो घमासान जीवन-संग्राम में एक योद्धा की तरह तटस्थ होकर लड़ता है, वही उसका अनुग्रह प्राप्त करता है, उसी को यश और सम्मान भी इस संसार में मिलता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७१ पृष्ठ १६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जमाने के साथ बदलिए

अपने समय पर सर्वोत्तम वस्तुएँ भी कालांतर में विकृतिग्रस्त होकर अनुपयोगी बन जाती हैं। जाड़े के कपड़े जो उन दिनों शरीर को सरदी से बचाने के लिए उपयोगी एवं आवश्यक थे, कुछ समय पीछे गरमी आने पर निरुपयोगी हो जाते हैं। तब कोई यह आग्रह करे कि भूतकाल में उन्हें उपयोगी माना गया था, इसलिए अब भी उन्हें वैसा ही माना जाए और उसी प्रकार धारण किया जाए तो यह आग्रह अनुचित ही नहीं, हानिकारक भी होगा। घोर गरमी में भला ऊनी, मोटे, गरम कपड़े पहनने से क्या लाभ हो सकता है?

किसी जमाने में उस समय की परिस्थितियों के अनुसार कोई वस्तु अच्छी रही होगी, पर समय बीत जाने पर जब अन्य प्रकार की परिस्थितियाँ उत्पन्न हो गईं, तब यह आवश्यक नहीं कि पुरानी कार्यपद्धति ही ठीक बनी रहे। नई समस्याएँ सुलझाने के लिए नया दृष्टिकोण आवश्यक है। टूट-फूट को सुधारने के लिए मरम्मत की जो उपयोगिता है, वैसी ही पुरानी रीति-रिवाजों में असामयिकता उत्पन्न हो जाने पर उन्हें ठीक करने के लिए भी आवश्यकता होती है। जो समय को नहीं देखते-पहचानते, उन्हें जमाना कुचलता हुआ आगे बढ़ जाता है और वे अपनी प्रतिगामिता पर पश्चात्ताप ही करते रहते हैं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७१ पृष्ठ १

जो निरंतर देता है, वह निर्बाध पाता है

धरती बोली—वृक्षो! मैं तुम्हें खाद देती हूँ, पानी देती हूँ, रस देती हूँ, उससे अपने आप को तृप्त करो, पुष्ट करो, किसी को दो मत, पर वृक्ष ने कहा—नहीं माँ! मुझे देने दो। उसने फूल दिए, फल दिए, पत्ते दिए। सूख रहा था वृक्ष, तब भी उसे यही कामना थी, कोई आए मेरी सूखी लकड़ियाँ ले जाकर अपना काम चलाए।

समुद्र ने अपना जल आकाश को दे दिया। बादलों ने कहा—परिग्रह पाप है, संग्रह असामाजिकता है। उसने अपना सारा जल धरती की गोद में बरसा दिया, वही जल फिर नदियों के रास्ते समुद्र तक जा पहुँचा। समुद्र जितना था उससे बूँदभर भी कम न हुआ। उसने कभी जाना नहीं कि अभाव क्या होता है?

गंगा हिमालय से चली तो हिमालय ने उसे बहुतेरा रोका। गंगा ने कहा—मुझे लोक-कल्याण के लिए जाना ही पड़ेगा। वह बह निकली प्यासी धरती, सूखी खेती और व्याकुल जीव-जंतुओं को शीतल जल लुटाती। गंगा बढ़ी तो हिमालय का हृदय स्वतः द्रवित हो उठा। उसने जल उँड़ेलना शुरू किया और गंगा गंगोत्री में जितनी थी, गंगा सागर में उससे सौगुनी बड़ी होकर सागर से जा मिली।

निसर्ग का नियम है जो निरंतर दान करता है, वही निर्बाध प्राप्त भी करता है। आज का दिया हुआ कल हजार गुना होकर लौटता है। त्याग, दान, परोपकारार्थ उत्सर्ग ही जीवन को परिपूर्ण बनाता है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७१ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान को बार-बार याद करो

एक हाथी है, उसे नहला-धुलाकर छोड़ दो, तब फिर वह क्या करेगा? मिट्टी में खेलेगा और अपने शरीर को फिर गंदा कर लेगा, कोई उस पर बैठे तो उसका शरीर भी गंदा अवश्य होगा, लेकिन यदि हाथी को स्नान कराने के बाद पक्के बाड़े में बाँध दिया जाए, तब फिर अपना शरीर गंदा नहीं कर सकेगा।

मनुष्य का मन भी हाथी के समान है। एक बार ध्यान-साधना और भगवान के भजन से वह शुद्ध हो गया तो उसे स्वतंत्र नहीं कर देना चाहिए। इस संसार में पवित्रता भी है, गंदगी भी है, मन का स्वभाव है, वह गंदगी में जाएगा और मनुष्य देह को दूषित करने से नहीं चूकेगा, इसलिए उसे गंदगी से बचाए रखने के लिए एक बाड़े की जरूरत होती है, जिसमें वह घिरा रहे। गंदगी की संभावनाओं वाले स्थानों में न जा सके।

ईश्वर का भजन, उसका ध्यान एक बाड़ा है, जिसमें मन बंद रखा जाना चाहिए, तभी सांसारिक संसर्ग से उत्पन्न दोष और मलिनता से बचाव संभव है। भगवान को बार-बार याद करते रहोगे तो मन अस्थायी सुखों के आकर्षण और पाप से बचा रहेगा और अपने जीवन के स्थायी लक्ष्य की याद बनी रहेगी। उस समय दूषित वासनाओं में पड़ने से स्वत: भय उत्पन्न होगा और मनुष्य उस पापकर्म से बच जाएगा, जिसके कारण वह बार-बार अपवित्रता और मलिनता उत्पन्न कर लिया करता है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७१ पृष्ठ १

हम निकृष्ट स्तर का जीवन न जिएँ

बहुधा लोग सुखोपभोग के लिए धन की तृष्णा से प्रताड़ित रहा करते हैं। वे सोचा करते हैं कि अधिक-से-अधिक धन की सिद्धि होनी चाहिए, उसके लिए कितने ही निकृष्ट साधन प्रयोग क्यों न करने पड़ें, चिंता नहीं। आज के समय में बहुत से लोग ऐसा कर भी रहे हैं, किंतु यदि गहरी और पैनी दृष्टि से देखा जाए तो पता चलेगा कि उस निकृष्ट धन से वे जिस सुख का उपभोग करते दिखाई देते हैं, वह वास्तव में उनके दु:ख का कारण बना होता है। उस वैभव और विभूति के बीच भी वे बड़े ही अशांत, भीत और असंतुष्ट रहा करते हैं। धन के साथ वे जिन महापापों का संचय अपने अंत:करण में कर लिया करते हैं, वे शोक-संतापों के रूप में प्रकट होकर उनका सुख-चैन छीनते रहते हैं। वैभव के बीच अशांत, असंतुष्ट और दुखी रहने की अपेक्षा कहीं अच्छा है कि उत्कृष्टता की रक्षा करते हुए कठिन और अभावपूर्ण जीवन अंगीकार कर लिया जाए। मनुष्य की भलाई इसी में है कि वह उत्कृष्टता में अपना गौरव समझे और अल्प साधनों में भी संतोषपूर्वक अपनी आवश्यकताएँ पूरी करता चले, किंतु भूलकर भी निकृष्टता की ओर न जाए। उस अभावपूर्ण उत्कृष्ट जीवन में जो आत्मिक सुख, स्वर्गीय शांति और आत्मगौरव प्राप्त होगा, वह वैभवपूर्ण निकृष्ट जीवन की झूठी सुविधा से लाखों गुना महत्त्वपूर्ण है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७१ पृष्ठ २६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सच्चे सौंदर्य की खोज और साक्षात्कार

पाप के स्वरूप में एक भयानक आकर्षण होता है, ऐसा आकर्षण जैसा एक शलभ के लिए दीपशिखा में होता है। शिखा के सम्मोहन में फँसकर पतंगा अपने पंख जलाकर भी उसी की ओर रेंगता रहता है। यहाँ तक कि आखिर जलकर खाक ही हो जाता है।

क्या कारण है कि पाप के प्राणहंता सौंदर्य की ओर मनुष्य दौड़ता रहता है ? इसका प्रमुख कारण है—सच्चे सौंदर्य का साक्षात्कार न होना। यदि मनुष्य को शिव-सौंदर्य का दर्शन हो जाए तो वह पाप के झूँठे आकर्षण से कदापि प्रेरित न हो। मनुष्य यदि एक बार सच्ची आँखों से अपनी आत्मा की ओर देख ले तो उसे संसार के सारे पापों से घृणा हो जाए और वह निर्विकार हो उठे।

मनुष्य की इस सौंदर्य विषयक भ्रांति ने ही इस स्वर्गतुल्य पृथ्वी को बहुसंख्यक व्यक्तियों के लिए नरक में परिणत कर रखा है। ऐसे लोग ईश्वर की प्रशंसनीय कृति, सुंदरता को अपनी पापदृष्टि से कलुषित कर देते हैं। उनको प्रत्येक क्षण अपने निम्न स्वार्थ, पाशविक वासना, जघन्य रुचि की पूर्ति के अतिरिक्त और कोई विचार आता ही नहीं। इसके परिणामस्वरूप वे स्वयं तो पतन के गर्त में गिरते ही हैं, अपने निकटवर्ती जनों के लिए भी काँटे बोते हैं। जिसे आत्मकल्याण की तनिक भी इच्छा हो, उसे सदैव पाप से घृणा करके, सत्प्रवृत्तियों का चिंतन ही करते रहना आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७१ पृष्ठ १

मैं और मेरा नहीं, हम और हमारा

मनुष्य अंहकार से प्रेरित होकर दुष्कर्म करता है, पर वह बड़ा क्षुद्र प्राणी है। जब परमात्मा की मार उस पर पड़ती है तो बेहाल होकर रोता-चिल्लाता है। सुख तो उसकी इच्छाओं के अनुकूल सात्विक दिशा में चलने में, प्राकृतिक नियमों के पालन करने में ही है। अपनी क्षणिक शक्ति के घमंड में आया हुआ मनुष्य कभी सही मार्ग पर नहीं चलता, इसलिए उसे सांसारिक कष्ट भोगने पड़ते हैं। परमात्मा ने यह व्यवस्था इतनी शानदार बनाई है कि यदि सभी मनुष्य इसका पालन करने लगें तो इस संसार में एक भी प्राणी दुखी और अभावग्रस्त न रहे।

ईश्वर-उपासना मनुष्य का स्वाभाविक धर्म है। नदियाँ जब तक समुद्र में नहीं मिल जातीं, अस्थिर और बेचैन रहती हैं। मनुष्य की असीमता भी अपने आप को मनुष्य मान लेने की भावना से ढकी हुई है। उपासना विकास की प्रक्रिया है। संकुचित को सीमारहित करना, स्वार्थ को छोड़कर परमार्थ की ओर अग्रसर होना, 'मैं' और 'मेरा' छुड़ाकर 'हम' और 'हमारे' की आदत डालना ही मनुष्य के आत्मतत्त्व की ओर विकास की परंपरा है, पर यह तभी संभव है, जब वह सर्वशक्तिमान परमात्मा की सत्ता को स्वीकार कर ले, उसकी शरणागति की प्राप्ति हो जाए। मनुष्य रहते हुए मानवता की सीमा को भेदकर उसे देवस्वरूप में विकसित कर देना, ईश्वर की शक्ति का कार्य है। उपासना का अर्थ परमात्मा से उस शक्ति को प्राप्त करना ही है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७१ पृष्ठ ४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का कुछ उद्देश्य भी तो हो

आत्मकल्याण के उद्देश्य की पूर्ति के लिए उच्च गुणों की आवश्यकता पड़ती है। बहुतेरे कष्ट उठाने होते हैं, अपने को संकट में डालना पड़ता है। यह बात सच है कि कष्ट सहन करते-करते असाधारण सहिष्णुता उत्पन्न हो जाती है, किंतु आरंभ में मानवोचित साहस का परिचय तो देना ही पड़ता है। लोभ, मोह, मद, मत्सर, काम और क्रोध के प्रबल मनोविकार भी अपना हथियार चलाने से बाज नहीं आते। इन सब आघातों को धैर्य-पूर्वक, ध्येय-सिद्धि तक सहन करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति ही अंत तक लक्ष्यप्राप्ति के दुर्गम पथ पर टिके रहते हैं। ऐसे लोगों को ही सफलता के दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है।

इसमें संदेह नहीं हैं कि जीवनलक्ष्यप्राप्ति कठिन प्रक्रिया है, किंतु इस प्रकार उद्देश्य संरक्षण से ही मनुष्य का नैतिक विकास होता है। जो अपने शरीर और मन को कष्टपूर्ण कसौटी में भलीभाँति कस लेते हैं, उन्हीं का चरित्र उज्ज्वल बनता है। नैतिक विकास और चारित्रिक संगठन ही अध्यात्म का विशुद्ध उद्देश्य है। विकारों को दूर करना और सद्गुणों का अभिवर्द्धन ही धर्म है। इसलिए आध्यात्मिक, धार्मिक एवं नैतिक विकास के साधकों को सर्वप्रथम अपना जीवनलक्ष्य निर्धारित करना चाहिए। उद्देश्य की आँच पर तपाई हुई आत्माएँ ही संसार का कुछ कल्याण कर सकती हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७१ पृष्ठ १८

मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है

स्वावलंबी व्यक्ति अपनी परिस्थितियों का उत्तरदायी स्वयं अपने को मानता है। इस कारण वह उनके निवारण के लिए अपने अंदर ही सुधार और विकास करता है। अपनी इस ठीक नीति के कारण वह जल्दी ही अपनी अवांछित परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर लेता है और आगे की ओर बढ़ चलता है। चूँकि परावलंबी अपनी प्रतिकूलताओं और कठिनाइयों का कारण दूसरों को मानता है, इसलिए वह उनके निवारण के लिए भी परमुखापेक्षी बना रहता है। सोचता है कि दूसरे सुधरें, अच्छे बनें और उसके साथ सहयोग करें तो उसकी कठिनाइयाँ दूर हों और वह आगे बढ़ सके। इस परावलंबन का फल यह होता है कि अपने को उत्तरदायी न समझने के कारण वह अपना सुधार नहीं करता और उन्हीं परिस्थितियों में उलझा रहता है।

मनुष्य को चाहिए कि वह भाग्य का निर्माता स्वयं अपने को माने। सौभाग्य के लिए सत्कर्म करे और कर्त्तव्य-पथ पर जो भी बाधाएँ आएँ उन्हें स्वावलंबी भावना से दूर करता हुआ आगे बढ़ता जाए। संसार में अपने किए ही अपने काम पूरे होते हैं, अपने चले ही यात्रा पूरी होती है और अपना पसीना बहाने पर ही उन्नति तथा श्रेय का सौभाग्य मिलता है। यह कभी भी नहीं भूलना चाहिए। ईश्वर ने मनुष्य को सर्वथा योग्य और समर्थ बनाया है। वह अपना विकास किसी भी सीमा तक कर सकता है और उन्नति के कितने ही उच्च शिखर पर पहुँच सकता है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७१ पृष्ठ २९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्तम ज्ञान जाग्रत देवता

दुर्भाग्य कभी हाथ धोकर पीछे पड़ जाए, ऐसा लगे कि एक भी उपाय प्रगति-पथ पर स्थिर रखने में समर्थ नहीं, सभी ओर असफलता ही असफलता, अंधकार ही अंधकार प्रतीत हो रहा हो, तब तुम महापुरुषों के ग्रंथ पढ़ना। विचारों का सत्संग तुम्हारे जीवन में फिर से प्रकाश लाएगा, तुम्हारे दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने की शक्ति उत्तम ज्ञान में सन्निहित है। अतः जब कभी ऐसा अवसर आए ज्ञान-देवता की ही शरण ग्रहण करना।

समस्त शक्तियाँ साथ छोड़ दें, मित्र, पड़ोसी और कुटुंबी भी अपने स्वार्थ के लिए संघर्ष छेड़ दें अथवा तुम्हें जीवन-पथ पर चलने के लिए असहाय एकाकी छोड़ दें, तब तुम उत्तम पुस्तकों को मित्र बनाकर आगे बढ़ना। एकाकी और असहायपन के बीच तुम्हें मौन मैत्री और प्रकाश की वह किरण मिल जाएगी जो तुम्हारा हाथ पकड़कर तुम्हें निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँचा देगी।

मंदिर, गिरजे, मसजिदें, गुरुद्वारे टूटकर खंडहर बन जाते हैं, गिरकर नष्ट हो जाते हैं, लेकिन उत्तम ज्ञान और सच्चे विचार कभी नष्ट नहीं होते। ज्ञान देवता का वरदान पाकर मनुष्य निहाल हो जाता है। ज्ञान वह सीपी है, जिसमें प्रवेश कर मनुष्य का जीवन मोती बन जाता है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७१ पृष्ठ-१

परमात्मा को भूलो मत

जिस प्रकार एक भिक्षुक एक हाथ से सितार बजाता है, दूसरे से ढोलक बजाता है और साथ ही मुँह से भजन भी गाता है, उसी प्रकार ऐ मनुष्यो! तुम अपना कर्त्तव्य-कर्म करो, किंतु सच्चे हृदय से ईश्वर का नाम जपना न भूलो।

जिस प्रकार एक स्त्री घर के काम-काज में लगी रहकर भी, अपने पति का स्मरण करती है, उसी प्रकार संसार के धंधों में लगे रहते हुए भी, मनुष्यों को ईश्वर का चिंतन दृढ़ता के साथ करते रहना चाहिए।

जिस प्रकार धनिकों के घरों की सेविकाएँ उनके लड़कों का पोषण करती हैं और अपने खास पुत्रों की तरह उनको लाड़-प्यार करती हैं, किंतु वे नौकरानियों के पुत्र नहीं हो जाते। उसी प्रकार तुम लोग भी अपने को अपने पुत्रों के पोषणकर्त्ता समझो, उनका असली पिता तो वास्तव में ईश्वर है।

जिसको उथले तालाब का स्वच्छ पानी पीना है, उसे हलके हाथ से पानी पीना होगा। यदि पानी कुछ भी हिला तो नीचे का मैल ऊपर चला आएगा और सब पानी गंदा हो जाएगा। उसी प्रकार यदि तुम पवित्र रहना चाहते हो तो विश्वास और सावधानी के साथ ईश्वर से प्रेम करो। व्यर्थ के विवादों में अपने समय को नष्ट न करो, नहीं तो नाना प्रकार की शंका-प्रतिशंकाओं से तुम्हारा मस्तिष्क गंदा हो जाएगा।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७१ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मपरिष्कार से परब्रह्म की प्राप्ति

हृदय अर्थात वह सूक्ष्म मर्मस्थल जहाँ उच्च आदर्शों की श्रद्धा विराजमान रहती है। जहाँ बैठा हुआ परमेश्वर सद्गुरु के रूप में उचित-अनुचित का बोध कराता रहता है और कुमार्ग से बचाने वाले सन्मार्ग पर चलने का संकेत करता रहता है। हृदय अर्थात आस्थाओं का वह केंद्र, जहाँ केवल सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों के हिमालय से निकलने वाली गंगा-युमना की तरह दो धाराएँ अविच्छिन्न रूप से बहती रहती हैं। हृदय अर्थात प्रेरणा का वह स्रोत जहाँ कर्त्तव्य-पथ पर आरूढ़ रहने की दृढ़ता और विश्वमानव के चरणों पर समर्पण की तत्परता उमगती रहती है।

जिसका हृदय पवित्र है, उसे अपवित्रता छू तक नहीं सकती। जिसका हृदय श्रद्धा से परिपूर्ण है, उसके लिए इस विश्व उपवन की शोभा नंदनवन से अधिक है। जिसने अपने हृदय को टटोला, उसे ऋद्धि-सिद्धियों का भरा-पूरा रत्न भंडार उसी के भीतर समाया मिल गया। जिसने हृदय में झाँका उसने उसी में आत्मसाक्षात्कार का आनंद लिया और प्रभु दर्शन का भी। स्वर्ग और मुक्ति का द्वार मनुष्य का हृदय ही है। जो हृदय का अनुयायी है, समस्त संसार उसी का अनुगमन करता है। यह आकाश हृदय की उपलब्धियों से ही गुंजित-प्रतिध्वनित हो रहा है। संसार में अमर और अमिट प्रतिष्ठा उन्हें मिली, जिन्होंने अपने हृदय को विशाल बनाया और उसकी प्रेरणा से अपनी गतिविधियाँ निर्धारित कीं।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७१ पृष्ठ-५

महाशून्य की यात्रा

जीव जिस रूप में आता है, उसी रूप में चला जाता है। न आने के समय कोई साथ था और न जाने के समय। सुखमय यात्रा के लिए जहाँ यह आवश्यक है कि सब लोग प्रेमभाव से चलें, नीति और सदाचार का पालन करें, विश्व-बंधुत्व की भावना का अनुशीलन करें, वहाँ यह भी अत्यंत आवश्यक है कि अपनी एकाकी यात्रा के लिए भी पूर्ण तैयारी करते हुए आगे बढ़ें। निराशा, भय और विक्षोभ उस महाशून्य की यात्रा में बाधक न बनें।

मैं शरीर नहीं हूँ, शरीर अवश्य मेरा है। दूर से आता हुआ रथ तो दिखाई देता है, किंतु रथी नहीं। अपनी दृष्टि का छोटा होना, अपनी दर्शन की क्षमता का संकुचित होना मात्र कारण है अन्यथा बुद्धि जानती है कि रथ में जुते हुए घोड़ों को सीधे रास्ते लाने-ले जाने वाले वाहन में कोई रथी अवश्य बैठा होगा। शरीर भी एक रथ है, आत्मा उसका सारथी, इंद्रियाँ ही वह घोड़े हैं जिन पर नियंत्रण रखकर सारथी उन्हें जिधर चाहे ले जा सकता है। महत्त्व रथ और घोड़ों का नहीं, उसके स्वामी का अर्थात आत्मा का है। अपनी दृष्टि, अपनी बुद्धि, अपना ज्ञान और तर्क इतना संकीर्ण नहीं होना चाहिए कि आत्मा को भी न पहचाना जा सके।

घोड़े (इंद्रियाँ) थकें, रथ (शरीर) टूटे, इसके पूर्व हमें उस स्थान तक पहुँच ही लेना चाहिए, जहाँ से महाकाल की महानिशा में सुखपूर्वक विश्राम कर आगे की यात्रा में बढ़ा जा सके।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७१ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बनाने की सोचिए, बिगाड़ने की नहीं

बया दूर-दूर तक जाती है, एक-एक तिनका खोजकर घोंसला बनाती है। उसका पल-पल परिश्रम, उसकी लगन और उसका मनोयोग ही एकाकार होकर घोंसले के रूप में प्रस्तुत होते हैं, जिसे देखकर हर किसी को प्रेरणा मिलती है, प्रसन्नता होती है। प्रेरणाएँ और प्रसन्नताएँ सृष्टि की हर रचना में विद्यमान हैं। स्पष्ट है कि स्रष्टा ने बड़ा भारी परिश्रम किया होगा, अपनी सारी शक्ति लगाई होगी, तब इस भव्य जगत का निर्माण संभव हुआ।

नन्हें से पक्षी बया के घोंसले को नष्ट कर देने वाला बिलाव हर किसी की निंदा का पात्र बनता है, तब फिर परमपिता परमात्मा द्वारा रचित इस संसार को बिगाड़ना, उसे नष्ट करना कोई अच्छी बात है ? हर वस्तु हमारी भलाई के लिए बनी है, हर जीव हमारे कल्याण के लिए बना है, हर मनुष्य हमारी आकांक्षाओं की पूर्ति में सहयोग देने वाला बनाया गया है, तब फिर किसी को सताना, कष्ट पहुँचाना और ईश्वरीय कृति को विनष्ट करना क्या शोभा की बात है ? हम बना नहीं सकते तो बिगाड़ने का ही क्या अधिकार है ?

आइए आज से, अभी से परमात्मा के बनाए हुए इस संसार को बनाने की बात सोचें, सोचें ही नहीं लग जाएँ, बिगाड़ने की तो कभी कल्पना भी नहीं करनी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७२ पृष्ठ-१

प्रेम का अमरत्व और उसकी व्यापकता

कोई व्यक्ति जीवनभर प्राइमरी पाठशाला में ही पढ़ते रहने की जिद करे और अगले बड़े स्कूल में जाने के लिए तैयार न हो तो उसे बालबुद्धि ही कहा जाएगा। प्रेम का प्रशिक्षण घर-परिवार में हो या किसी वस्तु अथवा व्यक्ति से आरंभ हो, उसकी स्वाभाविकता समझ में आती है, पर जब कोई उतने तक ही सीमाबद्ध होकर रह जाएगा, आगे न बढ़ेगा तो रुके हुए पानी की तरह सड़न पैदा हुए बिना न रहेगी। जो प्यार सीमाबद्ध होकर रह जाता है, उसे मोह कहते हैं, मोह में पक्षपात जुड़ जाता है, औचित्य का ध्यान नहीं रहता। प्रिय पात्र की त्रुटियों का परिमार्जन करने की इच्छा नहीं होती वरन उन्हें भी प्रिय मानकर समर्थन किया जाने लगता है। इससे प्रेम की महत्ता ही नष्ट हो जाती है। प्रेम गंगाजल है, जिसे जहाँ छिड़का जाए, वहीं पवित्रता पैदा करे, पर यदि वह गंदे नाले में गिरकर अपनी पवित्रता खो दे तो इसे दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। प्रेम लगाव का पात्र नहीं है और न पक्षपात के अथवा हर प्रकार के समर्थन-सहयोग का। उसमें आदर्शों की अविच्छिन्नता जुड़ी रहती है। आदर्शविहीन प्यार को मोह कहेंगे। मोह अपने प्रिय पात्र के अनुचित कार्यों का भी समर्थन करने लगता है, तब उसकी ऊँचा उठने की क्षमता नष्ट हो जाती है। मोह को प्रेम की विकृति ही कह सकते हैं, इसलिए उसकी प्रशंसा नहीं की जा सकती है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७२ पृष्ठ-३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हमारी प्रार्थना कैसी हो ?

प्रार्थना में यही कामना जुड़ी रहनी चाहिए कि परमात्मा हमें इस लायक बनाए कि उसके सच्चे भक्त, अनुयायी एवं पुत्र कहला सकने का गौरव प्राप्त करें। परमेश्वर हमें वह शक्ति प्रदान करे जिसके आधार पर भय और प्रलोभन से मुक्त होकर विवेकसम्मत कर्त्तव्य-पथ पर साहसपूर्वक चल सकें और इस मार्ग में जो भी अवरोध आएँ उनकी उपेक्षा करने में अटल रह सकें। कर्मों के फल अनिवार्य हैं। अपने प्रारब्ध भोग जब उपस्थित हों तो उन्हें धैर्यपूर्वक सह सकने और प्रगति के लिए परम पुरुषार्थ करते हुए कभी निराश न होने वाली मन:स्थिति बनाए रह सकें। भगवान हमारे मन को ऐसा निर्मल बना दें कि कुकर्म की ओर प्रवृत्ति ही उत्पन्न न हो और हो भी तो उसे चरितार्थ होने का अवसर न मिल पाए। मनुष्य-जीवन की सफलता के लिए गतिशील रहने की पैरों में शक्ति बनी रहे ऐसी उच्चस्तरीय प्रार्थना को ही सच्ची प्रार्थना के रूप में पुकारा जा सकता है। जिसमें धन, संतान, स्वास्थ्य, सफलता आदि की याचना की गई हो और जिसमें अपने पुरुषार्थ एवं कर्त्तव्य के अभिवर्द्धन का स्मरण न हो, ऐसी प्रार्थना को याचना मात्र कहा जाएगा। ऐसी याचनाओं का सफल होना प्राय: संदिग्ध ही रहता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७२ पृष्ठ-१६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आत्मिक प्रगति का आधार संवेदना, सहानुभूति

जिस समाज में हम पैदा हुए हैं, उसके पिछड़ेपन की ओर अपना ध्यान जाना ही चाहिए। उसे दूर करने के लिए कुछ प्रयत्न करना ही चाहिए। अपना शरीर रुग्ण हो, अपना बच्चा बीमार हो तो क्या हम उपेक्षा बरतते हुए हाथ रखे बैठे रहेंगे ? ऐसा कोई निष्ठुर ही कर सकता है। हमें अपने आपे का विस्तार शरीर, घर और परिवार तक सीमित न रखकर अधिक व्यापक बनाना चाहिए और उस व्यापक क्षेत्र में जो व्यथा-विकृतियाँ फैली हैं, उन्हें सुधारने में अपना उत्तरदायित्व अनुभव करना चाहिए। वह भी क्या जीवन जो पेट के लिए जिया जाए, वह भी क्या आदमी जो अपने वैभव, विलास के ही साधन जुटाता रहे। वह भी क्या धर्मात्मा जिसे अपने नैतिक कर्त्तव्यों की प्रेरणा न मिले। वह भी कैसा ईश्वरभक्त जो दरिद्रनारायण के रूप में खड़े हुए भगवान की सहायता करने से इनकार कर दे।

धर्म का आवरण ओढ़ने से काम न चलेगा, उसे अंत:करण में प्रतिष्ठापित किया जाना चाहिए। ईश्वर-ईश्वर कहने से काम न चलेगा उसके सर्वव्यापीस्वरूप को अधिक सुंदर और सुगंधित बनाने के लिए, लोकमंगल के लिए बढ़-चढ़कर अनुदान प्रस्तुत करना चाहिए। आत्मा को परमात्मा से मिलाने की यही राह है कि हम अपनी संकीर्णता को विशालता में और निष्ठुरता को उदारता में परिणत कर दें। संवेदना और सहानुभूति के साथ आत्मिक प्रगति का 'अन्योन्याश्रित' संबंध है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७२ पृष्ठ-४५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संकीर्णता के सीमा बंधन से छुटकारा पाएँ

आत्मा का विकास परमात्मा के समान विस्तृत होने में है। जो सीमित हैं, संकीर्ण है, वह क्षुद्र है। जिसने अपनी परिधि बढ़ा ली, वही महान है। हम क्षुद्र न रहें, महान बनें। असंतोष, सीमित अधिकार से दूर नहीं होता। थोड़ा मिल जाए तो अधिक पाने की इच्छा रहती है। सुरसा के मुख की तरह तृष्णा अधिक पाने के लिए मुँह फाड़ती चली जाती है। आग में घी डालने से वह बुझती कहाँ है, अधिक ही बढ़ती है। तृप्ति तब मिलेगी, जब इस संसार में जो कुछ है, सब पा लिया जाए।

मान्यता को विस्तृत कीजिए कि यह सारा विश्व मेरा है। नीला विशाल आकाश मेरा, हीरे-मोतियों की तरह, झाड़-फानूसों की तरह जगमगाते हुए सितारे मेरे, सातों समुद्र मेरी संपदा, हिमालय मेरा, गंगा मेरी, पवन देवता मेरे, बादल मेरी संपत्ति। इस मान्यता में कोई बाधा नहीं, किसी की रोक नहीं। समुद्र में तैरिए, गंगा में नहाइए, पर्वत पर चढ़िए, पवन का आनंद लूटिए, प्रकृति की सुषमा देखकर उल्लसित होइए। कोई बंधन नहीं, कोई प्रतिरोध नहीं। सभी मनुष्य मेरे, सभी प्राणी मेरे। 'मेरे' की परिधि इतनी विस्तृत करनी चाहिए कि समस्त चेतन जगत उसमें समा जाए। अपनी सीमित पीड़ा से कराहेंगे तो कष्ट होगा, पर जब मानवता की व्यथा को अपनी व्यथा मान लेंगे और लोकपीड़ा की कसक अपने भीतर अनुभव करेंगे तो मनुष्य नहीं, ऋषि, देवता और भगवान जैसी अपनी अंत:स्थिति हो जाएगी।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७२ पृष्ठ-१

अपने दोषों को स्वीकारें और सुधारें

अपनी असलियत हम जितनी अच्छी तरह जान सकते हैं, दूसरे उतनी नहीं। सो दोषों की निंदा और उनके उन्मूलन की चेष्टा हमें अपने आप से आरंभ करनी चाहिए, क्योंकि अपने निकटतम समीपवर्ती हम स्वयं ही हैं। अपने ऊपर अपना जितना प्रभाव और दबाव है, उतना और किसी पर नहीं। इसलिए यदि सुधारने का काम आरंभ करना हो तो ऐसे व्यक्ति से आरंभ करना चाहिए जो अपने अधिकतम निकट और अधिकतम प्रभाव-दबाव में हो। ऐसा व्यक्ति हम स्वयं ही हो सकते हैं।

सबसे बड़ी हिम्मत का काम है—अपनी वास्तविकता समझना और अपने दोषों तथा दुर्बलताओं को स्पष्ट रूप से स्वीकार कर लेना। इस स्वीकृति के बाद लगेगा कि जिसे दुर्बलताओं से छुड़ाने और पापों से बचाने की जरूरत है, वह प्रथम व्यक्ति हम स्वयं ही हैं। अपनी कुरूपता स्वीकार करने में जिसे डर नहीं लगता और अपनी असलियत को बिना छिपाए प्रकट करता है, असल में सबसे बहादुर शूरवीर उसे ही कहना चाहिए। ऐसा धर्मयुद्ध आरंभ करने के लिए हमारा अपना मन और जीवन ही सबसे बड़ा कुरुक्षेत्र, युद्ध का मोर्चा हो सकता है।

दोषों और दुर्बलताओं को छिपाने में हम जितना मनोयोग लगाते हैं, उससे आधा भी यदि उनके परिष्कार में लगा दें तो सरलतापूर्वक निर्मल और निष्पाप गतिविधियाँ अपनाने में सफलता मिल सकती है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७२ पृष्ठ-३८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मकांड से ईश्वर को न फुसलाएँ

आत्मसाधना में ईश्वर उपासना, आत्मचिंतन, आत्मा और परमात्मा का मिलन प्रधान रूप से सम्मिलित रहना चाहिए। जप, ध्यान, पूजन-वंदन की क्रिया नियमित रूप से चलनी चाहिए, पर उसमें भावनाओं का गहरा पुट रहना चाहिए। लकीर पीटने की चिह्नपूजा अभीष्ट प्रतिफल उत्पन्न नहीं कर सकती। भौतिक महत्त्वाकांक्षाओं से जितनी विरक्ति होगी, उतनी ही आत्मिक विभूतियों के संपादन में अभिरुचि एवं तत्परता बढ़ेगी। इस तथ्य को भलीभाँति समझ लिया जाना चाहिए। अस्तु, उपासना का कर्मकांड ही सब कुछ नहीं मान लिया जाना चाहिए, वरन उसके प्रयोजन की उत्कृष्टता बनाए रहनी चाहिए। यदि ईश्वर को रिश्वत और खुशामद के बल पर फुसलाकर अपने भौतिक स्वार्थ-साधनों का जाल बिछाया जा रहा है तो समझना चाहिए कि वह भक्ति, साधना, उपासना से हजारों कोसों दूर भौतिक मायाजाल है, जिससे आत्मप्रवंचना के अतिरिक्त और कुछ प्रयोजन सिद्ध नहीं होता।

आत्मचिंतन, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण, आत्मविकास के लिए अंतरंग जीवन को समर्थ बनाने के लिए अंतर्मुखी होना अत्यंत आवश्यक है। अपने स्वरूप, लक्ष्य, कर्त्तव्य और उपलब्ध जीवन विभूतियों के श्रेष्ठतम सदुपयोग की बात निरंतर सोचते रहना चाहिए। अधिक मिले के प्रयास के साथ-साथ जो मिला है, उसके उत्कृष्ट उपयोग की बात पर अधिक ध्यान देना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७२ पृष्ठ-६३

सत्य, तप और वैराग्य का समन्वय

सत्य की प्राप्ति तपस्वी ही कर सकता है। शारीरिक और मानसिक प्रलोभनों से बचने में जिस तितिक्षा और कष्ट सहिष्णुता की, धैर्य और संयम की आवश्यकता पड़ती है, उसे जुटा लेने का नाम ही तप है। अकारण शरीर को सताने का नाम ही तप नहीं है। सताना तो किसी का भी बुरा है, फिर शरीर को व्यथित और संतप्त करने से ही क्या हितसाधन हो सकता है? सत्यमय जीवनलक्ष्य निर्धारित करने के कारण सीमित उपार्जन से निर्वाह करने की स्थिति में, गरीबी अथवा मितव्ययता अपनानी पड़ती है, इसे तपस्या कहते हैं, इसे प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार और शिरोधार्य करने का नाम तप साधना ही है।

सत्यरूप नारायण को प्राप्त करने का मूल्य है—वैराग्य। वैराग्य का अर्थ घर-परिवार को छोड़ विचित्र वेश बनाना या भिक्षाटन करना नहीं है वरन यह है कि जिस राग-द्वेष की धूप-छाँह में सारा जगत हँसता, रोता, अशांत और उद्विग्न रहता है, उस बिडंबना से बचते हुए महान लक्ष्य की ओर अनवरत गति से चलते जाना। सत्यनिष्ठ व्यक्ति इस असत्यमग्न संसार को एक विचित्र प्राणी लगता है। उसे भी अज्ञान के अंधकार में भटकती दुनियाँ दयनीय लगती है। दोनों का तालमेल नहीं बैठता। यह विसंगति कहीं कटुता उत्पन्न करती है, कहीं तिरस्कार उलीचती है, कहीं अवरोध उत्पन्न करती है, कहीं त्रास देती है। इसे उपेक्षापूर्वक देखना वैराग्य है और इस पर भी जो त्रास सहने पड़ें, उन्हें संतोषपूर्वक सहने का नाम तप है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७२ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'उपासना' की सफलता 'साधना' पर निर्भर है

आत्मिक प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ा व्यवधान उन कुसंस्कारों द्वारा प्रस्तुत किया जाता है, जो दुर्भावों और दुष्कर्मों के रूप में मनोभूमि पर छाए रहते हैं। आकाश में बादल छाए हों तो फिर मध्याह्न काल का सूर्य यथावत उदय रहते हुए भी अंधकार ही छाया रहेगा। जप-तप करते हुए भी आध्यात्मिक सफलता न मिलने का कारण एक ही है—मनोभूमि का कुसंस्कारी होना। साधना का थोड़ा-सा गंगाजल इस गंदे नाले में गिरकर अपनी महत्ता खो बैठता है। नाले को शुद्ध कर सकना संभव नहीं होता। बेशक तीव्र गंगाप्रवाह में थोड़ी-सी गंदगी भी शुद्धता में परिणत हो जाती है, पर साथ ही यह भी सच है कि सड़ाँध भरी गंदी गटर को थोड़ा-सा गंगाजल शुद्ध कर सकने में असमर्थ-असफल रहेगा।

साधना की अपनी महिमा और महत्ता है, उसे गंगाजल से कम नहीं अधिक ही महत्त्व दिया जा सकता है, पर साथ ही यह भी कमझ लेना चाहिए कि वह सर्वसमर्थ नहीं हैं। गंगाजल से बनी हुई मदिरा अथवा गंगाजल में पकाया हुआ मांस शुद्ध नहीं गिने जाएँगे। शौचालय में प्रयुक्त होने के उपरांत का गंगाजल भरा पात्र देव प्रतिमा पर चढ़ाने योग्य न रहेगा। गंगाजल की शास्त्र प्रतिपादित महत्ता यथावत बनी रहे, इसके लिए यह नितांत आवश्यक है कि उसके संग्रह उपकरण एवं स्थान की पवित्रता भी अक्षुण्ण बनी रहे।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७२ पृष्ठ-७

अपने को पहचानें—आत्मबल संपादित करें

दूरदर्शिता का तकाजा यह है कि हम अपने स्वरूप और जीवन के प्रयोजन को समझें। शरीर और मन रूपी उपकरणों का उपयोग जानें और उन प्रयोजनों में तत्पर रहें, जिनके लिए प्राणिजगत का यह सर्वश्रेष्ठ शरीर, सुरदुर्लभ मानव जीवन उपलब्ध हुआ है। आत्मा वस्तुतः परमात्मा का पवित्र अंश है। उसकी मूल प्रवृत्तियाँ वही हैं, जो ईश्वर की। परमात्मा परम पवित्र है, श्रेष्ठतम उत्कृष्टताओं से परिपूर्ण है। उसका समस्त क्रिया-कलाप लोकमंगल के लिए है। वह लेने की आकांक्षा से दूर, देने की, प्रेम की, उदात्त भावना से परिपूर्ण है। आत्मा को इसी स्तर का होना चाहिए और उसके क्रिया-कलापों में उसी प्रकार की गतिविधियों का समावेश होना चाहिए। परमेश्वर ने अपनी सृष्टि को सुंदर, सुसज्जित, सुगंधित और समुन्नत बनाने में सहयोगी की तरह योगदान करने के लिए मानव प्राणी को अपने प्रतिनिधि के रूप में सृजा है। उसका चिंतन और कर्त्तव्य इसी दिशा में नियोजित रहना चाहिए। यही है आत्मबोध, यही है आत्मिक जीवनक्रम। इसी को अपनाकर हम अपने अवतरण की सार्थकता सिद्ध कर सकते हैं।

यह सर्वथा अवांछनीय है कि हम अपने को शरीर एवं मन मान बैठें और इन्हीं की सुख-सुविधा और मरजी जुटाने के लिए अनुचित मार्ग तक अपनाने में न हिचकें।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७२ पृष्ठ-२१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन की मूल प्रेरणा—कर्त्तव्यपालन

संसार को आलोकित रखने के लिए सूर्यदेव निरंतर गतिमान रहते हैं। मेघों का अभाव अवृष्टि का कारण न बनें, उसके लिए समुद्र सतत बड़वानल में जला करते हैं। सितारे रोज चमकते हैं ताकि मनुष्य अपनी अहंता में ही न पड़ा रहकर विराट ब्रह्म की प्रेरणाओं से पूरित बना रहे। अपनी श्वास-प्रश्वास क्रिया द्वारा संसार का विष पीने और अमृत उड़ेलने का पुण्य-पुरुषार्थ वृक्षों ने कभी बंद नहीं किया। कर्म का परोपकार में अर्पण सृष्टि की मूल प्रेरणा है। जिस दिन यह प्रक्रिया बंद हो जाएगी, उस दिन विनाश-ही-विनाश, शून्य-ही-शून्य, अंधकार-ही-अंधकार के अतिरिक्त कुछ भी तो न रह जाएगा।

पवन नित्य चलती है और प्राण-दीपों को सजग बनाए रखने का कर्त्तव्य-पालन करती है। फूल हँसते और मुस्कराकर कहते हैं—काँटों की चिंता न करके संसार का सौंदर्य बढ़ाते रहने में ही जीवन की शोभा है। अपने नन्हें से बच्चे की चोंच में दाना डालकर चिड़िया अपने वंश का पोषण ही नहीं करती अपितु असमर्थ और अनाश्रितों को आश्रय देने की परंपरा पर भी प्रकाश डालती है।

जब सृष्टि का प्रत्येक कण इस पुण्य-परंपरा का आदर करने में लगा हुआ है, तब मनुष्य अपनी सृष्टि का सौंदर्य निखारने का प्रयत्न न करें, इससे बढ़कर लज्जा की बात उसके लिए और क्या हो सकती है ?

—अखण्ड ज्योति-जून १९७२ पृष्ठ-१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

समस्त सफलताओं का हेतु—मन

जीवन में अभ्युदय की इच्छा रखने वालों को कुछ और न करके पहले अपने मन की महान शक्तियों का उद्घाटन करना चाहिए। मन की शक्तियों का उद्घाटन करने के लिए उसे अपने अनुकूल बनाना बहुत आवश्यक है। मन के अनुकूल होते ही उसकी सारी शक्तियाँ कल्याणकर कार्यों की ओर लग जाती हैं और मनुष्य के जीवन में एक-से-एक बढ़कर फल लाती हैं।

मन को अनुकूल बनाने का एक उपाय है कि इसे बुरी भावनाओं, अवांछनीय इच्छाओं और अकल्याणकर मनोरथों से बचाए रखा जाए। विषय-वासनाओं तथा भोग-विलास की प्रमादी प्रवृत्तियों का बोझ इस पर न डाला जाए। विकारों से थका हुआ मन विद्रोही होकर अनिष्टकारी दिशाओं में ही भागता है। उसकी सत्चेतना का ह्रास हो जाता है और वह एक बदहवास मद्यप की तरह बनकर, मनुष्य का घोरतम अहित किया करता है।

अधिक कामनाएँ, लिप्साएँ एवं तृष्णाएँ मनुष्य के मन को जर्जर कर डालती हैं, जिससे उसकी शक्ति स्वयं मनुष्य पर आक्रमण करके उसे हानि पहुँचाया करती है।

संयम एवं साधना का सहारा लेकर मनुष्य को अपने मन का परिष्कार करना चाहिए। यह एक महान तप है। जिसने इस तप की सिद्धि कर ली, मन को मुट्ठी में कर लिया, मानो उसने संसार की समस्त सफलताओं एवं उन्नतियों की कुंजी ही पा ली।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७२ पृष्ठ-४०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम अपने को प्यार करें ताकि ईश्वर का प्यार पा सकें

दूसरों के सामने अपनी श्रेष्ठता प्रकट करना उसी के लिए संभव है जो भीतर से श्रेष्ठ है। प्रभु की राह पर बढ़ाया गया हर कदम अपनी आत्मिक प्रगति के लिए किया गया प्रयास ही है। जो कुछ औरों के लिए किया जाता है, वस्तुतः वह अपने लिए किया हुआ कर्म ही है। दूसरों के साथ अन्याय करना अपने साथ ही अन्याय करना है। हम अपने अतिरिक्त और किसी को नहीं ठग सकते। दूसरों के प्रति असज्जनता बरतकर, अपने आप के साथ ही दुर्व्यवहार किया जाता है।

ईश्वर रूठा हुआ नहीं है कि उसे मनाने की मनुहार करनी पड़े। रूठा तो अपना स्वभाव और कर्म है, मनाना उसी को चाहिए। अपने आप से ही प्रार्थना करें कि कुचाल छोड़ें। मन को मना लिया, आत्मा को उठा लिया तो समझना चाहिए कि प्रार्थना सफल हो गई और उसका अनुग्रह उपलब्ध हो गया।

गिरे हुओं को उठाना, पिछड़े हुओं को आगे बढ़ाना, भूले को राह बताना और जो अशांत हो रहा है, उसे शांतिदायक स्थान पर पहुँचा देना, यह वस्तुतः ईश्वर की सेवा ही है। जब हम दुखी और दरिद्र को देखकर व्यथित होते हैं और मलिनता को स्वच्छता में बदलने के लिए बढ़ते हैं तो समझना चाहिए कि यह कृत्य ईश्वर के लिए, उसकी प्रसन्नता के लिए ही किए जा रहे हैं। दूसरों की सेवा-सहायता अपनी ही सेवा-सहायता है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७२ पृष्ठ-२

ईश्वर की प्राप्ति सरलतम भी, कठिनतम भी

ईश्वरप्राप्ति अति सरल है, क्योंकि वह जीवन की महती आवश्यकता है। उसकी साधना सुगम है, उसमें कोई ऐसी कठिनाई नहीं है जिसके लिए भारी दौड़-धूप करने और सरंजाम जुटाने की जरूरत पड़े। तपश्चर्या, योगसाधना, योगप्रक्रिया का मात्र प्रयोजन इतना है कि नशे की खुमारी और निद्रा की मूर्च्छना को हटा दिया जाए। जो साधना इस प्रयोजन को पूरा कर सकेगी, उसी से ईश्वरप्राप्ति का सरल प्रयोजन सुगमतापूर्वक पूरा हो जाएगा।

व्यवधान केवल एक है—इसे सरल भी कह सकते हैं और कठिन भी। वस्तुतः वह साहसी के लिए अति सरल है और असमंजसग्रस्त भीरु व्यक्ति के लिए अति कठिन। करना सिर्फ इतना भर है कि हम अपने व्यक्तित्व और अस्तित्व को शरीर न मानें, सुखों की खोज बाहर के पदार्थों में ढूँढ़ना बंद कर दें। बहिर्मुखी दृष्टिकोण को अंतर्मुखी बनाएँ। अपने को आत्मा मानें। उसी में रुचि लें, उसी की इच्छा करें और उसी की व्यवस्था बनाएँ। अपना चिंतन इसी लक्ष्य पर नियोजित करें कि यह जीवन परमेश्वर का है, परमेश्वर के लिए है और वही कार्य किए जाएँगे जो परमेश्वर द्वारा अपने लिए नियत, निर्धारित किए गए हैं। पदार्थों में सुख खोजने की अपेक्षा प्रवृत्तियों में उत्कृष्टता और आनंद तलाश करना पड़ेगा। यह परिवर्तन जितना स्पष्ट होता जाएगा, ईश्वर उसी अनुपात से अपने समीप प्रस्तुत दिखाई देगा।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७२ पृष्ठ-६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गुरु से काम नहीं चलेगा सद्गुरु की शरण में जाएँ

सद्गुरु अंत:करण में निवास करता है। इसे निर्मल आत्मा या प्रकाशस्वरूप परमात्मा कह सकते हैं। प्रकाश का अर्थ रोशनी नहीं—सन्मार्गगामिनी प्रेरणा है। उसे ऋतंभरा प्रज्ञा भी कहते हैं। सद्गुरु का उपदेश इसी वाणी, इसी भाषा और इसी परिधि में होता है। उनका परामर्श और मार्गदर्शन हमें निरंतर उपलब्ध रहता है।

बाहर के गुरु अनेक विषयों पर बात कर सकते हैं, पर सद्गुरु की शिक्षा एक ही होती है—अंधकार से प्रकाश की ओर, मृत्यु से अमृत की ओर, असत से सत की ओर चलो। बहार के गुरु जब-तब ही मिलते हैं, उनका ज्ञान सीमित होता है और उनका उपदेश भ्रांत भी हो सकता है, पर अंतरात्मा में विद्यमान सद्गुरु हर समय हमारे पास और साथ उपस्थित रहता है, उसका परामर्श हमें हर समय उपलब्ध रहता है।

जब कोई बुरा काम करते हैं तो हृदय कांपता है, मुँह सूखता है, पैर थरथराते हैं, भीतर ही भीतर कोई कोंचता रहता है। कोई देख तो नहीं रहा, कोई सुन तो नहीं रहा, किसी को पता तो नहीं चल रहा, इन आशंकाओं के बीच वे दुष्कर्म किए जाते हैं। मानो सद्गुरु बराबर रोक रहा है, समझा रहा है और धिक्कार रहा है। यह नीति निर्देशक अंतरात्मा ही सद्गुरु है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७२ पृष्ठ-२४

न किसी को कैद करें और न कैदी बनें

लोभ और मोह को हम जितना ही पकड़ते हैं, उतना ही उनके बंधनों में बँधते जाते हैं। संपदा को अपने अधिकार में करना चाहते हैं पर होता ठीक उलटा है। हम उलटे संपदा के कब्जे में चले जाते हैं, उसी के गुलाम बनकर जीते हैं। परिवार पर अपनी मोह-ममता केंद्रित करते हैं, उन्हें अपना मानते हैं, पर सच तो यह है कि हम उन्हीं के होकर रह जाते हैं। पदार्थों और व्यक्तियों को पकड़ने का नहीं, अपने को छुड़ाने का ही प्रयत्न करना उचित है। संसार को बाँधने में नहीं, उसकी शोभा देखकर प्रमुदित रहने और उपलब्धियों का श्रेष्ठतम सदुपयोग करने में ही बुद्धिमत्ता है।

प्रकाश की ओर से मुँह मोड़कर छाया के पीछे भागने से छाया आगे बढ़ती जाती है और पकड़ में नहीं आती। लालसा अतृप्त ही रहती है। छाया को बाँधने का प्रयास सफल नहीं होता, पर जब छाया की ओर से मुँह मोड़कर प्रकाश की ओर चलना आरंभ करते हैं तो छाया अनुगामिनी बनकर पीछे-पीछे चलने लगती है। माया, छाया की तरह है। संपन्न बनने के प्रयास जितने तीव्र होते हैं, तृष्णा उतनी ही बढ़ती है और जो मिला था, वह स्वल्प लगता है। आकांक्षा की तुलना में उपलब्धि की मात्रा स्वल्प रहेगी और अभाव घेरे रहेंगे, पर जब हम उत्कृष्टता का वरण करते हैं आदर्शों की ओर चलते हैं तो आवश्यकताओं की पूर्ति सरल बन जाती है, न कोई अभाव रहता है और न असंतोष।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७२ पृष्ठ-४०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसे अवश्य पा लोगे

किसी पहाड़ी झील को देखो। तुषार की रुपहली पर्त छाई हुई है। हवा चलती है, पानी बरसता है, बादल गरजते हैं, बिजली चमकती है, किंतु झील की निश्चलता में अंतर नहीं आता। किनारों पर रंग-बिरंगे पक्षी कूँजते और कलोल करते हैं, किंतु उस झील में कोई विक्षेप उत्पन्न नहीं होता। तट पर फैली वृक्षावली में एक-से-एक सुंदर फूल खिलते, शाखा से छूटकर झील पर गिरते, किंतु झील के स्थिर हृदय में उनका कोई प्रतिबिंब नहीं बनता। वह अपने निर्विकल्प भाव में एक समान तन्मय रहती है। तुम में यदि उस झील की तरह स्थिरता, तन्मयता और निर्विकल्पना का धैर्य है तो तुम उसे अवश्य पा लोगे।

कुम्हार तालाब से मिट्टी खोद लाता है। उसे कूट-पीसकर महीन बनाता और छानकर साफ करके पानी डालकर उसे खूब मसलता है। तैयार हो जाने पर चाक पर चढ़ाकर अपनी इच्छा के अनुसार वह उसे आदमी, पशु या पक्षी का रूप दे देता है। इतना सब होने पर भी मृतिका कुछ नहीं बोलती। सब कुछ समभाव से सहन करती हुई कुंभकार की इच्छा के वशवर्ती रहती है। यदि तुममें उस मृतिका की भाँति सहनशीलता और नम्रता है तो तुम उसे अवश्य पा लोगे।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७२ पृष्ठ-१

आत्मविश्वासी पर, दूसरे भी विश्वास करते हैं

अपने ऊपर, अपनी सामर्थ्य पर यदि भरोसा किया जाए और यह माना जाए कि कई अभावों, कठिनाइयों के रहते हुए भी अपने में इतनी सामर्थ्य विद्यमान है कि किसी भी दिशा में आगे बढ़ा जा सकता है और किसी भी झंझट से जूझा जा सकता है। अपनी सामर्थ्य स्वल्प मानने से, अपनी क्षमता पर विश्वास न करने के कारण ही हम दूसरों की दृष्टि में दुर्बल और असमर्थ सिद्ध होते हैं।

अपने ऊपर भरोसा न करने से न आत्मबल विकसित होगा और न मनोबल बढ़ेगा। मनस्वी और तेजस्वी व्यक्ति वे होते हैं, जिनका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा होता है।

कठिन प्रसंगों पर आत्मविश्वास जितना सहायक होता है, उतना और कोई नहीं। संसार के पराक्रमी व्यक्तियों का इतिहास वस्तुत: उनके मनोबल की, आत्मविश्वास की गरिमा ही सिद्ध करता है। सफलता उचित मूल्य चुकाए बिना किसी को नहीं मिली। अपने ऊपर भरोसा न करने वाले लोग यह सोचते हैं कि हम इतना बोझ कैसे उठा सकेंगे ? इतना कठिन काम कैसे कर सकेंगे ? अपनी शक्ति नष्ट कर देते हैं और कल्पित आशंका प्रगति की ओर बढ़ने ही नहीं देती। सफलता मिले भी तो कैसे ?

हम अपने ऊपर भरोसा करें, आत्मविश्वास करें और नई सूझ-बूझ, नई स्फूर्ति का उन्नयन देखें। आत्मविश्वास का सत्परिणाम असंदिग्ध है। जो अपने ऊपर भरोसा करता है, दुनिया उस पर भरोसा करती है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७२ पृष्ठ-६५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंत:करण में ईश्वर का दर्शन

ईश्वर का सबसे निकटवर्ती स्थान हमारा अंत:करण है। यदि हम उसे वहाँ देखें और ढूँढ़ें तो बाहर भटकने की अपेक्षा उसे अधिक सरलतापूर्वक प्राप्त कर सकते हैं।

न केवल दर्शन वरन उसके साथ वार्त्तालाप, परामर्श भी हो सकता है। इसके लिए अंत:करण से बढ़कर ईश्वर के साथ एकांत मिलन का और कोई स्थान नहीं है। यदि चाहें तो उसकी छाती से छाती लगाकर राम-भरत की तरह यहीं मिल सकते हैं और उत्कृष्टता की आत्मारूपी राधा का परमात्मा रूपी कृष्ण से संगम-समर्पण भी यहीं हो सकता है।

विवेक की आँख खोलकर देखें तो वह उत्कृष्टता की प्रतिमा के रूप में यहीं हँसता, मुस्कराता मिलेगा। मानवीय आदर्शों की महिमामयी महत्ता से संपन्न उज्ज्वल और प्रकाशवान अपनी आत्मा ही परमेश्वर है। मलिनताओं का आवरण उठाकर यदि उसके सत, चित और आनंदस्वरूप का, सत्यं, शिवं, सुंदरं के प्रकाश का दर्शन करें तो प्रतीत होगा कि दूर समझा जाने वाला भगवान अपने अति निकट है।

विश्वात्मा के रूप में उसकी आत्मा अपने भी भीतर ज्योतिर्मय हो रही। समस्त प्राणियों में ओत-प्रोत वह दिव्यसत्ता अपने भीतर भी विराजमान है। सबको अपने में और अपने को सबमें देखने का दृष्टिकोण जैसे ही विकसित हुआ कि बदली हटते ही प्रकट होने वाले सूर्य की तरह भगवान सामने आया। व्यक्तिवादी संकीर्णता की बदली ही उस दिव्य दर्शन से हमें वंचित किए रहती है। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७२ पृष्ठ-१*

हम ईश्वर के होकर रहें—उसी के लिए जिएँ

आस्तिकता का अर्थ केवल ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करना ही नहीं वरन यह भी है कि उसके निर्देशों का पालन यथावत किया जाए। उपासना का अर्थ समृद्धि और सुविधा के लिए गिड़गिड़ाना नहीं वरन यह है कि हमारा वह शौर्य सजग हो, जिसमें अंधकार में भटकते लोगों का अनुसरण छोड़कर ईश्वर के पीछे एकाकी चल सकें।

अच्छा हो हम ईश्वर के लिए जिएँ, उसके बनकर रहें और उसकी प्रेरणाओं का अनुसरण करें। उपासना का अर्थ है—पास बैठना। पास बैठें और बिठाएँ। जीवन के उद्देश्य और सदुपयोग का मार्ग पूछें और उस पर चलने की अपनी तत्परता बनाएँ। बैठने की दूरी क्रमश: घटनी चाहिए और निकटता इतनी बढ़नी चाहिए कि अपना आपा परमेश्वर में तल्लीन हो जाए और उस परमज्योति से अपना कण-कण जगमगाने लगे।

अपनी आकांक्षाओं में ईश्वरीय आकांक्षा घुली रहे। हम वही चाहना करें, वही सोचें जो ईश्वरीय प्रेरणा-प्रवाह के अनुकूल हो। हम वही करें जो ईश्वर को अपेक्षित है। मन का शासन अस्वीकार करके ईश्वर के हाथों अपने को सौंप दें और उसी के संकेतों पर अपने चिंतन और कर्तृत्व की दिशा का निर्धारण करें।

अपने लिए नहीं हम ईश्वर के लिए जिएँ। यह घाटे का नहीं सबसे अधिक लाभ का कदम है। यह निश्चित है कि जो ईश्वर का होकर रहता है, ईश्वर भी उसी का हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७२ पृष्ठ-२८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर के अनुग्रह का सदुपयोग किया जाए

मनुष्य को सोचने और करने की स्वतंत्रता प्राप्त है। उसका उपयोग भली या बुरी, सही या गलत किसी भी दिशा में वह स्वेच्छापूर्वक कर सकता है। भव-बंधन में बाँधना भी उसका स्वतंत्र कर्तृत्व ही है। इसमें माया, प्रारब्ध, शैतान, ग्रह-नक्षत्र आदि किसी अन्य का कोई दोष या हस्तक्षेप नहीं है। जीवन के स्वरूप और उद्देश्य से अपरिचित व्यक्ति भौतिक लालसाओं और लिप्साओं में स्वत: आबद्ध होता है। वह चाहे तो अपनी मान्यता और दिशा बदल भी सकता है।

रेशम का कीड़ा अपना खोल आप बुनता है और उसी में बँधकर रह जाता है। मकड़ी से बंधन में बाँधने वाला जाला उसका अपना ही बनाया हुआ होता है। इसे उनकी प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया ही कह सकते हैं। जब रेशम का कीड़ा खोल में से निकलने की बात सोचता है तो बुनने की तरह उसे कुतर डालने में भी कुछ कठिनाई नहीं होती। मकड़ी अपने फैलाए जाले को जब चाहे तब समेट भी सकती है। इंद्रिय लिप्साओं और ममता-अहंता को प्रधानता देकर मनुष्य शोक-संताप की विपन्नता में ग्रस्त होता है। यदि वह अपनी दिशा पलट ले तो जीवनमुक्त स्थिति का आनंद प्राप्त करने में भी उसे कोई अड़चन प्रतीत न होगी।

समस्त विभूतियों से संपन्न मानव जीवन का अनुदान और स्वतंत्रता का उपहार देकर भगवान ने अपने अनुग्रह का अंत कर दिया। अब मनुष्य की बारी है कि वह सिद्ध कर दिखाए कि उसका सदुपयोग वह कर सकता है, जो उसे दिया गया।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७२ पृष्ठ-१

आत्मदेव की उपासना

प्रतिमाओं में देखे जाने वाले भगवान बोलते नहीं, पर अंत:करण वाले भगवान जब दर्शन देते हैं तो बात करने के लिए भी व्याकुल दीखते हैं। यदि हमारे कान हों तो सुनें, वे एक ही बात कहते चले जाएँगे—"मेरे इस अनुपम उपहार मनुष्य जीवन को इस तरह न बिताया जाना चाहिए जैसे कि बिताया जा रहा है। ऐसे न गँवाना चाहिए जैसे कि गँवाया जा रहा है। यह बड़े प्रयोजन के लिए ओछी रीति-नीति अपनाकर मेरे अनुदान का उपहास न बनाया जाना चाहिए।"

जब और भी बारीकी से उनकी भाव-भंगिमा और मुखाकृति को देखें तो प्रतीत होगा कि वे विचार-विनिमय करना चाहते हैं और कहना चाहते हैं कि बताओ तो, इस जीवन संपदा का इससे अच्छा उपयोग क्या और कुछ नहीं हो सकता, जैसा कि किया जा रहा है? वे उत्तर चाहते हैं और संभाषण को जारी रखना चाहते हैं।

अंतरंग में अवस्थित भगवान की झाँकी, दर्शन, संभाषण-परामर्श और पथ-प्रदर्शन तक ही पर्याप्त नहीं है। उससे गाय-बछड़े जैसा वात्सल्य भी दिखाई देता है। परमात्मा हमें अपना अमृत-दुग्ध, अजस्र अनुदान के रूप में पिलाना चाहते हैं। पति और पत्नी की तरह भिन्नता को अभिन्नता में बदलना चाहते हैं। आत्मसात कर लेने की उनकी उत्कंठा कितनी प्रबल दृष्टिगोचर होती है। हम ईश्वर के बनें, उसके रहें, उसके लिए जिएँ।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७२ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन का अर्थ

जीवन का अर्थ है—आशा और प्रगति। जिसे सही अर्थों में जीवन जीना आ गया, उसे पलभर को भी निराशा और दु:ख की भावना उत्पीड़ित नहीं कर सकती। कठिन से कठिन परिस्थितियों में वह आशावादी व्यक्ति हँसते-मुस्कराते जीता है और अंतत: लक्ष्य पा ही लेता है। जीवन का अभिप्राय है—प्रगति, अर्थात प्रतिक्षण अपने भाव संस्थान को गुण, कर्म और स्वभाव को उत्कृष्ट बनाना। धन, वैभव तथा अन्य लौकिक ऐषणाएँ तो क्षणजीवी हैं, नश्वर हैं, कामनाओं और वासनाओं को अधिकाधिक बढ़ाने वाली हैं, परंतु जिसने अपनी आत्मा को निर्मल बना लिया, कषाय-कल्मषों से स्वयं को मुक्त कर लिया, वही सच्चा सुख प्राप्त करता है।

जिसे जीना आ गया, उसका जीवन स्वत: ही पुष्प जैसा सुंदर, चंदन जैसा शीतल, सुगंधित तथा दीपक जैसा प्रकाशवान बन जाता है। वह पुष्प के सदृश हँसता, खिलता, सत्यं-शिवं-सुंदरम् युक्त जीवन व्यतीत करता है। चंदन के समान समीपवर्ती वातावरण को सुगंधित बनाए रखता है तथा घिसे जाने पर भी रोष, विद्वेष की भावना मन में नहीं लाता। दीपक के सदृश वह तिल-तिल जलकर अंधकार से लड़ता है तथा अंतिम बूँद तक दूसरों को प्रकाश देता रहता है।

ऐसा व्यक्ति ही सच्चे अर्थों में ईश्वर पुत्र कहलाने योग्य है। वह मानव रहकर महामानव बन जाता है और अंतत: ईश्वरीय सत्ता में समाहित हो जाता है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७२ पृष्ठ-२

दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्तियों से छूटना ही मुक्ति है

मुक्ति को परम पुरुषार्थ माना गया है। कैदी जेल से छूटता है, छात्र कॉलेज छोड़ता है, गर्भ से बालक धरती पर आता है तो उसे प्रसन्नता भी होती है और सुविधा भी मिलती है। भव-बंधनों से छुटकारा प्राप्त कर मनुष्य भी समस्त शोक-संतापों से रहित होकर सच्चा जीवन-लाभ लेता है।

मुक्ति मरने के बाद होती है और किसी लोक विशेष में रहना पड़ता हो, ऐसी बात नहीं है। दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्तियों के ही बंधन जीव को बाँधे हुए हैं। यदि उनसे छुटकारा प्राप्त कर लें तो फिर जीवन-मुक्ति का आनंद जीवित रहते हुए ही, इसी जन्म में मिलता है। उसके लिए परलोक की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती।

मुक्तपुरुष न किसी को उद्विग्न करते हैं और न किसी से उद्विग्न होते हैं। उनके लोभ-मोह आदि शत्रु नष्ट हो चुके होते हैं। वे दूसरों की मन:स्थिति जानते हैं और लोकप्रिय आचरण करते हैं। प्रिय और मधुर वाणी बोलते हैं। वे सूक्ष्म बुद्धि से निर्णय करते हैं। सज्जन नागरिकों की तरह आचरण करते हैं। सबके बंधु होते हैं।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७२ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जिंदगी जीनी हो तो इस तरह जिएँ

जिम्मेदारियाँ दूसरों पर डालने की इच्छा इसलिए होती है कि उत्तरादायित्वों को भार उठाना कायर और कमजोरों को बहुत भारी प्रतीत होता है। वे पगडंडी ढूँढ़ते हैं और ऐसे सरल रास्ते से बच निकलने की बात सोचते हैं, जिसमें अपने ऊपर कुछ बोझ न पड़े, पर वस्तुत: इसमें भटकाव के अतिरिक्त और कुछ है नहीं। उत्थान और पतन का ही नहीं, सुख और दु:ख का उत्तरदायित्व भी हमें अपने ऊपर लेना चाहिए। हम अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हैं। वर्तमान में जो परिस्थितियाँ सामने खड़ी हैं, उनमें यत्किंचित दूसरे भी निमित्त हो सकते हैं, पर अधिकतर अपनी ही रीति-नीति और गतिविधियों की प्रतिक्रिया सामने रहती है। भविष्य में भी जो कुछ होना या बनना है, उसमें भी अपने ही क्रिया-कलापों के प्रतिफल सामने होंगे। दूसरों का सहयोग-अवरोध एक सीमा तक ही हमारा भला-बुरा कर सकता है। तथ्य यह है कि अपना व्यक्तित्व ही हर दिशा में प्रतिध्वनि की तरह गूँजता है।

किन्हीं असफलताओं के लिए दूसरों को दोष देने की अपेक्षा हम अपनी उन त्रुटियों को ढूँढ़ें, जिनके कारण सफलता से वंचित रहना पड़ा। इसी तरह प्रगति की दिशा में जितने कदम बढ़ सके, उनके पीछे उस सुव्यवस्थित रीति-नीति को समझें जिसे अपनाकर हम स्वयं ही नहीं और भी कितने ही लोग आगे बढ़ सकने में समर्थ हुए हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७३ पृष्ठ-३५

हम सज्जनता अपनाएँ—सहृदय बनें

सच्ची बात लोगों को कटु लगती है, ऐसा कहा-सुना जाता है, पर यह अंशत: ही सत्य है। पर यदि बोलने की शैली में स्नेह, सद्भावना मिली है और जिससे कहा जा रहा है, उसके सम्मान की रक्षा का भी ध्यान रखा जाए तो सत्यवचन कभी संकट उत्पन्न नहीं करता। प्रेममिश्रित सत्य यदि सद्भावनापूर्वक सुधार की आशा से कहा गया है, उसमें समाधान एवं सुझाव है तो कोई कारण नहीं कि किसी के मन पर उसकी चोट पहुँचे और शत्रुता उत्पन्न होने का संकट उत्पन्न हो। किसी को यह कहा जाए कि तुमने अनीति से धन अर्जित किया है और कृपणतापूर्वक जोड़ा है तो उचित न होगा। यह कहना ज्यादा अच्छा है कि आपने जो कमाया है, उसका श्रेष्ठ उपयोग यही हो सकता है कि उसका एक महत्त्वपूर्ण अंश लोकमंगल के कार्यों में लगाकर श्रेय के भागी बनें। इससे चोट पहुँचाए बिना सुझाव देकर वह श्रेष्ठ हल उपस्थित किया जा सकता है जिसके आधार पर वर्तमान स्थिति में जो सर्वोत्तम हो सकता है, उसे किया जा सके।

जीवन की सफलता और सार्थकता का भवन छोटे-छोटे सद्गुणों की ईंटों और सतर्कता के गारे-चूने में चुना जाता है। यदि हम जीवन को महत्त्वहीन न समझें और उसके सदुपयोग का समुचित ध्यान रखें तो उस लक्ष्य तक सहज ही पहुँच सकते हैं, जिसके लिए यह मनुष्य जीवन की महान विभूति उपलब्ध हुई है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७३ पृष्ठ-२५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग की साधना

ईश्वर दर्शन के लिए कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं, उसे अपने भीतर ही देखा जाना चाहिए। उसे प्राप्त करने के लिए संयम, सद्विचार और सद्भाव का विकास करना चाहिए। इसी सद्भाव संपन्न आराधना का प्रतिफल है—आनंद। इसी भक्तियोग का साधक सच्चे अर्थों में जीवन-लाभ प्राप्त करता है।

उच्च आदर्शों के प्रति इतनी सघन निष्ठा, भक्तिभावना ही कही जाएगी जो किसी भी भय या प्रलोभन के प्रस्तुत होने पर विचलित न हो सके। भौतिक लिप्साओं के स्थान पर आत्मिक आकांक्षाएँ प्रदीप्त होना, गुण-कर्म-स्वभाव की उत्कृष्टता को सबसे बड़ी संपदा समझना, वैभव-बड़प्पन की उपेक्षा करके महानता के पथ पर अग्रसर होना, यही है सद्भाव संपन्न अंत:करण का लक्षण। भक्तियोगी इसी स्तर की भावनाओं से ओत-प्रोत रहता है। वह ईश्वर को, आदर्शों को एक ही तत्त्व के रूप मानता है और उनके लिए समान रूप से अपनी सघन श्रद्धा को नियोजित किए रहता है। ऐसा भक्तियोगी ईश्वर को आत्मसमर्पण करके दैवी विभूतियों से सहज ही सुसंपन्न बनता है। ऐसी आत्माएँ जीवनमुक्त देवदूत कहलाती हैं, स्थूल, सूक्ष्म और कारण शरीरों का परिष्कार करने के लिए कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का साधनाक्रम व्यावहारिक जीवन में उतारने से ही जीवनलक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर हुआ जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७३ पृष्ठ-२१

पात्रता प्रमाणित करें, विभूतियों का वरदान पाएँ

उस व्यक्ति की भला कोई क्यों सहायता करेगा जो हेय स्थिति में पड़े रहने में संतुष्ट है और दुर्भाग्य के सामने नतमस्तक होकर गिर पड़ा है। गंदे गड्ढे में कोई सुगंधित इत्र को डालने के लिए क्यों तैयार होगा?

दीनता की करुणा से द्रवित होकर दानी कुछ दे सकते हैं, उसमें गौरव दानी का है, दीन का नहीं। दरिद्रता का प्रदर्शन करके कुछ प्राप्त कर लिया जाए तो भी उसके साथ तिरस्कार तो जुड़ा ही रहता है। गौरव-गरिमा खोकर कुछ प्राप्त करना अपने को दयापात्र सिद्ध करना और तब कुछ पाना वस्तुत: एक ऐसा घाटा है जिसकी तुलना बड़ी-से-बड़ी संपदा खोने से भी नहीं की जा सकती है।

ईश्वर की सच्ची और गहरी अनुकंपा सदा से तपस्वी साहसी को ही मिलती रही है, उन्हीं को बढ़े-चढ़े दैवी अनुदान प्राप्त हुए हैं। अपने को दीन-दरिद्र, असमर्थ और असहाय कहकर कोई अपनी अकर्मण्यता का ही परिचय दे सकता है। ऐसी दशा में यदि ईश्वर भी उनकी ओर से आँखें मूँद ले, मुँह फेर ले तो आश्चर्य की बात ही क्या है?

हम पात्रता विकसित करें, जीवनविद्या के कलाकार सिद्ध हों ताकि विभूतियों की अप्सरा हमारी प्रामाणिकता पर मुग्ध होकर सहनृत्य के लिए अंतरिक्ष से उतरकर हमारे निकट आए और आनंद से निकटवर्ती वातावरण को भर दे।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७३ पृष्ठ-३८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विवेकयुक्त दूरदर्शी बुद्धिमत्ता ही श्रेयस्कर है

हमें चंचल मन की बचकानी बाल-प्रवृत्ति नहीं अपनानी चाहिए। अनगढ़ मन का नेतृत्व स्वीकार नहीं करना चाहिए वरन दूरदर्शी सद्बुद्धि का आश्रय लेना चाहिए और अपने चिंतन को व्यवस्थित बनाने के लिए विवेकशीलता अपनानी चाहिए। दूसरे लोग अनीतिमूलक गतिविधियाँ अपनाकर भी क्षणिक सफलताएँ प्राप्त कर लेते हैं, पर अंत में उस कुमार्गगामिता का दुष्परिणाम भी कम नहीं भोगते। किसी भी बुद्धिमान और दूरदर्शी व्यक्ति को यह राह नहीं अपनानी चाहिए।

जीवन के बहुमूल्य क्षण इसलिए नहीं हैं कि दुष्प्रवृत्ति के दुष्परिणामों को अनुभव करने के उपरांत जानें। उन्हें विवेक-बुद्धि के आधार पर ही जान-समझ लेना चाहिए और ऐसी रीति-नीति अपनाने का निर्णय करना चाहिए जिससे इस सुरदुर्लभ जीवन-संपदा का श्रेष्ठतम सदुपयोग हो सके। भौतिक संपदाओं की तुलना में सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों की विभूतियों को जो श्रेष्ठ ठहरा सके, वही सद्बुद्धि सराहनीय है। जिस विवेक के आधार पर आतुरता पर नियंत्रण रखा जा सके और महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों के लिए धैर्य और साहस के साथ अनवरत श्रम करने का उत्साह उत्पन्न हो सके, वहीं वंदनीय है। सत् को ही स्वीकार करने वाले विवेक के साथ जुड़ी हुई सद्बुद्धि का आश्रय लेकर ही सच्चे अर्थों में सफल जीवन जिया जा सकता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७३ पृष्ठ-४३*

न तो हिम्मत हारें और न हार स्वीकार करें

परिस्थितियों की अनुकूलता और प्रतिकूलताओं से इनकार नहीं किया जा सकता। शारीरिक संकट उठ खड़ा हो, कोई अप्रत्याशित रोग घेर ले, यह असंभव नहीं। परिवार के सरल क्रम में से कोई साथी बिछुड़ जाए और शोक-संताप के आँसू बहाने पड़े, यह भी कोई अनहोनी बात नहीं है। मनचाही सफलताएँ किसे मिली हैं? मनोकामनाओं को सदा पूरी करते रहने वाला कल्पवृक्ष किसके आँगन में उगा है? ऐसे तूफान आते ही रहते हैं, जो सँजोई हुई साध के घोंसले उड़ाकर कहीं-से-कहीं फेंक दें और एक-एक तिनका बीनकर बनाए गए उस घरोंदे का अस्तित्व ही आकाश में छितरा दें, ऐसे अवसर पर दुर्बल मनःस्थिति के लोग टूट जाते हैं।

नियतिक्रम से हर वस्तु का, हर व्यक्ति का अवसान होता है। मनोरथ और प्रयास भी सर्वदा सफल कहाँ होते हैं? यह सब अपने ढंग से चलता रहे, पर मनुष्य भीतर से टूटने न पाए, इसी में उसका गौरव है। समुद्र तट पर जमी हुई चट्टानें चिर-अतीत से अपने स्थान पर जमी अड़ी बैठी हैं। हिलोरों ने अपना टकराना बंद नहीं किया सो ठीक है, पर यह भी कहाँ गलत है कि चट्टान ने हार नहीं मानी?

न हमें टूटना चाहिए और न हार माननी चाहिए। नियति की चुनौती स्वीकार करना और उससे दो-दो हाथ करना ही मानवी गौरव को स्थिर रख सकने वाला आचरण है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७३ पृष्ठ-४८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बाहरी संपदा आंतरिक समृद्धि की छाया मात्र है

लोग न जाने कितनी-कितनी इच्छा-आकांक्षाएँ सँजोए रहते हैं, कितनी कामनाएँ करते और कितनी योजनाएँ बनाते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि इस संसार के बाजार में हर सफलता हर किसी के लिए खुली होने पर भी यह शर्त तो कि जिसके पास अपना कुछ होगा उसी को दुकान से मनपसंद चीजें खरीदने की सुविधा रहती है। जेब खाली हो तो भला किस बाजार से किसे कुछ खरीदने का अवसर मिल सकता है ? ललचाने, मन चलाने और हाथ मलते हुए वापस लौटने वाले अकसर खीझते और दुकानदारों पर दोष लगाते हैं, पर वे यह भूल जाते हैं कि संसार दानियों और भिक्षुकों पर नहीं, श्रमिकों और व्यापारियों की रीति-नीति पर चल रहा और टिक रहा है।

मैत्री, प्रशंसा, सम्मान, उच्च पद आदि की आवश्यकता अनुभव की जाती है। सुसंतति की आभिलाषा रहती है, पर यह नहीं सोचा जाता कि इन उपलब्धियों का मूल्य क्या है ? जिसकी जेब खाली है, उसे कहाँ, कौन, कुछ देगा ? दर्पण की तरह उनको अपनी भी छाया झाँकती दिखाई देतगी। यदि हम अयोग्य अथवा दुर्गुणी हैं तो उसे संसार में विपुल संपदा भरी रहने पर भी केवल अभाव और दुर्भाग्य ही अपने पल्ले पड़ेगा। जिन्होंने कुछ महत्त्वपूर्ण पाया है, उन्होंने अपने को उसके योग्य बनाया है। प्रगतिशीलता, सुख-समृद्धि का और कोई रास्ता नहीं। — *अखण्ड ज्योति-मार्च १९७३ पृष्ठ-५८*

चतुराई नहीं सज्जनता और सरलता अपनाएँ

आलस्य और प्रमाद वे दुर्गुण हैं जो मानवी शक्ति का सबसे अधिक क्षरण-अपहरण करते हैं। अस्त-व्यस्त और अव्यवस्थित व्यक्ति अपना समय गँवाते रहते हैं, फलत: उनका सौभाग्य भी साथ ही गुम हो जाता है। सामने प्रस्तुत कर्म में उदासी-उपेक्षा बरतने वाले, कर्म को भार समझकर उसका बोझ ढोने वाले पग-पग पर थकते हैं। काम में मनोयोग लगाकर उस माध्यम से कौशल विकसित करना और पुरुषार्थ का आनंद लेना कितना अधिक मंगलमय है, इसका रहस्य कोई बिरले ही जानते हैं। पुरुषार्थी, श्रमशील और मनस्वी कर्मपरायण व्यक्ति आत्मनिर्माण में संलग्न रहकर कुछ ही समय में इतने सुयोग्य एवं सक्षम बन जाते हैं कि अपनी उचित आवश्यकताओं और आकांक्षाओं की पूर्ति सहज ही की जा सके।

नेक, भला और चरित्रवान मनुष्य बनकर रहना इतनी बड़ी उपलब्धि है कि उस प्रामाणिकता के आधार पर दूसरों का स्नेह-सद्भाव सहज ही आकर्षित किया जा सकता है। सज्जनता और सरलता की रीति-नीति, चरम चातुर्य की तुलना में कहीं अधिक लाभदायक सिद्ध होती है। उद्धत व्यक्ति आतंकवादी उद्दंडता बरतने पर अहंकार की जितनी प्राप्ति करते हैं, उससे असंख्य गुना सम्मान विनयशील एवं सुसंस्कारी व्यक्ति प्राप्त करते हैं। व्यवस्थित रीति-नीति अपनाकर निर्धारित लक्ष्य की ओर अनवरत निष्ठा के साथ चलते रहने वाले अंतत: सफल मनोरथ होकर ही रहते हैं।

— *अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७३ पृष्ठ-१६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिष्कृत दृष्टिकोण का नाम ही स्वर्ग है

वासनाएँ चोर के समान होती हैं। जिस प्रकार चोर अंधेरा देखकर निर्बल व्यक्ति को लूट ले जाते हैं, उसी प्रकार वासनाएँ भी निर्बल इच्छाशक्ति वाले, निर्बल चरित्र वाले, मूढ़ व्यक्तियों पर अपना हमला बोल देती हैं। सुदृढ़ चरित्र वाले, आस्था और साहस से युक्त व्यक्तियों से तो वे ऐसे ही डरती हैं जैसे भेड़िये से मेमना डरता है।

जिसके जीवन का कोई निश्चित लक्ष्य नहीं होता, उसे कुकामनाएँ शीघ्र ही प्रलोभन देने लगती हैं। यदि हम मानव शरीर प्राप्त करके भी लक्ष्यहीन जीवन व्यतीत करते हैं तो यह हमारा सबसे बड़ा दुर्भाग्य ही कहा जाएगा। हमें चाहिए कि अपने स्वरूप और कर्त्तव्य को समझें तथा तदनुरूप कार्य करें।

वस्तुत: आत्मशांति इंद्रिय सुखों से नहीं अपितु आत्मिक संपदा बढ़ाने से मिलती है। जैसे-जैसे हम गुण, कर्म और स्वभाव को उत्कृष्ट बनाते जाएँगे, वैसे-वैसे हमारा अंत:करण निर्मल बनता जाएगा तथा दृष्टिकोण परिष्कृत होता जाएगा।

परिष्कृत दृष्टिकोण का नाम ही स्वर्ग है। वस्तुत: स्वर्ग किसी स्थान विशेष का नाम नहीं अपितु वह तो अपने ही अंतस् की भावनात्मक सृष्टि है। इस सृष्टि का विस्तार जैसे-जैसे होता जाएगा वैसे-वैसे ही व्यक्ति उस कैवल्य सत्ता की महत्ता में समाता हुआ सच्चिदानंद की प्राप्ति में समर्थ होगा, जो उसकी जीवनयात्रा की अंतिम परिणति है। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७३ पृष्ठ-२०*

सत्य का आश्रय ईश्वर का आश्रय है

असत्यवादी जहाँ दूसरों को कष्ट देता है, वहाँ अपने लिए भी काँटे बो लेता है। एक आदमी जब किसी दूसरे से असत्य व्यवहार करता है तो वह यह आशा नहीं कर सकता है कि उसके साथ सत्य का व्यवहार किया जाएगा। नियम है—जो झूठ बोलेगा, उसे झूठ सुनने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। जो छल करेगा उसे सत्य से वंचित होना होगा। जो धोखा देगा वह धोखा पाएगा ही, इस नियम में व्याघात संभव नहीं। इस प्रकार जब एक किसी दूसरे से असत्य व्यवहार करता है तो दूसरे को भी असत्य व्यवहार करने के लिए प्रेरित करता है। एक, दूसरे से और दूसरे, तीसरे से असत्य का व्यवहार शरू कर देता है। इस प्रकार पूरे समाज में असत्य व्यवहार की परंपरा चल पड़ती है।

असत्य से किसी प्रकार के लाभ, सुख अथवा संतोष की आशा करना मृगतृष्णा में भटकने के समान है। असत्य से क्या व्यक्ति, क्या समाज और क्या राष्ट्र किसी का भाग्यहित नहीं होता। असत्य, आत्मिक और भौतिक दोनों प्रकार का दोष है। इससे आत्मा का पतन होता है और समाज में विघटन। असत्यवाद के स्वभाव को बलपूर्वक त्याग देने में ही कल्याण है। सत्य का आश्रय ईश्वर का आश्रय है। इसको स्वीकार कर चलने वाला व्यक्ति जीवन में न तो कभी अशांत होता है और न अपमानित।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७३ पृष्ठ-२५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विधेयात्मक चिंतन से मानसिक संतुलन ठीक रखें

आत्मविश्वास की कमी के कारण बहुत से लोग प्रस्तुत समस्याओं को बढ़ा-चढ़ाकर देखते हैं और सोचते हैं कि यह विपत्ति उसे मिटाकर ही छोड़ेगी, पर वस्तुतः ऐसा होता नहीं। हर बदली बरसती नहीं है, अधिकतर तो ऐसे ही अपना घटाटोप दिखाकर हवा के साथ उड़ जाती हैं। जब सुनहरे सपने तक साकार नहीं हो पाते तो संभावित आशंकाएँ ही मूर्तिमान होकर रहेंगी, ऐसा क्यों समझा जाए? आक्रमणकारी और उत्पाती तत्त्व बेशक इस संसार में बहुत हैं, पर यह न भूल जाना चाहिए कि रक्षा और सहायता करने वाली शक्तियों का भी अस्तित्व मौजूद है। मनुष्य जैसी सत्ता को जरा-जरा से कारण पर ऐसे ही कुचल-मसलकर रख दिया करें, तो फिर इस धरती पर किसी का जीवन कैसे संभव होगा?

मानसिक संतुलन के गड़बड़ा जाने से बाहरी परिस्थितियाँ उतनी निमित्त नहीं होतीं, जितनी अपनी आंतरिक दुर्बलता और परिष्कृत चिंतन की कमी। यदि हम विधेयात्मक चिंतन की आदत डाल सकें और जीवन धारण किए रखने के लिए आवश्यक मात्रा में साहस इकट्ठा कर सकें तो मनोविकारों से सहज की छूटकारा मिल सकता है, साथ ही उस रुग्णता से भी छुटकारा मिल सकता है जो आएदिन नए-नए रूप बनाकर तरह-तरह के रोगों के नाम से हमारे ऊपर आक्रमण करते हैं और चिकित्सकों को अँगूठा दिखाते हुए हमें दुःख, दारिद्रय के गड्ढे में गिराते रहते हैं।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७३ पृष्ठ-४९

जीवन का मूल्य समझें और उसे सार्थक बनाएँ

जीवन का अर्थ है—गुण, कर्म और स्वभाव को, अपनी अंतरात्मा को, प्रतिपल पवित्र तथा उत्कृष्ट बनाने का प्रयास करना। जीवन का अर्थ है—संसाररूपी ईश्वरीय उपवन को सजाने-सँवारने के लिए अपनी बुद्धि और हाथों का पूरा-पूरा उपयोग करना। जीवन का अर्थ है—आशा, उत्साह और गति। जीवन में कुछ करने की आकांक्षा लेकर चलने वाले, सद्विचारों और सत्कर्मों की प्रतिष्ठापना करने वाले व्यक्तियों का जीवन ही सफल है। सत्य, प्रेम, न्याय, दया, सहानुभूति संयम और परोपकार रूपी मणि-माणिक्य से आपूरित जीवन को ही वास्तव में 'जीवन' कहा जा सकता है।

जो केवल इंद्रिय सुख के लिए, पेट और प्रजनन के लिए ही जीता है, उसे धिक्कार है। उस जीवन को धिक्कार है जिसकी स्नेह-छाया में किसी को आश्रय और सांत्वना न मिल सके। वे कितने अभागे हैं, जिनका जीवन कुकामनाओं और कुवासनाओं की बाढ़ में ही डूबता-तैरता रहता है।

हम मनुष्यता के महान गौरव के अनुरूप अनुकरणीय जीवन जिएँ तथा दूसरों को भी उस ओर अग्रसर करें। स्वयं प्रेम तथा शांति से रहें तथा दूसरों को भी रहने दें। परमपिता परमात्मा का बनाया प्रत्येक प्राणी हमारा भाई-बंधु है। श्रेष्ठ, सदाचारी और परोपकारी जीवन बिताने वाला व्यक्ति ही बुद्धिमान कहा जा सकता है। जो सदाचार और परोपकार में जितना निरत है, समझना चाहिए कि उसने उतना ही अधिक मानव जीवन का मूल्य और महत्व समझा।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७३ पृष्ठ-५६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्रतशील जीवन की गरिमा

उथली और सुदृढ़ तट से रहित नदियाँ तनिक सी वर्षा होने पर सब ओर बिखर पड़ती हैं और बाढ़ का रूप धारण कर निकटवर्ती खेतों को नष्ट-भ्रष्ट कर देती हैं। इसके विपरीत दूसरी वे नदियाँ भी हैं जिनमें प्रचंड वेग युक्त जल-धार बहती है, किंतु उफनने की दुर्घटना उत्पन्न नहीं करतीं। कारण कि वे गहरी होती हैं और किनारे मजबूत मिट्टी से बने होते हैं।

तनिक से आकर्षण और भय का अवसर आते ही मनुष्य अपने चरित्र और ईमान को खो बैठता है। तनिक-सी प्रतिकूलता उसे सहन नहीं होती और आवेशग्रस्त स्थिति उत्पन्न कर देती है। इसका कारण व्यक्ति का आंतरिक उथलापन है, श्रद्धा का अभाव और आदर्शों की कमी। ऐसे लोग तभी तक अच्छे लग सकते हैं, जब तक कि परीक्षा का अवसर नहीं आता। जैसे ही परख की घड़ी आती है वैसे ही वे मर्यादाओं का उल्लंघन करके उथले नालों की तरह बिखरते हैं और बाढ़ का संकट उत्पन्न करते हैं।

मजबूत किनारों का तात्पर्य है—व्रतशील जीवन, आदर्शों और मर्यादाओं के प्रति आस्था। ऐसा संकल्प जो जीवनक्रम में ऊर्ध्वगामी प्रेरणाएँ भरता रह सके। जिनने अपने किनारे मजबूत बनाए हैं और निश्चय किया है कि किसी भी मूल्य पर आदर्शों की अवहेलना न करेंगे, केवल उन्हीं के लिए यह संभव है कि वे महामानवों के लिए शोभनीय मार्ग पर आगे बढ़ सकें।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७३ पृष्ठ-१

जो ईश्वर से डरेगा उसे और किसी से नहीं डरना है

इस संसार में डरावना कुछ भी नहीं है। इस सृष्टि की संरचना सत्य, शिव और सुंदर के समन्वय के साथ की गई है। जो कठोर और प्रतिकूल दीखता है, वह इसलिए है कि हमारी सतर्कता, सजगता एवं साहसिकता को विकसित एवं परिपुष्ट होते रहने का समुचित आधार उपलब्ध होता रहे। यदि यहाँ सब कुछ सरल ही होता तो शौर्य, साहस, पुरुषार्थ एवं कौशल की कोई आवश्यकता ही न रह जाती। इन सद्गुणों को परिपुष्ट, परिष्कृत बनाकर ही कोई व्यक्ति उच्चस्तरीय भूमिका में प्रवेश करने का गौरव प्राप्त कर सकता है।

शत्रुओं के आक्रमण, मित्रों के छल-प्रपंच एवं स्वजनों के असहयोग से अधिकतम इतना ही हो सकता है कि सफलता की संभावना विलंबित हो जाए। शत्रुओं के आघात से उन्हीं को हानि उठानी पड़ती है, जो डरते हैं। आक्रमणकारी उस डर को ताड़ लेते हैं और यह जान लेते हैं कि इस डरपोक को आसानी से डराया और हराया जा सकता है। यदि उन्हें यह पता हो कि सामने वाला डटकर मुकाबला करेगा तो उनके होंसले पस्त हो जाते हैं। आमतौर से आक्रमणकारी कायर ही होते हैं। वे भी सामना करने वाले के प्रतिकार का साहस नहीं करते। आदमी अपनी निज की कमजोरियों से ही डरता है, जिसने उन्हें दूर कर दिया, उसे फिर संसार में कहीं भी, किसी से भी डरने की आवश्यकता न पड़ेगी।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७३ पृष्ठ-८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गलोगे, तो ही उगोगे

बीज की तीन ही गति हैं—या तो वह बीज बनकर गले और अपने को सुविकसित पौधे के रूप में परिणत करके अपने जैसे अनेक बीज पैदा करे और अपना वंश चलाता रहे; दूसरी यह कि पिसकर आटा बन जाए, फिर रोटी के रूप में एक प्राणी का पेट भरे और अंत में दुर्गंधित विष्टा बनकर किसी आड़ में उपेक्षित पड़ा रहे। तीसरी यह कि भीरुता और संकीर्णता से ग्रसित आत्मरक्षा की बात सोचता रहे और कीड़े-मकोड़ों अथवा सड़न-सीलन के द्वारा नष्ट कर दिया जाए।

मनुष्य जीवन की भी यही तीन गतियाँ हैं। परमार्थ-प्रयोजनों में संलग्न करके यशस्वी जीवन जिएँ और संसार की सुख-शांति में योगदान करें, यह पहली गति है। दूसरी गति यह कि अपने शरीर और परिवार को ऐश्वर्यवान बनाने पर ध्यान को केंद्रित रखे, पेट और प्रजनन की समस्याओं में उलझा रहे। उचित-अनुचित का विचार न करके पशु-स्तर की जिंदगी गुजारे और अंततः विष्टा जैसी हेय और घिनौनी परिणति प्राप्त करे, तीसरी गति अति कृपणता, अति संकीर्णता और अति स्वार्थ बुद्धि की प्रशंसा इस बात में है कि वह प्रथम गति का वरण करे और श्रेष्ठ सज्जनों के मार्ग का अवलंबन करे। ईसा ने लोगों से कहा था—मूर्खो! जो बीज तुम बोते हो, वह गले बिना नहीं उगता।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७३ पृष्ठ-१

ईश्वर अपने बताए नियमों-मर्यादाओं में बँधा है

अत्युत्साह के आँधी-तूफानों को चीरते हुए पैनी आँखों से हम देख सकते हैं कि धर्म की ही तरह ईश्वरीय आस्था को भी मानव जीवन को उच्चस्तरीय बनाए रहने के लिए नितांत आवश्यकता है। ये दोनों एक ही प्रयोजन के दो पक्ष हैं। आदर्शवादी व्यवहार को धर्म कहते हैं और उत्कृष्ट-परिष्कृत चिंतन को अध्यात्म। ये दोनों ही ईश्वरवाद की जड़ से पोषण प्राप्त करते हैं। यदि सत्समर्थ और असत विरोधी दिव्य-सत्ता के अस्तित्व से इनकार कर दिया जाए, मात्र भौतिक-सामाजिक आधार पर उत्कृष्ट आदर्शवादिता का समर्थन किया जाए तो बात बनेगी ही नहीं। स्पष्टतः धार्मिकता और आस्तिकता की मान्यताएँ त्याग, संयम, सेवा, उदारता का दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती हैं, जिनमें तात्कालिक एवं भौतिक दृष्टि से घाटा ही पड़ता है, नफा नहीं होता। आत्मा का उल्लास, ईश्वरीय अनुग्रह जैसे लाभ उत्कृष्ट जीवन के मूलभूत प्रेरणा-स्रोत हैं। भौतिक-जगत में राजसत्ता की आवश्यकता है और आत्मिक जगत में ईश्वरीय सत्ता की।

धार्मिक-सुधारों की तरह ईश्वर-संबंधी मान्यताओं में भी बुद्धिवादी दार्शनिकता ने काफी हेर-फेर किया है। सुधरा हुआ ईश्वर उद्धत या उच्छृंखल नहीं है, वह अपने बनाए नियमों में स्वयं बँधा है और मर्यादाओं के अनुरूप स्वयं चलता है और उसी राह पर चलने के लिए अपने अनुयायियों को प्रेरणा देता है। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७३ पृष्ठ-३६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यथार्थवादी बनें, संकल्पबल प्रखर करें

प्रगति की आकांक्षा आवश्यक भी है और उचित भी, पर उसकी सफलता के लिए यथार्थवादी चिंतन नितांत आवश्यक है। भावुक काल्पनिकता इस दिशा में सहायक नहीं, बाधक ही अधिक होती है। असफलता का एक ही झोंका ऐसे लोगों की उमंगों को तोड़-मरोड़कर रख देता है और वे आरंभ में जितने उत्साही थे, अंत में उतने ही निराशावादी और शंकाशील बन जाते हैं। इसलिए अभिलाषाओं को मूर्त रूप देने के लिए यथार्थवादी चिंतन की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है।

अभिलाषा को सफलता की मंजिल तक पहुँचाने का दूसरा कदम है—सुदृढ़ संकल्प। जो निश्चय है, उसे पूरा करने के लिए अदम्य साहस और आगत अवरोधों से निपटने का अविचल धैर्य रखकर ही आगे बढ़ सकना संभव है। यदि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण और हवा के अवरोध की कठिनाई न हो तो ऊपर उछाली गेंद सिद्धांतत: अनंत अंतरिक्ष में भ्रमण करने लगेगी, पर यथार्थवादी जानते हैं कि इस संसार में बिना अवरोध के गतिशीलता असंभव है। ऊपर उड़ान भरने से पहले गुरुत्वाकर्षण और वायु अवरोध से जूझने की पूरी तैयारी करने से ही ऊपर उड़ना होता है। प्रगति का पथ ठीक इसी प्रकार है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७४ पृष्ठ-६

निरंकुश बुद्धिवाद हमारा सर्वनाश करके ही छोड़ेगा

त्याग-बलिदान, सेवा-संयम, पुण्य-परमार्थ जैसे सिद्धांतों को अपनाने पर ही मनुष्य महामानव बनता है। उन्हीं के आधार पर कोई देश, समाज या युग समुन्नत स्थिति में पहुँचता है। उदारता, सेवा-प्रवृत्ति, सहयोग, समाजनिष्ठा, चरित्र गठन जैसे उच्च आदर्श अपनाने पर ही व्यक्ति, राष्ट्र और विश्व की गरिमा बढ़ती है और सुख-समृद्धि की जड़ जमती है, किंतु इन सभी आधारों को बुद्धिवादी प्रखरता काटकर फेंक देती है। समाजहित, राष्ट्रहित का नारा लगाकर व्यक्ति को अच्छा नागरिक और देशभक्त बनने के लिए कहा जाता है। समाजशास्त्र की दृष्टि में यह प्रतिपादन भी रोचक और प्रशंसनीय है, पर जब शुद्ध स्वार्थ ही सर्वोपरि है तो मनुष्य अपने को कठिनाई में डालकर समाजहित साधन के लिए प्रत्यक्ष लाभ में कमी क्यों पड़ने देगा? सिद्धांतवाद में जब लोक बहकावे की बात ही राजनीति और युद्ध-प्रयोजन के लिए मान्यता प्राप्त कर गई तो व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन में ईमानदारी बरतने का क्या प्रयोजन रहा? बुद्धिवाद हमें क्रमश: उसी निम्नगामी मन:स्थिति में घसीट ले जाता है और अनैतिक आचरण के लिए प्रोत्साहित करता है। हृदय का, भावनाओं का, आदर्शों का अंकुश रखे बिना यदि बुद्धिवाद बढ़ता ही चला गया, तो उससे हम सर्वनाश के कगार पर ही जा खड़े होंगे।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७४ पृष्ठ-२७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्यानयोग—चरम आत्मोत्कर्ष की साधना

इस विराट ब्रह्म का एक क्षुद्रतम घटक ही अपना 'अहम्' है। अपनी सत्ता ब्रह्मसत्ता की ही एक इकाई है। व्यक्ति का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं, वह समष्टि का ही एक कण है। हमें विराट ब्रह्म के लिए—विश्वमानव के लिए ही अपने अस्तित्व का समर्पण करते हुए जीवनयापन करना चाहिए। यही निष्कर्ष विराट ब्रह्म ध्यान-धारणा का है।

आत्मा को शरीर से भिन्न सत् चित् आनंदस्वरूप मानना, शरीर और आत्मा की भिन्नता की गहराई से अनुभूति करना और मात्र शरीर के सुख-साधन जुटाने में ही निमग्न न रहकर, आत्मकल्याण के लिए उत्साह जगाना भी ध्यान-प्रक्रिया का एक प्रयोजन है।

मैं शरीर नहीं हूँ। शरीर और संपत्ति की दृष्टि से मेरापन निरर्थक है। यह जड़-पदार्थ मुझसे भिन्न है। मैं सत् चित् आनंद का अविनाशी अंश हूँ। इस प्रकार चिंतन करते हुए जब भौतिक अहम् विलीन हो जाए तो समझना चाहिए कि मैं और तू से ऊपर उठा हुआ, परब्रह्म परमात्मा उपलब्ध हो गया।

उस व्यापक चेतना के साथ एकाग्रता करने पर समस्त विश्व चेतनसत्ता का स्वरूप दिखाई पड़ता है। ऐसी स्थिति को भगवत्प्राप्ति कह सकते हैं।

ध्यानयोग के आधार पर अंतश्चेतना को विकसित करते हुए मनुष्य अपने को लघु से महान बना सकता है। जीव से ब्रह्म हो सकता है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७४ पृष्ठ-५३*

उपलब्धियों का सदुपयोग करना सीखें

प्राप्त करना उतना कठिन नहीं है, जितना उपलब्धि का सदुपयोग करना। संपत्ति अनायास या परिस्थितिवश भी मिल सकती है, पर उसका सदुपयोग करने के लिए अत्यंत दूरदर्शी विवेकशीलता और संतुलित बुद्धि की आवश्यकता पड़ेगी। सुयोग्य व्यक्तियों की समीपता तथा सद्भावना प्राप्त कर लेना उतना कठिन नहीं है, जितना उस सान्निध्य का सदुपयोग करके समुचित लाभ उठा सकना।

मनुष्य में बीज रूप से वे समस्त संभावनाएँ विद्यमान हैं जो अब तक कहीं भी, किसी भी व्यक्ति में देखी-पाई गई हैं। प्रयत्न करने पर उन्हें जगाया और बढ़ाया जा सकता है। कोई भी लगनशील मनस्वी व्यक्ति अपने को इच्छित दिशा में सफलता प्राप्त करने की आवश्यक क्षमताएँ उत्पन्न कर सकता है और उनका सदुपयोग करके मनचाही सफलता प्राप्त कर सकता है।

जो मिला हुआ है, वह इतना अधिक है कि उसका सही और संतुलित उपयोग करके प्रगति के पथ पर बहुत दूर तक आगे बढ़ा जा सकता है। अधिक पाने के लिए प्रयत्न करना उचित है, पर इससे भी अधिक आवश्यक यह है कि जो उपलब्ध है, उसका श्रेष्ठतम सदुपयोग करने के लिए योजनाबद्ध रूप से आगे बढ़ा जाए। जो ऐसा कर सकें, उन्हें जीवन में असफल रहने का दुर्भाग्य कभी भी सहन नहीं करना पड़ा है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७४ पृष्ठ-१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सौभाग्य भरे क्षणों को तिरस्कृत न करें

ईश्वर ने मनुष्य को एक साथ इकट्ठा जीवन न देकर उसे अलग-अलग क्षणों में टुकड़े-टुकड़े करके दिया है। नया क्षण देने से पूर्व वह पुराना वापस ले लेता है और देखता है कि उसका किस प्रकार उपयोग किया गया? इस कसौटी पर हमारी पात्रता कसने के बाद ही वह हमें अधिक मूल्यवान क्षणों का उपहार प्रदान करता है।

समय ही जीवन है। उसका प्रत्येक क्षण बहुमूल्य है। ये क्षण हमारे सामने ऐसे ही खाली हाथ नहीं आते वरन अपनी पीठ पर कीमती उपहार लादे होते हैं। यदि उनकी उपेक्षा की जाए तो निराश होकर वापस लौट जाते हैं, किंतु यदि उनका स्वागत किया जाए तो उन मूल्यवान संपदाओं को देकर ही जाते हैं, जो ईश्वर ने अपने परमप्रिय राजकुमार के लिए भेजी हैं।

जीवन का हर प्रभात नित नए अनुदान लेकर आता है। वह चाहता है कि उस दिन का शृंगार करने में इस अनुदान का उपयोग किया जाए। दूसरा नया प्रभात जब आए तो पिछले दिन के अनुदान के सदुपयोग को देखकर प्रसन्नता व्यक्त करे।

उपेक्षा और तिरस्कारपूर्वक लौटा दिए गए जीवन के क्षण-घटक दुखी होकर वापस लौटते हैं। आलस्य और प्रमाद में पड़ा हुआ मनुष्य यह देख ही नहीं पाता कि उसके सौभाग्य का सूर्य दरवाजे पर हर दिन आता है और कपाट बंद देखकर निराश वापस लौट जाता है।

— अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७४ पृष्ठ-१

भीतर का खोखलापन और सड़ी जड़ें

जो भीतर से खोखले हैं, वे बाहर से वैभवशाली दीखते हुए भी दुर्बल हैं। उन्हें जरा-सी प्रतिकूलता तोड़-मरोड़कर रख देती है। उन्हें उखड़ते और धराशायी होते देर नहीं लगती। इसके विपरीत जिनकी जड़ें गहरी हैं, जिनने अपने आप को इस संसार-सागर में निरंतर उठते रहने वाले ज्वार-भाटों की संतुलित मति से देखना सीखा है, वे ही समुद्र तट पर बैठकर उछलती, उमड़ती लहरों का आनंद लेते हैं। मजूबत पकड़ उन्हीं की होती है और परिस्थितियों का सामना करने में वे ही समर्थ होते हैं। संपत्ति की भाँति विपत्ति भी क्षणिक ही होती है। विपन्नता के बाद ही संपन्नता की नई दिशा मिलती है, भले ही वह पहले जैसी परिस्थितियों से भिन्न प्रकार की हो।

जिसने संपन्नता की तरह विपन्नता का भी स्वागत कर सकने का उनसे निपटने का मनोबल एकत्रित किया है, उसकी जड़ें गहरी हैं। अंधड़ आते और जाते रहते हैं, पर उसे तोड़ नहीं पाते। इसके विपरीत बाहरी वैभव की विशालता निरर्थक सिद्ध होती है। यदि भीतर खोखलापन घुस पड़ा हो तो एक ही आघात में उखड़कर धराशायी होना निश्चित है। *— अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७४ पृष्ठ-१३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यथार्थता को समझें—आग्रह न थोपें

संसार जैसा कुछ है, हमें उसे उसी रूप में समझना चाहिए और प्रस्तुत यथार्थता के अनुरूप अपने को ढालना चाहिए। संसार केवल हमारे लिए ही नहीं बना है और उसके समस्त पदार्थों एवं प्राणियों का हमारी मनमरजी के अनुरूप बन या बदल जाना संभव नहीं है। तालमेल बिठाकर समन्वय की नीति पर चलने से ही हम संतोषपूर्वक रह सकते हैं और शांतिपूर्वक रहने दे सकते हैं।

यहाँ रात भी होती है और दिन भी रहता है। अपने परिवार में जन्म भी होते हैं और मरण भी। सदा दिन ही रहे, कभी रात न हो। परिवार में जन्म संख्या ही बढ़ती रहे, मरण कभी किसी का न हो। ऐसी शुभेच्छा तो उचित है, पर वैसी इच्छा पूर्ण नहीं हो सकती। रात को रात के ढंग से और दिन को दिन के ढंग से प्रयोग करके हम सुखी रह सकते हैं और दोनों स्थितियों के साथ जुड़े हुए लाभों का आनंद ले सकते हैं। जीवन की अपनी उपयोगिता है और मरण की अपनी। दोनों का संतुलन मिलाकर सोचा जा सकेगा तो हर्ष एवं उद्वेग के उन्मत्त-विक्षिप्त बना देने वाले आवेशों से हम बचे रह सकते हैं।

हर मनुष्य की आकृति भिन्न है, किसी की शकल किसी से नहीं मिलती। इसी प्रकार प्रकृति भी भिन्न है। हर मनुष्य का व्यक्तित्व अपने ढंग से विकसित हुआ है। उसमें सुधार परिवर्तन की एक सीमा तक ही संभावना है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९७४ पृष्ठ-१*

विभूतिरहित संपदा निरर्थक है

जितना श्रम और मनोयोग संपदा के उपार्जन में लगाया जाता है, उतना ही ध्यान एवं प्रयास सद्गुणों के अभिवर्द्धन पर केंद्रित किया जाए तो उस आत्मपरिष्कार का लाभ असाधारण रूप से उपलब्ध होगा। सुद्गुण की सुगंध से अंत:करण निरंतर सुरभित रहता है। सत्कर्मों में निरत रहने से आत्मसंतोष का ऐसा आनंद छाया रहता है, जिसकी तुलना संपत्ति के उन्माद से किसी भी प्रकार नहीं की जा सकती। परिष्कृत स्वभाव के कारण अपने व्यवहार में जो शालीनता उत्पन्न होती है, वह संपर्क में आने वालों को प्रभावित किए बिना नहीं रहती। गुण, कर्म, स्वभाव के परिष्कार से निखरा हुआ व्यक्तित्व इतना अधिक आकर्षक होता है कि उस पर सहज ही लोकश्रद्धा निछावर होती रहती है। सुविकसित पुष्प पर जिस प्रकार तितली और मधुमक्खियाँ मँड़राती हैं उसी प्रकार दसों दिशाओं में सद्भावना की वर्षा परिष्कृत व्यक्तित्वों के ऊपर अनायास ही अहर्निश होती रहती है।

विभूतिवान को संपदाओं से वंचित नहीं रहना पड़ता। कदाचित वे न भी मिलें तो भी उसकी आंतरिक विशेषताएँ ही प्रसन्नचित्त रखने के लिए पर्याप्त होती हैं। इसके विपरीत जिन्हें विभूतिरहित संपत्ति प्राप्त है, वे भीतरी उद्वेगों और बाहरी आक्रमणों से निरंतर संतप्त ही बने रहते हैं। संपदा का लाभ तभी है, जब वह विभूतियों के साथ जुड़ी हुई हो। *—अखण्ड ज्योति-मई १९७४ पृष्ठ-२०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वैभव खोकर भी सत्यनिष्ठ बने रहें

सत्य के मार्ग पर चलने से कठोर परिश्रम के साथ स्वल्प उपार्जन ही संभव है। नीतिपूर्वक तो उचित ही कमाया जा सकेगा और उसके लिए उचित पुरुषार्थ करना पड़ेगा। इसके लिए जिनमें साहस और धैर्य नहीं, वे अनीति पर उतारू होते हैं या फिर अनीति करने वालों के सहायक होकर सरलतापूर्वक सुविधाएँ पाने के लिए सहमत होते हैं। यह स्थिति नितांत दयनीय है। शरीरगत सुविधाओं की पूर्ति के लिए मनुष्य की आत्मा का हनन करना पड़े तो यह इतनी बड़ी क्षति होगी, जिसकी पूर्ति किसी भी प्रकार संभव न हो सकेगी।

मानवी गरिमा की रक्षा कर सकना, जीवन में सफलता की दृष्टि से उच्चकोटि की उपलब्धि है। यदि आत्मा का, आदर्शों का, आत्मसंतोष का कोई महत्त्व या स्थान हो सकता है तो उन्हें सँजोए रहने के लिए भी हमारी चेष्टाएँ होनी चाहिए। इस दिशा में बढ़ने के लिए यह आवश्यक है कि नीतिपूर्ण उपार्जन से संतुष्ट रहने, उपभोग के स्वल्प साधन से काम चलाने और कठोर कष्टसाध्य जीवनक्रम का स्वागत कर सकने वाला अभ्यास डाला जाए। तप इसी का नाम है। तितिक्षा इसी को कहते हैं। धर्म और अध्यात्म की संरचना इसी स्तर की मनोभूमि को विनिर्मित एवं परिपक्व करने के लिए की गई है। आस्तिकता की धुरी इसी केंद्र पर घूमती है कि व्यक्ति आदर्शवादी और सत्यनिष्ठ जीवनपद्धति अपनाने के लिए अभीष्ट शौर्य साहस का संपादन कर सके।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-मई १९७४ पृष्ठ-४०

आत्मविश्वास ईश्वर का अजस्त्र वरदान

पुलिस का सशस्त्र गारद साथ रहने का सुरक्षा की निश्चिंतता हो जाती है और निर्भय आश्वस्त रहा जा सकता है। जिसे ईश्वर पर, उसकी सर्वशक्ति सत्ता पर विश्वास है, उसे किसी से भी डरना न पड़ेगा। जिसे ईश्वर पर भरोसा है उसे आत्मविश्वास की कमी क्यों रहेगी? ईश्वर-विश्वास और आत्मविश्वास एक ही आस्था के दो पहलू मात्र हैं। जो अपने ऊपर से, अपनी महानता और संभावना से आस्था खो बैठा, उसे नास्तिक के अतिरिक्त और क्या कहा जाएगा?

जो अपने ऊपर भरोसा करता है उसी पर दूसरे भी भरोसा करते हैं। जो अपनी सहायता आप करता है, उसी की सहायता ईश्वर भी करता है। जो सकता है कि कोई निष्ठावान असफल भी रहा हो, पर जितने भी सफलता संपन्न हुए हैं, उनमें से प्रत्येक आत्मविश्वासी रहा। संभव है कि किसी कुशल किसान की फसल मारी जाए पर जिनने भी कृषि में कमाई की है, उनमें से प्रत्येक को जोतने और बोने का श्रम करना पड़ा है। आत्मविश्वास ही शक्ति का स्रोत है। प्रगति के किसी भी क्षेत्र में आगे बढ़ सकना उसी के सहारे संभव हो सकता है। जो ईश्वर भाग्य का निर्माण करता है, उसका दूसरा नाम आत्मविश्वास है। उसी की प्रेरणा से ऐसे प्रचंड पुरुषार्थ का उद्भव होता है, जिसके लिए दुर्गम पर्वतों को भी रास्ता देना पड़े। वस्तुतः ईश्वर का एकमात्र दिव्य उपहार जो मनुष्य को मिलता है—आत्मविश्वास ही है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७४ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतर का परिष्कार, सफल जीवन का आधार

अपने आप को सुधारने का अर्थ है, अपनी उलझी समस्याओं को सुधार लेना और अपनी सर्वतोमुखी प्रगति का पथ-प्रशस्त करना। यह कठिन है कि बाहर के व्यक्तियों को अथवा घटनाओं को अपनी इच्छानुकूल ढाल लें। उसकी अपेक्षा यह सरल है कि अपनी अंत:स्थिति को बदलकर अभीष्ट वातावरण अपने आप ही बदल जाने का द्वार खोल दें। बुद्धिमत्ता की यही रीति है।

दूसरों की सही समीक्षा कर सकना कठिन है, पर अपने आप को आसानी से जाना जा सकता है। दूसरों को सुधारना कठिन है, पर अपने आप को तो आसानी से सुधारा जा सकता है। दूसरों की सहायता बड़ी मात्रा में कर सकना संभवत: उतना न बन पड़े जितना कि अपनी सहायता आप की जा सकती है। हम अपने को समझें, अपने को सुधारें और अपनी सेवा करने के लिए आप तत्पर हों तो निश्चित रूप से यह दूसरों की सेवा के लिए किए जाने वाले पुण्य-परमार्थ का प्रथम, किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

जो पाना चाहते हो, उसके लिए बाहरी दौड़-धूप करने से पहले अपने भीतर उपयुक्त पात्रता उत्पन्न करें। व्यक्तित्व को जितना ही प्रखर, परिष्कृत और समर्थ बनाया जाएगा, उतना ही अभीष्ट उपलब्धियों को प्राप्त कर सकना संभव ही नहीं सरल भी हो जाएगा।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७४ पृष्ठ-४१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

देने वाला घाटे में नहीं रहता

प्रकृति का नियम है—जो देता है वह पाता है, जो रोकता है वह सड़ता है। छोटी पोखर का पानी घटता, सड़ता और सूखता है, किंतु झरने में सदा स्वच्छता गतिशीलता बनी रहती है और वह अक्षय भी बना रहता है। जो देने से इनकार करेगा, अजस्र अनुदान पाने की पात्रता से उसे वंचित ही रहना पड़ेगा।

धरती अपना जीवन-तत्व वनस्पति को देती है। धरती का कोश घटा नहीं, वनस्पति की सड़न से बना खाद और वर्षा का जल उसका भंडार भरते चले आ रहे हैं। धरती को देते रहने की साध उसकी मूर्खता नहीं है। वह जो देती है, प्रकृति उसकी पूरी तरह भरपाई करती रहती है।

वृक्ष फल-फूल, पत्ते प्राणियों को देते हैं। जड़ें गहराई से लाकर उनकी क्षति पूर्ति करती हैं। समुद्र बादलों को देता है, उस घाटे को नदियाँ अपना जल देकर पूरा किया करती हैं। बादल बरसते हैं, उन्हें समुद्र कंगाल नहीं बनने देता। हिमालय अपनी बरफ गलाकर नदियों को देता है, नदियाँ जमीन को सींचती हैं। हिमालय पर बरफ जमने का क्रम प्रकृति ने जारी रखा है, ताकि नदियों को जल देते रहने की उसकी दान वीरता में कमी न आने पाए।

आज का दिया हुआ भविष्य में असंख्य गुना होकर मिलने वाला है। विश्वास रखो कि देने वाला खाली नहीं होता। प्रकृति उसकी भरपाई पूरी कर देती है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७४ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम सब परस्पर एकता के सूत्र में जुड़े हैं

समुद्र में असंख्य लहरें उठती हैं, उनका अस्तित्व अलग-अलग होता है। हर लहर पर एक स्वतंत्र सूरज चमकता दिखाई देता है, इतने पर भी यदि तात्त्विक दृष्टि से देखा जाए तो प्रतीत होगा कि इस भिन्नता के भीतर एक अविच्छिन्न एकता की सत्ता विद्यमान है। सारा समुद्र एक ही है। एक ही सूर्य असंख्य लहरों पर चमकता है। इन प्रतिबिंबों की अनेकता के कारण कितने ही सूर्यों की सत्ताएँ सिद्ध नहीं होतीं। हवा और जल के संयोग से उत्पन्न होते रहने वाले बबूले एकदूसरे से अलग दिखाई भले ही दें, वे सुविस्तृत जलाशय से पृथक नहीं माने जा सकते।

मनुष्य की संख्या अरबों में है। उनकी देह तथा आकृति-प्रकृति में भी अंतर है। इतने पर भी वे सभी एक ही अनंत विश्वात्मा के अविच्छिन्न अंग-अवयव हैं। माला के मध्य पिरोए हुए सूत्र की तरह एक ही आत्मा सबको एकता के बंधनों में बाँधे हुए है। देखने में हम एकदूसरे से पृथक लग सकते हैं, पर हमारा अस्तित्व पूर्णतया एक-दूसरे पर निर्भर है। एकाकी जीवन एक क्षण के लिए भी संभव नहीं। दूसरों की उपलब्धियों का उपयोग किए बिना हम अपने अस्तित्व की रक्षा कर ही नहीं सकते। दूसरे का सहयोग पाए बिना अपना निर्वाह किसी भी प्रकार नहीं हो सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७४ पृष्ठ-१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दुर्बलताओं को खोजें और उखाड़ फेंकें

आलसी और अकर्मण्य के लिए संकटों और अभावों से छुटकारे का कोई उपाय नहीं। जो अपनी उपेक्षा करता है, उसे हर दिशा से उपेक्षा और तिरस्कार ही हाथ लगता है।

दुर्बल शरीर को नई-नई किस्म की बीमारियाँ दबोचती हैं। डरपोक को डराने के लिए जीवित ही नहीं मृतक भी भूत-पलीत बनकर ढूँढ़ते-खोजते आ पहुँचते हैं। आततायियों को अपना शिकार पकड़ने के लिए कायरों की तलाश करनी पड़ती है। शंकाशील लोगों को बिल्ली भी रास्ता काटकर डरा देती है। अरबों-खरबों मील दूर रहने वाले ग्रह-नक्षत्र भी अपनी प्रकोपमुद्रा उन्हीं को दिखाते हैं, जिन्हें अकारण भयभीत होने में मजा आता है। अन्यथा वे बेचारे अपने निजी कार्यों में ही इतने व्यस्त हैं कि किसी व्यक्ति विशेष का बिगाड़ या उपकार करना उनके वश से सर्वथा बाहर की बात है। दुर्बलताग्रसित व्यक्ति वस्तुतः अपने आप से ही डरता है, उसकी भय-भीरुता को देखकर दूसरे विदूषक भी चिढ़ाने का मजा लेने के लिए आ धमकते हैं।

अपनी दुर्बलताओं को खोजें, उनसे घृणा करें और उन्हें उखाड़ फेंकने के लिए जुट जाएँ। समर्थता की उपासना करें। शरीर को बलवान बनाने की योजना बनाएँ और मन में जमे हुए भीरुता के समस्त आधारों को निरस्त कर दें। प्रगति का आरंभ भीतर से करें ताकि उस अंतःभूमि में उगाए अंकुर को समुन्नत व्यक्तित्व एवं वैभव के रूप में सुविकसित देखा जा सके।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७४ पृष्ठ-२८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर की समीपता और दूरी की परख

ईश्वर के लोक में रहना, उसके समीप रहना, उस जैसा रूप होना, उसमें समाविष्ट हो जाना, यह चारों ही अवस्थाएँ उस स्थिति की ओर संकेत करती हैं, जिसमें मनुष्य की भीतरी चेतना और बाहरी क्रिया उतनी उत्कृष्ट बन जाती है, जितनी कि ईश्वर की।

अपनी चेतनसत्ता को ईश्वरीय चेतना में घुला देने, उसके सदृश बना देने में किसे कितनी सफलता मिली, इसका परिचय उसके चिंतन और कर्तृत्व का स्तर परखकर सहज ही प्राप्त किया जा सकता है। कौन भव-बंधनों में जकड़ा पड़ा है और किसने जीवनमुक्ति प्राप्त कर ली, इसकी परीक्षा एक ही कसौटी पर हो सकती है कि अहंता क्षेत्र कितना सीमित अथवा विस्तृत है। जो निकृष्ट स्तर की बातें सोचता है, जिसकी अभिलाषाएँ पाशविक हैं, उसे भव-बंधन में आबद्ध नर-पशु कहा जाएगा, किंतु जिसने अपनी चेतना को परिष्कृत एवं विस्तृत बनाकर सबमें अपने को संव्याप्त समझा उसने देवयोनि प्राप्त कर ली, ऐसा समझा जाएगा।

आँखों से देवदर्शन के लिए की जाने वाली तीर्थयात्रा और सूक्ष्म नेत्रों से प्रभुदर्शन के लिए होने वाली ध्यान-साधना का अपना स्थान है और अपना महत्त्व। इन सीढ़ियों को पार करते हुए हमें पहुँचना उसी स्थान पर पड़ेगा, जहाँ ईश्वर की समीपता मिलती है। हम तब तक ईश्वर से असंख्य योजन दूर रहेंगे,जब तक अपनी चेतना को ईश्वरीय चेतना के सदृश उदात्त बनाने की आवश्यकता अनुभव नहीं करते।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७४ पृष्ठ-६

अंधकार का निराकरण आदर्शवादी व्यक्तित्व ही करेंगे

अवांछनीयता का प्रवाह बदलने के लिए उन आस्थावान व्यक्तित्वों को आगे आना पड़ेगा, जो आदर्शों की गरिमा पर स्वयं विश्वास करते हों। विश्वास की परख है—आचरण। यदि आदर्शवादिता अच्छी चीज है तो प्रतिपादनकर्त्ता को सर्वप्रथम स्वयं के व्यवहार में लाना चाहिए। मन, वचन और कर्म के समन्वय का नाम ही आस्था है। आस्थावान ही दूसरों की आस्था को जगा सकता है। जलते दीपक से ही दूसरा दीपक जलता है।

अनाचार को निरस्त करके सदाचार की स्थापना करने की आवश्यकता सर्वत्र अनुभव की जा रही है। दुर्भावनाओं और दुष्प्रवृत्तियों ने ही असंख्य संकट उत्पन्न किए हैं और अगणित समस्याएँ खड़ी की हैं। उनका समाधान जनमानस का भावनात्मक नवनिर्माण होने पर ही संभव होगा। उस महान प्रयोजन के लिए लेखनी और वाणी की शक्ति का भी उपयोग तो है, पर उतने से ही लक्ष्य तक नहीं पहुँचा जा सकता। आदर्शों को अपने जीवन में उतारने वाले व्यक्तित्व जब आगे आएँगे और अपने अनुकरण से प्रबल प्रेरणा भरा आलोक उत्पन्न करेंगे, जनमानस से भरा हुआ अंधकार तभी दूर होगा।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७४ पृष्ठ-२०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान का पुत्र—क्रूसारोही मानव

मैं तुमसे कहता हूँ कि अपने जीवन की चिंता न करो, मत सोचो कि तुम क्या खाओगे और क्या पिओगे ? मत सोचो कि तुम अपने शरीर पर क्या पहनोगे ? क्या जीवन भोजन से अधिक नहीं है ? क्या शरीर वसन से अधिक नहीं है ?

अरे ! इन पक्षियों को तो देखो, न तो ये बीज बोते हैं, न फसल काटते हैं और न खलिहान में धान जमा करते हैं; फिर भी हम सबके परम पिता उनका पोषण करते हैं। अरे मानवो ! क्या तुम उन पक्षियों से बेहतर नहीं हो ?

अरे ! कौन है तुम में ऐसा, जो अपने जीवन का सोच-विचार करके भी, अपने जीवन की अवधि एक अणु भर भी बढ़ाने या घटाने में समर्थ हो सका है ? इसी से कहता हूँ कि इस चिंता में न पड़ो कि हम क्या खाएँगे ? हम क्या पिएँगे ? हमारे तन को ढाँकने को वसन कहाँ से आएगा ? क्योंकि अश्रद्धालु जन ही इन चीजों के पीछे दौड़ते हैं। जान लो कि हम सबके परम पिता अच्छी तरह जानते हैं कि तुम्हें इन चीजों की जरूरत है।

मैं कहता हूँ कि पहले तुम भगवान के राज्य को खोजो, उनकी सत्याचरण की राह पर चलो और तुम्हारी आवश्यकता की ये सारी चीजें अपने आप ही तुम्हारे पास चली आएँगी। मैं कहता हूँ कि आने वाले कल की चिंता में न पड़ो, क्योंकि वह कल स्वयं अपने साथ आने वाली चीजों की चिंता करेगा।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७४ पृष्ठ-१

सद्ज्ञान की उपलब्धि मनुष्य का श्रेष्ठतम सौभाग्य

शरीर को जीवित रखने के लिए अन्न, जल और वायु की अनिवार्य आवश्यकता है। आत्मा को सजीव और सुविकसित बनाने के लिए उस ज्ञान आहार की आवश्यकता है जिसके आधार पर गुण, कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता उपलब्ध की जा सके।

समुन्नत जीवन का एकमात्र आधार सद्ज्ञान है। इस अवलंबन के बिना कोई ऊँचा नहीं उठ सकता, आगे नहीं बढ़ सकता। संतोष, सम्मान और वैभव की अनेकानेक श्रेयस्कर विभूतियाँ इस सद्ज्ञान संपदा पर ही अवलंबित हैं।

मनुष्य में ज्ञान संपादन की क्षमता भी है, पर उसे एकाकी विकसित नहीं कर सकता। दूसरों के सहारे ही उसकी महानता विकसित हो सकती है। इस सहारे का नाम स्वाध्याय और सत्संग है। मानवी महानता का सारा श्रेय उस सद्ज्ञान को है जो उसकी चिंतन-प्रक्रिया एवं कार्यपद्धति को आदर्शवादी परंपराओं का अवलंबन करने की प्रेरणा देता हो। सौभाग्य और दुर्भाग्य की परख इस सद्ज्ञान संपदा के मिलने न मिलने की स्थिति को देखकर की जा सकती है। जिसे प्रेरक प्रकाश न मिल सका वह अँधेरे में भटकेगा, जिसे सद्ज्ञान की ऊर्जा से वंचित रहना पड़ा, वह सदा पिछड़ा ही बना रहेगा। पारस छूकर लोहे को सोना बनाने वाली किंबदंती सच हो या झूठ, यह सुनिश्चित तथ्य है कि सद्ज्ञान की उपलब्धि मनुष्य को सौभाग्य के श्रेष्ठतम स्तर तक पहुँचा देती है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७४ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अनंत संभावनाओं से युक्त मानवी सत्ता

बीज में वृक्ष की समस्त संभावनाएँ छिपी पड़ी हैं। सामान्य स्थिति में वे दिखाई नहीं पड़तीं, पर जैसे ही बीज के उगने की परिस्थितियाँ प्राप्त होती हैं वैसे ही यह तथ्य अधिकाधिक प्रकट होता जाता है।

मनुष्य की सत्ता एक बीज है, जिसमें विकास की वे सभी संभावनाएँ विद्यमान हैं, जो अब तक उत्पन्न हुए मनुष्यों में से किसी को भी प्राप्त हो चुकी हैं। प्रत्येक व्यक्ति की मूल सत्ता समान स्तर की है, अंतर केवल प्रयास एवं परिस्थितियों का है। यदि अवसर मिले तो प्रत्येक व्यक्ति उतना ही ऊँचा उठ सकता है जितना कि इस संसार का कोई व्यक्ति कभी भी आगे बढ़ सका। भूतकाल में जो हो चुका है, वह शक्य सिद्ध हो चुका। सुनिश्चित सिद्धि तक उपयुक्त साधना के आधार पर पहुँचने में कोई संदेह नहीं किया जा सकता। बात आगे की सोची जा सकती है। जो भूतकाल में नहीं हो सका, वह भी भविष्य में हो सकता है। मनुष्य की संभावनाएँ अनंत हैं। भूत से भी अधिक शानदार भविष्य हो सकता है।

मनुष्य की अपनी सत्ता में अनंत सामर्थ्य और महान संभावनाएँ छिपी पड़ी हैं। उन्हें समझने और विकसित करने के लिए सही रीति से, सही दिशा में अथक एवं अनवरत प्रयास करना समस्त सिद्धियों का राजमार्ग है।

— अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७४ पृष्ठ-१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

क्रिया का स्वरूप नहीं उद्देश्य देखा जाए

निकृष्ट उद्देश्यों की पूर्ति के लिए ऐसे काम भी किए जाते रहते हैं जो मोटी दृष्टि से साधुतापूर्ण प्रतीत होते हैं। साधु-संत का वेश बनाकर दुष्ट कर्म करते फिरने वाले इसलिए वह आवरण ओढ़ते हैं कि उनके कुकृत्य सहज ही लोगों की आँखों में न आएँ। कितने ही लोकोपयोगी संस्थाएँ बनाकर ऐसी ही धंधेखोरी करते हैं। विधवाश्रम, अनाथालय, गोशाला आदि के बहाने कितने ही लोगों ने अपने घर भरे हैं। बाहर से देखने में यह लोग पुण्य-परमार्थ में संलग्न दिखाई पड़ते हैं, पर वस्तुतः उनका प्रयोजन लोगों की धर्मभावना और दया-करुणा का दोहन करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना भर होता है। चंदा संग्रह अब अपने ढंग का एक अनोखा व्यवसाय बन गया है। भिक्षावृत्ति अपनाए हुए लोगों में से अधिकांश उसके लिए अनधिकारी होते हैं, पर वे बाहर से कुछ ऐसा प्रदर्शन करते हैं जिससे लोगों को उदारतापूर्वक देने की प्रेरणा मिले। इन लोगों की बाह्य गतिविधियाँ धर्मानुकूल दीखने पर भी भीतर से विपरीत स्तर की होती हैं। अस्तु, उनका समर्थन दूरदर्शिता एवं विवेकशीलता के आधार पर किया नहीं जा सकता। चिड़ियों को जाल में फँसाने के उद्देश्य से अन्न के दाने बखेरने वाले चिड़ीमार का बाह्य कृत्य दानशीलता जैसा लगता है, पर उसके पीछे जो उद्देश्य छिपा है उसे देखते हुए वह अन्नदान भी कुकृत्य की ही श्रेणी में गिना जाएगा। कर्म का स्वरूप नहीं, कर्त्ता का उद्देश्य ही विचारणीय है।

— अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७४ पृष्ठ-३२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भ्रमजाल से छूटें—मायामुक्त हों

अहंकार का पोषण, तृष्णा की तृष्टि अथवा विलासिता के अभिवर्द्धन में धन को, शारीरिक-मानसिक विभूतियों को नियोजित रखा जाए तो उत्कृष्ट जीवन जी सकने का द्वार अवरुद्ध ही बना रहेगा। संकीर्ण और स्वार्थी जिंदगी ही जी जा सकेगी।

शरीर और मन को अपना आपा मान बैठना और उसकी वासनाओं, तृष्णाओं की पूर्ति में इतना निमग्न हो जाना कि आत्मा का स्वरूप और लक्ष्य पूरी तरह विस्मृत हो जाए, यह दूरदर्शितापूर्ण नहीं है। शारीरिक और मानसिक उपलब्धियों के लिए जितना श्रम किया जाता है और मनोयोग लगाया जाता है, जोखिम उठाया जाता है, उतना ही विनियोग यदि आत्मोत्कर्ष के लिए, आत्मबल-संपादन के लिए लगाया जा सके तो मनुष्य इसी जीवन में महामानव बन सकता है और उन विभूतियों को करतलगत कर सकता है, जो देवदूतों में पाई जाती हैं। इतना उच्चकोटि का लाभ छोड़कर नगण्य-सी लिप्साओं में डूबे हुए न करने योग्य काम करना, उनके कटुकर्म-परिपाक सहना, किसी विवेकवान के लिए उपयुक्त न होगा, किंतु देखा जाता है कि अधिकांश व्यक्ति उचित छोड़कर अनुचित का, लाभ छोड़कर हानि का रास्ता अपनाते हैं, इसे क्या कहा जाए? यह माया का खेल ही है, जिससे भ्रमित होकर मनुष्य जल में थल, थल में जल देखने की तरह हानि को लाभ और लाभ को हानि समझता है और अपने पैरों आप कुल्हाड़ी मारता है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७५ पृष्ठ-१४*

सफलता प्राप्त करने के लिए अभीष्ट योग्यता संपादित करें

सफल, प्रगतिशील, विकासोन्मुख और सम्मानित जीवनयापन करना जिन्हें अभीष्ट हो, उन्हें इसके लिए अंतरंग में छिपे हुए सामर्थ्य-बीजों को अंकुरित करने का प्रयत्न करना चाहिए। वे आमतौर से उपेक्षित पड़े रहते हैं। लोग बाह्य साधनों में सफलताओं की संभावना एवं कामनाओं की पूर्ति के आधार ढूँढ़ते हैं, पर यह भूल जाते हैं कि वे आधार बाहर नहीं भीतर हैं, जिनसे व्यक्तित्व को विकसित करना संभव होता है और सफलताओं के रुके हुए द्वार खुलते हैं।

बाहरी साधनों की, व्यक्तियों के सहयोग की, परिस्थितियों की, अनुकूलता की आवश्यकता रहेगी ही और सफलता के लिए उन्हें जुटाने के बाह्य क्षेत्र में भी चेष्टा करनी ही पड़ेगी, पर इतने से ही काम चलने वाला नहीं है। इन सबके साथ मूल आधार पर भी ध्यान देना होगा और वह है—अपना परिष्कृत व्यक्तित्व। भौतिक सफलताओं की दृष्टि से परिष्कृत व्यक्तित्व की परिभाषा, प्रखर मनस्विता और प्रयत्नों की समस्वरता के रूप में ही की जा सकती है। हमारा मनःस्थिति न तो उथली होनी चाहिए और न असंतुलित। आतंरिक स्थिति को सही बनाने का प्रथम चरण पूर्ण होते ही बाह्य परिस्थितियों में आशाजनक अनुकूलता उत्पन्न होती है और प्रगति का पथ अनवरत रूप से प्रशस्त होता चला जाता है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७५ पृष्ठ-३१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निरीक्षण और नियंत्रण आदतों का भी करें

बुरी आदतें तब पड़ती हैं, जब आवेश ही प्रधान बन जाता है और निरीक्षण-नियंत्रण को ध्यान में रखने की बात भुला दी जाती है। साधारण बुद्धि के लोग भी अपने कार्य एवं व्यवसायों में निरीक्षण और नियंत्रण की आवश्यकता समझते हैं, पर न जाने क्यों लोग अपनी आदतों और हरकतों के बारे में असावधानी बरतते हैं और आवेश में अंग-संचालन का जो उत्साह आता है, उसे मर्यादित रखने की बात भुला देते हैं, फलतः उन्हें उपहासास्पद और छिछोरा बनना पड़ता है। अपनी शक्ति नष्ट होती है और दूसरे उसे असामाजिकता मानकर नाक-भों सिकोड़ते हैं। लोग उनके हाथ कोई महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व सौंपते या सहयोग देते हुए झिझकते हैं और सोचते हैं, जो अपनी आदतों का निरीक्षण-नियंत्रण नहीं कर सकता, वह किसी बड़े कार्य को पूरा करने में या दिए हुए सहयोग का सदुपयोग करने में कैसे समर्थ हो सकेगा?

किसी भी क्षेत्र में प्रगति का मूल आधार व्यवस्था बुद्धि होती है। जीवन जीना भी एक बड़ा कार्यक्षेत्र है, इसमें व्यवस्था बुद्धि का उपयोग इस दिशा में भी सतर्कतापूर्वक किया जाना चाहिए कि अपनी आदतें बिगड़ने न पाएँ। अनर्थ उत्पन्न करने वाली निरर्थक बुरी आदतें असावधानी के कारण हमारे स्वभाव का अंग बन जाती हैं और परिपक्व होने पर जड़ें इतने गहरी जमा लेती हैं कि उन्हें हटाना बहुत ही कठिन एवं प्रयत्नसाध्य होता है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७५ पृष्ठ-३२*

दुःख और सुख मिल-बाँटकर हलके करें

हम सभी में एक ही आत्मा समाई हुई है। एक धागे में पिरोए हुए मनकों की माला की तरह ही हम सब परस्पर जुड़े और गुँथे हुए हैं। सुख को अकेले हजम करने का प्रयत्न करने वाला अंतरात्मा की धिक्कार का, परमात्मा के कोप का और विश्वात्मा के प्रतिशोध का भाजन बनता है। निष्ठुरता, कृपणता और संकीर्ण-स्वार्थपरता से युक्त ऐसे व्यक्ति को ईश्वर के कानून पतित ही घोषित करते रहेंगे। मिल-बाँटकर खाने की नीति जिसे सुहाती नहीं, उदारता के लिए जिसकी भावना उमगती नहीं, उसे नर-पशु से अधिक और कुछ नहीं कहा जा सकता। ऐसे लोग उस आनंद से सर्वथा वंचित रहते हैं, जो मानव जीवन का उद्देश्य समझने वाले और उदार आचरण करने वालों को सहज ही मिलता रहता है।

कपास बेचकर पैसा जमा कर लेने में बुराई कुछ नहीं, वरन सुविधा ही रहती है। सुख को बेचकर बदले में लोक-सम्मान और आत्मसंतोष खरीद लेना दूरदर्शिता का चिह्न है। आत्मसंतोष से अनेकों ऐसे सद्गुणों का विकास होता है जो व्यक्तित्व में प्रखर प्रतिभा उत्पन्न करते हैं। लोक-सम्मान पाकर मनुष्य जितना गौरवान्वित होता है, उतना लालची के लिए कल्पना कर सकना भी संभव नहीं। सुख को बाँटकर खाना घाटे का काम दीखते हुए भी वस्तुतः अतिशय लाभदायक ही सिद्ध होता है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७५ पृष्ठ-१२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम निष्ठावान बनें, स्वर्ग का सृजन करें

धर्म, नीति, श्रम और सदाचार के मार्ग से धन जुटाना कठिन है। इसीलिए हम इंद्रिय सुख और सम्मान के लोभ में अनुचित साधनों का सहारा लेते हैं। हम यह भूल जाते हैं कि अधर्म के मार्ग से हम समाज की श्रद्धा, आदर, विश्वास, प्रेम, सहयोग और सहानुभूति खोकर, व्यक्तिगत रूप से घाटे में ही रहते हैं जबकि धर्म के मार्ग से हम अपने को समाज में श्रद्धा और विश्वास का पात्र बनाकर समाज में सहयोग का वातावरण पैदा करते हैं।

हमारे संकुचित स्वार्थ और संकीर्ण दृष्टिकोण के कारण ही धन-धान्य से संपन्न, प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर, सुजला, सुफला, शस्यश्यामला धरती निराशा, नीरसता, चिंता, उद्विग्नता, भय और शंका का वास बनी हुई है।

स्वर्ग और नरक कहीं और नहीं हैं, इन्हें मानव स्वयं इसी धरती पर बनाता है। जब मानव नीति, संयम, त्याग, सेवा, तप और सहानुभूति का जीवन जीते हैं तो समाज में स्वास्थ्य, सुख, शांति, संपन्नता, सद्भावना, प्रेम, हँसी-खुशी और पारस्परिक विश्वास का कल्पवृक्ष उगता है। यही स्वर्ग है। संकुचित स्वार्थ, असंयम, आलस्य, घृणा, द्वेष और दंभ समाज में उत्पीड़न, भय, असंतोष, अभाव और अविश्वास का वातावरण बना देते हैं। यही नरक है। हमारा चिंतन, भावनाएँ और कर्म ही स्वर्ग और नरक का निर्माण करते हैं। अपने लिए, समस्त संसार के लिए हम स्वर्ग का सृजन करें अथवा नरक का निर्माण करें, यह हमारी इच्छा और चेष्टा पर पूर्णतया निर्भर है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७५ पृष्ठ-२४

अपने पर भरोसा करें कि आप समर्थ हैं

विश्वास हमारी जीवन-नैया को तूफानी सागर में भी खेता है। विश्वास पर्वतों को डिगा देता है। विशाल सागर को लाँघ सकता है। विश्वास कोमल पुष्प नहीं है, जो साधारण वायु के झोंके से गिर जाए। स्वेट मार्टेन ने लिखा है—''विश्वास जीवन के उस मार्ग की खोज करता है जो हमें मंजिल तक पहुँचाता है।'' राजा भगीरथ को गंगावतरण में इस आत्मविश्वास ने सफलता पहुँचाई थी।

आत्मविश्वास के समक्ष अभाव, अभिशाप, दीनता, दारिद्रय निष्क्रिय हो जाते हैं। संसार में ऐसी कितनी ही विभूतियों ने जन्म लिया है, जो इन बाधाओं को ठोकर मारते हुए मंजिलों पर पहुँची हैं।

मनुष्य अपने व्यक्तित्व का निर्माता स्वयं है। उसके पास आत्मविश्वास का बहुत बड़ा संबल है। मनुष्य को अपने चरित्र, गुण एवं व्यक्तित्व निर्माण के लिए आत्मविश्वास आवश्यक है। कुछ लोगों में अच्छी शिक्षा, अच्छा साधन, अच्छा ज्ञान होता है फिर भी उनको अपने कार्यों में सफलता इसलिए नहीं प्राप्त होती, क्योंकि उनमें आत्मविश्वास की कमी है।

संसार का कर्णधार वही बन सकता है, जिसमें आत्मविश्वास है। नए मार्गों के शोधक भी वे ही व्यक्ति होते हैं। अतः आत्मविश्वास के महत्त्व को हृदयंगम कर, उसमें प्रगति लाने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७५ पृष्ठ-३२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

असफलता हमें हताश न कर पाए

सफलता सुखदायी होती है, इसलिए हम उसे प्राप्त करना चाहते हैं। उसके लिए दिन-रात एक कर देते हैं। हमारी यह मनोकामना कब पूर्ण हो जाएगी, इसका एक निश्चित उत्तर नहीं दिया जा सकता। उत्तर देने के पूर्व विभिन्न परिस्थितियों पर विचार करना पड़ता है। हमारा स्वभाव, सामयिक सूझ-बूझ, परिश्रमशीलता, पर्याप्त योग्यता, दूसरों की मदद, तत्कालीन परिस्थितियाँ, साधन का अच्छा या खराब होना, हमारा तत्कालीन उत्तरदायित्व, स्वास्थ्य आदि अनेक बातों से सफलता का संबंध है। ये सारी बातें हमेशा अनुकूल नहीं रहतीं। केवल प्रयत्न करके सफलता की आशा नहीं की जा सकतीं।

सफलता प्राप्त करने के लिए हमें भरपूर कोशिश तो करनी चाहिए, पर असफलता का दु:ख सहन करने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए। उन्नति के मार्ग पर चलने वाले हर व्यक्ति को इनका सामना करना पड़ा है। दिन और रात की भाँति सफलता और विफलता का चक्र भी चलता रहता है। हमेशा सफलता की आशा करना नासमझी है। विवेकशील व्यक्ति ऐसा कभी नहीं सोचता। जीवन की बहुमूल्य शिक्षा यह है कि छोटी-मोटी सफलताओं से आनंद में पागल न हो जाएँ और न ही असफलता को देखकर हिम्मत हारें। उसका भी स्वागत करें। सफलता प्राप्त होने पर जैसी सुख-सुविधा की अनुभूति होती है वैसी ही विफलता से आत्मसुधार और धीर-वीर बनने की प्रेरणा मिलती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७५ पृष्ठ-३६

दृष्टिकोण बदलें, सब कुछ बदलेगा

वास्तविक सुख का आगार भावनाएँ हैं, दृष्टिकोण है। भौतिकता के पदार्थों में सुख नहीं है। भावनाओं को ऊँचा उठाने से, परिष्कृत करने से, आदर्शवाद का पुट देने से आध्यात्मिकता की वृद्धि होती है, प्रत्येक वस्तु सुंदर, सुरम्य, आनंददायक दृष्टिगोचर होकर कण-कण में व्याप्त प्रभु के दर्शन होते हैं।

हमारे जीवन में बाह्य पवित्रता, सुंदरता, व्यावहारिक जीवन में तथा आंतरिक पवित्रता भावनाओं में दृष्टिगोचर होती है। हमें गुणों का पौधा पल्लवित करने के लिए दुर्गुणों का कचरा उखाड़कर फेंकना होगा। दूसरों के गुण देखने तथा अपने अवगुण देखने से विश्व के जीव चराचर सभी मित्र तथा सहयोगी दिखाई देंगे; आत्मसुधार होगा इसके विपरीत दूसरों के अवगुण और अपने गुण देखने से सारा विश्व दुश्मन दिखाई देगा तथा अनेकानेक दुर्गुणों के शिकार बनते जाएँगे।

निकृष्ट विचारधारा कलह, कटुता के बीज बोती है। वह निरादर, मुसीबत, अविश्वास एवं असहयोग का पात्र बनाती है। सहानुभूति अंत:करण की गहन, मौन तथा अव्यक्त कोमलता है। इससे संसार की वास्तविक आनंदमयी रसानुभूति होने लगती है। हमारा दृष्टिकोण ही मित्र-शत्रु, सुख-दु:ख, आनंद-परिताप, संतोष-असंतोष आदि का कारण है। हमें जीवन का सही लाभ लेने के लिए दृष्टिकोण को उत्कृष्ट रखकर इस सुरदुर्लभ मानव-तन का फल प्राप्त करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७५ पृष्ठ-४४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफल जीवन की सरल रीति-नीति

कर्म को खेल मानकर उत्तरदायित्वों के निर्वाह में गौरव अनुभव किया जाए। अपने बारे में बहुत अधिक सोचा न जाए। कुसंस्कारों और असामाजिक लोगों जैसी प्रवृत्तियाँ तो कहीं अपने पल्ले नहीं बँध गईं, इस बात पर सावधानी बरती जाए तो समझना चाहिए आनंदित जीवन का आधा द्वार खुल गया। आधा द्वार तब खुलता है, जब हम अपनी अपेक्षा दूसरे के सुख-दु:ख की बात अधिक सोचते हैं। छिद्रान्वेषण, निंदा, चुगली अथवा ईर्ष्या-द्वेष को हटाकर यदि हम दूसरों के दु:ख हटाने और सुख बढ़ाने की बात सोचें और वैसे ही प्रयत्नों में संलग्न रहें तो उसकी प्रतिक्रिया चारों ओर से सद्भावना और सहकारिता के रूप में बरसती हुई दिखाई देगी। दूसरों की सुविधा का ध्यान रखना और उन्हें प्रसन्नता एवं सहयोग देना घाट का नहीं लाभ तथा बुद्धिमत्ता भरी रीति-नीति का है। उसे जो भी अपनाएगा, उसे प्रतीत होगा कि दुनिया कितनी भली है और परिस्थितियों में अनुकूलता की कितनी अधिक लचक है।

जिंदगी की प्रसन्नता एवं सफलता का कोई खास रहस्य नहीं है। प्रगति एवं गरिमा प्राप्त करने का भी कोई जादू नहीं है। भलेमानसों जैसे शालीन और व्यस्त-व्यवस्थित लोगों जैसा क्रिया-कलाप अपनाया जा सके तो उसमें उज्ज्वल भविष्य की किरणें झाँकती हुई दिखाई पड़ेंगी।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७५ पृष्ठ-४६

सत्य को ही अपनाएँ—असत्य को नहीं

सत्य ही जीतता है, असत्य नहीं। सत्य से ही देवयात्रा प्रशस्त होती है, सत्य से ही ऋषिगण अपनी कामनाओं को जीतते हैं। सत्य रूप परमात्मा को प्राप्त करते हैं।

विश्व के सभी मनीषियों ने सत्य की महिमा गाई है। सभी धर्मग्रंथ, महापुरुषों के संदेश इसी तथ्य की ओर निर्देश करते हैं कि मनुष्य सत्य मार्ग का अनुसरण करें।

दार्शनिक प्लेटो का वचन है—''सत्य को ईश्वर और उसके प्रतिबिंब को प्रकाश कहते हैं।'' महात्मा शेखसादी की उक्ति है—''ईश्वर को प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग सत्य को अपनाना है। जो सचाई के मार्ग पर चलता है, वह भटकता नहीं।'' मनीषी कांट का कथन है—''सचाई वह तत्त्व है जिसे अपनाने पर मनुष्य भले और बुरे की परख कर सकता है। हृदयगत सभी सद्गुणों के विकास की कुंजी मनुष्य की सत्यनिष्ठा में सन्निहित है। विद्वान ऐनोन कहा करता था—''यह मत देखो कि कौन कह रहा है वरन यह देखो कि सत्य कहाँ से कहाँ जा रहा है।'' होरेसमन का अभिमत है—''यह जरूरी नहीं कि बिना पात्र-कुपात्र का ख्याल किए हर सच्ची बात पूरी की पूरी हर किसी से कह दी जाए, परंतु इतना ध्यान अवश्य रखा जाए कि जिससे जितना कहा जाए वह सत्य ही होना चाहिए।'' संत सिल्वियो वैलिको ने कहा है—''ईश्वर से प्रेम करना और सत्य से प्रेम करना एक ही बात है।''

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७५ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रबल पुरुषार्थ से प्रतिकूलता भी अनुकूलता बनती है

कार्यपद्धति का सही निर्धारण करने के लिए दूरदर्शिता एवं प्रत्युत्पन्नमति की आवश्यकता होती है। जहाँ पहुँचना है, उसका सही मार्ग पहले से ही ज्ञात होना चाहिए अन्यथा अस्त-व्यस्त दिशा में घुड़दौड़ लगाने से भी काम न चलेगा। हर काम अपने लिए उपयुक्त समय माँगता है और साधन चाहता है। उसके लिए आवश्यक धैर्य रखा जाना चाहिए। उतावले मनुष्य तुरत-फुरत सफलता चाहते हैं और घुड़सवारों की तरह देखते-देखते मंजिल पूरी करना चाहते हैं। वे यह भूल जाते हैं कि अपने स्वल्प साधनों में देर लगनी स्वाभाविक है। साधन-संपन्न लोग जिस काम को एक वर्ष में करते हैं, उसमें साधनहीन व्यक्तियों को दो वर्ष लगने ही चाहिए। हथेली पर सरसों जमाने के लिए अधीर मनुष्य प्राय: हिम्मत हारकर बैठ जाते हैं और निकट सफलता से मुँह मोड़कर दुर्भाग्य का रोना रोते हैं।

सफलता के लिए दूसरों का सहयोग आवश्यक है और उसे पाने के लिए हमें हर दृष्टि से प्रामाणिक बनना चाहिए। अनुकूल परिस्थितियाँ सत्पात्रों के लिए सुरक्षित है, इसलिए हमें अपनी पात्रता बढ़ानी चाहिए। अनायास ही दैव अनुग्रह से लाभदायक परिस्थितियाँ मिल जाएँ और बिना आवश्यक मूल्य चुकाए अभीष्ट मनोरथ सरलतापूर्वक पूरे हो जाएँ, ऐसा सोचना उपहासास्पद ही माना जाएगा। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७५ पृष्ठ-२८*

ईश्वर का अस्तित्व असिद्ध नहीं है

ईश्वर दिखाई नहीं देता इसलिए उसे न माना जाए, यह कोई युक्ति नहीं है। अनेक वस्तुएँ ऐसी हैं जो आँख से नहीं दीखतीं, उन्हें अन्य आधारों से अनुभव करते और मानते हैं। कोई वस्तु नेत्रों के बहुत समीप हो तो भी वह नहीं दीखती। अपने पलक या आँखों में लगा काजल अपने को कहाँ दीखता है।

ईश्वर के अस्तित्व से केवल इस कारण इनकार करना कि वह आज के विकसित विज्ञान या बुद्धिवाद की कसौटी पर खरा नहीं उतरता, कोई कारण नहीं। प्रत्यक्ष के आधार पर तो यह भी प्रमाणित नहीं किया जा सकता कि हमारा पिता वस्तुत: कौन है ? माता की साक्षी ही इसका प्रमाण मान लिया जाता है।

मानव जीवन की अनेक महत्त्वपूर्ण अवस्थाएँ उस विज्ञान के आधार पर निर्भर हैं, जिसे अध्यात्म विज्ञान कहते हैं। पदार्थ विज्ञान से नहीं, अध्यात्म विज्ञान से ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है। ईश्वर का अवलंबन करके ही मानव जाति की अब तक की प्रगति संभव हुई है। प्रेम, करुणा, उदारता, दान, संयम, सदाचार, पुण्य-परमार्थ जैसे सद्गुणों का विकास आस्तिकता के आधार पर ही संभव हो सका है और इन्हीं गुणों के द्वारा सामाजिकता की प्रवृत्ति बढ़ी है। यदि इस महान आदर्श का परित्याग कर दिया जाए तो व्यक्ति का आंतरिक स्तर इस प्रकार का ही बनेगा जिससे द्वेष, घृणा, संघर्ष और आतंक का मार्ग अपनाने के लिए मन चलने लगे। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७५ पृष्ठ-१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम सुसंस्कृत बनें, संस्कारवान बनें

संस्कारों का सर्वाधिक महत्त्व चित्त-शुद्धि में है। मन की मलिनता ही सबसे अधिक दु:खदायी है। काया की मलिनता तो साबुन-पानी से धोई भी जा सकती है, पर मन तो न जाने कहाँ-कहाँ भटकता रहता है और प्रतिपल अशुभ चिंतन के द्वारा वह प्रदूषित होता रहता है। इंद्रियों का प्रेरक भी वही है, इसलिए उसी की शुद्धि का निरंतर ध्यान एवं प्रयत्न करना चाहिए। योग सूत्र में 'चित्तवृत्ति निरोध' को योग कहा गया है, जबकि निरोध करना सहज कार्य नहीं है। अस्तु, सर्वप्रथम चित्त को अशुभ से हटाकर शुभ प्रवृत्तियों में लगाना चाहिए, क्योंकि चित्त को कुछ न कुछ अवलंबन तो अपेक्षित ही है। यदि उच्चादर्श एवं ध्येय में हम लगे रहेंगे तो बुरी आदतों की ओर हमारा ध्यान नहीं जाएगा और यदि कभी गया भी तो बुरा करने के लिए समय ही न मिलेगा।

आत्मनिरीक्षण प्रतिपल नहीं तो कभी-कभी करना आवश्यक है ही। उसके द्वारा जो दोष हमारे अंदर दिखाई दें, उनका निवारण कर एवं जिन गुणों की कमी है, उनकी पूर्ति करते रहा जाए, यही संस्कृति है, कल्चर है।

'संस्कृति' का अर्थ माँजना भी किया गया है। अर्थात आत्मा के दोषों का परिमार्जन, परिष्कृति एवं गुणों का विकास ही संस्कृति है। जिन कार्यों से हमारा उत्कर्ष हो, हृदय की शुद्धि हो, उन्हें ही संस्कृति कहना चाहिए, न कि आधुनिकतम नृत्यगानादि को संस्कृति का परिचायक समझना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७५ पृष्ठ-२४

दूसरों के गुण और अपने दोष देखें

आलसी, छिद्रान्वेषी और ईर्ष्यालु मनुष्य के लिए यह संसार नरक के अतिरिक्त कुछ नहीं है। पापी और दुराचारी, चोर और व्यभिचारी की न लोक में प्रतिष्ठा है और न परलोक में। यह ईर्ष्या रूपी पिशाचिनी भीतर ही भीतर कलेजे को चाटती रहती है।

सामाजिक प्राणी होते हुए आपका निर्वाह समाज से दूर रहकर नहीं हो सकता। ईर्ष्या बाधकत्व के दायरे में आबद्ध करती है। अत: याद रखिए कि ईर्ष्या से हम दूसरों का कुछ नहीं बिगाड़ सकते, बल्कि स्वयं ही अपनी हानि करते हैं। समाज में रहकर दूसरों से अच्छे संबंध जोड़िए और अपने आप को उनका शुभचिंतक बनाइए।

आग जहाँ रखी जाती है, पहले उसी जगह को जलाती है। ईर्ष्या से दूसरों का कितना अहित किया जा सकता है, यह अनिश्चित है; पर यह पूर्ण निश्चित है कि कुढ़न के कारण अपना शरीर और मस्तिष्क विकृत होता रहेगा, जिससे अपना स्वास्थ्य एवं मानसिक संतुलन धीरे-धीरे घटने लगेगा।

दूसरों के दोष देखने ही हों तो घृणा की अपेक्षा सुधार की दृष्टि से देखने चाहिए। वही दृष्टिकोण हमारा भी रहना चाहिए। उपयुक्त तो यही है कि हम अपनी सारी चेतना को आत्मनिरीक्षण और आत्मसुधार पर केंद्रित करें।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७५ पृष्ठ-३९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्तिवाद नहीं, समाजवाद हमारा लक्ष्य हो

वे व्यक्ति जो समाज के उपकारों को भुलाकर अपने अस्तित्व एवं व्यक्तित्व को अलग रखते हैं, समाज के साथ असहयोग करते हैं, समाज विरोधी आचरण करते हैं, वे मुख्य रूप से जीवन के नियमों, मूल सिद्धांतों की ही उपेक्षा करते हैं। इस प्रकृति के कारण मनुष्य को संपूर्ण समाज का विरोध सहन करना पड़ता है और इससे उसके व्यक्तित्व का विकास बंद हो जाता है। मनुष्य की शक्ति सीमित और अल्प है। समाज के साथ व्यक्तित्व का सामंजस्य एक आवश्यक नियम है। स्वार्थपरता की मनोवृत्ति मनुष्य को आंतरिक दृष्टि से भी दीन-हीन और एकाकी बना देती है।

शरीर के सभी अंगों के श्रम, सहयोग, परस्पर योगदान में ही मानव जीवन का अस्तित्व निहित है। कदाचित विभिन्न अंग परस्पर विरोधी, एकाकी, स्वार्थी आचरण करने लगें तो समस्त शरीर का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा। समाज में भी व्यक्तिगत लालसा को रखकर किए जाने वाले कार्यों के लिए कोई स्थान नहीं है। व्यक्तिगत उत्कृष्टता, शक्ति, समृद्धि, वैभव, ऐश्वर्य की लालसा सारे समाज के लिए हानिकारक और स्वयं में विष बनने का रास्ता है।

— अखण्ड ज्योति-मई १९७५ पृष्ठ-१

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

दृढ़ इच्छाशक्ति एक चमत्कारी उपलब्धि

इच्छाशक्ति, उद्देश्य एवं ईश्वर-विश्वास के आधार पर मनुष्य अपनी लक्ष्यसिद्धि कर सकता है। अपने जीवन में सफलता चाहने वाले व्यक्ति इस त्रिशक्ति के आधार पर अपना कार्य आरंभ करें तो प्रतिकूलताएँ, कठिनाइयाँ जो कभी निराश एवं हताश कर देती थीं, हमें अपने मार्ग में आगे बढ़ने की प्रेरणा देंगी।

दृढ़प्रतिज्ञ होने के लिए भी इच्छाशक्ति की दृढ़ता का होना आवश्यक है। हरिश्चंद्र सत्य पर अटल रहे, भीष्म पितामह वाणशय्या पर छह मास तक सोए रहे, राजस्थान की वीर बालाएँ जौहर करके मृत्यु की गोद में सो गईं, चाणक्य ने नंदवंश का नाश कर दिया। शिवाजी ने विशाल औरगंजेबी सेना का लुक-छिपकर भी मुकाबला किया, शहीदेआजम भगतसिंह अपना नाम अमर कर गए। भारत के स्वतंत्रता संग्राम में कई सेनानी शहीद हो गए। गांधीजी ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से भारत को स्वतंत्रता दिलाकर ही दम लिया। कुछ व्यक्ति जो दिखने में दुबले-पतले कमजोर से थे, पर अपनी इच्छाशक्ति की दृढ़ता से अपार उन्नति कर सके। दृढ़ इच्छाशक्ति रखने वाला व्यक्ति अपने विचारों और संकल्पों में इतना प्रखर रहता है कि विरोध, बाधाएँ, प्रतिकूलताएँ उसके सामने टिकने नहीं पातीं।

— अखण्ड ज्योति-मई १९७५ पृष्ठ-२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मतत्त्व की अखंडता

पूर्णता की प्राप्ति अपने सहज धर्म के पालन करने में हैं। मनुष्य-जन्म धारण करने के पहले ही स्वधर्म की स्थापना हो जाती है। जन्म से पूर्व माता-पिता तथा समाज हमारे लिए तैयार रहता है। अत: माता-पिता और समाज के प्रति हमारा स्वधर्म पहले से तैयार है। इसके प्रति किया गया कर्त्तव्य हमें ब्रह्म के निकट पहुँचा देता है।

अनंत ब्रह्म से निकले हुए मानव ने अपने को सीमाबद्ध कर लिया है, इसी से उस अनंत सुख को प्राप्त नहीं करता। नदी का जल जब तक समुद्र में मिल जाने के लिए उतावला रहता है, तब तक उसमें गति और तेज रहती है, लेकिन जब वह झील या तालाब का रूप धारण कर लेता है तो उसकी गति रुक जाती है और उसमें सड़न पैदा हो जाती है।

मनुष्य ने अपने को सीमित बंधनों में बाँध लिया है। जाति, देश, संप्रदाय के घेरे में घिरा मनुष्य पूर्ण ब्रह्म को पा नहीं सकता है।

शरीर को प्रधानता न देकर इसमें बैठी हुई आत्मा को पहचानना आवश्यक है। आत्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं। परमात्मा का अंश होने से आत्मा भी उसी तरह शक्तिवान, तेजवान और सत्यवान है, जैसा परमात्मा है। माया-मोह, अज्ञान के कारण हम अपने को पहचान नहीं पाते। आत्मबोध एवं आत्मतत्त्व की अखंडता को समझना आवश्यक है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७५ पृष्ठ-६

जीवन-संपदा का सदुपयोग सीखा जाए

प्राणधारी को दिए गए ईश्वरीय उपहारों में मानव शरीर सर्वोपरि है। इससे बड़ी कोई और संपदा ईश्वर के पास है ही नहीं। इसे उसकी सर्वोत्तम कलाकृति कहा जा सकता है। जिन विशेषताओं के साथ इसे सँजोया गया है, उसका दर्शन समस्त संसार में अन्यत्र कहीं नहीं हो सकता। इसमें जितनी अद्‌भुत संभावनाएँ भरी पड़ी, हैं, उन्हें देखते हुए नर को नारायण का छोटा स्वरूप कहने में कोई अत्युक्ति नहीं है। इसका स्वरूप और उपयोग यदि समझा जा सके और ठीक तरह प्रयुक्त किया जा सके तो मनुष्य देवोपम हर्षोल्लास भरा जीवन जी सकता है और अपने संबद्ध क्षेत्र को सुख-शांति भरे स्वर्गीय वातावरण का लाभ दे सकता है।

यदि जीवन का महत्त्व, स्वरूप और उपयोग समझा जा सके तो प्रतीत होगा कि और कुछ शेष नहीं है। जो मिला है उसी का सही प्रयोग करना सीखना है। आरोग्य, आनंद, धन, बल, यश एवं वर्चस्व के समस्त आधार अपने भीतर मौजूद हैं। कमी एक ही है कि अपने आप को समझना, जीवन-संपदा का मूल्यांकन करना और उपलब्धियों का सदुपयोग करना नहीं आता। यदि यह भूल सुधारी जा सके तो प्रतीत होगा कि अपने चारों ओर अनंत आनंद का समुद्र लहलहा रहा है और उच्चस्तरीय प्रगति का सोपान पूर्णतया खुला पड़ा है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७५ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संघर्ष ही जीवन है

कर्म की पूजा ही मानव का वास्तविक धर्म है। कर्म से शक्ति, पौरुष, साहस एवं तेजस् की उपलब्धि होती है।

एक कहावत प्रचलित है—"ईश्वर उनकी ही सहायता करता है जो अपनी सहायता आप करते हैं।" वस्तुतः दैव को दुर्बलता का घातक बताकर शास्त्रकारों ने एक कटु सत्य का ही उद्घाटन किया है।

शक्ति की उत्पत्ति अवरोध से होती है। नदी का प्रवाह वहीं तीव्र होता है, जहाँ चट्टानों, पहाड़ों के द्वारा गत्यावरोध उत्पन्न किया जाता है। मैदानी नदियों का प्रवाह तीव्र नहीं होता। अवरोध और घर्षण के सिद्धांत पर बिजली की शक्ति का उद्भव होता है। धनुष की डोरी जब तनती है, तब उसमें तीर को दूर फेंकने की शक्ति आती है। यदि डोरी ढीली पड़ी रहे तो तीर फेंकने का काम जरा भी न हो सकेगा। वैज्ञानिकों, योगियों एवं आत्मवेत्ताओं ने भी अगणित सिद्धियाँ प्राप्त की हैं, उन सबका श्रेय मन को रोककर एक दिशा में लगाए रहने की सफलता में ही सन्निहित है।

संघर्ष का ही दूसरा नाम जीवन है। जहाँ सक्रियता समाप्त हुई, वहाँ जीवनांत समीप समझिए। आलसी, अकर्मण्यों को जीवित अवस्था में भी मृत की संज्ञा दी जाती है। जिसने पुरुषार्थ के प्रति अनास्था व्यक्त की, वह जीवन के प्रति आस्था ही खो बैठा। मनुष्य की सच्ची वीरता युद्ध के मैदान में दुश्मनों को पराजित करने में नहीं, बल्कि मनोशक्ति के द्वारा अपनी वासनाओं और तृष्णाओं के हनन करने में निहित है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७५ पृष्ठ-४०

अपने को अधिकाधिक सुविस्तृत बनाते चलें

अपने आप में केंद्रीभूत होकर हम उन समस्त संपदाओं से वंचित हो जाते हैं, जो इस संसार के प्रत्येक कण में भरी पड़ी है। आहार-विहार के समस्त साधन बाहर ही उत्पन्न होते हैं और उन्हें उपार्जित करके उपभोग के द्वारा शरीर की गतिविधियाँ चलती हैं। शिक्षा, व्यवसाय, चिकित्सा, विवाह आदि उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए भी दूसरों का द्वार खटखटाते हैं और जो जितनी मात्रा में मिल जाता है, उससे उतनी ही मात्रा में प्रसन्न होते हैं। एकांत में बैठकर मनमोदक खाते रहने से हर्षोल्लास के अवसर प्राप्त नहीं होते। विविध पदार्थों का सहारा लेना पड़ता है, जो अपने भीतर नहीं बाहर ही मिलते हैं।

दूरदर्शिता इस बात में है कि अपने को संकीर्ण, संकुचित न बनाएँ वरन संसार के साथ घुल-मिलकर समुद्र के विशद क्षेत्र में विचरण करने वाली और जीवनोपयोगी समस्त साधन उपलब्ध करने वाली मछली की नीति अपनाएँ। बुद्धिमत्ता इस बात में है कि सद्भावनाओं और सत्प्रवृत्तियों को अपनाकर आकर्षण के ऐसे केंद्र बनें, जिस पर हर दिशा में अनवरत स्नेह सहयोग की वर्षा होने लगे। अपने उन दोष-दुर्गुणों को सुधारें, जो प्रगति के प्रत्येक पग पर अवरोध बनकर खड़े होते हैं। प्रवीणता इस बात में है कि उदात्त चिंतन का अभ्यास करें, सद्व्यवहार की रीति-नीति अपनाएँ, अपने को दूसरों के साथ और दूसरों को अपने साथ घुला-मिलाकर देखें। आत्मविस्तार का यही रास्ता है। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७५ पृष्ठ-१*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यक्ति का समाज के प्रति दायित्व

संकुचित और स्वार्थी व्यक्ति समाज का शोषण एवं अहित करते हैं। इस तरह के व्यक्ति समाज के घातक शत्रु होते हैं जो सदैव समाज में असहयोग की भावना फैलाते हैं और उसमें अनेक अव्यवस्थाएँ उत्पन्न करते हैं।

स्वार्थपरता को समस्त पापों की जननी समझना चाहिए। अत: सुखी और संपन्न समाज तभी निर्मित हो सकता है, जब मानव व्यष्टिवादी विचारधारा को छोड़कर समष्टिवादी बने, इसी में समाज का कल्याण है और व्यक्ति का भी हित है। समाज में पारस्परिक हमदर्दी, आपसी मदद, प्रेमभावना, उदारता, सेवा एवं संगठन की भावनाएँ अत्यंत आवश्यक हैं, तभी समाज का विकास और समृद्धि संभव है।

समाज में व्यक्ति का सबसे महान दायित्व समाज-कल्याण एवं परमार्थ है। समाज के दीन-हीन, अपंग, वृद्ध जर्जर एवं निराश्रित व्यक्तियों की सेवा-शुश्रूषा एवं पालन करना व्यक्ति का एक महान दायित्व है।

दूसरों के प्रति प्रेम, सहयोग, सहायता, त्याग और सहानुभूति की भावना के अभाव में जो व्यक्ति समाज के लिए हितकारी सिद्ध नहीं हो सकता है, वह समाज के लिए कलंक है, वह स्वयं ही अपने विकास को रोक देता है, इससे समाज का विकास स्वत: ही रुक जाता है। अत: समाज की समृद्धि एवं विकास के लिए व्यक्ति को दूसरों का कल्याण करना एवं परमार्थी बनना अत्यावश्यक दायित्व है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७५ पृष्ठ-२०

कर्म का प्रतिफल अकाट्य है

अनादिकाल से सृष्टि कर्म की धुरी पर घूमती चली आ रही है। विश्व में कर्म को ही प्रधानता दी गई है। जो जैसा कार्य करता है, उसी के अनुरूप उसे फल भी भोगना पड़ता है। संसार एक कर्मभूमि है। यहाँ आकर जो जैसा बोता है, उसे वैसा ही काटना पड़ता है।

अंत:करणरूपी खेत में विचार बीजस्वरूप होते हैं। यही विचार अंकुरित होकर कर्मरूपी फसल का रूप धारण करते हैं। व्यक्ति जिस तरह के विचारों को मन में आश्रय देता है, वे ही पुष्पित तथा पल्लवित होते रहते हैं। इस संसार में जो भी सुख-दु:ख की परिस्थितियाँ हमें दृष्टिगत होती हैं, वह कुछ और नहीं हमारे ही बुरे या अच्छे विचारों का परिणाम होती हैं।

जीवन को श्रेष्ठ एवं समुन्नत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हम नित्यप्रति के जीवन में उच्च विचारों की दिव्यज्योति से अंत:करण को आलोकित करते रहें। मनुष्य महानता से उत्पन्न हुआ है, उसका लक्ष्य महान होना चाहिए। इसके लिए मनुष्य को कर्मरूपी गांडीव लेकर अपने मन में नित्यप्रति उत्पन्न होने वाले विकारों से युद्ध करना चाहिए और अपने को शुद्ध एवं सात्विक बनाते चलना चाहिए। शुभ कर्म तथा विचार वह सीढ़ी है, जिसका सहारा लेकर चढ़ने से मनुष्य उच्च आदर्शवादी एवं महान बन सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७५ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर का द्वार सबके लिए खुला है

हम जितने ही संकीर्ण हैं, ईश्वर से उतनी ही दूर हैं। उदात्त दृष्टिकोण और उदार रीति-नीति अपनाकर ही उसके समीप पहुँचाने वाली मंजिल पर अग्रसर हो सकते हैं। छोटे पात्र में बड़े पदार्थ नहीं रखे जा सकते हैं। जितना सामान हो, उसे रखने के लिए पात्र भी उतना ही बड़ा होना चाहिए। बड़ी जलराशि गहरे तालाब में ही भरी जा सकती है। ईश्वर महान है। महानता के रूप में ही उसकी स्थापना अंत:करण में हो सकती है। महामानवों को ही दूसरे शब्दों में ईश्वरभक्त कह सकते हैं। संकीर्ण स्वार्थपरता की धुंध जितनी मात्रा में निरस्त करते हैं उतने ही स्पष्ट दर्शन भगवान के हो सकते हैं।

ईश्वर खुला आकाश है, कोई व्यक्ति नहीं। हम आकाश में उड़ें, उसका आंचल खुला पड़ा है। आकाश हमें खींचकर ऊपर नहीं उड़ाएगा। अपना लक्ष्य और प्रयत्न हों तो साधन बन जाएँगे। समुद्र न तो नदियों को बुलाता है और न रोकता है। कोई नदी चाहे तो तालाब में रुक जाए। कोई चाहे तो बहती चले और समुद्र में मिल जाए। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए उसे समझना आवश्यक है। मिन्नतें करके और मनौती मनाने की उलझी पगडंडी पर चलकर उस तक नहीं पहुँचा जा सकता। उदात्त चिंतन और परिष्कृत व्यक्तित्व के राजमार्ग पर चलकर ही उस परम प्रभु तक पहुँचा जा सकता है, जिसे पाना हमारा जीवनलक्ष्य है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७५ पृष्ठ-२

श्रम देवता की साधना

मनुष्य की छिपी सामर्थ्य और अजस्र गरिमा के प्रकटीकरण का एक ही उपाय है—अनवरत श्रम। श्रमनिष्ठा शरीर को थकाने वाली प्रक्रिया का नाम नहीं। यह वह साधना है, जिसमें निराकार को साकार में परिणत किया जाता है और साकार को सुविकसित, सुसज्जित बनाया जाता है।

अगति को प्रगति में बदलने की सामर्थ्य केवल श्रम में है। पदार्थ का छोटे-से-छोटा परमाणु बिना विश्राम किए अनवरत गति से सक्रिय है। पवन को एक क्षण के लिए भी चैन नहीं। सूर्य और सितारे अपने नियत कर्मों में संलग्न हैं।

धरती माँ का चिरंतन स्वप्न है कि उसका पुत्र उसे अधिक शोभायमान बनाने के लिए श्रम करे। संसार की अपेक्षा है कि पुरुषार्थ का पूरा उपयोग हो और सुखद संभावनाओं से सारा वातावरण भर दिया जाए। जीवन की माँग है कि उसके प्रत्येक पक्ष को गौरवान्वित बनाने के लिए स्वेदबिंदु निरंतर झरते रहें।

पसीने से पवित्र और कुछ नहीं। जिस ललाट पर वह झलकता है, उसे समुन्नत बनाता चला जाता है। जिस भूमि पर गिरता है उसे नंदन वन बना देता है। अनगढ़ पत्थरों को देवप्रतिमा के रूप में पूजनीय बनाने का श्रेय, श्रम के देवता को ही दिया जा सकता है। कलाकारिता का सर्वोत्तम रहस्य अनवरत श्रम में सन्निहित है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७५ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उदार जीवन यात्रा

संग्रह का अर्थ है—कल पर अविश्वास, ईश्वर पर अश्रद्धा और भविष्य की अवज्ञा। जब पिछले कल से हमें जीवित रहने के लिए जितना आवश्यक था, उतना मिल गया तो कल को न मिलेगा, इसका कोई कारण नहीं। यदि जीवन सत्य है तो यह भी सत्य है कि जीवनोपयोगी पदार्थ अंतिम सांस चलने तक मिलते रहेंगे। नियति ने उसकी उचित व्यवस्था पहले से ही कर रखी है। तृष्णा ऐसी ही अक्लमंदी है जो निर्वाह के लिए आवश्यक साधन उपलब्ध रहने पर भी निरंतर अतृप्तिजन्य उद्विग्नता में जलाती रहती है।

जिन्हें ईश्वर की उदारता पर विश्वास है, वे उदार बनकर जीते हैं। बादलों का कोश चुकता नहीं, वे बार-बार खाली होते हैं, पर फिर भर जाते हैं। नदियाँ उदारतापूर्वक देती हैं और यह विश्वास करती हैं कि उनका प्रवाह चलता रहेगा। अक्षय जलस्रोत उनकी पूर्ति करते रहेंगे। वृक्ष प्रसन्नतापूर्वक देते हैं और सोचते हैं कि वे ठूँठ नहीं रह सकते। नियति का चक्र उन्हें हरा-भरा रखने की व्यवस्था करता ही रहेगा। कृपणता, संकीर्ण-चिंतन का ही नाम है। ऐसे व्यक्ति कुछ संग्रह तो कर सकते हैं, पर साथ ही बढ़ती हुई तृष्णा के कारण उस सुख से वंचित ही रहते हैं, जो उदार रहने पर उन्हें अनवरत रूप से मिलता रह सकता था। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७५ पृष्ठ-१*

विचारों की प्रचंड शक्ति और प्रतिक्रिया

अपने आदर्श तक पहुँचने के लिए व्यक्ति को अपने सारे विचार उसी उद्देश्य की पूर्ति में लगा देने चाहिए, क्योंकि बिखरे रहकर भी विचारों का महत्त्व समाप्त हो जाता है। जिस प्रकार झाड़ू की अलग-अलग सींकें व्यर्थ हैं, उसका कोई उपयोग नहीं हैं, उसी प्रकार विचारों का बिखराव भी अपना कुछ स्थान नहीं रखता है। लक्ष्य की ओर मन, वाणी और कर्म का समन्वय करके बढ़ना चाहिए, तभी सफलता हाथ लगती है।

मनुष्य प्रत्येक कार्य विचारों से प्रेरित होकर करता है। हवाई जहाज आकाश में उड़ता है और कुतुबनुमा की सुई से उसे यह पता लगता है कि उसे किस दिशा में चलना है और वह सैकड़ों मील लंबा रास्ता पार कर जाता है। विचार कुतुबनुमा की सुई के सदृश हैं। वह मनुष्य को इंगित करते हैं कि तुम्हें किस दिशा में चलना चाहिए, मनुष्य को ज्ञान और विचार की संपदा देकर भगवान ने भेजा है। विचार न होते तो मनुष्य रीछ, बंदरों की तरह घूम रहा होता। संसार में जो सुंदरता दिखाई देती है, वह मनुष्य के विचारों का परिणाम है। विचारों का उपयोग निस्संदेह अतुल्य है।

विचारों को जिस दिशा में लगा दिया जाता है, उसी ओर प्रगति होने लगती है और सफलता का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७५ पृष्ठ-३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपने को पहचानें और विकसित करें

प्रगति के पथ पर चलने के लिए कई प्रकार के साधनों की जरूरत पड़ती है। इनमें से सबसे बड़ा साधन है—अपना मनोबल। अपने को समझने और सुधारने से बढ़कर और कुछ बुद्धिमत्ता इस संसार में नहीं है। अपनी बिखरी हुई शक्तियों को यदि एकत्रित करने का अभ्यास कर लिया जाए और उन्हें किस काम में किस प्रकार लगाना, यह निश्चित कर लिया जाए तो समझना चाहिए कि सफलता का अधिकांश प्रयोजन पूरा कर सकने वाला आधार बन गया।

दूसरे लोग हमें एक सीमा तक ही सहारा दे सकते हैं। हर व्यक्ति की अपनी समस्याएँ हैं, उन्हीं को सुलझाना कठिन पड़ता है फिर दूसरों की सहायता करने में कोई कितनी दिलचस्पी ले सकता है या सहयोग दे सकता है, यह एक विचारणीय बात है। जब हम ही दूसरों से आशाएँ बाँधते हैं और अपनी गुत्थी आप नहीं सुलझा सकते तो दूसरों से ही यह आशा कैसे रखी जा सकती है कि अन्य लोगों के पास इतना फालतू समय या साधन होगा कि हमारे लिए कुछ अधिक कर सकें?

हम जिन दूसरों से सहायता की आशा करते हैं, उनके वर्चस्व को स्वीकार करते हैं। हमें स्वीकार करना चाहिए कि यदि अपना आपा विकसित और व्यवस्थित किया जा सके तो उसकी गरिमा उन सभी सहायकों की मिली-जुली सहायता से भी अनेक गुनी उच्च है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७५ पृष्ठ-४०

दुःख और सुख सहोदर-सहचर

समझा जाता है कि सुख और दुःख परस्पर विरोधी हैं। एक को दूसरा काटता है। सुखी और दुखी दो विपरीत स्थिति के व्यक्ति हैं, पर गहराई से विचार करने पर दूसरी ही बात सामने आती है। चिंतन बताता है कि दुःख नग्न सत्य है सुख तो उसको सुसज्जित करने वाला परिधान अलंकार मात्र है।

पुत्रप्राप्ति की मुस्कान के पीछे माता की प्रसव पीड़ा झाँकती है। आज का गौरवान्वित कंठाभूषण कल सुनार की भट्ठी में तप रहा था और हथोड़ों की चोटें खा रहा था। आग पर पकाए बिना स्वादिष्ट भोजन बन सकना कैसे संभव हो सकता है।

धनी किसान, पदोन्नत श्रमिक और पुरस्कृत कलाकार के आज के सौभाग्य को सराहते हुए थोड़ा पीछे मुड़कर भी देखना होगा। उन उपलब्धियों के लिए उन्हें कितने समय तक, कितने मनोयोगपूर्वक, कितनी कठोर साधना करनी पड़ी है? पल्लवित वृक्ष का इतिहास वहाँ से आरंभ होता है, जहाँ एक बीज ने अपने अस्तित्व की बाजी लगाई थी। चिरंतन एकाग्र अध्यवसाय के बिना कौन विज्ञ-विद्वान बन सका है।

दुःख बड़ा भाई है और सुख छोटा। दुःख पहले पैदा हुआ, सुख बाद में, दोनों चिरंतन-सहचर हैं, उनकी एकता को कोई तोड़ नहीं सकता। दुःख को स्वेच्छापूर्वक वरण किए बिना सुख का सौभाग्य पा नहीं सकता।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७५ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मीयता का विस्तार

अपनापन ही सबसे अधिक प्रिय है। आत्मबोध से ही जीवन और संसार के रहस्यों पर से परदा उठता है। आत्मजाग्रति ही दिव्य जीवन में प्रवेश का द्वार है। आत्मविश्वास से हिम्मत बँधती है और प्रबल पुरुषार्थ करके बढ़ी-चढ़ी सफलताएँ प्राप्त करना संभव होता है। आत्मतृप्ति के लिए ही सारी दौड़धूप हो रही है। आत्मसंतोष पाने के लिए बड़े-से-बड़े कष्ट सहे जा सकते हैं। आत्मपरिष्कार के साथ देवत्व की सारी सिद्धियाँ जुड़ी हुई हैं। जीवन का लक्ष्य है—आत्मकल्याण। आत्मा से बढ़कर और कुछ नहीं। विकसित आत्मा को ही दूसरे शब्दों में परमात्मा कहा जाता है।

वैभव की व्याख्या आत्मविस्तार के रूप में की जाएगी। जिस वस्तु पर अपना अधिकार है, मोह है, संबंध है, वही प्रिय लगती है। जिसे हम सुंदर कहते हैं और प्रिय मानते हैं, वह अपनेपन के आरोपण से ही वैसा लगता है।

यदि हमें इस संसार में अधिक प्रिय पदार्थों का संग्रह करना हो और अधिक प्रियजनों के साथ रहना हो तो आत्मीयता का अधिकाधिक विस्तार करना चाहिए। जिस पदार्थ या व्यक्ति पर आत्मीयता का आरोपण जितनी मात्रा में करते चलेंगे, वह उतना ही प्रिय, सुंदर लगता जाएगा। यदि आत्मीयता का विस्तार समस्त संसार तक कर दिया जाए तो सर्वत्र अनंत आनंद का अनुभव और असीम सौंदर्य का दर्शन हर घड़ी होता रहेगा। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७५ पृष्ठ-१*

आत्मजागरण के लिए ध्यानयोग की आवश्यकता

मन जंगली हाथी की तरह है, जिसे पकड़ने के लिए पालतू प्रशिक्षित हाथी भेजने पड़ते हैं। सधी हुई बुद्धि पालतू हाथी का काम करती है। ध्यान के रस्से में पकड़-जकड़कर उसे काबू में लाती है और फिर उसे सत्प्रयोजनों में संलग्न हो सकने योग्य सुसंस्कृत बनाती है।

हरी घास में रहने वाले टिड्डे हरे रंग के होते हैं, पर यदि उन्हें सूखी घास में रहना पड़े तो कुछ समय बाद उसी रंग के हो जाएँगे। यह ध्यान साधना का चमत्कार है। जो वातावरण मस्तिष्क में छाया रहता है, व्यक्तित्व उसी ढाँचे में ढलने लगता है। भगवत चिंतन से न केवल मनःस्थिति, वरन सारी जीवनसत्ता ही उसी ढाँचे में ढलने लगती है।

पानी का स्वभाव नीचे गिरना है। उसे ऊँचा उठाना है तो पंप, चरखी, ढेंकी आदि लगाने की व्यवस्था बनानी पड़ती है। निम्नगामी पतनोन्मुख प्रवृत्तियों में ही हमारी अधिकांश शक्तियाँ नष्ट होती रहती हैं। उन्हें ऊपर उठाने के लिए मस्तिष्क में दिव्य प्रयोजनों के लिए प्रयुक्त होने की ध्यान-प्रक्रिया अपनानी पड़ती है। नीचे की मंजिल पर लगे हुए नल से पानी बहना बंद हो जाता है तभी ऊपर की मंजिल के नल में पानी आता है। निम्नगामी प्रवृत्तियों से मन हटकर ब्रह्मलोक में, मस्तिष्क में उन्हें केंद्रित करने का कार्य ध्यान साधना से संपन्न होता है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७६ पृष्ठ-६७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ध्यानयोग से एकाग्रता की दिव्यशक्ति का उद्‌भव

कच्चे धागे मिलकर मजबूत रस्सी और कमजोर सींकें इकट्‌ठी होने से बुहारी बनने की बात सभी को मालूम है। बूँद-बूँद जोड़ने से घड़ा भरता है। अस्त-व्यस्त, अनियंत्रित, निरुद्‌देश्य चिंतन से मानसिक शक्ति की कितनी बरबादी होती है और उन्हें एकाग्र करके दिशा विशेष में निरत कर देने पर कितने चमत्कार उत्पन्न होते हैं, इस तथ्य को पग-पग पर परखा और सही पाया जा सकता है। हर काम में असफल रहने वाले लोगों में से अधिकांश वे होते हैं, जिन्हें किसी विषय का एकाग्र चिंतन नहीं आता। ऐसे लोग बुद्धिमान, क्रियाकुशल एवं साधन-संपन्न होते हुए भी मात्र चंचल और अस्थिर स्वभाव के कारण हर कार्य में असफल बनते हैं। लगातार एक काम पर सोचना और अभिरुचि को निर्धारित कार्य में नियोजित किए रहना जिनसे बन नहीं पड़ता, उनकी चित्र-विचित्र उछल-कूद तो बहुत होती है, पर सफलता के नाम पर पल्ले कुछ नहीं पड़ता।

एकाग्रता को विकसित करके समुद्र तल में गहरा गोता मारने वालों की तरह वैज्ञानिक, योगी, मनीषी बहुमूल्य रत्नराशि खोजकर लाते हैं। उथला चिंतन हवा में उड़ते रहने वाले तिनकों की तरह और एकाग्रतापूर्वक चिंतन को केंद्रीभूत करके किसी विशेष प्रयोजन में लगा देना ऐसे शब्दबेधी बाण की तरह है, जिसका सुनिश्चित परिणाम होकर ही रहता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७६ पृष्ठ-७२

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

साधना से सिद्धि की प्राप्ति

पदार्थ की तरह व्यक्ति भी मूलत: अनगढ़ ही होता है। उसे सँभालने, सजाने से उपयोगिता बढ़ती है और सौंदर्य निखरता है।

जंगली पौधे कुरूप झाड़ियाँ बनकर अस्त-व्यस्त फैले होते हैं, पर जब कुशल माली द्वारा उन्हें खाद, पानी दिया जाता है और निराया, गोड़ा, छाँटा जाता है तो उन्हीं पौधों को सुरम्य उद्यान के रूप में देखा जाता है। कच्ची धातुओं की स्थिति उपहासास्पद होती है, पर जब उन्हें तपा-गलाकर शुद्ध किया जाता है और यंत्र, उपकरण, आभूषणों का रूप दिया जाता है तो उनका सही मूल्यांकन होता है। मामूली से रासायनिक पदार्थ चिकित्सक के परिश्रम से बहुमूल्य औषधि बनते हैं।

व्यक्ति अपनी अनगढ़ स्थिति में नर-पशु से अधिक और कुछ नहीं। गए-गुजरे स्तर का मनुष्य कई बार तो पशुओं से भी अधिक घृणित और दु:खद परिस्थिति में डूबा पड़ा होता है। स्वयं कष्ट सहता और संबद्ध व्यक्तियों को दु:ख देता है। किंतु उसे यदि सुविकसित, सुसंस्कृत बनाया जा सके तो लगता है कि वही ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है।

शरीरगत क्रियाशीलता, मनोगत विचारणा और अंतरात्मा की भाव-संवेदना का स्तर किस प्रकार ऊँचा उठाया जा सकता है और किस तरह पशुता को देवत्व में परिणत किया जा सकता है? इसी विद्या का नाम साधना है। अपने आप की साधना करके कोई भी सिद्धपुरुष बन सकता है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७६ पृष्ठ-१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सौंदर्य और शक्ति का स्त्रोत अंतस् में

सौंदर्य और शक्ति का भंडार भीतर भरा है, बाहरी साधनों से तो मात्र उसकी सुव्यवस्था और सुसज्जा ही संभव हो सकती है। जीवन कोई बाहर से नहीं दे सकता, वह तो आंतरिक क्षमता पर ही निर्भर रहता है और जब वह जीवनीशक्ति खोखली हो जाती है और चुक जाती है तो कोई बाह्योपचार जीर्णता एवं मृत्यु को रोके रहने में सफल नहीं हो सकता है। अध्यापक पढ़ा सकता है, पर मानसिक स्तर नहीं दे सकता।

बीज की उत्पादन शक्ति मौलिक है। किसान उसे उगाने, बढ़ाने में अपना श्रम एवं कौशल का सफल उपयोग कर सकता है, पर गेहूँ के दाने से कपास उगा सकना उसके लिए कब संभव होता है? वर्षा के बादल कठोर चट्टानों को न तो गीला कर पाते हैं और न उन पर हरियाली उगा सकने में समर्थ होते हैं।

सौंदर्य और शक्ति-संपदा के अजस्त्र भंडार अपने ही भीतर भरे हैं, उन्हें पहचाना, ढूँढ़ा और समेटा जा सकेगा, तो कोई भी व्यक्ति अपनी दरिद्रता और कुरूपता से पीछा छुड़ा सकता है। बाहरी साधनों और व्यक्तियों की अनुकूलता के लिए जितना प्रयास किया जाता है, उससे कहीं कम में मनुष्य असीम विभूतियों का अधिपति बन सकता है, यदि वह अंतर में खोजे और उसे परिष्कृत करने की तत्परता बरते।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७६ पृष्ठ-१

आत्मनिर्भर बनें—अपने आप उठें

भाग्य की रेखाएँ कर्म के आधार पर बनती और मिटती रहती हैं। भाग्य लिखते समय विधाता को सोचना पड़ता है कि अमुक व्यक्ति के भाग्य में क्या लिखा जाए? अपनी शक्तियों के सदुपयोग और दुरुपयोग के आधार पर भाग्य का लेखा-जोखा तैयार होता है। यदि हमने अपने में सद्गुणों को अधिक मात्रा में जमा कर लिया है, तो भाग्य में भी उन्नति का लेख लिखा जाएगा और यदि दुर्गुणों को, मूर्खताओं को बढ़ावा दिया गया है तो भाग्य की लिपि भी बदल जाएगी। यदि हमारे अंदर उत्साह, लगन, साहस, दृढ़ता, धैर्य, परिश्रम, कर्मठता आदि गुण विद्यमान हैं, तो विश्वास मानिए कि हम अपने भाग्य की लिपि बदल डालेंगे। कल का किया गया कार्य ही तो आज का भाग्य बनता है।

मनुष्य परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट रचना है, उसे इतनी क्षमता एवं योग्यता स्वभावतः ही प्राप्त है कि वह अपने लिए उपयोगी एवं अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण स्वयं कर ले। परमात्मा ने मनुष्य को दूसरे जीवों की तरह पराश्रित, अयोग्य, बुद्धिहीन एवं निर्बल नहीं बनाया है कि वह दूसरों की कृपा पर जीवित रहे। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं है। अपने लिए भली और बुरी परिस्थिति उत्पन्न करने का एकमात्र अधिकार केवल उसी को है। अतः हमें अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए तभी हमारी आकांक्षाएँ पूर्ण हो सकेंगी।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७६ पृष्ठ-८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संपत्ति ही नहीं, सदाशयता भी

साधनों के माध्यम से सुख पाने की प्रचलित मान्यता ने मनुष्य को इस दिशा में उत्तेजित किया है कि वह अधिक मूल्यवान और अधिक मात्रा में पदार्थों का संग्रह करके सुखी बने और सुसंपन्न कहलाए। इसी मान्यता से प्रेरित और प्रभावित व्यक्ति अपनी समूची शक्ति धनोपार्जन में लगाते और प्रयत्न में सफल होते हैं।

देखते हैं कि इतनी सफलता प्राप्त कर लेने पर भी मनुष्य सुखी नहीं रह पाता। अत्यधिक उपार्जन नई विकृतियाँ और नई समस्याएँ साथ लेकर आता है और कई बार तो अशांति की दृष्टि से वह निर्धनता से भी महँगा पड़ता है। कारण उपार्जन में दोष होना नहीं वरन तत्त्वदृष्टि के अभाव में है। सुख पदार्थों की प्रचुरता में नहीं, परिष्कृत, दृष्टिकोण और सद्गुण संपन्न व्यक्तित्व में सन्निहित है।

जितना श्रम संपन्नता के लिए किया जाता है, उसका, आधा चौथाई भी यदि सुसंस्कारिता और सज्जनता उत्पन्न करने तथा बढ़ाने में किया जा सके तो देखा जाएगा कि संतोष और उल्लास की अनुभूतियों से अंत:करण भर गया। वस्तुओं से नहीं, उनके प्रति रखे गए दृष्टिकोण और दूरदर्शितापूर्ण उपभोग से सुख मिलता है। उपार्जनकर्त्ताओं को सोचना होगा कि यदि वे सचमुच सुखी बनना चाहते हैं तो उन्हें संपत्ति की तरह सज्जनता के अभिवर्द्धन में भी दत्त-चित्त होना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७६ पृष्ठ-१

धर्म के बिना हमारा काम नहीं चलेगा

धर्म ही मनुष्य का आधार है, धर्म ही जीवन है और धर्म ही मरने पर साथ जाता है। मनु महाराज कहते हैं—पिता, माता, पुत्र, स्त्री और जाति वाले ये परलोक में सहायता नहीं करते, केवल एक धर्म ही सहायक होता है। प्राणी अकेला ही उत्पन्न होता है, अकेला ही मरता है और अकेला ही पुण्य-पाप का भोग करता है, भाई-बंधु तो मेरे शरीर को काठ और मिट्टी के ढेले की तरह पृथ्वी पर छोड़कर वापस लौट आते हैं, केवल धर्म ही प्राणी के पीछे-पीछे जाता है।

जिस दिन संसार से धर्म को सर्वथा मिटा दिया जाएगा, जिस दिन लोग आत्मा-परमात्मा, लोक-परलोक को मानना सर्वथा छोड़ देंगे, जिस दिन कर्मफल सिद्धांत में लोगों की आस्था न रहेगी, जिस दिन परमात्मा की भक्ति द्वारा परमात्मा के गुणों को अपने भीतर धारण करने वाले धर्मात्मा लोग सर्वथा उत्पन्न होने बंद हो जाएँगे, उस दिन संसार से सच्चरित्रता उठ जाएगी।

नास्तिक लोगों में भी जो कुछ सच्चरित्रता दिखाई पड़ती है, उसका मूल स्रोत भी धर्म ही है। धर्म द्वारा सिखाए गए परंपरा से चले आ रहे सच्चरित्रता के तत्त्वों को नास्तिक लोगों ने स्वीकार किया है। इसी आधार पर उनका समुदाय, संप्रदाय जीवित रह सकने में समर्थ हो रहा है। वस्तुत: धर्मतत्त्व इतना सार्वभौम, सर्वकालीन और शाश्वत है कि उसे छोड़ देने से नास्तिक-आस्तिक किसी का भी काम नहीं चल सकता।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७६ पृष्ठ-४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विश्व उपवन में हमारा जीवन पुष्प सा महँके

अगर हमें उत्कृष्ट जीवन व्यतीत करना है, तो विचारों को सही दिशा में ले जाना होगा। विचारों में बहुत बड़ी शक्ति होती है। एक व्यक्ति अपने विचारों को सागर के समान विशाल बनाए रखता है, परिस्थितियाँ उसकी दासी बनकर चक्कर लगाया करती हैं, दूसरी ओर संकीर्ण विचारों वाला व्यक्ति जो अस्तित्वहीन, दिशाहीन, उदासी से घिरा हुआ, समय के गाल में समा जाता है। अगर हमें भारत का भविष्य बनाना है तो आने वाली पीढ़ी को विचारों का चमत्कार बताना होगा।

विचारों की शक्ति एटमों से अधिक होती है। जीवन का महत्त्व क्या है ? इसे जानना हो तो विचारों का संकलन करना होगा और उन्हें सही दिशा देनी होगी तभी हम भविष्य की सुनहरी कल्पना कर सकते हैं। विचारों के अभाव में कोई भी व्यक्ति महान नहीं बन सकता है।

इसलिए जीवनरूपी उपवन में दृढ़ संकल्प, आत्मविश्वास, निश्चित उद्देश्य, प्रेम, परोपकार रूपी पुष्प खिलने चाहिए, तभी जीवन सार्थक माना जावेगा। भारस्वरूप जीना कोई जीना नहीं है और ऐसे जीवन का कोई महत्त्व नहीं है। श्रेष्ठ विचारों से ही मनुष्य जीवन महान बन सकता है। हमें निरंतर सद्विचारों के संपर्क में रहने का अभ्यास करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७६ पृष्ठ-३८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अपनी भूलों को समझें और उन्हें सुधारें

संसार में कोई किसी को उतना परेशान नहीं करता, जितना कि मनुष्य के अपने दुर्गुण और दुर्भावनाएँ। दुर्व्यसन एवं दुर्भावनाएँ मनुष्य के शारीरिक तथा मानसिक दोनों प्रकार के स्वास्थ्यों की शत्रु होती हैं। शराब, जुआ, व्यभिचार ही नहीं बल्कि आलस्य, प्रमाद, पशुता आदि भी भयानक दुर्व्यसन ही हैं।

सद्गुणी व्यक्ति का सारा समाज आदर करता है, सहयोग, सौहार्द्र एवं सहानुभूति उसकी संपत्ति बन जाती है। वह सदैव स्वस्थ और सुखी रहता है।

मनुष्य कुसंस्कारों का गुलाम हो जाए, अपने स्वभाव में परिवर्तन न कर सके, यह बात ठीक नहीं जँचती। यह मनुष्य के संकल्पबल और विचारों के दृष्टिकोण को समझकर कार्य करने पर निर्भर है। महर्षि वाल्मीकि, संत तुलसीदास, भिक्षु अंगुलिमाल, गणिका एवं अजामिल के प्रारंभिक जीवन को देखकर आखिरी जीवन से तुलना करने पर यह स्पष्ट ही प्रतीत हो जाता है कि दुर्गुणी और पतित लोगों ने जब अपना दृष्टिकोण समझा और बदला तो वे क्या से क्या हो गए ? चाहिए संकल्पबल की प्रबलता।

जब तक हम अपने गुण और दोष देखने में ईमानदारी और सच्चा दृष्टिकोण नहीं अपनाते, संस्कार परिवर्तन में तभी तक परेशानी रहती है। मनुष्य आत्मदुर्बल तभी तक रहता है, जब तक वह आत्मविवेचन का सच्चा स्वरूप ग्रहण नहीं करता।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७६ पृष्ठ ५४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यथार्थता और एकता में पूर्वाग्रह ही प्रधान बाधा

प्रगति के मार्ग में सबसे बड़ी कठिनाई पारस्परिक मतभेदों और तज्जनित संघर्षों में शक्ति की असीम मात्रा का नष्ट होते रहना ही है। इस अपव्यय को रोका जा सके तो मानवी सामर्थ्य एवं उपलब्ध संपत्ति के आधार पर असीम सुख-साधन उत्पन्न किए जा सकते हैं और उनके सहारे अगले पल ही स्वर्गीय परिस्थितियों का सृजन किया जा सकता है।

यदि मनुष्यता को जीवित रहना है तो उसे एकता और आत्मीयता की दिशा में बढ़ना होगा। मतभेदों की दीवारें गिरानी पड़ेंगी और चिंतन तथा कर्तृत्व को एकरूपता प्रस्तुत कर सकने वाला राजमार्ग बनाना पड़ेगा। जीवन और मरण के बीच और कोई विकल्प नहीं। सद्भावनापूर्वक निर्वाह करने या मर-कट कर नष्ट हो जाने के अतिरिक्त शांति का और कोई मार्ग नहीं। मतभेद जितने ही बने रहेंगे विनाश का असुर उतना ही भयावह होता चलेगा।

सत्य की दिशा में बढ़ने से ही मतभेदों को दूर किया जा सकता है तथा सर्वमान्य मार्ग निकल सकता है। इसके लिए यह प्रथम आवश्यकता है कि हर व्यक्ति पूर्वाग्रहों को एक ओर रखकर निष्पक्ष मनोभूमि का विकास करे। निष्पक्ष चिंतन से सत्य की शोध की जा सकती है। सत्य को अपनाकर ही एकता की ओर बढ़ा जा सकता है। इसकी आवश्यकता जनसाधारण को समझाई जानी चाहिए।

— अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७६ पृष्ठ ४७

कोई भी कार्य छोटा या बड़ा नहीं

आत्मविश्वास आंतरिक शक्तियों को केंद्रित एवं नियंत्रित करता है। जब केंद्रित एवं संगठित शक्तियाँ एक दिशा की ओर चल पड़ती हैं तो सफलता ही सफलता मिलती जाती है। विश्वास की ज्योति जलाकर ही अंधकार को मिटाया जा सकता है।

जीवन के हर क्षेत्र में विश्वास की आवश्यकता है। विश्वास हमारा मार्गदर्शन करता है तथा सत्पथ पर चलने की प्रेरणा देता है। जीवन-रहस्य को समझने के लिए आत्मविश्वास का सहारा लेनी ही पड़ेगा। जीवन-निर्माण में आत्मविश्वास का प्रधान हाथ रहता है।

जो व्यक्ति अपनी इस शक्ति का विकास नहीं कर पाए, उन्हें अभाव और दरिद्रता में पलते हुए जीवन को समाप्त करना पड़ा। अविश्वासी व्यक्ति न तो किसी के सहायक हो पाते हैं और न दूसरों की आत्मीयतापूर्ण सहानुभूति ही प्राप्त कर पाते हैं।

जीवन-निर्माण के लिए आत्मनिष्ठा पर आधारित आत्मविश्वास की अभिवृद्धि आवश्यक है। इसका सहज मार्ग अपने कर्त्तव्य एवं उत्तरदायित्वों को ईमानदारी के साथ पूर्ण करते चलने में है। कार्यों के छोटे-बड़े की चिंता नहीं होनी चाहिए।

जीवन का आधार आत्मविश्वास ही है, जिसने अपने को पहचाना और अपनी शक्तियों को विकसित किया, वे अवश्य ही जीवन-संग्राम में सफल होंगे। *— अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७६ पृष्ठ २७*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हम चिंतन की दृष्टि से भी प्रौढ़ बनें

लोग आयु की दृष्टि से तो बड़े हो जाते हैं, पर चिंतन की दृष्टि से बालक जैसे अविकसित ही बने रहते हैं। पड़ोसियों का ढर्रा अपनाकर गतिविधियाँ बनती हैं और यह यथार्थता, दूरदर्शिता तथा उपयोगिता की परख करना अनावश्यक मान लिया जाता है। यह अपरिपक्वता ही मानव जीवन की आंतरिक प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है।

बुद्धिमत्ता का अर्थ है—सुलझे हुए विचार, स्पष्ट दृष्टिकोण और उत्तरदायित्व समझने एवं निभाने की परिपक्वता। परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाना—उनमें से किससे, कितना लाभ उठाया जा सकता है, किन्हें किस प्रकार बदला, सुधारा जाना चाहिए और किन्हें किस सीमा तक सहन किया जाना चाहिए? यह सब निष्कर्ष दूरदर्शिता, विवेकशीलता के आधार पर ही निकाले जा सकते हैं।

विचारों की प्रौढ़ता, दृष्टिकोण की परिपक्वता ही मानव जीवन की वह विशेषता है जिसे उपलब्ध करने पर व्यक्तित्व प्रतिभाशाली बनता है। ओछे मनुष्य वे नहीं जो वजन, लंबाई या आयु की दृष्टि से छोटे हैं। जिनकी विचारणा तथा आकांक्षा उथली और बचकानी है, जो गए-गुजरे लोगों की तरह सोचते और घटिया आकांक्षाएँ पूरी करने के लिए ओछे हथकंडे अपनाते हैं, वे व्यक्तित्व की दृष्टि से बौने, अपंग, अविकसित लोगों की श्रेणी में ही माने जा सकेंगे।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७६ पृष्ठ १

क्षुद्रता अपनाने से मात्र हानि ही हानि है

'अपनेपन' को छोटा करते-करते क्षुद्रता इतनी बढ़ जाती है कि मात्र विलास तक ही मनुष्य की सत्ता सीमाबद्ध रह जाती है। इतने भर के लिए वह अपने पेट को, इंद्रियों को, स्वास्थ्य तथा दीर्घ जीवन तक को तोड़कर रख देता है। क्षुद्रताग्रस्त विचारों की भरमार से मस्तिष्क श्मशान की तरह मनोविकारों की जलती चिताओं से भरा रहता है। आनंद और उल्लास के भाव भरे सुमन जिस उद्यान में खिले रह सकते और संबद्ध वातावरण को सुरम्य बनाए रह सकते हैं, उस नंदनवन में पतझड़ की स्थिति उत्पन्न करने में क्षुद्रता का हिमपात ही प्रधान कारण होता है।

क्षुद्रता न पत्नी को विकसित होने देती है, न बच्चों को सुसंस्कृत। वयोवृद्धों को सम्मान देने और उनका दुलार पाने में न तो वस्तुएँ कम पड़ती हैं और न अवकाश की कमी रहती है। ओछेपन और उपेक्षा भरे बरताव के कारण ही छोटे और बड़ों के बीच खाई बनी रहती है। वयस्कों में पारस्परिक सद्भाव और सहयोग न बन पाता है और न बढ़ पाता है। परिवार की इस विपन्न स्थिति में क्षुद्रता का बढ़ा हुआ स्वरूप ही प्रधान कारण पाया जाता है।

हर व्यक्ति अपने संपर्क क्षेत्र में सम्मान और विश्वास का पात्र बनकर भावभरा सहयोग प्राप्त कर सकता है। उदारमना लोगों के लिए यह सारा संसार उदार है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७६ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंतर की गहराई में उतरें

विपत्ति और अतृप्ति से भरा नीरस जीवन यह बताता है कि अंत:करण की गरिमा सूखने और झुलसने लगी है। जड़ें मजबूत और गहरी हों तो जमीन में से पेड़ के लिए पर्याप्त जीवन-रस प्राप्त कर लेती हैं और वह हरा-भरा बना रहता है। आंतरिक श्रद्धा यदि मर न गई हो, तो अभावग्रस्त परिस्थितियों में भी सरसता और प्रफुल्लता खोजी जा सकती है। उल्लास सुख-साधनों पर नहीं, उत्कृष्ट दृष्टिकोण पर निर्भर है।

यदि आनंद की आवश्यकता हो तो उसे बिना किसी पदार्थ या व्यक्ति की सहायता से प्रचुर परिमाण में पाया जा सकता है। उसके लिए अपनी ही अंतरात्मा का परिशोधन करना पड़ता है। आंतरिक पवित्रता में इतना सौंदर्य और मिठास भरा है कि उसके दर्शन पाने, करने तथा रसास्वादन करने से वह मिलता है, जिसके अभाव में जीव को निरंतर भटकना ही पड़ता है।

बाहर दौड़ने में पुरुषार्थ है। पुरुषार्थ कई तरह की सफलताएँ प्रस्तुत करता है। बड़प्पन की प्यास हो तो जल-जंगल छानने ही पड़ेंगे, पर यदि महानता का देवत्व अभीष्ट हो तो उसके लिए भीतर की खोज करनी पड़ेगी। तृप्ति किसी पदार्थ में नहीं, दृष्टिकोण की गरिमा में उसका स्रोत है। जीवन का आनंद लेना हो तो उसके लिए अंतर की गहराई में उतरने का, समुद्र तल से मोती ढूँढ़ लाने वाले जैसा साहस सँजोना पड़ेगा। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७७ पृष्ठ १*

अभीष्ट की उपलब्धि भीतर से ही होगी

केंद्र भीतर है, बाहर तो उसका कलेवर मात्र लिपटा हुआ है। परमाणुओं और जीवाणुओं के नाभिक मध्य में होते हैं। शक्ति के स्रोत उन्हीं में हैं। बाहर तो उनका सुरक्षा-दुर्ग मात्र खड़ा रहता है। सूर्य की ऊर्जा-उत्पत्ति उसके अंतराल से होती है, बाहर तो विकरण के वितरण भर की क्रिया चलती रहती है। अंतरात्मा काय-कलेवर के अंतरंग में है।

जीवन की गरिमा बाहर के साधनों से नहीं और न शरीर के अवयवों पर उसकी निर्भरता है। उत्कर्ष भीतर से उदय होता है। बाहर तो उसकी हलचलें भर दृष्टिगोचर होती हैं। अवनति के गर्त में यदि अंतश्चेतना गिरी हुई हो तो हर क्षेत्र में पतन और पराभव ही उपलब्ध होगा।

कस्तूरी के हिरन की तरह बाहर सुगंध खोजने के प्रयत्न निष्फल ही नहीं जाते, खीझ और निराशा भी गले बाँधते हैं। अभीष्ट की प्राप्ति के लिए नाभिसंस्थान का आश्रय लेने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। मृगतृष्णा में भटकने की अपेक्षा यदि अपने दृष्टि-दोष को सुधार लिया जाए तो प्यास बुझाने के लिए उपयुक्त स्थान ढूँढ़ने का अवसर मिल सकता है। समृद्धि और प्रगति के मूल तत्त्व भीतर हैं। सुख और शांति-केंद्र भी वहीं हैं। तुष्टि और तृप्ति खोजनी हो तो अंत:करण के रत्न-भंडार को ही खोदना-कुरेदना पड़ेगा। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७७ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्राणशक्ति एक जीवंत ऊर्जा

पनडुब्बे गहरे समुद्र में डुबकी लगाकर मोती बीनते हैं। बहुमूल्य खनिज प्राप्त करने के लिए धरती को गहराई तक खोदते जाने और उस विभीषिका के मुख में प्रवेश करने का साहस जुटाना पड़ता है। अपनी प्रसुप्त शक्तियों को जाग्रत करने के लिए, अंतश्चेतना की गहरी परतों में उतरने के लिए अद्‌भुत धैर्य और अविचल प्रयत्न करने होते हैं। यह सब अनायास ही नहीं हो जाता, वरन अग्निपरीक्षा में गुजरने पर ही सफलता का श्रेय प्राप्त होता है। सोते सर्प और सोते सिंह को जगाने में जितना पराक्रम चाहिए उतना ही अंतश्चेतना के सूक्ष्म संस्थानों को जगाते समय भी चाहिए। वन्य पशुओं को पालतू और प्रशिक्षित करना धैर्यवान लोगों का काम है। मरुस्थल को उर्वर बनाने के लिए दूरदर्शिता, अथक श्रमशीलता और साधन-सामग्री जुटानी पड़ती है। अनगढ़ व्यक्तित्व को सुगढ़ और सुसंस्कृत बनाने के लिए कलाकारों जैसा कौशल विकसित करना पड़ता है। शत्रु को मित्र बना लेने की प्रशंसा ही होती है। अनर्थ में संलग्न विकृत कुसंस्कारों को आमूलचूल परिवर्तित कर श्रेयसाधक बना देना विष से अमृत निकालने के समतुल्य है। ऐसे मार्ग पर चलने के लिए अजस्र प्राणशक्ति चाहिए। अध्यात्म साधनाओं में प्राणमयकोश को जाग्रत करके प्रचंड आत्मबल संचय करने की आवश्यकता इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखते हुए बताई गई है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७७ पृष्ठ ४२*

सर्वतोमुखी प्रगति के दो आधार—अध्यात्म और विज्ञान

अध्यात्म और विज्ञान का युग्म है। एक के बिना दूसरे का निर्वाह नहीं। भोजन पकाने की विधि विदित न हो तो खाद्य सामग्री सामने रहने पर भी सामान की बरबादी होगी, किंतु पेट न भरेगा। इसी प्रकार पाकविद्या में निष्णात व्यक्ति भी पदार्थों के अभाव में अपने को असहाय अनुभव करेगा और भूखा मरेगा।

भौतिक जगत के हर क्षेत्र में ज्ञान और विज्ञान को साथ लेकर चलना पड़ता है। आत्मिक जगत में भी यही तथ्य सुनिश्चित है। चिंतन में उत्कृष्टता और कर्तृत्व में कुशलता का समावेश हुए बिना परिष्कृत जीवनक्रम का आधार बन ही नहीं सकता। प्रगति चाहे भौतिक हो, चाहे आत्मिक दोनों के ही लिए अपने-अपने स्तर के ज्ञान और विज्ञान की, अनुभव और साधन की आवश्यकता रहेगी ही।

आत्मिक प्रगति के लिए भावनाओं में दिव्य संवेदनाओं और उच्चस्तरीय आस्थाओं को विकसित करना होता है। इसी को श्रद्धा और भक्ति कहते हैं। आदर्शवादी—अध्यात्मवादी उत्कृष्ट प्रतिपादनों के प्रति प्रगाढ़ आस्था परिपक्व करना यही अंत:जगत का ज्ञान पक्ष है। इस तत्त्वदर्शन एवं ब्रह्मज्ञान कहते हैं। इसे उपलब्ध करने के लिए कामकाजी 'अक्ल' काम नहीं करती वरन ऋतंभरा, प्रज्ञा का आश्रय लेना पड़ता है। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७७ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वर्चस की साधना आत्मबल उभारने के लिए

परिस्थितियों का अपना कोई अस्तित्व नहीं, वे मन:स्थिति के अनुरूप बनती हैं। अप्रत्याशित कोई प्रतिकूलता सामने आ खड़ी हो तो भी वह देर तक ठहरती नहीं। रोग कीटाणु अशुद्ध रक्त में ही अपना अड्डा जमा पाते हैं। शुद्ध रक्त तो उन्हें बात की बात में खदेड़कर बाहर कर देता है। प्रतिकूल परिस्थितियाँ—मन:स्थिति के वृक्ष पर ही अमरबेल की तरह छाई और फलती-फूलती रहती हैं। महामानवों की जीवन-गाथाओं पर दृष्टि डालने से प्रतीत होता है कि उनमें से कोई भी जन्मजात एवं परंपरागत अनुकूलता लेकर नहीं जन्मा है। लोगों ने उनको कंधे पर नहीं चढ़ाया, वरन वे स्वयं ही अपनी विशेषताओं के आधार पर, हर किसी की आँखों के तारे बने और हृदयों में जा विराजे हैं। अनुकूलताएँ बरसी नहीं, वरन अपने हाथों उन्होंने उन्हें गढ़ा है। चलना अपने ही पैरों पड़ता है।

आत्मबल की आवश्यकता हर क्षेत्र में है। आत्मबल स्वप्रेरणा से उसी तरह उभरते हैं जैसे सौरमंडल के ग्रह-उपग्रह सूर्य की आभा से प्रकाशवान दीखते हैं। जीवन को जीवितों की तरह जीना हो, उसमें कुछ रस और आनंद लेना हो, तो आत्मबल संपादित करने की उपेक्षा की नहीं जा सकती। बलिष्ठता की अनुगामिनी ही संपन्नता है। अस्तु, बलों में परम बल, आत्मबल के उपार्जन को ही प्राथमिकता दी जानी चाहिए। हम 'वर्चस' की उपासना करें, आत्मबल संपादित करने में जुट जाएँ, इसी में दूरदर्शिता है। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७७ पृष्ठ १४*

साधना पथ और अनंत ऐश्वर्य

प्रकृति के रहस्यों को जितनी तत्परता से खोजा जा रहा है, उसी अनुपात से एक से एक बड़े रहस्यों और शक्ति-स्रोतों का पता लगता चल रहा है। आदिमकाल में मनुष्य भी अन्य पशुओं की तरह ही मात्र अपने शरीर पर निर्भर था। तत्परतापूर्ण शोधों ने अग्नि, विद्युत, अणु, ऊर्जा आदि अनेक शक्तियों को उसके वशवर्ती बना दिया। ज्ञान-विज्ञान की अभिनव उपलब्धियाँ ही उसे सशक्त और सुसंपन्न बनाती चली जा रही हैं। वैसा न कर पाने के कारण अन्य प्राणी असमर्थ एवं असहाय ही बने हुए हैं। यों प्रकृति का महान भंडार उनके सामने भी वैसे ही खुला पड़ा है, जैसा कि मनुष्य के सामने।

प्रकृति क्षेत्र से अधिक महत्त्वपूर्ण और रहस्यपूर्ण है—चेतना का समुद्र। वह सूक्ष्मजगत के रूप में इस समस्त ब्रह्मांड में हिलोरें ले रहा है। समुद्र को रत्नाकर, रत्न भंडार कहा जाता है, पर वास्तविक संपदाएँ और शक्तियाँ चेतना के समुद्र में ही भरी पड़ी हैं। प्रकृति में तो उसी की कुछ तरंगें लहराती दीखती हैं। बीजरूप से वह ब्रह्मांडीय चेतना मनुष्य के कण-कण में भरी पड़ी है, जो संपदाओं और विभूतियों का स्रोत, कारण और आधार है। हमारे भीतर और बाहर इतना कुछ है, जिसकी कल्पना करना तक अशक्य है। न तो ब्रह्मांड के विस्तार की कल्पना हो सकती है और न चेतना के अंतरंग-बहिरंग स्तरों की गरिमा का मूल्यांकन कर सकना संभव है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९७७ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन और उसकी परिभाषा

जीवन क्या है ? उसके स्वरूप को समझा जाना चाहिए और उसके साथ जुड़े हुए तथ्यों को स्वीकार किया जाना चाहिए, भले ही वे कठोर और अप्रिय ही प्रतीत क्यों न होते हों। जीवन एक चुनौती है, एक संग्राम है और एक जोखिम है, उसे इसी रूप में अंगीकार करने के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं। जीवन एक रहस्य है, तिलस्म है, भूल-भुलैयाँ और गोरखधंधा है। गंभीरता और सतर्कता के आधार पर ही उसकी तह तक पहुँचा जा सकता है और भ्रांतियों के कारण उत्पन्न होने वाले खतरों से बचा जा सकता है। जीवन कर्त्तव्य के रूप में अत्यंत भारी किंतु अभिनेता की तरह हँसने-हँसाने वाला—हलका-फुलका रंगमंच भी है।

जीवन एक गीत है, जिसे पंचम स्वर में गाया जा सकता है। जीवन एक स्वप्न है, जिसमें अपने को खोया जा सके तो भरपूर आनंद का रसास्वादन किया जा सकता है। जीवन अवसर है, जिसे गँवा देने पर सब कुछ हाथ से गुम हो जाता है। जीवन एक प्रतिज्ञा है, यात्रा है और कला है। इसको किस प्रकार सफल बनाया जा सकता है, जिसने इसे जान लिया और मान लिया, समझना चाहिए कि वह सच्चा रत्नपारखी और उपलब्ध विभूतियों का सदुपयोग कर सकने वाला भाग्यशाली है। जीवन सौंदर्य है, जीवन प्रेम है, जीवन वह सब कुछ है जो नियंता की इस सुविस्तृत सृष्टि में सर्वोत्तम कहा जा सके।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७७ पृष्ठ १

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

विचारों में क्रम-व्यवस्था एवं एकाग्रता बनाए रहें

मन का बिखराव पतन और पीड़ा का कारण बनता है। प्रमाद और पाप बिखरे मन में ही पनपते हैं। मन का उपजाऊपन इतना अधिक होता है कि वह कोई न कोई परिणाम उत्पन्न करता रहता है। इसका परिणाम सीधे शरीर एवं व्यक्तित्व पर पड़ता है।

अनियंत्रित मन प्रयोग रूप में अनेक आकांक्षाएँ बनाता-बिगाड़ता रहता है। पहलवान बनने, नेता बन जाने, प्रतिष्ठा पाने, धनी होने, भोग भोगने, विद्वान होने आदि की तरह-तरह की कल्पनाएँ, आकांक्षाएँ उसमें उठती-मिटती रहती हैं। ये कल्पनाएँ-आकांक्षाएँ सुव्यवस्थित हों, स्थिर हों तो कोई बात भी बने। औरों के जीवन की प्रतिक्रिया स्वरूप होने से ये अस्थिर-अव्यवस्थित होती हैं। उनके क्रम-निर्धारण और उन्हें योजनाबद्ध रूप देने के लिए तो गंभीरता की आवश्यकता होती है। अनियंत्रित मन में ऐसी समस्त आकांक्षाएँ लालच भरे सपने बनकर रह जाती हैं।

अभीष्ट प्रगति के लिए अपनी समस्त आकांक्षाओं को परस्पर पूरक बनाना आवश्यक होता है। उनमें परस्पर पूरकता लाने पर ही वे शक्ति का आधार बन सकती हैं। परस्पर विरोधी इच्छाएँ व्यक्ति को कहीं का नहीं रहने देतीं।

मन को साधने की आवश्यकता सर्वोपरि है। सधा हुआ मन रुचिपूर्वक लक्ष्यपूर्ति में लगा रहता है तो कठिनाइयाँ सरल होती जाती हैं और मनुष्य अभीष्ट सफलता प्राप्त कर लेता है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७७ पृष्ठ ४७

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिशा निर्धारण मनुष्य का अपना निर्णय

नियति की इच्छा है कि मनुष्य ऊँचा उठे। उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रकृति की शक्तियाँ निरंतर सहायता करती हैं। ईश्वर के राजकुमार को सुखी और सुसंपन्न बनाना ही प्रकृतिक्रम है। उसे इसीलिए रचा और इसीलिए खड़ा किया गया है।

इतने पर भी यह अधिकार मनुष्य के हाथों ही सुरक्षित रखा गया है कि वह प्रगति किस दिशा में करे? इसमें किसी दूसरे को हस्तक्षेप करने का अवसर नहीं दिया जाता। ईश्वर विश्वनियंता है। उसका पुत्र स्वभाग्य निर्माता तो होना ही चाहिए। प्रकृति उसकी सहायता भर करती है।

अंत:करण की आकांक्षा का चयन ही मनुष्य का प्रथम पुरुषार्थ है। इसका चुनाव और निर्धारण उसे स्वयं ही करना पड़ता है। यह दिशा निर्धारण होते ही आत्मसत्ता उसकी पूर्ति के लिए जुट जाती है। मन:तंत्र अपनी विचारशक्ति को और शरीरतंत्र अपनी क्रियाशक्ति को इसी आदेश के पालन में जुटा देता है। संपर्क क्षेत्र से वैसा ही सहयोग मिलता है और परिस्थितियाँ अभीष्ट मनोरथ की पूर्ति के लिए अनुकूलता उत्पन्न करने लगती हैं। मनुष्य आगे बढ़ता है। उसके निर्धारण और पुरुषार्थ को इस विश्व में चुनौती दे सकने वाला दूसरा कोई है भी तो नहीं।

पतन अभीष्ट है या उत्कर्ष? असुरता प्रिय है या देवत्व? क्षुद्रता चाहिए या महानता? यह निर्णय मनुष्य स्वयं करता है। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७७ पृष्ठ १*

तनाव और उससे छुटकारा

मनुष्य को जागरूक रहना चाहिए और सुखद संभावनाओं की आशा लगाने की तरह दु:खद दुर्घटनाओं एवं प्रतिकूलताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। सजग रहने भर से ढेरों कठिनाइयों से बचा जा सकता है। सजगता का होना उत्तम है, पर उसी अकेली के बल पर मनोबल बनाए नहीं रखा जा सकता। शौर्य, साहस, निर्भयता और पराक्रम की भावनाएँ प्रखर रखी जानी चाहिए। हँसने-हँसाने की आदत डाली जाए और हलका-फुलका दृष्टिकोण अपनाकर जिंदगी का खेल, नाटक के पात्रों अथवा खिलाड़ियों की तरह खेला जाना चाहिए। अच्छी से अच्छी आशाएँ रखें, पर साथ ही बुरी से बुरी संभावनाओं का सामना करने के लिए शूरवीर सैनिकों की तरह अपना मनोबल सँजोए रखें।

श्रम-संतुलन और आहार-विहार की सुव्यवस्था बनाए रहकर शारीरिक तनाव से बचा जा सकता है। मानसिक श्रम को अदलते-बदलते रहा जाए और प्रस्तुत काम में दिलचस्पी रखने तथा उसे सुव्यवस्थित बनाने का कला-कौशल प्रस्तुत करने की प्रवृत्ति रखने से मानसिक तनावों से बचा जा सकता है। हँसने, मुस्कराने और बालकों जैसा निश्छल मन रखने से अनिद्रा जैसे तनावों से बचा जा सकता है। सबसे कठिन और जटिल है भावनात्मक विकृतियाँ और भीरुताजन्य तनाव। इसे आत्मबल संपादित करके ही दूर किया जा सकता है। *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७७ पृष्ठ ४८*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उपार्जन का सदुपयोग भी

उपार्जन में उत्साह होना सराहनीय है। इससे पुरुषार्थ जगता है—पराक्रम जगता है—पराक्रम में प्रखरता आती है, प्रगति संभावनाएँ साकार होती हैं और सफलताओं का आंनद मिलता है। उपार्जन के लिए उमंग न रहने पर मनुष्य अन्यमनस्क रहने लगता है और उदासीन की प्रतिक्रिया पक्षाघात की अपंगता जैसी हानिकारक सिद्ध होती है।

इतना होते हुए भी और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जो उपलब्ध है, उसका मूल्यांकन किया जाए और यह सोचा जाए कि जो हाथ में है उसका श्रेष्ठतम उपयोग कैसे किया जा सकता है? यह विवेक बुद्धि न हो तो उपार्जन का उत्साह अधिक संचय की सुविधा तो देगा, पर सदुपयोग की बात न रहने पर उपलब्ध वैभव या तो निरर्थक चला जाएगा या फिर अनर्थमूलक दुष्परिणाम उत्पन्न करेगा।

उपार्जन और उपयोग ये दोनों ही तथ्य समान महत्त्व के हैं। दोनों एकदूसरे के पूरक हैं। एक के बिना दूसरा अपंग है। अस्तु, आगे बढ़ने और अधिक कमाने की जाग्रत आकांक्षा के साथ उस विवेकशीलता को भी जगाना चाहिए, जो उपलब्ध साधनों को सत्प्रयोजनों में लगाने की चेतावनी देती है। छलनी में दूध दुहने से तो प्रगति के लिए किया गया श्रम, मात्र थकान और पश्चात्ताप ही दे सकेगा।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७७ पृष्ठ १

आनंद अपनी ही मुट्ठी में भरा पड़ा है

परिणाम को आनंद का केंद्र न मानकर यदि काम को, उत्कृष्टता को, प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाया जाए और उसका स्तर ऊँचा रखने में प्रयत्न किया जाए तो सदा उत्साह बना रहेगा और साथ ही आनंद भी। हम किसी काम को छोटा न मानें वरन जो भी काम हाथ में है उसे इतने मनोयोग के साथ पूरा करें कि उसमें कर्त्ता का व्यक्तित्व बोलने लगे। ऐसे कार्य अपने कर्त्ता के लिए श्रेय और सम्मान का कारण बनते हैं, भले ही वे अधिक महत्त्वपूर्ण न हों। मनस्वी रस्किन की उक्ति है—"काम के साथ अपने को तब तक रगड़ा जाए जब तक कि वह संतोष की सुगंध न बखेरने लगे।" बल्टियर ने लिखा है—"किसी काम का मूल्यांकन उसकी बाजारू कीमत के साथ नहीं, वरन इस आधार पर किया जाना चाहिए कि उसके पीछे कर्त्ता का क्या दृष्टिकोण और कितना मनोयोग जुड़ा रहा है।" अब्राहम लिंकन का यह कथन कितना तथ्यपूर्ण है जिसमें उन्होंने कहा था—"हम जिस काम में जितना रस लेते हैं और मनोयोग लगाते हैं, वह उतना ही अधिक आनंददायक बन जाता है।"

आनंद के लिए वस्तुओं या परिस्थितियों को प्राप्त करना आवश्यक नहीं, न उसके लिए किन्हीं व्यक्तियों के अनुग्रह की आवश्यकता है। वह अपनी भीतरी उपज है। परिणाम में संतोष और कार्य में उत्कृष्टता का समावेश करके उसे कभी भी, कहीं भी और कितने ही बड़े परिणाम में पाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७७ पृष्ठ २

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन, ईश्वर का स्वरूप एवं वरदान

जीवन मनुष्य के लिए ईश्वर का सर्वोपरि उपहार है। इसकी गरिमा इतनी बड़ी है जितनी इस संसार में अन्य किसी सत्ता की नहीं। इसलिए उसे ईश्वर के समतुल्य माना जाए तो इसमें कुछ भी अत्युक्ति न होगी।

ईश्वर की झाँकी जीवनसत्ता की संरचना और संभावना को देखकर की जा सकती है। यदि उसकी ठीक तरह उपासना की जा सके तो वे सभी वरदान उपलब्ध हो सकते हैं जो ईश्वर के अनुग्रह से किसी को कभी मिल सके हैं। यह प्रत्यक्ष देवता है। हमारे इतना समीप है कि मिलन से उत्पन्न असीम आनंद की अनुभूति अहर्निश की जा सके।

जीवन का उद्देश्य है, अंतराल में छिपे दिव्य अद्भुत का, सुंदर का दर्शन कराना। उस ईश्वरीय जीवन के साथ जोड़ देना जो इस ब्रह्मांड की आत्मा है, पूर्ण है और वह सब है, जिसमें मानवी कल्पना से भी अधिक सौंदर्य का—सुख का सागर लहराता है।

ईश्वर को समझना हो तो जीवन को समझो। ईश्वर को पाना हो तो जीवन को प्राप्त करो। हम जीवनरहित जिंदगी जीते हैं। इससे आगे बढ़ें, गहरे घुसें, निर्मल बनें और उस महान अवतरण को प्रतिबिंबित करें, जो प्रेम के रूप में आत्मसत्ता के अंतराल में आलोक की एक किरण जैसा विद्यमान है। आत्मा को दिव्य से ओत-प्रोत करने की साधना से ही वह सब प्राप्त हो सकता है, जिसे जीवन का लक्ष्य और वरदान कहा गया है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७८ पृष्ठ १

सादगी अपनाएँ शालीनता बरतें !

अपने संपर्क क्षेत्र के सभी व्यक्तियों से व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण रखें। वह न्यायसंगत रहे और सहानुभूतिपूर्ण स्वार्थों के टकराव में यदि कुछ घाटा भी पड़ता हो तो उसे सहन किया जा सकता है किंतु सद्भाव गँवा देने की क्षति ऐसी है जो अधिक घाटे की सिद्ध होगी। जब तक टकराव का कोई अत्यंत ही अनैतिक या असभ्य कारण न हो, तब तक व्यवहारकुशलता इसी में है कि सद्भावों को बनाए ही रखा जाए। इससे इतना लाभ तो प्रत्यक्ष ही है कि शत्रुता का नया सिलसिला चल पड़ने से जो आक्रमण-प्रत्याक्रमण का सिलसिला चलता है और उससे जो मानसिक अशांति छाई रहती है, उसकी आवश्यकता न पड़ेगी। विद्वेष के कारण उत्पन्न होने वाली मानसिक अशांति जितनी हानि पहुँचाती है, उसकी तुलना में वह घाटा कम ही रहेगा जो स्वार्थों में थोड़ी कमी करके भी सद्भावों को बनाए रख सके।

सौजन्य निजी जीवन में सादगी के रूप में दीखता है और दूसरों के साथ व्यवहार के अवसर आने पर वह नम्रता, विनयशीलता के रूप में दिखाई पड़ता है। उसमें दूसरों के सम्मान का भाव है न कि अपना छोटापन प्रदर्शित करने का। नम्रताभरा शिष्ट व्यवहार करने पर कोई अपनी इज्जत गँवाता नहीं है और न किसी की दृष्टि में छोटा बनता है, वरन सच तो यह है कि उसकी इज्जत और भी अधिक बढ़ जाती है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९७८ पृष्ठ ३२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वरदानी शक्ति का देवता सुदृढ़ संकल्प

पदार्थ जड़ है। उसमें हलचल उत्पन्न करने का काम शक्ति करती है। जागतिक हलचलों में जो शक्ति झाँकती है उसे विज्ञान की भाषा में एनर्जी, क्षमता कहते हैं। विद्युत के अनेक रूप उसके भेद-उपभेदों का परिचय देते हैं। संसार में जो कुछ घटित हो रहा है, उसका श्रेय उसी शक्ति को है जिसे विज्ञानी अपने यंत्रों द्वारा और आत्मज्ञानी अपने मंत्रों द्वारा प्रकट एवं प्रमाणित करते हैं।

जीवचेतना है, पर वह चेतना भी सक्रिय तब होती है, जब उसे शक्ति का सहयोग मिलता है। चेतना के साथ समर्थता का समन्वय होने से ही वह अपने वर्चस्व को प्रकट कर पाती है। अकेली इतना तो अपने अस्तित्व को बनाए रहने भर में सीमित बनी रहती है। परब्रह्म की मूलसत्ता का तत्त्वदर्शियों ने साक्षी, द्रष्टा, अचिंत्य, निर्विकल्प जैसे शब्दों में निरूपण किया है।

चेतना के प्रकटीकरण और प्रस्फुरण की समस्त संभावनाएँ संकल्प शक्ति में केंद्रीभूत हैं। कल्प की शक्ति से अपरिचित होने और उसके उपयोग का अभ्यास अनुभव न होने के कारण ही मनुष्य को अभावग्रस्त अविकसित स्थिति में पड़े रहने का दुर्भाग्य सहन करना पड़ता है। जिन्हें अपने को बढ़ाना और उठाना है उन्हें संकल्प शक्ति को उभारने और उसका सुदृढ़ अवलंबन ग्रहण करने के अतिरिक्त और कोई मार्ग है नहीं। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७८ पृष्ठ १*

देवता कौन हैं ?

समाज को देने वाला, समाज की सहायता व रक्षा करने वाला ही देवता माना गया है। देवता वह जो औरों को दे। जो व्यक्ति अपनी ज्ञानाग्नि से अपने समस्त कषाय-कल्मषों को जलाकर स्वयं प्रकाशरूप हो, दूसरों के अंधकारमय जीवन को प्रकाशित करता हो, अपने ज्ञान से दूसरे भूले-भटकों को मार्ग दिखाता हो तथा इस तरह पूरे समाज का सत्पथ प्रदर्शक बने उसे ही 'देवता' माना जाता है।

अपने में निहित शक्ति की उपयोगिता जगती में सिद्ध कर सूर्य, चंद्र, वायु, अग्नि आदि ने 'देवता' की संज्ञा प्राप्त की है। यह निरंतर देते रहते हैं। सृष्टि में विद्यमान चेतना और वैभव सब इन्हीं देवशक्तियों की देन है। इस उत्सर्ग की भावना ने ही उन्हें यह पदवी दिलाई। देवत्व ने ही सूर्य, चंद्र आदि को देवता के रूप में निरूपित किया।

जिन प्रकाशपुंज व्यक्तित्वों के व्यवहार्य सिद्धांतों एवं कृतित्व से प्राणियों को मार्ग मिले, उसके कषाय-कल्मषों को दूर करने की प्रेरणा मिले, सांसारिक कष्टों से मुक्ति पाने का पथ-प्रशस्त हो, वे देवतुल्य माने जाकर सम्मानजनक स्थान प्राप्त करते हैं।

देवता होने के लिए मात्र ज्ञान व शक्ति का पुंज होना ही पर्याप्त नहीं, वरन अपनी शक्ति व ज्ञान से लोकमंगल व लोकनिर्माण के कार्य करना भी है। अपनी शक्तियों का लोकमंगल में उत्सर्ग किए बिना कोई भी देवता नहीं बन सकता। *—अखण्ड ज्योति-मई १९७८ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनोनिग्रह के लिए उपासना की आवश्यकता

कुसंस्कारी मन को विशुद्ध रूप में वन्य पशु मानकर चलना चाहिए। आमतौर से वह अनगढ़ ही होता है। नर-वानरों का—वन-मानुषों का ही समूह चारों ओर फिरता है। आजीविका उपार्जन और व्यवहारकौशल की दृष्टि से भले ही उन्हें अच्छा-भला माना जा सके, मन का स्तर देखने पर तो वहाँ बालबुद्धि और पशु-प्रवृत्ति का ही साम्राज्य छाया दीखता है। इस स्थिति को पार करना ही व्यक्तित्व का विकास है। मनस्वी व्यक्ति ही महत्त्वपूर्ण सफलताएँ प्राप्त करते और अपनी गौरव-गरिमा प्रमाणित करते देखे जाते हैं। आत्मिक प्रगति की दिशा में, उपासना अभ्यास में, सबसे बड़ा अवरोध इस अनगढ़ मन द्वारा ही उत्पन्न किया जाता है। उसी की रोकथाम और शिक्षा-दीक्षा के लिए अनेकानेक साधना विधानों का आविष्कार किया गया है।

यदि धैर्य, साहस और संकल्पपूर्वक उन्हें अपनाए रहा जाए तो समयानुसार सफलता मिल जाना निश्चित है। आतुर और अधीर ही हथेली पर सरसों जमने की अपेक्षा करते हैं और वे ही कुछ दिन थोड़ा-बहुत अभ्यास करके—मन न लगने का बहाना बनाकर अपने प्रयास से मुँह मोड़ लेते हैं। पानी के बबूले जैसा क्षणिक उत्साह कभी-कभी महत्त्वपूर्ण सफलता को प्राप्त करने का आधार नहीं बन सकता। ऐसे अस्थिर चित्त व्यक्ति उपासना के महान प्रयोजन को भी पूरा नहीं कर पाते।

—अखण्ड ज्योति-मई १९७८ पृष्ठ ८

संकल्प और आत्मबल एक ही तथ्य के दो पक्ष हैं

सुखद कल्पनाओं का आनंद सभी लेते हैं, पर उन्हें पूर्ण करने को सफलता का गौरव प्राप्त कर सकना किसी-किसी के लिए ही संभव होता है। कल्पना की चिड़िया इस उन्मुक्त आकाश में कितनी ही ऊँची उड़ानें उड़ सकती हैं। उस पर कोई रोक-टोक नहीं, पर एक छोटा-सा सुनियोजित घोंसला तक बनाकर खड़ा करना हो तो बया जैसी तत्परता और तन्मयता का परिचय देना पड़ता है। प्रगति की अभीष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त करने के लिए जिस सामर्थ्य की सर्वप्रथम आवश्यकता पड़ती है, वह है संकल्पशक्ति।

किसी कार्य के पक्ष-विपक्ष पर भलीभाँति मंथन करने के उपरांत जो निष्कर्ष निकलता है और अपनी क्षमता का अनुमान लगाकर जिसे करने का फैसला किया जाता है, उसे निश्चय कहते हैं। निश्चय को कार्यान्वित करने के लिए साहस चाहिए और साथ ही यथार्थतावादी विवेक भी। निश्चय को साहस का योगदान मिलने से जो दृढ़ता उत्पन्न होती है, उसे संकल्प कहते हैं। संकल्प की शक्ति असीम है। उसके द्वारा असंभव को संभव बना सकना शक्य न हो सके, तो भी इतना निश्चित है कि कठिन लगने वाले कार्य सरल हो जाते हैं। ऊँचा उठने और आगे बढ़ने का श्रेय प्राप्त करने वालों में से प्राय: सभी ने संकल्पशक्ति के सहारे ही अति महत्त्वपूर्ण श्रेय-संपादन किए हैं।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मित्रता और उसका निर्वाह

मैत्री अदृश्य है और व्यवहार दृश्य। मैत्री गुणों पर निर्भर है और व्यवहार उपयोगिता पर। कौन हमारे लिए कितना उपयोगी हो सकता है, कौन हमारी कितनी आवश्यकताएँ पूर्ण कर सकता है ? इस आधार पर जिससे भी मित्रता होगी, वह उतनी ही उथली रहेगी और उतनी ही क्षणिक अस्थिर रहेगी। यदि किसी से आजीवन मैत्री निभानी हो तो उसका एक ही उपाय है, मित्र की गुणपरक विशेषताओं को ध्यान में रखे और यह सोचे कि यह सद्गुण परमेश्वर की परमज्योति के वे स्फुलिंग हैं, जो कभी भी बुझ नहीं सकते, जिनमें मलिनता नहीं आ सकती।

मित्रता विशुद्ध आध्यात्मिक अनुभूति है जो किसी में उच्च गुणों की स्थापना के आधार पर उदय होती है। जिसे निकृष्ट समझा जाएगा उसकी कारणवश चापलूसी हो सकती है, पर श्रद्धाजन्य मैत्री का उदय नहीं हो सकता। श्रद्धा और मैत्री उत्कृष्टता के देवता की दो भुजाएँ हैं। यदि हम किसी से मैत्री करने से पूर्व इस तत्त्व को समझ लें, कि अमुक सद्गुणों के आधार व्यक्ति विशेष से प्रेम करना है, तो समझना चाहिए कि उसके बदल जाने या दूर चले जाने से भी उस शाश्वत आदत-प्रवाह में कोई अंतर नहीं आवेगा जो यथार्थ मित्रता के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ा रहता है।

तत्त्वदर्शी कहते हैं कि जाने वालों को जाने दो, रोको मत क्योंकि इससे मित्रता के निर्वाह में कोई अंतर आने वाला नहीं है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९७८ पृष्ठ ३२

पवित्रता, महानता और संयमशीलता

पवित्रता, महानता और संयमशीलता ये तीन तत्त्व हैं, जो मनुष्य की गरिमा को बनाते और महिमा को बढ़ाते हैं। अंतरंग की दैवी संपत्ति किसके, पास कितनी है इसका पता लगाना हो तो यह देखना होगा कि उसके चरित्र और चिंतन में कितनी पवित्रता है ? व्यक्तित्व में मानवोचित महानता सिद्ध करने वाले सद्गुणों का कितना बाहुल्य है और वह व्यक्ति किस सीमा तक संयमशीलता, सादगी और सज्जनता का अपने व्यवहार में समावेश कर सका है।

समृद्धि में कोई दूसरों को चमत्कृत कर सकता है, पर किसी की श्रद्धा और सद्भावना प्राप्त कर सकने में समर्थ नहीं हो सकता। तृप्ति, तुष्टि और शांति की अनुभूति मात्र वैभव के सहारे हो नहीं सकती।

विभूतिवान वह है जिसे कर्त्तव्यनिष्ठा के सहारे मिलने वाले आत्मगौरव और आत्मसंतोष का अभाव कभी नहीं अखरा। सज्जनता संसार की सबसे बड़ी विभूति है। जिसने उसे उपार्जित कर लिया समझना चाहिए कि यह विश्व की गरिमाशील विभूतियों में से एक है।

अन्न, जल और हवा के सहारे शरीर जीवित रहता है। आत्मा की गरिमा को जीवंत रखने के लिए उसे पवित्रता, महानता और विनम्रता की परिस्थितियों में रहने का अवसर मिलना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९७८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आस्था ही आस्तिकता

एक समय यह मान्यता थी कि जिसे भगवान में आस्था नहीं, वह आस्तिक नहीं हो सकता, परंतु अब यह मान्यता इस रूप में स्वीकृत की जाती है कि भगवान में आस्था न रखने वाला व्यक्ति ही नहीं, अपितु स्वयं अपने आप में 'आस्था' न रखने वाला व्यक्ति भी आस्तिक नहीं माना जा सकता। अपने आप पर जो व्यक्ति अविश्वास व अनास्था रखता है, वह नास्तिक है।

आस्तिकता का अर्थ केवल मात्र भगवान में आस्था रखना ही नहीं, अपितु स्वयं अपने आप में आस्था रखना भी होता है। आत्मा ही तो परमात्मा है। अत: अपने आप पर विश्वास रखना, आस्थावान रहना उस परमात्मा के प्रति आस्थावान रहना ही है।

अपने में आस्था रखिए। अपने परिवार के सदस्यों में, पड़ोसियों में, समाज के हर व्यक्ति में आस्था रखिए। यदि आप संसार के हर व्यक्ति के प्रति आस्थावान बने रहे तो सारा संसार आपको ब्रह्ममय प्रतीत होगा।

यदि हमें अपने धर्म, अपनी संस्कृति, अपने गौरवमय इतिहास में आस्था है तो हम सदैव कर्मठ बने रहेंगे।

अनेकों देशों में विध्वंसकारी आयुधों के निर्माण में हो रही प्रतिस्पर्द्धा, एकदूसरे पर अविश्वास, एक की दूसरे के प्रति अनास्था के ही तो परिणाम हैं।

अपनी आस्था गँवाकर आस्तिक बने रहने की बात सोचना एक ढोंग ही है। आस्थाहीन व्यक्ति आस्तिक हो ही नहीं सकता।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९७८ पृष्ठ १

साधना और सिद्धि का सिद्धांत

आध्यात्मिक पुरुषार्थ का लक्ष्य होना चाहिए—अंतरंग की उत्कृष्टता का अधिकतम संवर्द्धन। यही है वह प्रयोग जो व्यक्ति को आत्मसंतोष, जनसहयोग और दैवी अनुग्रह प्रचुर परिमाण में जुटा सकता है। ईश्वर की अनुकंपा माँगने के लिए किए गए मनुहारों की सार्थकता तभी है जब अनुग्रह को आत्मपरिष्कार की प्रचंड आकुलता के रूप में जाना जा सके।

पात्रता के अनुरूप दैवी अनुकंपा की उपलब्धि का तथ्य आत्मिक प्रगति की अपेक्षा करने वाले हर साधक को भली प्रकार ध्यान में रखना चाहिए। ईश्वर का अनुग्रह इस आधार पर नहीं मिल सकता कि मनुहार उपचार की घुड़दौड़ में कौन, कितना आगे निकल गया? बात तब बनती है जब अंतरंग की उत्कृष्टता का चुंबकत्व दैव परिवार को अपनी ओर आकर्षित करता है और अपनी पात्रता के आधार पर प्राणियों का ही नहीं, देवताओं का भी मन मोहता है।

उपासना कितनी गहरी और कितनी सार्थक रही, इसका प्रमाण-परिचय एक ही बात से मिलता है कि आंतरिक सुसंस्कारिता और बाह्य सज्जनता का कितना विकास संभव हो सका? साधना यों कहने को तो ईश्वर की अभ्यर्थना भी कही जा सकती है। किंतु उसका वास्तविक स्वरूप एक ही है, अंतरंग में अवस्थित देवमानव को जाग्रत, प्रखर और समर्थ बनाने की आकुलता भरी चेष्टा।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पैरों को तोड़ें नहीं प्रगति की सहज यात्रा पर बढ़ने दें

हमारी प्रवृत्ति ध्वंसात्मक नहीं, सृजनात्मक होनी चाहिए। ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, आक्रोश, धर्म-विरोध, निंदा जैसी मन:क्षेत्र की आक्रामक प्रवृत्तियाँ कभी-कभी ही आवश्यक होती हैं। कितने ही व्यक्ति निषेधात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। दोष-दर्शन और निंदा-वर्णन ही उनके मस्तिष्क पर चढ़ा रहता है। नीचा दिखाने और बदला लेने की योजनाएँ बनाने में उनका कौशल नष्ट हो जाता है। फलत: उनके पास उपयोगी सृजन के लिए बौद्धिक क्षमता बचती ही नहीं। दिलचस्पी ही चली गई तो शरीर से उपयोगी श्रम भी कैसे बन पड़ेगा? सृजन ही मानवी प्रतिभा का सदुपयोग है। उसी से व्यक्ति यशस्वी बनता और अपनी कृतियों से अनेक को सुखी-समुन्नत बनाता है।

यह सब सरल और स्वाभाविक है। जीवन का सहज प्रवाह सुख-शांति की ओर बहता है, उसे यथावत चलने दिया जाए और बुद्धिमत्ता के नाम पर बरती जाने वाली मूर्खता प्रगति के बहाने अपनाई गई अवगति से यदि बचा जा सके तो पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचाने वाली वह सुखद प्रक्रिया चलती ही रहेगी, जिसका आनंद लेने के लिए यह सुरदुर्लभ मनुष्य शरीर उपलब्ध हुआ है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७८ पृष्ठ १८

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मुस्कान सुसंस्कृत व्यक्तित्व की निशानी

भविष्य के अशुभ होने की कल्पना करके शंका-शंकित रहने की अपेक्षा यह क्या बुरा है कि उज्ज्वल भविष्य की आशा-अपेक्षा की जाए और प्रसन्न रहा जाए। भविष्य का कोई ठिकाना नहीं, वह आशा के विपरीत भला भी हो सकता है और बुरा भी। जब यहाँ सब कुछ अनिश्चित के ही अंचल में छिपा पड़ा हो, फिर संभावनाएँ उज्ज्वल ही क्यों न मानी जाएँ। यह अनुमान गलत निकला तो भी अशुभ चिंतन की तुलना में शुभ संभावनाएँ सोचते रहना ही लाभदायक है। उतने समय तक खिन्न रहने की अपेक्षा स्वास्थ्य सँभाले रहने का अवसर मिल गया, यही क्या बुरा रहा? यदि अनिश्चित कल्पना के आधार पर मुस्कान बनाए रखी जा सके तो वह कल्पना भी सृजनात्मक ही रही।

अपने अंतरंग को ऊँचा उठाएँ। परिष्कृत चिंतन करें। उज्ज्वल भविष्य की आशा रखें। कर्त्तव्य को सही रीति से करने में आत्मसम्मान अनुभव करें। दूसरों से सीमित अपेक्षा करें। परिस्थितियों से ताल-मेल बिठाएँ, जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलें और उसे खिलाड़ी की तरह बिना हार-जीत की प्रतिष्ठा का प्रश्न बनाए खेलें। अन्य कुछ भी हाथ से चला जाए पर मुस्कान को अक्षुण्ण रखें, क्योंकि यह वह दिव्य संपदा है जो आड़े समय में सबसे अधिक सहायक सिद्ध होती है और प्रगति-पथ पर बढ़ चलने में सबसे अधिक सुविधा उत्पन्न करती है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७८ पृष्ठ ५३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मदेव की साधना और सिद्धि

देवताओं की क्षमता और अनुकंपा के संबंध में अनेक मधुर कल्पनाएँ की जाती हैं। उनकी मनुहार अभ्यर्थना करते हुए यह आशा की जाती है कि वे द्रवित होंगे और साधक की सुविधा, प्रसन्नता बढ़ाने में सहायता करेंगे। देवपूजन का प्रचलन इन दिनों प्रायः इसी धुरी पर घूमता है।

परोक्ष देवताओं की तुलना में प्रत्यक्ष आत्मदेव की क्षमता की गरिमा और अनुकंपा की महिमा को इन्हीं आँखों से देखा और यथार्थता की सभी कसौटियों पर परखा जा सकता है। आत्मपरिष्कार के लिए की गई जीवन साधना से वे सभी सिद्धियाँ मिल सकती हैं, जिनके लिए देवताओं के द्वार भटकने, दीनता दिखाने और निराश रहने की विडंबना सहन करनी पड़ती है। देवताओं में सर्वश्रेष्ठ आत्मदेव है। उस तक पहुँच अति सरल है। उनकी जैसी उपासना जिसने भी की है, उसे उसी अनुपात से अनुग्रह का लाभ मिला है। भौतिक सिद्धियाँ और आत्मिक ऋद्धियाँ अभीष्ट परिमाण में प्राप्त करने के लिए आत्मदेव से बढ़कर और कोई सुनिश्चित उपास्य है नहीं।

साधनाओं में सर्वश्रेष्ठ, सर्वसुलभ और तत्काल फलदायक साधना आत्मदेव की है। आत्मानुशासन और आत्मपरिष्कार के चरण बढ़ाते हुए कोई भी साधक इस परमदेव तक पहुँच सकता है और उसके अनुग्रह का अजस्र लाभ पा सकता है। *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९७८ पृष्ठ १*

जीवन के स्वरूप और उद्देश्य को समझो

रेशम का कीड़ा अपना खोल आप बुनता है और उसी में बँधकर रह जाता है। मकड़ी को बंधन में बाँधने वाला जाला उसका अपना ही तना हुआ होता है। इसे उनकी प्रवृत्ति की प्रतिक्रिया ही कह सकते हैं। जब रेशम का कीड़ा खोल में से निकलने की बात सोचता है तो बुनने की तरह उसे कुतर डालने में भी कुछ कठिनाई नहीं होती। मकड़ी अपने फैलाए जाल को जब चाहे तब समेट भी सकती है। इंद्रिय-लिप्साओं और ममता-अहंता को प्रधानता देकर मनुष्य शोक-संताप की विपन्नता में ग्रस्त होता है। यदि वह अपनी दिशा पलट ले तो जीवनमुक्त स्थिति का आनंद प्राप्त करने में भी उसे कोई अड़चन प्रतीत न होगी।

मनुष्य को सोचने और करने की स्वतंत्रता प्राप्त है। उसका उपयोग भली या बुरी, सही या गलत किसी भी दिशा में वह स्वेच्छापूर्वक पूरा कर सकता है। अब बंधन में बँधना भी उसका स्वतंत्र कर्तृत्व ही है।

समस्त विभूतियों से संपन्न मानव जीवन का अनुदान और सर्वत्र स्वतंत्रता का उपहार देकर भगवान ने अपने अनुग्रह का अंत कर दिया। अब वह मनुष्य पर निर्भर है कि वह उसका सदुपयोग करे और जीवनमुक्त स्थिति प्राप्त करे अथवा दुरुपयोग कर मोहपाश, लिप्सा जाल में आबद्ध हो जाए, उलझकर आत्मविनाश कर ले। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९७९ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना मूल्यांकन वास्तविकता से अधिक न करें

अहंकार का आधार ही यह है कि हम अपने आप को महत्त्वपूर्ण मानते हैं और दूसरों से स्वयं को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए उनके अहंकार से टक्कर लेना चाहते हैं। महत्त्वपूर्ण होना एक अलग बात है और स्वयं को महत्त्वपूर्ण मानना तथा उसे सिद्ध करना दूसरी बात है। महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने का प्रयास ही इस बात का द्योतक है कि हम अपना मूल्यांकन वास्तविकता से बहुत अधिक करते हैं। विचार किया जाना चाहिए कि संसार में सबसे महत्त्वपूर्ण यदि कोई है तो वह ईश्वर है और ईश्वर की ऐसी कोई चेष्टा दिखाई नहीं देती जो वह अपने आप को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने के लिए करता हो। संसार की सर्वोपरि महत्त्वपूर्ण सत्ता अपने आप को महत्त्वपूर्ण सिद्ध करने की ओर से उदासीन है तो क्या कारण है कि हम जैसे अरबों व्यक्तियों के होते हुए हम अपने आप को सबसे महत्त्वपूर्ण मानें और दूसरों से टक्कर लेते फिरें।

अपने अहंकार को पहचान लेने और उसे स्वीकार करने के साथ ही वस्तुस्थिति को समझ लेने मात्र से अहंकार तिरोहित हो जाता है। केवल पहचानने और स्वीकार करने भर से ही बात नहीं बनेगी। प्रकाश है और अंधकार नष्ट हो गया है। यह जानने पर भी यदि आँखें बंद रखी जाएँ तो स्थिति में कोई अंतर नहीं आता। आवश्यकता इस बात की है कि आँखें खोली जाएँ।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९७९ पृष्ठ ३१

दृश्य नहीं, दर्शक बनें

लोग समझते हैं जितना अधिक बन पड़े अच्छे से अच्छा खा लिया जाए, अच्छे से अच्छा पहन लिया जाए। अधिक से अधिक भोग लेने की मानवीय भूख को किसी ने मिटते नहीं देखा। यह भूख मायाविनी है। बार-बार रूप बदलती रहती है और मनुष्यों को जाल में फँसाकर उनका जीवन नष्ट करती रहती है।

जीवन का रहस्य भोग में नहीं है, अनुभव द्वारा शिक्षाप्राप्ति में है। दृश्य बनने की अपेक्षा दर्शक बनने का लाभ कई गुना अधिक है, इससे दृश्य का अनुमान भी होता है और सच्चे ज्ञान की अनुभूति भी होती रहती है। भोग में छल, मिथ्यात्व और प्रवंचना है। एक बार इसमें फँस जाने के बाद उससे छूटना कठिन होता है। भोग साध्य कदापि नहीं हो सकता।

यह मनुष्य जीवन इसलिए मिला है कि इस संसार का शक्ति भर अध्ययन किया जाए और उस ज्ञान को मानवता के संरक्षण के लिए बाँट दिया जाए। भाषा, विचार और अनुभूति के जो अनेक उपहार पूर्वपुरुषों ने हमें दिए हैं, उनका हमारे ऊपर ऋण है। इसको चुकाने का काम, यह शिक्षा भावी नागरिकों के लिए संचय कर जाने से पूरा होता है। इसलिए इस अमूल्य मानव जीवन को खोओ मत, अपितु मानवी गुणों को संगठित करने में उसका अधिक से अधिक उपयोग करो।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा का अस्तित्व और अनुग्रह

परिष्कृत जीवन ही परमात्मा का कृपापात्र बनता है एवं ईश्वरीय अनुग्रह की अजस्र धारा विभिन्न प्रकार की सफलताओं के रूप में बरसती रहती है। ईश्वर परम संतोष एवं आनंदरूप में उपासक को अपना मंगलमय सान्निध्य का अनुग्रह करता है। परमात्मा के सच्चे भक्तों को संसार में किसी भी प्रकार की सुख-शांति की कमी नहीं रहती।

परमात्मा की कृपालुता एवं दयालुता असंदिग्ध है, किंतु उसकी एक व्यवस्था-मर्यादा है, इसका उल्लंघन करने वालों के लिए उसका एक और भी स्वरूप है—वह है न्यायी तथा व्यवस्थापक होना। जहाँ उसकी प्रसन्नता मर्यादा व्यवस्था के अनुरूप जीवन रीति-नीति अपनाने वालों पर अनिर्वचनीय उपहारों की झड़ी लगा देती है, वहीं उसकी अप्रसन्नता प्रतिकूल आचरण करने वालों को कठोर दंड भी देती है।

परमात्मा का अनुग्रह और उसके फलस्वरूप शांति-प्रसन्नता की प्राप्ति एवं सफलता का शाश्वत उपहार पाने के लिए मनुष्य को उपासना के साथ जीवन साधना को अपनाना होगा। उसकी दयालुता के साथ ही रुद्ररूप को भी याद रखें तथा सत्पथ पर शुद्ध एवं सात्विक भावना से चलकर उसे अप्रसन्न होने का अवसर न दें, मनुष्य का कल्याण इसी में है। यही परमात्मा के अंश मनुष्य के लिए योग्य एवं शोभनीय है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७९ पृष्ठ ८

संपदाएँ नहीं विभूतियाँ

सद्गुणों के आधार पर ही ठोस, चिरस्थायी, उच्चकोटि की सफलताएँ मिलती हैं। श्रमशीलता, साहस, धैर्य, लगन, संयम और अध्यवसाय के आधार पर ही इस संसार में विविधविध उपलब्धियाँ प्राप्त होती हैं और प्रगति का पथ प्रशस्त होता है। सच्चरित्रता और प्रामाणिकता के आधार पर ही विश्वास प्राप्त किया जाता है और विश्वासी को ही समाज में अपनाया जाता है, उसे ही महत्त्वपूर्ण काम सौंपे जाते हैं और सहयोगी दिए जाते हैं। अप्रामाणिक व्यक्ति अपना विश्वास खो बैठता है और उस कमी के कारण उसे कहीं भी सच्चा सहयोग नहीं मिलता। फलस्वरूप महत्त्वपूर्ण प्रगति से उसे आजीवन वंचित ही रहना पड़ता है।

सद्भावना संपन्न सद्गुणी व्यक्तित्व अपने आप में एक वरदान है। ऐसा व्यक्ति अपने भीतर संतोष, उल्लास और हलकापन अनुभव करता है। उसे न किसी से डर होता है और न दुराव। जिसमें न भीरुता है और न दुष्टता, वह किसी से क्यों डरेगा? जिसके मन में पाप, दुराव नहीं है, उसे किसी के आगे झेंपने, झिझकने की आवश्यकता क्यों पड़ेगी? सदाचारी व्यक्ति निर्भय रहता है और निर्द्वंद्व। अपनी न्यायोपार्जित आजीविका से गरीबों जैसा गुजारा करते हुए भी उसे इतना संतोष रहता है जितना कि अनीति उपार्जित विपुल संपदा के स्वामी को कभी स्वप्न में भी नहीं मिल सकता।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९७९ पृष्ठ ३२

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्त्रोत अंदर है, बाहर नहीं

आनंदप्राप्ति का भ्रमपूर्ण, पदार्थवादी प्रयास उसे अपने ही आनंद-स्त्रोत अंतरात्मा से दूर रखता है। फलस्वरूप मनुष्य विक्षुब्ध बना रहता है।

आंतरिक भावों पर ध्यान दिया जा सके तो प्रतीत होगा कि आनंद का अजस्त्र-स्त्रोत अंदर बैठा अपना प्रवाह संप्रेषित कर रहा है। इस प्रकार के भावों के उत्पन्न होते ही कुप्रवृत्तियाँ नष्ट होने लगती हैं। चेष्टाएँ अंतर्मुखी बन जाती हैं तो भौतिक लालसाएँ नष्ट हो जाती हैं। उनका स्थान दया, करुणा, प्रेम जैसी सत्प्रवृत्तियाँ ले लेती हैं। प्राणिमात्र के दु:खों को दूर करने में मनुष्य को आनंद आने लगता है। प्रेम का सतत प्रवाह चारों ओर बहता दिखाई देता है। इस स्थिति को प्राप्त करने के उपरांत कोई कामना अवशेष नहीं रह जाती है।

मृग के कस्तूरी के लिए जंगल में भटकते रहने के समान बाह्य वस्तुओं में आनंद ढूँढ़ने का अविवेकपूर्ण प्रयास करने की अपेक्षा, अपनी चेष्टाओं की अंतर्मुखी किया जाए। अंदर बैठे अंतरात्मा के दर्शन एवं उससे मिलने वाले अजस्त्र आनंद के अनुदान को प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक साधनाओं का ही अवलंबन लेना होगा। चेतना अपने उद्‌गम स्थल पर पहुँचकर ही शांति एवं आनंद की शाश्वत अनुभूति कर सकती है। जीवनपर्यंत मनुष्य जिसकी प्राप्ति के लिए सांसारिक आकर्षणों में भटकता रहता है, वह आत्मदर्शन से ही संभव है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९७९ पृष्ठ ४

जीवनलक्ष्य की प्राप्ति में तीन प्रमुख व्यवधान

हर भावनाशील व्यक्ति के सम्मुख देवमानव बनने और समाज को समुन्नत बनाने की यशस्वी भूमिका निभाने का अवसर विद्यमान है। स्त्रष्टा ने हर मनुष्य को ऐसे साधनों से संपन्न बनाकर भेजा है कि वह जीवनलक्ष्य को पूरा करने में सहज ही सफल हो सके तथा सत्प्रवृत्तियों के संवर्द्धक की भूमिका निभाते हुए श्रेयाधिकारी बन सके।

अधिकांश को इस सौभाग्य से वंचित रहना पड़ता है जो उसे मानव जीवन के साथ ही अजस्त्र उपहार के रूप में उपलब्ध है। व्यवधान के कारणों पर विचार करने से परिस्थिति की जटिलता नहीं मन:स्थिति में भरी हुई कुटिलता ही एक प्रधान अवरोध प्रतीत होती है। उपभोग और संग्रह का अनावश्यक लालच, संबंधियों के प्रति अनुपयुक्त व्यामोह, अहंता का उद्धत परिपोषण इन तीनों का समुच्चय वह त्रिशूल है जो जीवन-संपदा को अस्त-व्यस्त करता और स्त्रष्टा के उपहार को दुर्भाग्य में बदलता है।

महान बनने और महान करने की आत्मिक आकांक्षा पूरी करना जिन्हें वस्तुत: अभीष्ट हो, उन्हें त्रिविध व्यवधानों से जूझने का साहस जुटाना चाहिए। निर्वाह के लिए औसत भारतीय स्तर, साधन परिवार का संक्षिप्तीकरण और स्वावलंबन, सद्‌गुणों की संपदा में गर्व-गौरव यदि पर्याप्त प्रतीत होने लगे तो समझना चाहिए कि स्वर्ग के द्वार खुल गए और जीवन को आनंद से भर देने वाले साधन बन गए।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रार्थना अर्थात विनम्र पुरुषार्थ

भगवान को अपने में और अपने को भगवान में समाया होने की अनुभूति जब इतनी प्रबलता के साथ अनुभूत होने लगे कि उसे कार्यरूप में परिणत किए बिना रहा ही न जा सके यही समर्पणभाव की परिपक्वता है।

आरंभ अपने पापों के पश्चात्ताप, निर्मल जीवन जीने के संकल्प और सफलताओं के लिए विनम्रतापूर्वक ईश्वर को धन्यवाद देने से करना चाहिए। निस्संदेह सफलताएँ अपने ही परिश्रम-पुरुषार्थ का प्रतिफल होती हैं, पर यह नहीं भूलना चाहिए कि उस परिश्रम-पुरुषार्थ की प्रेरणा देने वाला परमात्मा अपने अंत:करण में ही विद्यमान है। यदि इस तथ्य को नकारकर अपने क्षुद्र अस्तित्व का अभिमान किया जाता है तो मदोन्मत्त हाथी की तरह न केवल अपनी शक्तियों का विध्वंसकारी दुरुपयोग होने की संभावना बनती है, वरन उनके भी नष्ट होने का संकट खड़ा रहता है। अस्तु, जो कुछ प्राप्त है उसके लिए परमात्मा के प्रति कृतज्ञता और धन्यवाद के बोध से भरकर परमात्मा से आत्मबल, मनोबल, आत्मबोध के ही दिव्य वरदान की माँग की जाए। सर्वतोभावेन परमात्मा के प्रति समर्पित भक्त का योगक्षेम वहन करने की प्रतिज्ञा भगवान ने स्वयं की है, पर उस शर्त को भी तो पूरा किया जाना चाहिए जो पात्रता विकसित करने, हृदय को वासनाओं और तृष्णाओं से रिक्त करने के रूप में जुड़ी हुई हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९७९ पृष्ठ ७

दूरदर्शिता का दोहरा लाभ

वैभव की दृष्टि से बड़े वे हैं, जिनके पास साधनों की प्रचुरता और बुद्धि कौशल की प्रखरता है। ऐसे लोग ऐश्वर्यवान कहलाते हैं और अपनी समर्थता के बदले सुख-साधन एवं पद-सम्मान पाते हैं।

वर्चस की दृष्टि से महान वे हैं जिनके दृष्टिकोण एवं चरित्रक्रम का स्तर ऊँचा है। जो आदर्श पर आस्था रखते हैं और उन्हें कठिन अवसरों पर भी अपनाए रहने वाले साहस का परिचय देते हैं। मुक्ति को परम पुरुषार्थ माना गया है और उसका श्रेयाधिकारी उसे पाया गया है जो बड़प्पन से नहीं महानता से प्यार करता है।

जहाँ तक आत्मसंतोष, लोकसम्मान एवं देवी अनुग्रह जैसी विभूतियों का संबंध है, वे वैभववानों को नहीं, महामानवों को ही उपलब्ध होती हैं।

दूरदर्शी वे हैं जो क्षुद्रता से ऊँचे उठकर महानता का वरण करते हैं। वैभव नश्वर और अस्थिर ही नहीं मादक भी है। उसमें उन्माद उत्पन्न करने का दुर्गुण है। ऐसे कम ही हैं, जो वैभव को पचाने और उसका सदुपयोग करने में समर्थ होते हैं। अधिकतर तो उसका दुरुपयोग ही होता है। इसके विपरीत महानता की विभूतियाँ ऐसी हैं जो व्यक्ति की गरिमा बढ़ाती हैं। गरिमा ही वह विभूति है, जिसके आधार पर जनसहयोग बरसता और उच्चस्तरीय सफलताओं का अवसर मिलता है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९७९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर्म ही सर्वोपरि

हम सब जिन देवशक्तियों का अर्चन-आराधना के उपायों और विधानों को जानने के लिए उत्सुक रहते हैं, वे देव सत्ताएँ भी विधि-व्यवस्था से ही बँधी दीखती हैं। दैवी विधानों की अवहेलना वे भी नहीं करतीं। तो क्या उस सृष्टि संचालक विधान की और उसके विधाता की ही वंदना की जाए? पर हमारे भाग्य का निर्धारण तो वह विधि-व्यवस्था हमारे ही कर्मों के अनुसार करती है। यही उसका सुनिश्चित नियम है। हमारे अपने ही कर्मों का फल प्रदान करने की प्रक्रिया वह चलाता रहता है।

इस प्रकार हमारे भोगों, उपलब्धियों और प्रवृत्तियों के एकमात्र सूत्रसांचलक हमारे स्वयं के कर्म ही हैं। तब फिर देवताओं और विधाता को प्रसन्न करने की चिंता करते रहना कहाँ की बुद्धिमत्ता है? हमारा साध्य और असाध्य तो कर्म ही है। वही वंदनीय, अभिनंदनीय है, वही वरण और आचरण के योग्य है। दैवी विधान भी उससे भिन्न और उसके विरुद्ध कुछ कभी नहीं करता। कर्म ही सर्वोपरि है। परिस्थितियों और मन:स्थितियों का वही निर्माता है। उसी की साधना से अभीष्ट की उपलब्धि संभव है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८० पृष्ठ १

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आज मिल पाया नहीं, तो कल मिलेगा

यदि संसार के सफलतम और प्रतिभासंपन्न व्यक्तियों पर प्रयोग किया जाए तो यह दावे के साथ कहा जा सकता है कि उनकी उपलब्धियाँ एक जीवन के देन नहीं है, वरन उसके पीछे पिछले कई जन्मों की साधना शक्ति पूँजी के रूप में जुड़ी हुई है। उसी पूँजी से सफलता के वर्तमान शिखर छुए जा सके हैं। इसलिए वर्तमान जीवन में किए गए प्रयासों की असफलता के बारे में सोच-सोचकर निराश होने का कोई कारण नहीं है कि किए जा रहे प्रयत्न व्यर्थ जा रहे हैं। किसान बीज बोता है तो बोते समय तो यही लगता है कि बीज व्यर्थ मिट्टी में जा रहे हैं, पर जब वे फसल के रूप में उग आते हैं तो प्रतीत होगा कि बोए गए बीज व्यर्थ नहीं गए वरन उनका निश्चित परिणाम प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार प्रगति और उत्कर्ष की दिशा में किए गए कोई भी प्रयास व्यर्थ नहीं जाते। यह बात अलग है कि उनका परिणाम आज अभी या इसी जन्म से नहीं मिलता, लेकिन मिलता अवश्य है। इसी तथ्य को गीताकार ने स्पष्ट करते हुए कहा है, "**नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते**" अर्थात जिसका प्रारंभ कर दिया जाता है, उसका कभी नाश नहीं होता और न ही परिणाम में कोई उलट-फेर होता है। इसलिए परिणाम न होता दिखाई देने पर भी प्रयत्नों को शिथिल नहीं करना चाहिए। यह मानकर अनवरत यत्नशील रहना चाहिए कि साधना का फल निश्चित रूप से मिलेगा।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८० पृष्ठ १३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन साधना की सिद्धि के रहस्य

साधना और उपासना का प्रतिफल आत्मविस्तार के रूप में ही उपलब्ध होता है। संकीर्ण स्वार्थपरता के बंधनों को तोड़कर फेंक देने और विराट के साथ अपनी आत्मीयता जोड़ लेने का ही नाम मुक्ति है। स्वर्ग के दो पक्ष हैं—उत्कृष्ट चिंतन और आदर्श कर्तृत्व। जिसके अंत:करण में इन दोनों की प्रतिष्ठापना हो गई, समझना चाहिए उसने मनुष्य शरीर में रहते हुए ही 'देवयोनि' प्राप्त कर ली।

देवमानव न केवल आत्मकल्याण का लक्ष्य संपन्न करते हैं, वरन शरीर, मन, साधन एवं परिवार की दृष्टि से भी सुसंतुलित रहते हैं। विकृतियाँ तो अपने ही दृष्टिकोण की होती हैं जो रुगण्ता, उद्विग्नता, दरिद्रता और गृहकलह के रूप में प्रकट होती हैं। जीवन की जड़ में यदि सुसंस्कृत चिंतन का जल लगता रहे तो उसके सभी पत्र-पल्लव हरे-भरे बने रहेंगे और उसे फला-फूला सुरम्य सुविकसित देखा जा सकेगा। इसी सर्वांगीण सुख-शांति को मानव जीवन की सार्थकता कहा जा सकता है। इसकी उपलब्धि पूर्णतया अपने हाथ में हैं। आत्मचिंतन, आत्मसुधार, आत्मनिर्माण और आत्मविकास को अपनी नीति-निष्ठा में परिणत कर लिया जाए तो हमारा जीवन-प्रवाह उस दिशा में सहज ही बह निकलेगा, जिसमें अक्षय सुख-शांति के आनंदोल्लास के अनुदान पग-पग पर भरे पड़े हैं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८० पृष्ठ २७

परिवर्तन में प्रगति और जीवन

स्थिरता जड़ता का चिह्न है और परिवर्तन प्रगति का। स्थिरता में नीरसता है, निस्तब्धता और निष्क्रियता, किंतु परिवर्तन नए चिंतन, नए अनुभव और नए अनुभव का पथ-प्रशस्त करता है। जीवन प्रगतिशील है। अस्तु, उसमें परिवर्तन आवश्यक होता है और अनिवार्य भी।

प्रगतिशील परिवर्तन में डरते नहीं, उनका समर्थन करते हैं और स्वागत भी। आकाश में सभी ग्रहगोलक गतिशील हैं। इसमें उनका चुंबकत्व स्थिर रहता और उसके सहारे उनका मध्यवर्ती सहकार बना रहता है। यदि वे निष्क्रिय रहे होते तो अपनी ऊर्जा गँवा बैठते। जो आगे नहीं बढ़ता वह स्थिर भी नहीं रह सकता। स्थिरता पर संकट आते ही विकल्प विनाश ही रह जाता है। अस्तु, जीवन को गतिशील रहना पड़ता है। जो निर्जीव है, वह भी गतिहीन नहीं है।

युग बदलते हैं, परिवर्तन क्रम में आशा और निराशा के अवसर आते और चले जाते हैं। रात्रि और दिन, स्वप्न और जाग्रति, जीवन और मरण, शीत और ग्रीष्म, हानि और लाभ, संयोग और वियोग का अनुभव लगता तो परस्पर विरोधी है, पर अंतत: वे एकदूसरे के साथ गुँथे रहते हैं और दोहरे रसास्वादन का आनंद देते हैं। ऋण और धन धाराओं का मिलन ही बिजली के सामर्थ्यवान प्रवाह को जन्म देता है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८० पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति तो हो, पर उत्कृष्टता की दिशा में

प्रगति और अवगित का स्वरूप समझने में भूल होते रहने के कारण ही मनुष्य भ्रम में पड़ते, पछताते और दुसह दु:ख सहते हैं। प्रगति की परिभाषा को बलिष्ठता, शिक्षा, संपदा प्राप्त करने तक सीमित समझा जाता है। इस दिशा में जो जितना प्रयत्न करता है, वह उतना पुरुषार्थी कहलाता है और जो जितना सफल होता है, वह उतना भाग्यशाली माना जाता है।

वस्तुओं और सामर्थ्यों का अपना महत्त्व है, पर उन उपलब्धियों का सत्प्रयोजन में प्रयोग हो सकने पर ही उनके द्वारा वास्तविक प्रगति का लाभ मिलता है। प्रगति की वास्तविकता व्यक्तित्व की गरिमा के साथ जुड़ी हुई है। मनुष्य की चिंतन, चरित्र एवं लक्ष्य ही वह आधार है, जिस पर व्यक्तित्व की गरिमा टिकी हुई। यदि इस केंद्रबिंदु पर निकृष्टता आधिपत्य कर ले तो समस्त उपलब्धियाँ हेय प्रयोजनों के लिए ही प्रयुक्त होती रहेंगी और फलत: पाप, पतन और त्रास-विनाश का संकट ही उत्पन्न होता रहेगा। वह प्रगति कैसी जिसमें जलने और जलाने का, गिरने और गिराने का ही उपक्रम चलता रहे।

प्रगति का अर्थ है—ऊर्ध्वगमन, उत्कर्ष, अभ्युदय। ये विभूतियाँ अंत:क्षेत्र की हैं। दृष्टिकोण और लक्ष्य ऊँचा रहने पर इच्छा और आकांक्षा का स्तर ऊँचा उठता है। आत्मगौरव का ध्यान रहता है। अपना मूल्य गिरने न पाए, यह सतर्कता जिसमें जितनी पाई जाती है, वह उतना ही प्रगतिशील है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९८० पृष्ठ १

अक्लमंदी नहीं, बुद्धिमत्ता अपनाएँ

मस्तिष्कीय तीक्ष्णता और बुद्धिमत्ता में भौतिक अंतर है। मस्तिष्क रासायनिक पदार्थों की संरचना है। उसकी ललक अपने सजातीय पदार्थों का अधिकाधिक उपभोग करने की आतुरता के साथ जुड़ी रहती है। अस्तु, मन इतना ही चाहता और सोचता है कि रुचिकर लगने वाले पदार्थों और प्रिय लगने वाले व्यक्तियों की अनुकूलता एवं बहुलता बनी रहे। चिंतन और कर्म को इसी प्रयोजन में लगाए रहना ही 'अक्लमंदी' की सीमा है। चतुरता यही सिखाती है। वह अपने क्षेत्र में जब उच्छृंखल होने लगती है तो कुपणता, धूर्तता और दुष्टता के रूप में बढ़ती और ऐसे अनाचारी कृत्य करती है, जिससे कर्त्ता को पतन, तिरस्कार, प्रतिशोध एवं प्रताड़ना का भाजन बनना पड़ता है। उपलब्धियों की मात्रा तो चतुरता के सहारे बढ़ जाती है, पर वह विग्रह और संकट ही खड़े करती है।

बुद्धि मानवी काया में आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी विशेषता है—तथ्य खोजने और परिणाम सोच सकने की क्षमता। विवेकशीलता और दूरदर्शिता इन्हीं सत्प्रवृत्तियों का नाम है। भविष्य को ध्यान में रखते हुए वर्तमान का निर्धारण करने की क्षमता के रहते मन को अचिंत्य चिंतन तथा शरीर को कुछ भी आचरण करने की छूट नहीं मिल सकती। बुद्धिमान भविष्य का निर्माण करते हैं और उसके लिए मन की ललक-लिप्सा पर नियंत्रण कर सकने में समर्थ भी रहते हैं और सफल भी होते हैं।

—अखण्ड ज्योति-मई १९८० पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सत् को समझें, सत् को पकड़ें

संकट एवं विग्रह बादलों की तरह आते और चले जाते हैं। वैभव का भी कोई ठिकाना नहीं, वह हँसोड़ों की तरह आँखमिचौनी खेलता और अगूँठा दिखाकर जब चाहे तब भाग खड़ा होता है। खुद जीवन-प्रवाह तक तो अस्थिर है। बबूले की तरह जो अभी-अभी उछलता-फुदकता था, वह अपना अस्तित्व खोकर न जाने कहाँ चला जाता है। जो दीखता है, वह अंधड़ की तरह प्रवाह मात्र है। लहरों को गिनने वाले बालक की तरह संव्याप्त चंचलता को आश्चर्यचकित, हतप्रभ होकर देखना पड़ता है। यहाँ समस्त गुत्थियाँ अनसुलझी और समस्त पहेलियाँ अनबुझी ही बनी रहती हैं।

इस अंतरिक्ष में सुस्थिर ध्रुवतारा एक ही है—धर्म। धर्म अर्थात कर्त्तव्य, फर्ज, ड्यूटी, जिम्मेदारी और ईमानदारी का समुच्चय। चट्टान से बँधी नाव, नदी के उफान में भी यथास्थान खड़ी रहती है। पहाड़ों को अंधड़ भी नहीं गिरा पाते। जिसने अपनी निष्ठा, कर्त्तव्य के साथ बाँध ली, उसे किसी खतरे से पराजित नहीं होना पड़ता। धरती सरदी और गरमी शांतिपूर्वक सहती है। निष्ठावान जिंदगी न संकट के सामने झुकती है और न वैभव से उन्मत्त होती है। इस सर्वव्यापी असत्य में एक ईश्वर की सत् है। इस प्रवाह में एक धर्म ही स्थिर है, जो सत् को पकड़ता है और स्थिर रहता है। वही जीवन को ऐसा जीता है, जैसा जिया जाना चाहिए। *—अखण्ड ज्योति-जून १९८० पृष्ठ १*

तीन असाधारण सौभाग्य

मनुष्य जीवन उस दुर्गम घाटी के समान है, जिसमें पग-पग पर फिसलने, हर अगले क्षण या तो उतार या फिर चढ़ाव। कँटीली झाँड़ियाँ भी हैं और ऐसे गहरे गड्ढे जहाँ गिरकर फिर ऊपर तक पहुँच पाना संभव ही न हो। जो लोग यह मानते हैं कि वे अपनी अकेले की शक्ति से आगे बढ़ सकते हैं, उनकी समझ को ऐसी दुर्गम घाटी में बिना प्रकाश और पाथेय घूमने वाले पथिक की तरह मूर्खतापूर्ण ही कहा जाएगा। जीवन पग-पग पर प्रकाश चाहता है, पथ-प्रशस्ति चाहता है, उसका मिल जाना मनुष्य जीवन मिलने जैसा परम सौभाग्य समझा जाता है।

यह सौभाग्य कैसे मिले ? जीवन का पथ कौन आलोकित करे—विवादों के घेरे में उलझे इस प्रश्न को मैंने बहुत कठिनाई से सुलझा तो लिया। महापुरुष ही वह सुयोग हैं—यह बात समझ तो ली—हृदय की गहराई में उतार तो ली किंतु महापुरुष कहाँ मिलें ? यह प्रश्न फिर सामने आ खड़ा हुआ। मैं समझता हूँ उसे सुलझा लेना मनुष्य जीवन का दूसरा असाधारण सौभाग्य है।

मुझसे कोई कहे कि मैं ऐसा कुतुबनुमा जानता हूँ जिसकी सुई सदैव उस ओर रहती है जिधर महापुरुष रहते हों तो उसे मैं अपना सब कुछ बेचकर खरीद लूँगा और उसे जीवन का असाधारण सौभाग्य मानूँगा। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८० पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफलता का मूलभूत आधार—उत्कट आकांक्षा

सफलता का मूलभूत आधार उत्कट इच्छा, तत्पर सक्रियता और क्रियाशीलता ही है। इसके बिना कोई भी व्यक्ति ऊँचा नहीं उठ सका है और कोई उल्लेखनीय सफलता नहीं प्राप्त कर पाया है। तत्परता, तन्मयता, सक्रियता और मनोयोग के मूल में भी उत्कट आकांक्षा ही उत्प्रेरक का काम करती है। कर्मरूपी वृक्ष भी विचार और इच्छारूपी बीज से ही उत्पन्न होता। इच्छा से प्रेरणा की और प्रेरणा से कर्म की उत्पत्ति होती है।

मनुष्य अपनी आकांक्षा के अनुरूप सोचता है वैसा ही कर्म वह करने लगता है। जैसे कर्म किए जाते हैं, वैसी ही परिस्थितियाँ सामने आ खड़ी होती हैं और उसी तरह के परिणाम प्रस्तुत करती है। इसे भाग्य, कर्मों का फल, किस्मत चाहे जो नाम दे दिया जाए, पर यह सब अपनी ही इच्छाओं की परिणति और फलश्रुति है। इसीलिए कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता और तकदीर का लेखक स्वयं है। संसार में जितने भी व्यक्तियों ने सफलताएँ प्राप्त की हैं, उन्होंने अपने प्राप्तव्य के लिए पूरे मन से अभिलाषा की है और वे इस बात के लिए तड़पते बेचैन होते रहे हैं कि किस प्रकार अपनी अभीष्ट वस्तु प्राप्त की जाए? —*अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८० पृष्ठ १५*

परिष्कृत जीवन प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष

परिष्कृत जीवन प्रत्यक्ष कल्पवृक्ष है। इस उपहार को मनुष्य के हवाले करने के उपरांत स्रष्टा ने उस पर यह उत्तरदायित्व भी छोड़ा है कि वह उसकी गरिमा को समझे और बनाए रखने के लिए प्रयत्नशील रहे।

साधना से सिद्धि का सिद्धांत सर्वविदित है, पर साधना किसकी? यह समझने में प्राय: भूल होती रहती है। जिस देवता की आराधना से अभीष्ट की उपलब्धि होती है, वह जीवन के अतिरिक्त दूसरा और कोई नहीं हो सकता।

उपास्य निर्धारण में दृष्टि भेद हो सकता है, पर उपासना के तत्त्वज्ञान को समझा जाए तो उसमें सारतत्त्व इतना ही है। आत्मपरिष्कार का हर संभव उपाय अपनाया जाए। इस पुरुषार्थ में जो जितनी प्रगति करता है, उस पर उपास्य का अनुग्रह उसी अनुपात से बरसता है। उपास्य का बाह्य कलेवर कुछ भी क्यों न हो! उसकी आत्मा साधक की आत्मा में ही घुली रहती है।

साधना किसकी? उत्तर एक ही है—आत्मदेव की। अपने को परिष्कृत करने पर ही कोई पदार्थों और परिस्थितियों का लाभ उठा सकता है। कुशल माली ही उद्यान को सुरम्य बनाता और यशस्वी होता है। जीवन-परिष्कार के लिए की गई साधना उन समस्त सफलताओं समेत उपस्थित होती है, जिन्हें ऋषि-सिद्धियों के आकर्षक एवं आलंकारिक नामों से जाना जाता है।

—*अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८० पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साधना से सिद्धि और मार्ग के अवरोध

उगने की शक्ति बीज में होती है। वह घुना हो तो उगेगा कैसे? साधना को बीज समझा और उसकी परिणति को सिद्धि कहा जा सकता है। इस प्रक्रिया को बीज के वृक्ष बनने से उपमा दी जा सकती है। बीज का सक्षम होना ही पर्याप्त नहीं, उसके लिए उपयुक्त भूमि, खाद, सिंचाई और रखवाली की भी जरूरत पड़ती है। यह साधन न मिलें तो बोने वाले की आकांक्षा एवं बीज को समर्थता का उपयुक्त प्रतिफल उपलब्ध न हो सकेगा।

साधना विधान के जो माहात्म्य प्रतिफल कहे गए हैं, वे तभी सच सिद्ध होते हैं, जब साधक की मनोभूमि में उत्कृष्ट चिंतन की उर्वरता और आदर्श चरित्र की नमी विद्यमान हो। मात्र कर्मकांड ही सब कुछ नहीं है। पूजा से ही देवता प्रसन्न नहीं होते। इस समस्त विधि-व्यवस्था की उपयोगिता तभी है, जब साधक को अपने व्यक्तित्व को उच्चस्तरीय बनाना आता हो। कुशल किसान वह है जो बीजारोपण के साथ-साथ पौधे के उगने एवं फलने के लिए अभीष्ट आवश्यकताओं को भी समझता और उन्हें जुटाने का प्रयत्न करता है। साधना एक कृषि कर्म एवं उदात्त आरोपण है, उसे फलित करने के लिए उपासनाक्रम ही पर्याप्त नहीं वरन जीवन साधना का वह उपक्रम भी जुटाया जाना चाहिए जो व्यक्तित्व को विकसित करने के साथ-साथ सिद्धियों का सुयोग भी प्रस्तुत करता है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८० पृष्ठ १

कठिनाइयों का स्वागत कीजिए

जब तक यह शरीर बना हुआ है, तब तक सुख और दु:ख का निवारण नहीं हो सकता। कठिनाइयाँ जीवन का उसी तरह अंग हैं जिस तरह दिन के बाद रात्रि का होना, ऋतुएँ बदलते रहना। अत: आवश्यकता इस बात की है कि कठिनाइयों या प्रतिकूलताओं को अपने ऊपर हावी न होने दिया जाए और उनके बीच से रास्ता निकालकर आगे बढ़ते रहा जाए।

कठिनाइयों को अपने ऊपर हावी न होने देने का एक मार्ग व्यस्त रहना है। मनुष्य के व्यस्त रहने की कठिनाइयों के प्रति शोक, चिंता एवं उद्विग्नता में डूबने के लिए समय ही नहीं मिलेगा। स्वामी विवेकानंद ने एक स्थान पर लिखा है—"व्यस्त मनुष्य को आँसू बहाने के लिए भी समय नहीं मिलता।" यह ठीक भी है। जो व्यस्त रहेंगे, उन्हें कठिनाइयों के संबंध में सोच-सोचकर दुखी होते रहने का अवकाश ही कहाँ रहेगा? इसके अतिरिक्त इन्हें जीवन का एक सहज क्रम मानकर भी निश्चित रहा जा सकता है। यह सोचकर भी प्रसन्न हुआ जा सकता है कि आपत्तियों का झंझावात नरसिंहों को झकझोरकर उनका प्रमाद तोड़कर उन्हें पुरुषार्थ के लिए खड़ा कर देता है।

विपत्तियाँ, प्रतिकूलताएँ अथवा कठिनाइयाँ जीवन का सहज स्वाभाविक क्रम है। उनसे प्रभावित होना ही हो तो इस रूप में होना चाहिए कि वे मनुष्य को शिक्षा देने के लिए आती हैं। इसलिए उनसे न तो भयभीत होने की आवश्यकता है और न भागने की। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८० पृष्ठ ३६*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लक्ष्य की दिशा में अनवरत यात्रा

सदुद्देश्य के लक्ष्य की दिशा में यात्राक्रम अखंड ही रहना चाहिए। थकान आने पर थोड़ा विश्राम कर लेने में हर्ज नहीं, पर दिशाधारा में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।

कितने अवरोध ऐसे हैं जो लुभाते, डराते और भटकाने में चूकते नहीं। वन्य प्रदेशों में पशुओं के झुंड निरुद्देश्य घूमते हैं। उनके खुरों से पगडंडियाँ बन जाती हैं। लगता है कि राजमार्ग की अपेक्षा इन पर चलना सीधा पड़ेगा। कई पथिक इस लोभ से उन पर चल पड़ते हैं। परिणाम में कष्ट सहने, थकने और निराश होने के अतिरिक्त और कुछ उपलब्ध नहीं होता।

अपूर्णता से पूर्णता की ओर का प्रयाणक्रम निर्धारित करना और उस पर अनवरत चलने पर ही अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचना संभव हो सकता है। भटकन में श्रांति और क्लांति ही पल्ले पड़ती है। पूर्णता के लक्ष्य तक पहुँचने का मार्ग एक ही है—महानता को दृढ़तापूर्वक पकड़े रहना। अविचल निष्ठा के साथ अनवरत उस पर चलते रहना। अनुसरण वन्य पशुओं के द्वारा विनिर्मित पगडंडियों का नहीं, वरन उस राजमार्ग का होना चाहिए जो सुनिश्चित संकल्प लेकर आगे बढ़े और विश्वास को अविचल रखकर अनवरत क्रम से आगे बढ़ रहे हैं। लक्ष्य तक पहुँचने का एक ही उपाय है—सदुद्देश्यों की दिशा में अवरोधों को लाँघते हुए अपनी प्रयाण साधना को अखंड क्रम में जारी रखना।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८१ पृष्ठ १

उत्तरदायित्वों को निभाएँ, महान बनें

आत्मविश्वास और परिश्रम के बल पर जीवन को सार्थकता प्रदान की जा सकती है। भाग्य का निर्माणक मनुष्य स्वयं है। ईश्वर निर्णयकर्त्ता और नियामक है। मनुष्य परिश्रम से चाहे तो अपने भाग्य की रेखाओं को बना सकता है, परिवर्तित कर सकता है। हैनरी स्ल्यूस्टर कहता है—"जिसे हम भाग्य की कृपा समझते हैं, वह और कुछ नहीं। वास्तव में हमारी सूझ-बूझ और कठिन परिश्रम का फल है।" विश्वास रखें परिश्रम और आत्मविश्वास एकदूसरे के बिना अधूरे हैं। दोनों मिलकर ही लक्ष्य तक पहुँचने में समर्थ हो पाते हैं। संकल्प करें—बाधाओं को हमेशा हँस-हँस स्वीकार करना है। डरकर मार्ग से हटना नहीं है। लक्ष्य-विहीन नहीं होना है। हमेशा गतिमान रहना है।

परिश्रम और सफलता की आशा करते हुए हमें लक्ष्यप्राप्ति के बीच आने वाले दुष्परिणामों को भी सामान्य करने का साहस करना चाहिए। "सर्वश्रेष्ठ के लिए प्रयत्न कीजिए मगर निकृष्टतम के लिए तैयार रहिए।" अँगरेजी की यह कहावत बड़ी सार्थक है। हैनरी फोर्ड से एक व्यक्ति ने उनकी सफलता का रहस्य पूछा, तो उन्होंने कहा—"सफलता का सबसे पहला रहस्य है, हर परिस्थिति के लिए तैयार रहना।"

किसी को दोषी बताकर अपने को और निराश न करें। परिस्थितियों से समझौता करें और उन्हें अनुकूल बनाएँ।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८१ पृष्ठ २

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अशुभ चिंतन छोड़िए—भयमुक्त होइए

बहुधा नए कामों का आरंभ करते समय एक किस्म का संकोच होने लगता है। कारण वही है—अशुभ आशंका। उस स्थिति में अशुभ आशंकाओं को अपने मन को झटककर विचार किया जाना चाहिए। सफलता और असफलता दोनों ही संभावनाएँ खुली हुईं हैं। फिर क्या जरूरी है कि असफल ही होना पड़ेगा। मन में आशा का यह अंकुर जमा लिया जाए तो असफलता भी पराजित नहीं कर पाती। उस स्थिति में भी व्यक्ति को यह संतोष रहता है कि असफलता कोई नया अनुभव दे गई है।

असफलताओं और दु:खदाई घटनाओं को स्मृति-पटल पर बार-बार लाने की अपेक्षा ऐसी घटनाओं का स्मरण करना चाहिए तो अपने आप के प्रति आस्था और विश्वास को जगाती हैं। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में सफलता के और असफलता के दोनों ही अवसर आते हैं, दोनों तरह की परिस्थितियाँ आती हैं जो अच्छी और बुरी होती हैं। सुख-दु:ख के क्षण सभी के जीवन में आते हैं। असफलताओं, कठिनाइयों और कष्टों को याद रखने तथा याद करने की अपेक्षा सफलताओं और सुखद क्षणों को याद करना आशा तथा उत्साह का जनक होता है। ये स्मृतियाँ व्यक्ति में आत्मविश्वास उत्पन्न करती हैं और जो व्यक्ति अपने आप में विश्वास रखता है, हर कठिनाई का सामना करने के लिए प्रस्तुत रहता है। उसके लिए कैसा भय और कैसी निराशा?

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८१ पृष्ठ २१

बुद्धि की प्रखरता ही नहीं, भावनाओं की उदात्तता भी

उत्कृष्ट भाव श्रद्धा ही भगवान को भी भक्त के पास आने के लिए बाध्य करती है।

जो शक्ति भगवान को प्रभावित कर सहयोग करने के लिए बाध्य कर सकती है, वह मानवमात्र को भी प्रभावित कर सकती है। मानवता को एकसूत्र में बाँध सकती है। पिछले दिनों भूल यह हुई कि हृदय की महानता को उभारने के स्थान पर बुद्धि को प्रखर बनाने में अधिक जोर दिया गया। बुद्धि की प्रखरता की उपयोगिता सही दिशा में तभी संभव हो सकती है जबकि उसके साथ हृदय की विशालता जुड़ी हो। किंतु ऐसा नहीं हो सका। प्रयत्न बुद्धि को प्रखर बनाने के लिए ही हुआ। उसमें सफलता भी मिली। फलस्वरूप भौतिक उपलब्धियाँ भी प्राप्त हुईं।

बुद्धि के एकांगी विकास से बौद्धिक परिकल्पनाओं की प्राप्ति भले ही हो जाए, मनुष्य को महान बना सकना संभव नहीं है। बुद्धि की प्रखरता के साथ हृदय की महानता को विकसित करने के लिए भी प्रयत्न करना होगा। तभी मनुष्य मानवोचित गुणों से संपन्न बनकर व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के लिए अर्थों में उपयोगी बन सकता है। अंतरंग की महानता ही मनुष्य की गरिमा को चिरस्थायी बनाए रख सकती है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८१ पृष्ठ २१

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

करुणा में भगवान

''जितनी विराट सृष्टि है, मानवीय अस्तित्व उतना ही निराट नगण्य, तो भी उसके जीवनयापन के सभी साधनों का पहले से पहले संचयन''—जब इस तथ्य पर विचार करने लगते हैं तो लगता है—सृष्टि का आविर्भाव करुणा से हुआ है। करुणा अर्थात किसी निरीह के लिए, उसकी पीड़ा में सहयोगी बनने की भावना। यह प्रक्रिया वृक्ष-वनस्पति, जीव-जंतुओं से लेकर सृष्टि के कण-कण में विद्यमान देखी जा सकती है।

जब हम किसी भटके को रास्ता दिखलाते हैं, किसी पीड़ित के घावों पर मरहम लगाते हैं, अपनी सहायता से किसी को ऊपर उठता हुआ देखते हैं तो हृदय से एक पुलक भरी संवेदना फूटती है और गले को रौंध देती है। उस समय यद्यपि आँखों में अश्रु उतर आते हैं, पर उस क्षणभर के बोध में सारे जीवन भर का आनंद और शांति अवतरित होने लगती है।

हम अनुभव करते हैं कि भावनाओं की इस तरंग का विराट की करुणा से कहीं न कहीं कोई संबंध है। इसी से हम परमात्मा को करुणा के रूप में उपासते हैं। निरीह प्राणियों पर करुणा की दृष्टि रखकर ही उस करुणाकर का बोध हो पाया है और अब तो इसीलिए उसे पाने की अपेक्षा प्राणियों में करुणा को खोजते-फिरते हैं। वह जहाँ, भी जितनी देर के लिए उपलब्ध हो, ऐसा लगता है उतनी देर हम परमात्मा की गोद में रह आए।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८१ पृष्ठ १

आदर्शवादी महत्त्वाकांक्षाओं के फलितार्थ

महत्त्वाकांक्षाओं का लक्ष्य यदि आदर्शवादी वरिष्ठता को रखा जा सके तो ही उभयपक्षीय प्रयोजन पूरे होते हैं। आरंभ से ही आत्मसंतोष मिलने लगता है। इस प्रयास में सत्प्रवृत्तियाँ उभरती और उपयोगी आदतें परिपक्व होती हैं। व्यक्तित्व का परिष्कार इस मार्ग पर चलने वालों को दैवी वरदान की तरह मिलता है। जिसकी कीमत पर जो महत्त्वपूर्ण है, ऐसा कुछ भी आसानी से खरीदा जा सके।

आदर्शवादी महत्त्वाकांक्षा अपने लिए जितनी लाभदायक होती है, उससे अधिक जनसाधारण के लिए उपयोगी सिद्ध होती है। महामानवों को अनिवार्यत: लोकसेवा में प्रवृत होना होता है। अतएव उनके प्रयास-परिश्रम से अनेक का भला होना और बदले में सहयोग भरी श्रद्धा सद्भाव मिलना स्वाभाविक है।

भौतिक महत्त्वाकांक्षाएँ पानी के बबूले की तरह अपना चमत्कार दिखातीं और थोड़ी सी स्वार्थसिद्धि का जायका चखातीं विस्मृति के गर्त में चली जाती हैं जबकि आदर्शवादिता समुद्र में खड़े प्रकाश स्तंभों की तरह अपना गर्वोन्नत मस्तक उठाए खड़ी रहती है। उस ऊँचाई और रोशनी से नाविक अपनी प्राणरक्षा करते और दर्शक सराहते हुए उधर से निकलते हैं।

महत्त्वाकांक्षाएँ श्रेयस्कर भी हैं और हेय भी। यदि वे क्षुद्र प्रयोजनों में लगें तो हेय और यदि सत्प्रयोजनों की दिशा में चल पड़ें तो उनसे अधिक या श्रेष्ठ उपलब्धि और कोई हो नहीं सकती।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८१ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संस्कृति और सभ्यता

जीवन साधना में यों सभ्यता और संस्कृति दोनों का ही समावेश रहता है, पर उसमें संस्कृति को उद्‌गम और सभ्यता को प्रवाह कहा गया है। संस्कृति विचारणा, मान्यता, आस्था, निष्ठा में उत्कृष्टता के समावेश को कहते हैं। इसी पृष्ठभूमि की प्रेरणा से गतिविधियों का निर्धारण संभव होता है। शालीनता की पक्षधर जीवनचर्या को सभ्यता कहते हैं। सभ्य बन सकना उसी के लिए संभव है जो सुसंस्कृत हो। संस्कृति मन:संस्थान में उगाई और बढ़ाई जाती है। सभ्यता अपनाने के लिए शरीर को सधाया जाता है। साधनात्मक अनुशासन में जकड़कर अनगढ़ मनुष्य को सुगढ़, सुसंस्कृत बनाया जाता है। इसी प्रयास को सभ्यता संवर्द्धन कहते हैं।

संक्षेप में श्रद्धा आत्मिक, प्रज्ञा बौद्धिक और निष्ठा शारीरिक उत्कृष्टता का नाम है। श्रद्धा को ब्रह्मचेतना, प्रज्ञा को संस्कृति और निष्ठा को सभ्यता के नाम से जानी जाने वाली त्रिविध आदर्शवादिताओं का समन्वय ही मानवी गरिमा है। उन विभूतियों की मात्रा किनके पास कितनी है, उसी आधार पर उन्हें अवतार, देवदूत, ऋषि, सिद्धपुरुष, महामानव आदि नामों से पुकारते हैं। इन दैवी संपदाओं का जो जितना धनी है, उसी आधार पर उसमें आत्मशक्ति की प्रखरता पाई जाती है और तद्‌नुरूप ही वह युगसृजन जैसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण एवं गौरव-गरिमा भरे काम कर सकने में समर्थ होता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८२ पृष्ठ ८

उत्थान-पतन का आधार, आकांक्षाओं का परिष्कार

मनुष्य की सामर्थ्य सीमित है, वह एक निश्चित दिशा में ही अनवरत गति से चल सकती है। दो विपरीत मार्गों पर एक साथ चल सकना भला किस प्रकार संभव हो सकता है ? महत्त्वाकांक्षाएँ यदि समृद्धि संपादन के लिए गगनचुंबी बनी हुई हैं तो मन:तंत्र का महत्त्वपूर्ण अंश उसी का ताना-बाना बुनेगा, फिर उसे आदर्शवादी निर्धारणों में न उतनी रुचि रहेगी और न तत्परता, जितनी कि महानता के साधन जुटाने के लिए आवश्यक है। उथले प्रयासों के परिणाम भी उथले ही होते हैं।

सादा जीवन उच्च विचार का सिद्धांत अक्षरश: सत्य है। महामानवों को अपनी आवश्यकताएँ घटानी और वैभवपरक महत्त्वाकांक्षाएँ दबानी पड़ती हैं। मनोयोग एवं पुरुषार्थ की इस प्रकार की गई बचत ही महानता खरीदने के काम आती है।

आदतें हठीली होती हैं, पर वे भी परिस्थितियाँ बदल जाने पर छूटती और नई ढलती रहती हैं। ठीक इसी प्रकार आकांक्षा भी शाश्वत नहीं है, वे समीपवर्ती लोगों के प्रभाव तथा मन-मस्तिष्क को चिंतन की सामग्री देने से बदलती रहती हैं। महत्त्वाकांक्षाओं को आवश्यक, उपयोगी एवं शक्तिशाली माना गया है, पर यह बात तभी सच बैठती है, जब उन्हें आदर्शवादिता के साथ नियोजित किया जाए। निकृष्टता के साथ जुड़ जाने पर भी पतन और पराभव का ही पथ-प्रशस्त करती हैं।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८२ पृष्ठ ४०

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नर-पशु का नारायण में प्रत्यावर्तन, आत्मिकी का अवलंबन

मनुष्य जीवन सृष्टि के समस्त जीवधारियों की तुलना में सर्वोच्च पद है। उसे ईश्वरप्रदत्त सर्वोपरि उपहार और उपलब्धकर्त्ता का अभूतपूर्व सौभाग्य कहा जा सकता है। ऐसे बड़े पद का कार्यभार सफलतापूर्वक चलाने के लिए किस-किस दिशाधारा का अपनाया जाना आवश्यक है, इसके लिए कुछ ऐसा सोचना, मानना और अपनाना पड़ता है, जो भूतकाल की तुलना में सर्वथा भिन्न ही कहा जाएगा। इस प्रक्रिया को आत्मिकी कहते हैं। उपयोगिता की दृष्टि से भौतिकी की तुलना में इसका कम नहीं वरन अधिक ही महत्त्व दिया जा सकता है। भौतिकी की उपलब्धियाँ मात्र शरीर की सुविधा एवं मन की गुदगुदी भर प्रदान करती हैं, किंतु आत्मिकी के आधार पर समूचे व्यक्तित्व की गलाई-ढलाई होती है, उसे एक प्रकार से कायाकल्प ही कहना चाहिए।

यह कायाकल्प द्विजत्व नाम से भी पुकारा जाता है। साधना की प्रक्रिया नर-पशु को नर-नारायण में किस प्रकार बदलती है, इसे जानने के लिए जिज्ञासु मनीषियों को आत्मिकी विद्या के गूढ़ तत्त्वदर्शन को भलीभाँति जानना चाहिए। उच्चस्तरीय साधना सोपानों को तुरंत पाने का प्रयास करने वालों को इस एक तथ्य को समझ लेना बहुत अनिवार्य है कि अंत:करण का परिष्कार, वृत्तियों का शोधन ही समस्त सिद्धियों का राजमार्ग है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८२ पृष्ठ १*

उपलब्ध संपदा का सदुपयोग हो

जीवन अपने आप में पूर्ण है। वह पूर्ण से उत्पन्न हुआ है और पूर्णता से परिपूर्ण है। अंगार और चिनगारी में आकार भेद तो है, पर गुण-धर्म का नहीं। परमात्मा विभु है और आत्मा लघु। यह आकार भेद हुआ, तात्त्विक दृष्टि से दोनों में समानता है। इसीलिए **'शिवोऽहम्—सच्चिदानन्दोऽहम्'** के रूप में उस तात्त्विक एकता का उद्‌बोधन कराया जाता है। इस तथ्य के रहते मनुष्य की दुर्गति क्यों होती है? वह दीन-दुर्बल क्यों रहता है? शोक-संताप क्यों सहता है? प्रगति-प्रक्रिया से वंचित रहने का क्या कारण है? इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है—उपलब्ध संपदा का अपव्यय-दुरुपयोग। इस दुर्गुण के रहते तो कुबेर का खजाना खाली हो सकता है। रावण, भस्मासुर, वृत्रासुर, हिरण्याक्ष जैसे दुर्दांत दैत्य बेमौत मारे गए। इस विनाशलीला में उनके अपने दोष-दुर्गुणों की भूमिका ही प्रधान थी।

मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु असंयम है। सामर्थ्यों का अपव्यय-दुरुपयोग ही असंयम है। शक्ति तथा संपन्नता का लाभ तभी मिलता है, जब उसका सदुपयोग बन पड़े। दुरुपयोग होने पर तो अमृत भी विष बन जाता है। माचिस जैसी छोटी एवं उपयोगी वस्तु अपना तथा पड़ोसियों का घर-बार भस्म कर सकती है। ईश्वरप्रदत्त सामर्थ्यों का सदुपयोग कर सकने की सूझ-बूझ एवं संकल्पशक्ति को ही मर्यादापालन एवं संयमशीलता कहते हैं। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८२ पृष्ठ २३*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म का लक्ष्य मात्र आत्मकल्याण

आत्मबलसंपन्न व्यक्ति चमत्कार नहीं बताते। अपनी तिजोरी में बंद विभूतियों को वे छिपाकर रखते हैं। जहाँ-तहाँ उसका प्रदर्शन नहीं करते-फिरते। उपयोगी पात्र मिलने पर वे शिवाजी, विवेकानंद, दयानंद, चंद्रगुप्त अवश्य तैयार कर देते हैं, पर ऐसे समर्थ गुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, विरजानंद व चाणक्य इसका प्रचार नहीं करते। सामान्य से असामान्य स्वयं बन जाना, औरों को भी बना देना क्या कम चमत्कार है ? पर उन्हें क्या समझाया जाए जो चमत्कार का अर्थ ही करतब-सिद्धि-अजूबा मान बैठे हैं। अध्यात्म पथ पर चलने वाले हर साधक को पहले अपने मस्तिष्क में छाया सिद्धि संबंधी भूल व भ्रमजंजाल हटाना पड़ता है तो ही प्रगति पथ पर आगे बढ़ने में मदद मिल पाती है।

इस सर्वमान्य तथ्य को भलीभाँति आत्मसात कर लेना चाहिए कि हमारा लक्ष्य आत्मबल-संवर्द्धन है, सिद्धियों की प्राप्ति नहीं, हम मार्ग से भटकेंगे नहीं चाहे कितने ही आकर्षण मार्ग में दिखाई पड़ें। हमारी श्रद्धा को हम किसी बाजीगर से प्रभावित नहीं होने देंगे, चाहे उसने कितना ही मनोवैज्ञानिक प्रभाव हम पर डाला हो तथा सदैव यह याद रखेंगे कि अध्यात्म का लक्ष्य मात्र आत्मकल्याण, मोक्षप्राप्ति नहीं है वरन सत्पथ पर चलकर अन्य अनेक को राह दिखाना भी है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८२ पृष्ठ ४९

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उठो, जागो और विकास करो

''उत्तिष्ठत, जाग्रत।'' उत्थान करो, जाग्रत होओ—यह श्रुति का आदेश है। परमपिता का हरेक के अंत:स्थल में गूँज रहा उद्घोष है। इसे हममें से किसने सुना, किसने नहीं, पता नहीं, किंतु यह वाक्य बार-बार गूँजा है और इसने हमारे अंतर्कपाटों को हर बार खटखटाया है। संसार में प्राय: हर बाधा ने, हर दु:ख ने, हर विच्छेद ने शत-शत बार हमारी अंतरात्मा की तंत्रिकाओं को आघात कर झंकृत किया है और उससे केवल एक ही वाणी निकली है—''उत्थान करो, जाग्रत होओ।'' हमारे अपने नवजागरण के लिए अंत: में प्रतिष्ठित वह आत्मदेव निखिल अनिमेष नेत्रों से प्रतीक्षा कर रहा है कि कब वह प्रभात आएगा और कब रात्रि का यह अंधकार दूर होकर हमारे अपूर्ण विकास को निर्मल, नवोदित आलोक से प्रकाशमान, उदीयमान कर देगा।

मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो सोचता है कि क्यों न विश्वव्यापी आनंद किरण वर्षा से, ऐसी ही स्वाभाविकता से वह भी विकसित हो उठे। वह क्यों अपनी पंखुड़ियों को संकुचित किए बैठा है ? प्रभातकालीन सूर्य से लेकर प्रकृति का कण-कण, निखिल जगत प्रतिक्षण हमसे यही कहता है—अपने को विकसित करो, अपने आपे का समर्पण करो, अपने स्वार्थों की ओर से मुँह मोड़कर एक बार वसुधा की ओर भी देखो, इस सुख-दु:ख से भरे विचित्र संसार में अचिंत्य-अगोचर ब्रह्मसत्ता के प्रति अपने आप को अर्पित कर दो।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८२ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान की महत्ता कर्म के साथ ही

ज्ञान का अपना महत्त्व है, पर उसे हजम करने के लिए कर्म चाहिए, अन्यथा वह अपच ही उत्पन्न करेगा। ''सबसे भले विमूढ़ जिनहिं न व्यापहिं जगद् गति'' की उक्ति में इसीलिए सार्थकता है कि अनजान पशुवत शिश्नोदरपरायण रहकर अपना निर्वाह चैनपूर्वक कर लेते हैं, किंतु ज्ञानवानों का अंत:करण और विवेक जाग्रत होने पर अपनी क्षुधा प्रकट करता है और उसकी पूर्ति न बन पड़ने पर आत्मप्रताड़ना के रूप में कोहराम मचाता है। इसे ही ज्ञानदंड कहते हैं। जैसे धन का सदुपयोग और संरक्षण न बन पड़े तो वह अनेक संकट उत्पन्न करता है ज्ञान-संपदा भी यदि कर्म के रूप में परिणत हो तो संग्रहकर्त्ता को हैरान करके रख देती है।

मात्र ज्ञान संचय तो एक प्रकार का व्यसन है। बुद्धि-विलास इसे ही कहते हैं। उसे कतई निंदनीय तो नहीं ठहराया जा सकता, पर सार्थकता तभी मानी जाती है, जब उसकी कर्म में परिणति हो। यदि वैसा न बन पड़े तो ज्ञान और कर्म की विसंगति उलटा अंतर्द्वंद्व खड़ा करती है। नीतिकार ने ठीक ही कहा है—संसार में दो ही सुखी रहते हैं। एक तो 'मूढ़तम' दूसरे 'पारंगत' बुद्धि वाले। शेष तो सभी दुखी देखे जाते हैं। मूढ़तम, वे जो पेट-प्रजनन से ऊपर की बात कभी नहीं सोचते। पारंगत बुद्धि वाले वे जो कर्म में बुद्धि को परिणत करके विचार-संपदा के आधार पर मिलने वाली ऋद्धि-सिद्धियों को उपलब्ध करके पूर्णता के लक्ष्य तक जा पहुँचते हैं। समाज इन्हीं को अपना मार्गदर्शक मानता है। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९८२ पृष्ठ १*

अनेकता से एकता की ओर महायात्रा

खंडता में कुरूपता है—सौंदर्य है एकता में। खंडता में चंचलता है—शांति है एकता में। खंडता में विरोध है—मंगल है एकता में। खंडता में मृत्यु है—अमृतत्व है एकता में। उस एक को विच्छिन्न करके देखने से हम असंख्य प्रकार के आघातों से अपनी सुरक्षा नहीं कर सकते। खंडता से संकीर्णता पनपती एवं बढ़ती है। फलस्वरूप वह अहं के पोषण में ही केंद्रीभूत हो जाती है। खंड शरीर के परिपोषण में लगी क्षमता अखंड चेतना को नहीं देख पाती। व्यक्तिगत संग्रह से उपभोग की प्रवृत्ति बढ़ती है तथा परस्पर इस प्रतियोगिता की भावना से ईर्ष्या उत्पन्न होती है जो सभी झगड़ों की जड़ है। विखंडता की यह भावना अखंड चेतना के दर्शन से मनुष्य को सदा दूर रखती, जिसके कारण साधनों, वस्तुओं के प्रति मोह जीवन के अंतिम दिनों तक बना रहता है। परिणाम यह होता है कि हम उस 'एक' परमात्मा के सान्निध्य से प्राप्त होने वाले आनंद से सदा वंचित रह जाते हैं।

मनुष्य और मनुष्य के बीच पनपने वाले विभेद क्रम ही समस्त विग्रहों का मूल है। यदि एकता की, आत्मीयता की भावना विकसित हो, सब अपने दिखाई पड़ें, तो व्यक्तिगत संकीर्ण स्वार्थपरता का अंत होने में देर न लगे। '**वसुधैव कुटुम्बकम्**' की भावना ही आध्यात्मिक समाजवाद है। उसी के प्रखर रहने पर भूतकाल स्वर्णिम युग बनकर रहा। उज्ज्वल भविष्य के लिए भी उसी एकता एवं आत्मीयता के तत्त्वदर्शन को सुविस्तृत करना होगा। *—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९८२ पृष्ठ १०*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जानना तो अपने को भी चाहिए

अंतरात्मा शांत एवं आनंदस्वरूप है। वह इतनी संपन्न है कि उसकी संपन्नता में कभी अभाव हो ही नहीं सकता। कामनाओं की तृष्णा जो आजीवन मनुष्य को उद्विग्न बनाए रहती है। अंतरंग की संपन्नता प्राप्त होते ही गल जाती है और कुछ पाने की कामना नहीं रह जाती है। जो भौतिक वस्तुएँ आकर्षक प्रतीत होती थीं, वे ही नीरस लगने लगती हैं। अपने दिव्य स्वरूप के अलौकिक आनंद की मस्ती में डूबे साधक को जड़ वस्तुओं एवं संसार की वास्तविकता का बोध हो जाता है। ऐसी स्थिति में पहुँचा हुआ साधक शरीर को, इंद्रियों को, वाहन मानकर उनका सदुपयोग श्रेष्ठ कार्यों के लिए करता है।

शरीर, वस्तु एवं संसार की जानकारी एक सीमा तक उपयोगी हो सकती है, किंतु इनसे भी आवश्यक है—अपने विषय में जानना, अपनी क्षमताओं से परिचित होना। अपने विषय में अपरिचित बने रहने से जीवन का सही उपयोग कर सकना संभव नहीं हो पाता। जो परिणाम एक अनाड़ी ड्राइवर, अज्ञानी डाक्टर एवं उथली जानकारी रखने वाले अध्यापक का होता है, वही मनुष्य का भी होता है। अपना आपा ही अनजान बना रहा तो मनुष्य जीवन का इससे बढ़कर दुर्भाग्य दूसरा कोई नहीं हो सकता है। अपने को जानना ही मानव जीवन का लक्ष्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८२ पृष्ठ ९

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सृजन चेतना की समर्थता और गरिमा

ध्वंस सरल है, सृजन कठिन। पतन सहज है, उत्थान कष्टसाध्य। उथली बालक्रीड़ा कोई भी कर सकता है, पर समुद्र की गहराई में उतरकर मोती बटोरना किन्हीं साहसी गोताखोरों द्वारा ही बन पड़ता है। वातावरण में अवांछनीयता का समावेश करने में उथले लोग भी बहुत कुछ कर गुजरे हैं। विषैली घुटन उत्पन्न करने में कूड़े-करकट की छोटी ढेरी भी तनिक सी चिनगारी का सहयोग पाकर सहज समर्थ हो सकती है, किंतु वातावरण में शांति शीतलता भरने की बात तो अंतरिक्ष में व्याप्त बादल सोचते और कर गुजरते हैं। धरती की उर्वरता वर्षा के साथ अविच्छिन्न रूप से जुड़ी हुई है। मानवी गरिमा को अक्षुण्ण और प्रखर बनाए रखने में युगमनीषा ही पावस की भूमिका निभाती है। सुखद संभावनाओं का फला-फूला माहौल बनाने और वातावरण को नयनाभिराम उल्लासमय बनाने में बंसत का अवतरण ही सफल होता है।

कभी कार्तिकी अमावस्या को तमिस्रा से छुटकारा दिलाने के लिए गुहार की गई थी। सूरज, चंद्रमा ने समर्थ होते हुए भी उसे अनसुनी कर दिया। तब छोटे दीपकों ने अपनी तुच्छता का संकोच न करते हुए अंधकार से जूझने का संकल्प, प्राण हथेली पर रखकर किया था। दीप पर्व उसी आदर्शवादी, बलिदानी, साहसिकता को अनंतकाल तक जीवंत रखने वाला और अनुकरण की प्रेरणा देने वाला स्मारक है। सृजनशिल्पियों को कुछ ऐसा ही सोचना और करना होता है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८२ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वैभव ही नहीं, विवेक भी

साधनों का सदुपयोग कर सकने वाली बुद्धिमत्ता को सर्वत्र सराहा जाता है। उसी आधार पर मनुष्य आगे बढ़ते और ऊँचे उठते हैं। हर कोई कुछ न कुछ धन कमाता है और उसके पास पूर्वसंचित साधन होते हैं। प्रश्न एक ही रह जाता है कि इसे किसने, किस प्रयोजन के लिए, कब, किस प्रकार उपयोग किया? महत्त्व इस बात का नहीं कि किसने, कितना कमाया और कितना उड़ाया? बुद्धिमानों की कसौटी एक ही है कि जो हाथ आया उसे किन प्रयोजनों में किस दृष्टिकोण से खरच किया गया?

वैभव स्व-उपार्जित है। पूर्वसंचित पुण्य-परमार्थ या वर्तमान कौशल पराक्रम के आधार पर उसे अर्जित किया जाता है। इस अपनी कमाई के अतिरिक्त ईश्वरप्रदत्त अनुदान भी मनुष्य के पास कम नहीं है। श्रम, समय, मस्तिष्क जैसे साधन हर किसी को प्रायः समान रूप से उपलब्ध हुए हैं। इस उच्चस्तरीय वैभव का सदुपयोग कर सकना और भी बढ़े-चढ़े कौशल का काम है। ऐसे ही कौशल को दूरदर्शी विवेक कहा जाता है। श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा उसी के नाम हैं।

मनुष्य न तो संपदाओं की दृष्टि से दरिद्र है और न विभूतियों की दृष्टि से असमर्थ। प्रश्न इतना भर है कि जो हस्तगत हुआ, उसका उपयोग किस प्रकार बन पड़ा? जो इस कसौटी पर खरा सिद्ध हो सका, समझना चाहिए कि उसका मनुष्य-जन्म सार्थक हो गया।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८३ पृष्ठ १

विचार—एक अद्भुत प्रचंड शक्ति-स्त्रोत

यदि कोई व्यक्ति बुरे विचारों में निमग्न है तो स्वभावतः उस बुराई की अगणित प्रेरणाएँ, योजनाएँ उसके मस्तिष्क के सामने आती चली जाएँगी और उसका मन क्रमशः उसके लिए प्रशिक्षित होता चला जाएगा।

कहा जा चुका है कि विचारशक्ति को विद्युतशक्ति जैसी, अणुशक्ति जैसी प्रचंड सामर्थ्य वाला माना जाना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए कि उसका सही सदुपयोग क्या हो सकता है? अपने पास धन-संपत्ति हो तो उसका ऐसे ही निरर्थक कार्यों में कोई अपव्यय नहीं करता है। धन की बरबादी करने से लोग क्षतिग्रस्त होते, नुकसान उठाते और उपहासास्पद बनते हैं। यही तथ्य विचारों की संपदा पर भी लागू होना चाहिए। जिन विचारों को अपनाया गया है, वे प्रेरणाप्रद बनते हैं और अंततः अपनी ही दिशा में काम करने के लिए क्रियाशक्ति को सहमत तथा तत्पर कर लेते हैं। अवांछनीय विचारों को मस्तिष्क में स्थान देने और उन्हें वहाँ जड़ें जमाने देने का अर्थ है—भविष्य में हम उसी तरह का जीवन जीने की तैयारी कर रहे हैं। भले ही यह सब अनायास या अनपेक्षित रीति से हो रहा है, परंतु उसका परिणाम तो होगा ही। उचित यही है कि हम उपयुक्त और रचनात्मक विचारों को ही मस्तिष्क में प्रवेश करने दें।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८३ पृष्ठ २३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शाश्वत जीवन को सुसंपन्न बनाना श्रेयस्कर है

यह सच है कि हम रात्रि और दिन के चक्र में से गुजरते रहने पर भी मरते नहीं, अपना अस्तित्व यथावत बनाए रहते हैं। उसी प्रकार यह भी सच है कि बार-बार जन्मने-मरने पर भी जीवन का अंत नहीं है। वह अविच्छिन्न है। अनादि और अनंत तक उसकी सत्ता में कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं होता है।

जन्म और मरण का चक्र भी ऐसा ही है, जिसे जाग्रति और सुषुप्ति के बीच चलने वाली आँखमिचौनी कहा जा सकता है। बचपन, यौवन, प्रौढ़ता और मरण का चक्र तो अपने क्रम से यथावत घूमता है। फिर भी उसकी सत्ता अविचल धुरी की तरह अडिग ही बनी रहती है।

मरण से डरना क्या, वह तो पुराने वस्त्र बदलने और नए पहनने की तरह एक सुखद परिवर्तन है। जो आया है, वह जाएगा अवश्य। इसके लिए न शोक की आवश्यकता है और न संताप की। बुद्धिमत्ता इसी में है कि जीवन की अविच्छिन्न शृंखला को शाश्वत समझें और उसकी प्रत्येक कड़ी को अधिक सुव्यवस्थित बनाने के लिए प्रयत्नशील रहें। आज प्रयास कल को अधिक सुखी, समृद्ध और समुन्नत बनाने के लिए होते हैं। प्रस्तुत जीवन का ऐसा निर्धारण होना चाहिए जिससे उसका भावी स्वरूप क्रमशः अधिकाधिक श्रेष्ठ, प्रखर और उज्ज्वल बनता चले और वह पूर्णता के निर्धारित लक्ष्य तक बिना भटकाव के यथासमय जा पहुँचे। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८३ पृष्ठ १*

हम अपनी ही प्रतिध्वनि सुनते और प्रतिच्छाया देखते हैं

प्रसन्नता की तलाश आमतौर से वस्तुओं, व्यक्तियों, घटनाओं और परिस्थितियों में की जाती है, पर वस्तुतः यह चिंतन अवास्तविक है। यदि लोकमान्यता यही रही होती तो जिनके पास प्रचुर साधन हैं और जिन्हें प्रतिकूलताओं का भी सामना नहीं करना पड़ता, वे सदा प्रमुदित और संतुष्ट पाए जाते। इसके विपरीत जिनके पास स्वल्प संपदा है, जो अभावग्रस्त परिस्थितियों में रहते और प्रतिकूलताओं के मध्य जीवनयापन करते हैं, वे सभी दुखी देखे जाते।

प्रसन्नता सोचने की एक पद्धति है। उसके साथ व्यक्ति का दृष्टिकोण, स्वभाव और व्यवहार जुड़ा हुआ है। व्यक्तित्व में घुली हुई शालीनता को सुसंस्कारिता कहा जाता है और जिसके पास वह जितनी मात्रा में होती है, उसी अनुपात से उसे प्रसन्न रहते और रखते हुए देखा जाता है।

जिसे दोष-दर्शन, अभाव-चिंतन और हेय-आरोपण की आदत है, वह हर स्तर की अनुकूलता में रहते हुए भी अपनी दुर्गति का जिस-जिस पर प्रयोग करेगा। हो यह भी सकता है कि यदि चिंतन को उत्कृष्टता के पर्यवेक्षण और आरोपण के लिए प्रशिक्षित कर लिया जाए तो दृश्य कुछ दूसरी तरह के ही सामने आएँ।

इसी से इस संसार को दर्पण की उपमा दी जाती है। अपना स्वरूप जैसा है, वैसा ही प्रतिबिंब दर्पण में दीखता है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९८३ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

व्यवहार में औचित्य का समावेश

यह जगत बड़ा विचित्र है। इसमें अनगढ़ एवं सुगढ़ दोनों प्रकार के व्यक्ति रहते हैं। इच्छित प्रकृति के सुसंस्कृत व्यक्ति ही सदा मिलते रहें, ऐसा हो नहीं सकता।

हर किसी के साथ अनावश्यक उदारता बरतने की भावुकता अंततः बड़ी महँगी पड़ती है। संपर्क क्षेत्र में इसी कारण एक सामान्य वर्गीकरण एवं स्तर के अनुरूप अपने व्यवहार में हेर-फेर अनिवार्य हो जाता है। एक कठिनाई वहाँ आती है, जहाँ अनगढ़ों से वास्ता पड़ता है। ये विचित्र प्राणी अहंकारी व दुराग्रही तो होते हैं, निजी विवेक के सहारे किसी निर्णय पर पहुँचना उनके वश की बात भी नहीं रहती। ऐसों के लिए प्रताड़ना से सुधार अपना काम नहीं, शासनतंत्र का है। ऐसे में टकराव से बचना ही उचित है। अनगढ़ दुराग्रहियों के प्रति वैसा ही रुख रखा जाए जैसा कि मनोरोगियों के प्रति रखा जाता है। न तो क्षमाशील बना जाए और न ही उपचार से विमुख हुआ जाए, लेकिन सत्परामर्श मान ही लिया जाएगा, यह नहीं सोचना चाहिए। अनीति के प्रति असहयोग व्यक्त ही नहीं, चरितार्थ भी करना चाहिए। सच्ची आदर्शवादिता यही है। जब एकाकी साहस जुट पड़ता है तो स्वतः ऐसे व्यक्तित्व पीछे-पीछे खिंचे चले आते हैं। अनगढ़ों में भी परिवर्तन होकर ही रहता है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९८३ पृष्ठ १

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

कठिनाइयाँ आवश्यक भी हैं, लाभदायक भी

आग के बिना न भोजन पकता है, न सरदी दूर होती है और न ही धातुओं को गलाना-ढालना संभव हो पाता है। आदर्शों की परिपक्वता के लिए यह आवश्यक है कि उनके प्रति निष्ठा की गहराई कठिनाइयों की कसौटी पर कसी और खरे-खोटे होने की यथार्थता समझी जा सके। बिना तपे सोने को प्रामाणिक कहाँ माना जाता है ? उसका उपयुक्त मूल्य कहाँ मिलता है ? यह तो प्रारंभिक कसौटी है।

कठिनाइयों के कारण उत्पन्न हुई असुविधाओं को सभी जानते हैं, इसलिए उनसे बचने का प्रयत्न भी करते हैं। हिम्मत का सहारा लेना पड़ता है और उन उपायों को ढूँढ़ना पड़ता है, जिनके सहारे विपत्ति से बचना संभव हो सके। जिन्होंने कठिनाइयों में प्रतिकूलताओं को अनुकूलता में बदलने के लिए पराक्रम नहीं किया, समझना चाहिए कि उन्हें सुदृढ़ व्यक्तित्व के निर्माण का अवसर ही नहीं मिला। कच्ची मिट्टी के बने बरतन पानी की बूँद पड़ते ही गल जाते हैं, किंतु जो देर तक आवे की आग सहते रहे हैं, उनकी स्थिरता, शोभा और उपयोगिता कहीं अधिक बढ़ जाती है।

तलवार पर धार रखने के लिए उसे घिसा जाता है। जमीन से सभी धातुएँ कच्ची निकलती हैं। उनका परिशोधन भट्ठी के अतिरिक्त और किसी उपाय से संभव नहीं। मनुष्य कितना विवेकवान, सिद्धांतवादी और चरित्रनिष्ठ है, इसकी परीक्षा विपत्तियों में से गुजरकर इस तप-तितिक्षा में पककर ही हो पाती है।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८३ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निंदा से विचलित न हों, उसे महत्त्व न दें

हर व्यक्ति का अपना-अपना दृष्टिकोण एवं स्वभाव है। दूसरों के बारे में कोई अपना कुछ भी अभिमत बना सकता है। जीभ अपनी है, किसी को कुछ भी कहने की छूट है। किस-किस को रोका और किस-किस को समझाया जाए। अच्छा यही है कि उथले लोगों द्वारा कहे गए भले-बुरे पर ध्यान न दिया जाए। जितना समय प्रतिवाद में लगाया जाता है, उतना यदि अपने को अधिक सतर्क रखने और मनोबल और भी अधिक बढ़ाने में लगाया जाए तो फिर अपनी स्थिति ही इतनी मजबूत हो जाएगी, जिसमें निंदा और स्तुति करने वाले निराश वापस लौटने लगें। स्मरण रहे निंदक जहाँ हानि पहुँचाने के फेर में रहते हैं, वहाँ प्रशंसकों में से भी अधिकांश की प्रकृति किसी का गर्व फुलाने और बदले में अनुचित लाभ उठाने की होती है। अतएव सतर्क दोनों से ही रहना चाहिए। सतर्कता का अर्थ यहाँ उपेक्षा भी समझा जा सकता है। चाहे कोई हिमालय के समान स्वच्छ क्यों न हो, पर उस पर ऊँचा सिर उठाकर रहने और कठोर घमंडी होने का दोष लगेगा। चाहे कोई समुद्र के समान महान क्यों न हो, पर उस पर खारी होने का कलंक लगेगा। मनुष्यों के सोचने का तरीका कुछ है ही ऐसा कि वे अपनी तराजू से सबको तोलते हैं। क्षुद्रजनों के लिए इस संसार में महानता है ही नहीं। काला चश्मा पहन लेने पर हर वस्तु काली दिखती है। किसी को किसी रंग का चश्मा पहनने से किस प्रकार रोका जाए?

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८३ पृष्ठ ६

परिवर्तन प्रगति की पहली सीढ़ी

प्रगतिशील उन्हें कहा जाता है जो परिवर्तन की प्रक्रिया से भयभीत नहीं होते। वे यह भलीभाँति जानते हैं कि स्थिरता ही जड़ता है, नीरसता है, निष्क्रियता है। जो आगे नहीं बढ़ता, नए चिंतन, नए अनुभवों का स्वागत नहीं करता, वह अपनी ऊर्जा गँवा बैठता है। अग्रगामी को प्रगतिपथ पर बढ़ते समय विगत को भुलाना और आगत को स्वीकार करना पड़ता है, प्रतिकूलताओं से जूझने हेतु मनःस्थिति बनानी पड़ती है। जो गतिशील है, उसमें जीवन है, प्राण है, सफलता की समस्त संभावनाएँ उसमें विद्यमान हैं। जो जीवित होते हुए भी परिवर्तन से डरता है, वह प्राणहीन है, निस्तेज है, मृतक के समान है।

रात्रि और दिन, शीत और ग्रीष्म, हानि और लाभ, मिलने और बिछुड़ने की तरह कई परिवर्तनक्रम व्यक्ति के जीवन में आते हैं। युग बदलते हैं तो सारे समूह को प्रभावित करते हैं। सृजन और विनाश का उनमें युग्म होते हुए भी उनकी परिणति सुखद ही होती है। तूफान जब सारे वातावरण को झकझोर डालता है तो पावस की बूँदें भी साथ ही चली आती हैं।

मनुष्य का व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन ऐसे ही परिवर्तन से भरे अवसरों का समुच्चय है। मानवी गरिमा इसी में है कि आपत्तियों का, चुनौतियों का, परिवर्तनों का प्रगतिपथ पर अग्रगमन हेतु स्वागत किया जाए। जीवन-संग्राम में सफल वही होते हैं जो परिवर्तनों को प्रगति का पर्याय मानकर उन्हें हँसकर स्वीकारते, गले लगाते हैं।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८३ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्यात्म क्षेत्र की सफलता का सुनिश्चि मार्ग

अध्यात्म का एक पक्ष है—योग और तप। दूसरा है—पुण्य और परमार्थ। दोनों की संयुक्त शक्ति से ही समग्र शक्ति उभरती और स्थायी सफलता की पृष्ठभूमि बनती है। एक पहिये की गाड़ी कहाँ चलती है ? एक पैर से लंबी यात्रा करना और एक हाथ से तलवार चलाते हुए युद्ध जीतने का उपक्रम कहाँ बनता है ?

योग का तात्पर्य है—भावना, आकांक्षा, विचारणा को उत्कृष्टता के साथ जोड़ देने वाला चिंतन-प्रवाह। तप का अर्थ है—संयम, अनुशासन, परिशोधन, साहस और अनौचित्य के साथ संकल्पयुक्त संघर्ष। यहाँ उतना बन पड़े तो समझना चाहिए कि आत्मोत्कर्ष का सुनिश्चित आधार खड़ा हो गया। आत्मबल का भंडार भरा और व्यक्ति सर्वसमर्थ, सिद्धपुरुष, महामानव बना।

इस उपार्जित आत्मशक्ति का उपयोग विलास, वैभव, यश, सम्मान के लिए करना निषिद्ध है। उसे ईश्वर के खेत में बीज की तरह बोया और हजार गुना बनाने के लिए सोचा-सँजोया जाना चाहिए। यही है—पुण्य-परमार्थ का मार्ग। साधु-ब्राह्मण, योगी-यती आजीवन लोकमंगल के प्रयोजनों में अपनी क्षमता नियोजित करते रहे हैं। यही है—समग्रता का मार्ग, जो भी साधक इस अध्यात्मतत्त्व दर्शन के सिद्धांत एवं विज्ञान को समझेंगे, अपनाएँगे, वे इस क्षेत्र में चरम सफलता प्राप्त कर सकने में समर्थ होंगे। निराशा तो भ्रमग्रस्त को, भटकाव में उलझने वाले, सस्ते रास्ते ढूँढ़ने वालों को ही हैरान करती है। —*अखण्ड ज्योति-नवंबर १९८३ पृष्ठ १*

www.vicharkrantibooks.org

समष्टि की साधना का तत्त्वदर्शन

प्रभुस्मरण को ब्रह्मविद्या अथवा तत्त्वदर्शन कहते हैं। प्रभु अथवा भगवान को सही शब्द देना हो तो परमात्मा नाम से पुकारा जा सकता है। इस महातत्त्व को आत्मसात करना ही ब्रह्मविद्या का लक्ष्य होता है। परमात्मा की व्यापकता जितनी उसके अंश मनुष्य के समझने व विचार करने योग्य है, उसे समष्टि कहते हैं। यही विराट है। इसी का दिग्दर्शन अर्जुन को, यशोदा को, कौशल्या को ज्ञानचक्षुओं द्वारा कराया गया था। 'स्व' का 'पर' के साथ एकात्मभाव विकसित हो, यही विराट दर्शन का सारतत्त्व है।

उत्कृष्टता परम का दूसरा पर्याप्त है, अर्थात भावना एवं विचारणा में श्रेष्ठता का वरण। सद्भावना, सद्विचारणा, सत्प्रवृत्ति अपनाना, आदर्शों का परिपालन करना ही परमात्मा की उपासना का लक्ष्य है, संक्षेप में भगवान को सत्प्रवृत्तियों का समुदाय कहा जा सकता है। व्यक्तिगत जीवन में गुण, कर्म, स्वभाव में जो जितनी सत्प्रवृत्तियों का समावेश करता है, वह उसी अनुपात में ईश्वरपरायण माना जाता है। समाज में सत्प्रवृत्तियाँ बढ़ाना, दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन हेतु प्रखर पुरुषार्थ करना एवं स्वयं को उस योग्य बनाना, परमात्मा की, विश्वात्मा की, विराट की आराधना ही है।

यदि उस महान के साथ अपने क्षुद्र की घनिष्ठता अभीष्ट है और तदनुरूप बनने के रूप में चरम प्रगति तक पहुँचने की अंत:प्रेरणा उमगे तो फिर पूजा-उपचार से ऊँचे उठकर परमात्मा के संबंध में यथार्थवादी निर्धारण अपनाना चाहिए। यही योग साधना है, युगानुकूल उपासना आराधना है।

—*अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८३ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परिशोधन प्रगति का प्रथम चरण

पत्थर का कोयला एक विशेष स्तर पर पहुँचकर हीरे की उपमा लेता है। यों उसका अनगढ़ प्रयोग करने वाले अँगीठी में जलाकर कमरे में ही रख लेते हैं और भोर होने से पूर्व ही विषैली गैस के कारण मर चुके होते हैं। जबकि हीरा उपलब्ध करने वाले सुसंपन्न भाग्यवान बनते हैं। लोहा, रांगा, सीसा, अभ्रक जैसे सामान्य खनिजों का बाजारू मूल्य तुच्छ होता है, पर उन्हें जब भस्म रसायन बनाकर ग्रहण किया जाता है तो वह संजीवनी बूटी का काम करते और महँगे मूल्य पर बिकते हैं। पीने का पानी भाप बनाकर जब डिस्टिल्ड वाटर बना लिया जाता है, तब उसका गणना औषधियों में होती है, उसे कई रासायनिक क्रियाओं एवं सम्मिश्रणों में प्रयुक्त किया जाता है।

मानव समुदाय पर भी यही बात लागू होती है। जब उन्हें सुसंस्कारिता की साधना द्वारा महान बना लिया जाता है तो फिर वे ऋषि-देवता कहाते, अपना नाव पर चढ़ाकर असंख्यों को पार कराते हैं। यह स्तर को निखारने और ऊँचा उठाने की महत्ता है कि निरुपयोगी धूलि भी इस विशेष प्रक्रिया से गुजरने के उपरांत अणुशक्ति बनती और अपनी प्रचंड क्षमता का परिचय देती है। हर व्यक्ति जन्मता तो साधारण मनुष्य के नाते ही है। कालांतर में उसकी जीवन साधना ही उसे वह श्रेय दिलाती है जिसे मानवी गरिमा के अनुरूप माना जाता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८४ पृष्ठ १

जीवन बहुमूल्य है, इसे व्यर्थ न गँवाएँ

शरीर, मन और बुद्धि के प्रत्यक्ष पक्षों एवं उनकी सामर्थ्यों का जितना परिचय मिला है, उसी के आधार पर मनुष्य का मूल्यांकन किया गया है, पर अधिकांश परतें अभी भी अविज्ञात हैं जो प्रत्यक्ष की तुलना में कहीं अधिक सामर्थ्यवान हैं। जिस दिन उन पक्षों का रहस्योद्घाटन होगा उस दिन मनुष्य अनुभव करेगा कि तत्त्ववेत्ता ऋषियों की तरह उक्ति अक्षरश: सही है—मनुष्य से महान एवं श्रेष्ठ इस संसार में और कुछ भी नहीं।''

जीवन का यथार्थ मूल्यांकन वस्तुत: वही कर सकते हैं जो उसकी गरिमा से परिचित हों। पशु-पक्षियों की दृष्टि में बहुमूल्य पदार्थों की भी कीमत दो कौड़ी के बराबर होती है। जो अविकसित एवं पिछड़े हैं उनके लिए मनुष्य जीवन कुछ विशेष महत्त्व नहीं रखता। निरुद्देश्य भटकने पर प्रजनन जितने प्रयोजनों में जीवन गँवा देने, मरने और मारने पर उतारू साधारण व्यक्ति जीवन का मूल्य कहाँ समझते हैं ? वे तो उस नासमझ की तरह हैं, जिसे अनायास ही चंदन का उद्यान हाथ लग गया था और वह उससे अनजान बना उसे कोयला बनाकर बाजार में कौड़ी के मोल बेचता रहा है। अधिकांश व्यक्ति आत्मगरिमा से अपरिचित होने से अपनी सामर्थ्यों को कोयला बनाते हैं और हाथ मलते हुए इस दुनिया से पश्चात्ताप के आँसू बहाते चल बसते हैं। अधिक अच्छा हो कि जीवन को जैसे-तैसे काटने की अपेक्षा उसके स्वरूप पर गंभीरता से विचार कर लिया जाए।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८४ पृष्ठ २६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृश्य से परे विचारों की विलक्षण दुनिया

जिन विचारों का आह्वान किया जाएगा, उसी के अनुरूप विचार जगत से अनुदान मिलेगा। इन दिनों सर्वत्र बोलबाला निषेधात्मक, विध्वंसक विचारों का हो रहा है। फलस्वरूप सूक्ष्म विचार जगत न केवल उसी के अनुरूप प्रेरणाएँ संप्रेषित कर रहा है वरन बारंबार ध्वंस की आवृत्ति पाकर अपने उस स्तर को मजबूत बना रहा है। यह संकट दूर होने के स्थान पर और भी घनीभूत होता जा रहा है। उसे परिपोषण मानवी चिंतन द्वारा विभिन्न अभिव्यक्तियों के माध्यम से सतत मिल भी रहा है। ये परिस्थितियाँ उलट भी सकती हैं, यदि सामूहिक चिंतन को मोड़ा-मरोड़ा जा सके।

विचारों के आधार पर ही मानवी व्यक्तित्व बनता है। तदनुरूप आचरण प्रस्तुत होता है, मूलतः मानव दैवी सत्ता का अंश है। प्रकृति आसुरी तत्त्वों से युक्त है। सत्ता में दोनों का ही अंश एवं प्रभाव है। जिसका पलड़ा भारी होगा उधर ही मनुष्य का रुझान होगा। उसी के विचारों का चिंतन होगा तथा विचार जगत से भी उसी अनुरूप आदान-प्रदान चलेगा। वस्तुतः मानव की संकल्पशक्ति में गजब का बल है। वह पतन की ओर ढकेलने वाले मन-मस्तिष्क पर छाए निषेधात्मक विचारों के परिकर को एक झटके से तोड़ सकती है। यह संभव हो सके तो विचार जगत से श्रेष्ठ विचारों के आदान-प्रदान का अविराम क्रम आरंभ हो सकता है। जिसके फलस्वरूप वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है, जो पदार्थ जगत से भी करतलगत कर सकना संभव नहीं हो सका है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८४ पृष्ठ ७

विस्मृति की मूर्च्छना

बनाने और सँभालने वाले को अपनी वस्तु से स्वभावतः अधिक प्रेम होता है। हम मकान बनाते हैं, उद्यान में सुंदर पुष्प लगाते हैं, चित्र बनाते हैं, लेख लिखते हैं तो उनसे वैयक्तिक लगाव होना एक सहज प्रक्रिया है। ईश्वर ने, सृजेता ने हमें बनाया हैं, सँभाला है और हमारे भविष्य का सारा दायित्व उसी के कंधों पर है। ऐसी स्थिति में उसका हमारे प्रति प्रेम होना कोई अनुग्रह या संयोग नहीं, विधि-व्यवस्था के अनुकूल एक सहज क्रम है।

हम परमेश्वर की संतान हैं। उसे यदि प्राणधारी भी माना जाए तो यह भी मानना पड़ेगा कि वह सर्वश्रेष्ठ, सुविकसित प्राणी है। यदि ऐसा न होता तो मनुष्य जैसी सर्वसाधन संपन्न संतति का जन्म कैसे होता? जन्म देकर ही कोई सहृदय अभिभावक अपनी संतान को भटकने हेतु नहीं छोड़ देता। फिर परमात्मा हमसे विमुख कैसे हो सकता है? जब संतान के प्रति प्रेम—सृष्टि का नियम है तो परमेश्वर का प्यार अपनी सर्वोत्तम कृति मानव के लिए क्यों नहीं होगा? आस्तिकता का, ईश्वरनिष्ठा का यही तत्त्वदर्शन है। हम भूल जाते हैं कि हम उस परब्रह्म की सृष्टि के उस विराट परिवार के अंग है, जिसकी सुरक्षा देखभाल का सारा दायित्व उसने अपने कंधों पर ले रखा है। विस्मृति की यह मूर्च्छना ही है जो हमें स्वयं को पहचानने से, उत्कर्ष और आनंद की उपलब्धियों से वंचित कर देती है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९८४ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन को सुधारा-सधाया जा सकता है

मन एक शक्तिशाली किंतु अनगढ़ तंत्र है, उसे जिस प्रकार सिखाया जाए उसमें आरंभिक आना-कानी के उपरांत आरोपित ढाँचे में ढलने के लिए सहमत हो जाता है। सरकस में काम करने वाले जानवर इसके उदाहरण हैं। वे अपनी अभ्यस्त आदतें छोड़कर ऐसे करतब करने लगते हैं मानो उनने अपनी बिरादरी से अथवा परंपरा से रिश्ता तोड़कर नए स्तर का स्वभाव एवं अभ्यास अपना लिया हो। ऐसे ही आश्चर्यजनक परिवर्तन मनुष्यों के स्वभावों में भी होते रहते हैं। कितने ही भली परंपरा छोड़कर बुराई और बुरी आदतें छोड़कर भलाई की नीति अपनाते देखे गए हैं। इसका आधारभूत कारण एक ही है कि मनुष्य फौलाद पत्थर का नहीं, मोम जैसी मुलायम वस्तु का बना हुआ है, जिसे आत्मचिंतन, संगति-प्रभाव एवं परिस्थितियों के दबाव से सरलतापूर्वक बदला जा सकता है।

दूरदर्शी विवेकशील अपनाकर इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि किस स्तर की मन:स्थिति उपयोगी सिद्ध होगी? उसी स्तर का अध्ययन, सान्निध्य, मनन-चिंतन आरंभ कर दिया जाए तो क्रमश: मनोभूमि निर्धारित ढाँचे में ढलने लगेगी और अभ्यस्त ढर्रा बदलने लगेगा। परायों को, अनगढ़ों को जब प्रयत्नपूर्वक सुधारा, सिखाया जा सकता है तो कोई कारण नहीं कि अपना मन और स्वभाव अवांछनीय प्रवाह में बहने से रोककर उपयोगी दिशाधारा अपनाने के लिए सहमत न किया जा सकेगा।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९८४ पृष्ठ १९

बुद्धिमत्ता सर्वोपरि संपदा

आँखें मूँदकर दौड़ने वाले ठोकर खाते और गिरकर दाँत तोड़ लेते हैं। बुद्धिमानी इसमें हैं कि परिणति को ध्यान में रखते हुए उस राह पर चला जाए जो मर्यादापालन के लिए बाधित करने के कारण आरंभ में तो अनख जैसी लगती है, पर पीछे चिरकाल तक सुखद परिणामों का आनंद देती रहती है।

तृष्णा के आवेश में संचय की मात्रा का ध्यान नहीं रहता और वैभव बटोरने में औचित्य की मर्यादा गँवा दी जाती है। झरने का जल तभी तक यशस्वी-उपयोगी रहता है, जब तक वह बहता रहता है। एक जगह टिकने की नीति अपनाते ही वह संचय समीपवर्ती क्षेत्र को पानी से डुबो देता है या फिर सतह ऊँची उठने के कारण प्रवाह का स्रोत ही रुक जाता है। धन के संबंध में भी यही बात है। उचित उपार्जन और हाथोंहाथ सदुपयोग बन पड़ने पर ही उसकी सार्थकता है। जहाँ अनावश्यक संचय होगा, वहीं अगणित विकृतियाँ खड़ी करेगा और ईर्ष्या, द्वेष भरे ऐसे विग्रह खड़े करेगा जिनसे प्राणसंकट खड़ा हो चले। संग्रही घाटे में ही रहता है। उसे जिन उत्तराधिकारियों को हस्तांतरित किया जाता है, वे भी उसे पाकर सुखी नहीं रहते।

जीवन ईश्वरप्रदत्त बहुमूल्य संपदा है। इसे प्राप्त तो सभी करते हैं, पर उसका सदुपयोग नहीं जानते। जो इन उलझनों को सुलझा सके उसी को बुद्धिमान कहना चाहिए, भले ही लोगों की दृष्टि में वह अनपढ़ या देखने में अनगढ़ ही क्यों न हो? *—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८४ पृष्ठ ५२*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परमात्मा की आनंदमयी सत्ता

अंत: से फूट पड़ने वाला उल्लास ही आध्यात्मिकता का प्रकाश है। यह सदैव उन सभी के मुखमंडल पर चमकता देखा जा सकता है, जिन्हें आत्मज्ञान हो जाता है। आत्मा का सहज रूप परमसत्ता की तरह आनंदमय है। इसीलिए विद्वानों ने कहा है—आध्यात्मिकता का ही दूसरा नाम प्रसन्नता है। जो प्रफुल्लता से जितना दूर है, वह ईश्वर से भी उतना ही दूर है । वह न आत्मा को जानता है और न परमात्मा की सत्ता को। सदैव झल्लाने, खीझने, आवेशग्रस्त होने वालों को मनीषियों ने नास्तिक बताया है।

संसाररूपी इस जीवन-समर में जो स्वयं को आनंदमय बनाए रखता है, दूसरों को भी हँसाता रहता है, वह ईश्वर का प्रकाश ही फैलाता है। यहाँ जो कुछ भी है, आनंदित होने, दूसरों को हँसाने के लिए ही उपजाया गया है। जो कुछ भी बुरा या अशुभ है, वह मनुष्य को प्रखर बनाने के लिए विद्यमान है। जीवन में समय-समय पर आने वाली प्रतिकूलताएँ मनुष्य का साहस बढ़ाने, धैर्य की नींव मजबूत करने, शक्ति-सामर्थ्य को विकसित करने ही आती हैं। जो इनसे डरकर रो पड़ता है, कदम पीछे हटाने लगता है, उसकी आध्यात्मिकता पर भला कौन विश्वास करेगा? जिंदगी सरल तो हो, पर सरस एवं प्रफुल्लता से भरी भी। उसमें संघर्ष का भी स्थान होना चाहिए क्योंकि इसके बिना दुनिया में कोई सफलतापूर्वक जी नहीं सकता। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८४ पृष्ठ १*

संपदा को रोकें नहीं

परमात्मा के अनंत वैभव से, विश्व में कमी किसी बात की नहीं। भगवान आपके हैं और उसके राजकुमार के नाते सृष्टि की हर वस्तु पर आपका समग्र अधिकार है। उसमें से जब जिस चीज की जितनी आवश्यकता हो, उतनी लें और आवश्यकता निबटते ही अगली बात सोचें। संसार में सुखी और संपन्न रहने का यही तरीका है।

बादल अपने, नदी अपनी, पहाड़ अपने, वन उद्यान अपने। इनमें से जब जिसके साथ रहना हो, रहें। जिसका जितना उपयोग करना हो, करें। कोई रोक-टोक नहीं है। दु:खदाई तो संग्रह है। नदी को रोककर यदि अपनी बनाना चाहेंगे और किसी दूसरे को पास न आने देंगे, उपयोग न करने देंगे तो समस्या उत्पन्न होगी। एक जगह जमा किया हुआ पानी अमर्यादित होकर बाढ़ के रूप में उफनने लगेगा और आपके निजी खेत-खलिहानों को ही डुबो देगा। बहती हुई हवा कितनी सुरभित है, पर उसे आप अपने ही पेट में भरना चाहेंगे तो पेट फूलेगा, फटेगा। औचित्य इसी में है कि जितनी जगह फेंफड़े में है, उतनी ही सांस लें और बाकी हवा दूसरों के लिए छोड़ दें। मिल-बाँटकर खाने की यह नीति ही सुखकर है। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८५ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भक्त के लिए ईश्वर का उपहार

ईश्वर का सबसे प्यारा बेटा है 'दुःख'। इसे सँभालकर रखने की जिम्मेदारी ईश्वर अपने भक्तों को ही सौंपता है। कष्ट को मजबूरी की तरह कई लोग सहते हैं, किंतु ऐसे कम हैं जो इसे सुयोग मानते हैं और समझते हैं कि आत्मा की पवित्रता के लिए इसे अपनाया जाना आवश्यक है।

जो संपन्न हैं, जिन्हें वैभव का उपयोग करने की आदत है, उन्हें भक्तिरस का आनंद नहीं मिल सकता। उपयोग की तुलना में अनुदान कितना मूल्यवान और आनंददायक होता है, जिसे यह अनुभव हो गया, वह देने की बात निरंतर सोचता है। अपनी संपदा, प्रतिभा और सुविधा को किस काम में उपयोग करूँ, इस प्रश्न का भक्त के पास एक ही सुनिश्चित उत्तर रहता है—दुर्बलों को समर्थ बनाने, पिछड़ों को बढ़ाने और गिरों को उठाने के लिए। इस प्रयोजन में अपनी विभूतियाँ खरच करने के उपरांत संतोष भी मिलता है और आनंद भी होता है। यही है भगवान की भक्ति का प्रसाद जो इस हाथ दे, उस हाथ ले के हिसाब से मिलता रहता है।

भक्त की परीक्षा पग-पग पर होती है। खरे सोने को कसौटी पर कसने और आग पर तपाने में उस जौहरी को कोई एतराज नहीं होता भक्त को इसी रास्ते से गुजरना पड़ता है। उसे दुःख प्यारे लगते हैं क्योंकि वे ईश्वर की धरोहर हैं और इसलिए मिलते हैं कि आनंद, उल्लास, संतोष और उत्साह में क्षणभर के लिए भी कमी न आने पाए।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८५ पृष्ठ २

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

याचना नहीं, प्रार्थना

भगवान से प्रार्थना कीजिए, याचना नहीं। आपकी स्थिति ऐसी नहीं कि कमियों और कमजोरियों के कारण किसी का मुँह ताकना पड़े और याचना के लिए हाथ फैलाना पड़े।

प्रार्थना कीजिए कि आपका प्रसुप्त आत्मबल जाग्रत हो चले। प्रकाशदाता दीपक जो विद्यमान है, वह टिमटिमाए नहीं वरन रास्ता दिखाने की स्थिति में बना रहे। मेरा आत्मबल मुझे धोखा न दे। समग्रता में न्यूनता का भ्रम न होने दे।

जब परीक्षा लेने और शक्ति निखरने संकटों का झुंड आए, तब मेरी हिम्मत बनी रहे, मनोबल बना रहे और कठिनाइयों से जूझने का उत्साह बना रहे। लगता रहे कि ये बुरे दिन अच्छे दिनों की पूर्व सूचना देने आए हैं। जब अच्छे दिन सदा नहीं रहे तो बुरे दिन भी सदा नहीं रहेंगे। सुख का आभास भी तब ही होता है जब कभी-कभी कुछ समय के लिए दुःख भी आता रहे। बिना दुःख के सुख का भी एहसास नहीं होता। दुःख हमारे मनोबल, आत्मबल और साहस की परीक्षा लेने आते हैं। हमें इस परीक्षा में सफलता मिले, ऐसी प्रार्थना भगवान से करते रहना चाहिए। अपने अंदर साहस बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रार्थना कीजिए कि हताश न हों, लड़ने की सामर्थ्य को पत्थर पर घिसकर धार रखते रहें। योद्धा बनने की प्रार्थना करनी है, भिक्षुक बनने की याचना नहीं। जब मेरा भिक्षुक गिड़गिड़ाए तो उसे दुत्कार देने की प्रार्थना भी भगवान से करते रहे हैं।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८५ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाली हूजिए, आप लबालब भर जाएँगे

यह संसार दर्पण की तरह है, इसमें अपना ही चेहरा हर किसी के चेहरे में झाँकता हुआ देख सकते हैं। जैसे भी हम भले-बुरे कुछ हैं वैसी ही मुखाकृति दूसरों की भी दिखाई देगी। यहाँ क्रिया की प्रतिक्रिया होती रहती है। कुएँ या गुंबज की तरह प्रतिध्वनि सुनने को मिलती रहती है। जैसा भी कुछ हम अपने मुँह से बोलते हैं, उलटकर वैसी ही आवाज सुनते हैं। हमारा चिंतन एवं व्यवहार यदि यह है कि हमें किसी के लिए त्याग न करना पड़े, दूसरे ही सदा हमारी सेवा-सहायता के लिए दौड़े आएँ, सदा सद्भावना व्यक्त करते रहें और हम अपनी उपेक्षावृत्ति पर ही कायम रहें तो समझना चाहिए कि यह मनोरथ कभी पूरा न हो सकेगा।

रबड़ की गेंद जिस दिशा में जितने जोर से मारी जाती है, वहाँ से वह ठीक उलटी दिशा में उतने ही जोर से वापस आती है। देखना यह है कि हम दूसरों के साथ कैसा रवैया अपनाते और कैसा व्यवहार करते हैं ? उसकी प्रतिक्रिया ठीक वैसी ही होगी।

देना घाटे का सौदा नहीं है। सत्पात्रों के हाथ हमारी सेवा, सद्भावना एवं सहायता पहुँचती है तो निश्चित रूप से वह अनेक गुनी होकर वापस लौटती है। हमारी उदारता भी ऐसी ही है, यदि हम अपने को खाली करते रहेंगे तो बदले में ईश्वरीय व्यवस्था हमें उसी अनुपात से भर देगी। खाली तालाब चाहे उथला हो या गहरा वर्षा आते ही लबालब भर जाता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८५ पृष्ठ १६*

आत्मा और परमात्मा की एकता

मनुष्य शरीर, इस निखिल ब्रह्मांड का छोटा स्वरूप है। इस काया को व्यापक प्रकृति की अनुकृति कहा गया है। विराट का वैभव इस पिंड के अंतर्गत बीजरूप से प्रसुप्त स्थिति में विद्यमान है। कषाय-कल्मषों का आवरण चढ़ जाने से उसे नर-पशु की तरह जीवनयापन करना पड़ता है। यदि संयम और निग्रह के आधार पर इसे पवित्र और प्रखर बनाया जा सके तो इसी को ऋद्धि-सिद्धियों से ओत-प्रोत बनाया जा सकता है। कोयला ही हीरा होता है। पारे से मकरध्वज बनता है। यह अपने आप को तपाने का, तपश्चर्या का चमत्कार है।

जीवात्मा परमात्मा का अंशधर ज्येष्ठ पुत्र, युवराज है। संकीर्णना के भव-बंधनों से छूटकर वह **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** की मान्यता परिपुष्ट कर सके, **'वसुधैव कुटुंबकम्'** की भावना परिपक्व कर सके तो इसी जीवन में स्वर्ग और मुक्ति का रसास्वादन कर सकता है। जीव को ब्रह्म की समस्त विभूतियाँ हस्तगत करने का सुयोग मिल सकता है।

हम काया को तपश्चर्या से तपाएँ और चेतना को परमसत्ता में योग द्वारा समर्पित करें तो नर को नारायण, पुरुष को पुरुषोत्तम, क्षुद्र को महान बनने का सुयोग निश्चित रूप से मिल सकता है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९८५ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दूरदर्शिता—एक बहुत बड़ा सौभाग्य

जीवन-संपदा सबको प्राय: समान स्तर की प्राप्त हुई है। जो इसका मूल्य समझते हैं, वे इसके सदुपयोग का श्रेष्ठतम उपाय सोचते हैं। ऐसे ही लोग महामानवों में गिने जाते हैं। ऐसी कार्यपद्धति अपनाते हैं जिसका अनुकरण करके असंख्यों व्यक्ति धन्य बनते हैं। यह वही लोग हैं जिनने दूर का देखा है। भविष्य को उज्ज्वल बनाने वाला खेत बोया है। जिसने बोया है, उसने काटा है और कोठे भरकर मालामाल बना है।

हीरा को भी काँच समझते हैं और कौड़ी मोल बेच देते हैं। इन्हें अदूरदर्शी कहा जाएगा। जो भविष्य के लिए सुंदर सपने नहीं देखता, भावी जीवन को शानदार बनाने के लिए जो कीमत चुकानी चाहिए, उसे नहीं चुकाते, जिन्हें सिर्फ आज दीखता है और उसे हलका-फुलका बिता देने की इच्छा रखते हैं, वे आते हैं, रोटी खाते हैं, दिन गुजारते हैं और ज्यों-त्यों करके सांसें पूरी कर लेते हैं।

अंधा होना दुर्भाग्य है। अंधे दया के पात्र समझे जाते हैं, पर उन्हें क्या कहा जाए जिनके नेत्रगोलक तो वही हैं, पर दूरदर्शी आँखें एक प्रकार से गड़बड़ा गई हैं। असल में नाक के पास वाली आँखों का उतना महत्त्व नहीं है, ये तो पशु-पक्षियों के भी होती हैं। मनुष्य की विशेष आँखें वे हैं, जिनके सहारे वह दूरदर्शी कहलाता है और बुरी संभावना से बचकर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करता है। ये आखें जिसकी सही हैं, समझना चाहिए. वह सौभाग्यशाली है। *—अखण्ड ज्योति-मई १९८५ पृष्ठ १०*

विधाता के बहुमूल्य उपहार

एक सच्चे मित्र की तरह जीवन का हर प्रभात तुम्हारे लिए अभिनव उपहार लेकर आता है। वह चाहता है कि आप उसके उपहारों को उत्साहपूर्वक ग्रहण करें। उससे उज्ज्वल भविष्य का शृंगार करें। उसकी प्रतीक्षा रहती है कि कब नया दिन आए और कब इससे भी अच्छा उपहार भेंट करें। साथ ही जो दिया गया है, उसका महत्त्व समझें और आदरपूर्वक ग्रहण करें।

जो दिया गया है उसका मूल्य नहीं समझा जाता और कूड़े-करकट की तरह फेंक दिया जाता है तो निराश होकर लौट जाता है। बार-बार अवज्ञा होने पर वह पुन: अपरिचित राही की तरह आता है और निराश होकर लौट जाता है।

ईश्वर ने मनुष्य को अपार संपदाओं से भरा-पूरा जीवन दिया है, पर वह पोटली बाँधकर नहीं, एक-एक खंड के रूप में गिन-गिनकर। नया खंड देने से पहले पुराने का ब्योरा पूछता है कि उसका क्या हुआ ? जो उत्साह भरा ब्योरा बताते हैं, वे नए मूल्यवान खंड पाते हैं। दानी मित्र तब बहुत निराश होता है, जब देखता है कि उसके पिछले अनुदान धूल में फेंक दिए गए।

—अखण्ड ज्योति-जून १९८५ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानवी क्षमता का कोई पारावार नहीं

मनुष्य की क्षमता असीम है, पर वह विकसित तभी होती है, जब मनुष्य अपने संकल्प और प्रयास को ऊँचा उठाता चले। उसके उत्साह और साहस में कमी न पड़े।

दूसरों के लिए आदर्शवादिता का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत करने में भूतकाल के त्यागी-तपस्वी ही चरमोत्कर्ष का स्पर्श करते रहे हैं उससे आगे बढ़ने और अपने को महान सिद्ध करने की अब अधिक गुंजाइश नहीं रही, यह सोचना व्यर्थ है। स्वयं को कठिनाई में डालकर दूसरों की सेवा-साधना में निरत रहने वाले वर्तमान उदाहरण यही बताते हैं।

जहाँ साधनहीनों ने अपने सद्गुणों और श्रेष्ठता सिद्ध करने वाले प्रयासों के आधार पर उन्नति के उच्च शिखर तक पहुँचने में सफलता प्राप्त की है, वहाँ ऐसे लोग भी कम नहीं है जिन्हें सब प्रकार की सुविधा, अनुकूलता होते हुए भी अपने आलस्य-प्रमाद में पूर्वजों की संपदा और ख्याति को भी धूलि में मिला दिया और दूसरों की सलाह और सहायता मिलने पर भी पतन-पराभव के गर्त्त में गिरते चले गए। इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है। उसकी संभावनाएँ महान हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-जून १९८५ पृष्ठ ३८

आत्मा की आवाज

जब कभी ऐसा आभास हो कि आपको किसी ने आवाज दी है, किंतु आस-पास खोजने पर भी किसी पुकारने वाले का पता न चले तो निश्चित रूप से समझ लीजिए कि वह अपनी ही अंतरात्मा की पुकार है और उसका एक ही तात्पर्य है कि मुझे खोज, देख और पाने का प्रयत्न कर। ढूँढ़ने का अर्थ है— यह खोजना कि हम अपने जीवनलक्ष्य के प्रति ईमानदार हैं या नहीं। यदि नहीं तो जहाँ भूल हो रही है, उसे अविलंब सुधारा जाए।

वह पुकार जागरूकता के लिए है। उपेक्षा और प्रमाद जो जिस-तिस तरह करते रहे हैं, वैसे आगे न करें। जीवन की चौकीदारी की जाए और भीतर तथा बाहर से जिन शत्रुओं के आक्रमण होते रहते हैं, उनकी रोकथाम अविलंब की जाए।

इस आवाज का तात्पर्य है—बहुमूल्य अवसर धीरे-धीरे हाथ से निकलता चला जा रहा है। क्रम ऐसे ही चलता रहा तो वह सब कुछ गुम हो जाएगा, जो देने वाले ने बड़ी उदारतापूर्वक बहुमूल्य रत्नराशि के रूप में किसी विशेष प्रयोजन के लिए दिया है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८५ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वैभव की कमी नहीं, पर आवश्यकता जितना ही समेटें

पक्षियों को देखिए! पशुओं को देखिए! वे प्रात: से लेकर सायंकाल तक उतनी खुराक बीनते चलते हैं, जितनी वे पचा सकते हैं। पृथ्वी पर बिखरे चारे-दाने की कमी नहीं। सबेरे से शाम तक घाटा नहीं पड़ता, पर लेते उतना ही हैं जितना मुँह माँगता और पेट सँभालता है। यही प्रसन्न रहने की नीति है।

जब उन्हें स्नान का मन होता है, तब इच्छित समय तक स्नान करते हैं। उतना ही बड़ा घोंसला बनाते हैं, जिसमें उनका शरीर समा सके। कोई इतना बड़ा नहीं बनाता, जिसमें समूचे समुदाय को बिठाया, सुलाया जाए।

पेड़ पर देखिए! हर पक्षी ने अपना छोटा घोंसला बनाया हुआ है। जानवर अपने रहने लायक छाया का प्रबंध करते हैं। वे जानते हैं कि स्रष्टा के साम्राज्य में किसी बात की कमी नहीं। जब जिसकी जितनी जरूरत है, आसानी से मिल जाता है। फिर संग्रह की अनावश्यक जिम्मेदारी किसलिए उठाई जाए? आपस में लड़ने का झंझट क्यों मोल लिया जाए? हम इतना ही लें, जितनी तात्कालिक आवश्यकता है।

ऐसा करने से हम सुख-शांतिपूर्वक रहेंगे भी और उन्हें भी रहने देंगे जो उसके हकदार हैं। हमें अपनी रोटी मिल-बाँटकर खानी चाहिए ताकि हमारे सभी भाई सुखी रह सकें।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८५ पृष्ठ १

प्रतिभा—जागरूकता और तत्परता की परिणति

असावधानी जीवन के हर क्षेत्र में अप्रत्याशित संकट उत्पन्न करती और अपने यजमान को पग-पग पर नीचा दिखाती, धूलि चटाती रहती है। जीवन विकास के क्षेत्र में इसका प्रभाव और भी अधिक होता है। अपने दोष-दुर्गुणों के प्रति, उनके कारण होने वाली हानियों के प्रति उपेक्षा बरतने वाले लोग अंतत: ऐसे संकट में जा फँसते हैं जिससे निकलने की न सूरत बचती है और न हिम्मत रहती है। नशेबाजी की तरह ही असावधानी भी एक प्रकार की धीमी आत्महत्या है जिससे विनाशक्रम रहता तो धीमा है पर होता है निश्चित रूप से।

प्रगति के लिए किन सद्गुणों को अपनाना आवश्यक है? अवगति से निकलने के लिए किन दुर्गुणों को हटाना अनिवार्य है? इसे न देखा-सोचा जाए, जैसा कुछ भी ढर्रा चल रहा है वैसा ही चलने दिया जाए तो प्रगति की आशा रखना तो दूर, वर्तमान दुर्गति से उबरना भी संभव न हो सकेगा।

जागरूकता उस सत्प्रवृत्ति का नाम है जो प्रगतिशीलों से प्रेरणा लेकर विकास-पथ पर चलने की उमंग उत्पन्न करती है, उसके लिए आत्मविश्वास, साहस और पुरुषार्थ जगाती है। इतना ही नहीं उत्कर्ष-पथ पर चलने में स्वभावत: आते रहने वाले अवरोधों से जूझने का शूरवीरों जैसा अविचल धैर्य और संतुलन भी प्रदान करती है। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८५ पृष्ठ ११*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आँगन में विद्यमान कल्पवृक्ष

देवलोक में अवस्थित उस कल्पवृक्ष की मान्यता सही नहीं है जिसके नीचे बैठकर मनुष्य अपनी आवश्यकता पूर्ण करता है। यदि वह कल्पना सही हो भी तो तुम किस प्रकार स्वर्ग पहुँच सकोगे और कैसे उसके सान्निध्य में बैठकर अभीष्ट लाभ उठा सकोगे?

एक दूसरा वास्तविक कल्पवृक्ष है जो तुम्हारे समीप भी है और मान्यताओं के अनुरूप भी। अच्छा हो उसी के समीप जाओ और निश्चित रूप से अपना मनोरथ पूरा करो। वह भूलोक का कल्पवृक्ष तुम्हारा व्यक्तित्व है। धूलि-धूसरित होने के कारण ही वह ठीक से परिलक्षित नहीं होता। उस पर जमी मैल की परत बुहारो और देखो कि वह कितना सुंदर और कितना उदार है?

व्यक्तित्व पर चढ़ी दुर्गुणों की मलिनता ही उसे निरर्थक स्तर का बनाए रहती है और किसी काम नहीं आती। यहाँ तक कि उसका भार वहन भी कठिन पड़ता है। परिष्कृत व्यक्तित्व जिसमें मानवी गरिमा के उपयुक्त गुण, कर्म और स्वभाव का बाहुल्य हो। सन्मार्ग पर चलने वालों के लिए घर में पधारे देवता के समान है। उसकी सज्जा और अर्चना करके तुम उस स्थिति में पहुँच सकोगे जो प्रगति और शांति के दोनों ही वरदान बिना माँगे प्रदान करती है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८५ पृष्ठ १

विचारणा की पारसमणि

स्रष्टा ने जन्म के समय ही एक पारसमणि तुम्हें प्रदान की है और वह ऐसी है जिसके आजीवन छिनने या गुमने का कोई खतरा नहीं है। इस पारसमणि का नाम है—विचारणा। जो मस्तिष्क की बहुमूल्य पिटारी में इस प्रकार सुरक्षित रखी रहती है, जहाँ किसी चोर की पहुँच न हो सके। इसके रहते तुम्हें किसी पराभव का संकट आने की आशंका नहीं है।

विचार व्यर्थ के मनोरंजन समझे जाते हैं, पर वस्तुत: उनकी सृजनात्मक शक्ति अनंत है। वे एक प्रकार के चुंबक हैं जो अपने अनुरूप परिस्थितियों को कहीं से भी खींच बुलाते हैं। साधन किसी को उपहार में नहीं मिले और यदि मिले हों तो टिके नहीं। अपना पेट ही आहार पचाता और जीवित रहने योग्य विचार-प्रवाह ही व्यक्ति का स्तर विनिर्मित करता है। क्षमताएँ उसी के आधार पर उत्पन्न होती हैं। पराक्रम के प्रवाह को दिशाधारा उसी से मिलती है।

विचारणा द्वारा विनिर्मित व्यक्तित्व और पराक्रम ही वह अवसर प्रदान करते हैं, जैसा कि सोचा और चाहा गया था। विचारों की सृजनात्मक क्षमता समझना और उन्हें सही दिशा में गतिशील करना ही वह सौभाग्य है, जिसे उपलब्ध पारसमणि प्राप्त कराती रहती है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८६ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन को कुसंस्कारी न रहने दिया जाए

मस्तिष्क में जो भी विचार उठें, उनका तत्काल परीक्षण किया जाना चाहिए कि वे नीतियुक्त, उपयोगी और रचनात्मक हैं या नहीं। बेतुकी कल्पनाएँ, इच्छाएँ उठती हों, तो उनकी जड़ आरंभ से ही काट देनी चाहिए। गाड़ी एक कदम आगे नहीं बढ़ने देनी चाहिए। उसके स्थान पर सामयिक समाधान एवं अभ्युत्थान की बात सोचने में उसे जुटा दिया जाना चाहिए। दूसरी बात सुनियोजित दिनचर्या बनाने की है। समय को हीरे-मोतियों के समान मानकर उसका एक क्षण भी बरबाद नहीं होना चाहिए। उठने से लेकर सोने तक की दिनचर्या ऐसी बनानी चाहिए जिससे व्यक्तित्व का स्तर निखरता हो और योग्यता का, प्रगति का विस्तार होता हो। पैसे के संबंध में प्रदर्शन और कौतुक-कुतूहल में एक पाई भी व्यर्थ नहीं जानी चाहिए। खरच करने से पहले अनेक बार विचारा जाए कि यह नितांत आवश्यक है या नहीं। पैसा और श्रम एक ही बात है। श्रम को निरर्थक प्रयासों में लगाना जिस प्रकार दु:खद परिणाम प्रस्तुत करता है, उसी प्रकार धन का अपव्यय भी बदले में विपत्ति लेकर वापस लौटता है। असंयम का अर्थ है जीभ का चटोरपन और यौनाचार के प्रति अनावश्यक आकर्षण। चटोरपन शरीर को विपत्ति में फँसाता है और कामुकता मस्तिष्क को खोखला करती है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८६ पृष्ठ ८

तत्त्वज्ञान और सेवा साधन

संगीत, मल्लविद्या, चिकित्सा आदि अनेकों विषय ऐसे हैं जिनके सिद्धांत रट लेने भर से काम नहीं चलता उनका प्रयोग और अभ्यास भी करना पड़ता है। पानी में घुसे बिना तैरने में कौन निष्णात बन सकता है?

अध्यात्म के सिद्धांतों को पढ़ना, सुनना और समझना अच्छी बात है। उससे दिशाबोध होता है, पर मंजिल तो चलने से ही पार होती है। अध्यात्म का अर्थ है—अंतर्मुखी होना। अपने भीतर भरी हुई देव विभूतियों को जाग्रत और जीवंत करना। देवता की उपासना साधक को देवता बना सके, उन जैसी विशेषताएँ उत्पन्न कर सके, तभी उस प्रयास की सार्थकता है।

परमार्थपरक पुण्य-प्रयोजन पूरा करने में संलग्न होना, वह उपाय-उपचार है, जिससे अध्यात्म के तत्त्वज्ञान को कार्यरूप में परिणत करने का अवसर मिलता है और उसी अभ्यास के बलबूते तत्त्वज्ञान को कर्म में विकसित होने का अवसर मिलता है। यही सार्थक अध्यात्म है।

आग का प्रज्वलित रहना ईंधन की व्यवस्था पर निर्भर है। तत्त्वज्ञान का समुचित प्रतिफल प्राप्त करने के लिए यह आवश्यक है कि उसे सेवा साधना द्वारा कार्यरूप में परिणत होने दिया जाए। अध्यात्मवादी और सेवाभावी होना एक ही तथ्य के दो पक्ष हैं। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८६ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जो दीपक की तरह जलने को तैयार हों

गिरे हुओं को उठाना, पिछड़े हुओं को आगे बढ़ाना, भूले को राह बताना और जो अशांत हो रहा है, उसे शांतिदायक स्थान पर पहुँचा देना, यह वस्तुतः ईश्वर की सेवा ही है। जब हम दुखी और दरिद्र को देखकर व्यथित होते हैं और मलिनता को स्वच्छता में बदलने के लिए बढ़ते हैं तो समझना चाहिए यह कृत्य ईश्वर के लिए, उसकी प्रसन्नता के लिए ही किए जा रहे हैं। दूसरों की सेवा-सहायता अपनी ही सेवा-सहायता है।

प्रार्थना उसी की सार्थक है जो आत्मा को परमात्मा में घुला देने के लिए व्याकुल हो। जो अपने को परमात्मा जैसा महान बनाने के लिए तड़पता है, जो प्रभु को जीवन के कण-कण में घुला लेने के लिए बेचैन है। जो उसी का होकर जीना चाहता है, उसी को भक्त कहना चाहिए, दूसरे तो विदूषक हैं। लेने के लिए किया हुआ भजन वस्तुतः प्रभु प्रेम का निर्मम उपहास है। भक्ति में तो आत्मसमर्पण के अतिरिक्त और कुछ होता ही नहीं। वहाँ देने की ही बात सूझती है, लेने की इच्छा ही कहाँ रहती है?

ईश्वर का विश्वास, सत्कर्मों की कसौटी पर ही परखा जा सकता है। जो भगवान पर भरोसा करेगा, वह उसके विधान और निर्देश को भी अंगीकार करेगा। भक्ति और अवज्ञा का तालमेल बैठता कहाँ है? हम अपने आप को प्यार करें ताकि ईश्वर से प्यार कर सकने योग्य बन सकें।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८६ पृष्ठ २

जीवन कलाकार हाथों से सँजोया जाय

कलाकारिता के अनेकों पक्ष हैं। पर सबकी व्याख्या एक ही है कि अनगढ़ को सुघड़ में परिणत कर दें। कुम्हार बेकार मिट्टी को खिलौनों में बदल देता है। स्वर्णकार धातु खंडों से सुहावने आभूषण बनाता है। लोहे को गलाने वाले, उससे उपयोगी पुरजे बनाकर अच्छी-खासी मशीन खड़ी कर देते हैं। मूर्तिकार पत्थर के छोटे-बड़े टुकड़ों को छैनी-हथौड़ों की सहायता से देवप्रतिमा में बदल देते हैं।

मनुष्य के हाथ में सबसे बहुमूल्य वस्तु है—जीवन। इसे हीरे के समतुल्य समझा जा सकता है। हीरा वस्तुतः पका हुआ कोयला है। उसी खदान में पड़ा रहे तो उसकी कीमत कानी-कौड़ी के बराबर भी नहीं। पर यदि वह जौहरी के हाथ पहुँचे तो उसे तराशकर ऐसा चमकदार नगीना बनाता है जिससे देखने वाले और खरीदने वाले का मन पुलकित हो उठे। सुयोग्य माली के हाथों बनाया हुआ उद्यान कितना मनोरम लगता है, उसे सभी जानते हैं।

जीवन निरर्थक भी है, जब उसका उपयोग खाने और सोने से अधिक और क्या बन पड़ता है? अनगढ़ों के हाथ पहुँचने पर वह हेय, निंदित और पिछड़ेपन से भर जाता है। पर जीवन के वास्तविक कलाकार वे हैं, जो इन पंचतत्त्वों से विनिर्मित खिलौने को ऐसा सुरुचिपूर्ण बना दें, जिस पर देवता अपने आप को निछावर करने के लिए ललचाएँ। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८६ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बड़प्पन की सही कसौटी

वैभव के आधार पर बड़प्पन आँकने की प्रथा इस दुनिया में है। जिसके पास जितनी संपन्नता, शिक्षा एवं चतुरता है, उसी अनुपात से उसके बड़प्पन का मूल्य आँका जाता है। बलिष्ठता और प्रतिभा भी इसी वर्ग में आती हैं, जो दूसरों पर अपनी छाप छोड़ती हैं तथा धाक जमाती हैं। लोग उग्रता, आतंकवाद, दुष्टता और हानि पहुँचाने की शक्ति को देखते हुए भी डरते, मान देते हैं।

बड़प्पन के मूल्यांकन की यह सभी कसौटियाँ ओछी तथा खोटी है। इनके सहारे हम किसी व्यक्ति का सही मूल्यांकन नहीं कर सकते। कसौटी ही खोटी हो तो सोने और पीतल का अंतर कैसे जाना जाए?

व्यक्तित्व की वास्तविक ऊँचाई उसकी सुसंस्कारिता के आधार पर आँकी जानी चाहिए। देखा जाना चाहिए कि किसने अपने आप में गुण, कर्म और स्वभाव के क्षेत्र में कितनी उत्कृष्टता अपनाई है और निजी चरित्र तथा दूसरों के साथ सद्व्यवहार में किस सीमा तक अपनी विशिष्टता अपनाई है?

जो अपने को जितना संयत, सज्जन और अनुशासित बना सका, वह उतना ही महान है। धर्मचिह्नों या प्रचलनों से कोई धर्मात्मा नहीं बनता। जिसने आदर्शों के प्रति अपनी निष्ठा जिस सीमा तक परिपक्व की है, वस्तुतः उसी का बड़प्पन सफल और सराहनीय है।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९८६ पृष्ठ १

समग्र श्रेष्ठता विकसित करें

फूल की सुंदरता और महक उसकी किसी पंखुड़ी तक सीमित नहीं है। वह उसकी समूची सत्ता के साथ गुँथी हुई है।

आत्मिक प्रगति के लिए कोई योगाभ्यास विशेष करने से हो सकता है कि स्थूलशरीर या सूक्ष्मशरीर के कुछ क्षेत्र अधिक परिपुष्ट प्रतीत होने लगें और कई प्रकार की चमत्कारी सिद्धियाँ प्रदर्शित की जा सकें। आत्मा की महानता के लिए इतने भर से काम नहीं चलता। उसके लिए जीवन के हर क्षेत्र को समर्थ, सुंदर एवं सुविकसित होना चाहिए।

दूध के कण-कण में घी समाया होता है। हाथ डालकर उसे किसी एक जगह से नहीं निकाला जा सकता। इसके लिए उस समूचे का मंथन करना पड़ता है।

जीवन एकांगी नहीं है। उसके किसी अवयव विशेष को या प्रकृति विशेष को उभारने से काम नहीं चलता। आवश्यक है कि अंतरंग और बहिरंग जीवन के हर पक्ष में उत्कृष्टता का समावेश किया जाए।

ईश्वर का निवास किसी एक स्थान पर नहीं है। वह सत्प्रवृत्तियों का समुच्चय समझा जा सकता है। ईश्वर की आराधना के लिए आवश्यक है कि व्यक्तित्व के समग्र पक्ष को श्रेष्ठ और समुन्नत बनाया जाए।

—अखण्ड ज्योति-जून १९८६ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शरीर की रुग्णता में मनोविकार प्रधान कारण

शत्रुता, ईर्ष्या, कुढ़न, भय, आशंका के कारण कई प्रकार के रक्त विकार हो जाते हैं। अनिद्रा का प्रधान कारण चिंतातुर या भयभीत रहना होता है। इन रोगों का इलाज कराते समय निर्भयता का अभ्यास करना चाहिए, साहस बटोरना चाहिए और हिम्मत बढ़ानी चाहिए कि हमारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। स्वभाव में निर्भीकता बढ़ने पर बिना दवा के भी ऐसे रोग अच्छे हो जाते हैं। इसके विपरीत यदि सदा जी घबराता रहे, किसी विपत्ति के आ टूटने की आशंका बनी रहे तो कीमती दवाओं का इलाज भी व्यर्थ चला जाता है।

बदला लेने की, नीचा दिखाने की, षड्यंत्र रचने की मन:स्थिति हो चले और वैसी ही योजनाएँ बनाते रहने पर प्रत्यक्षत: कुछ कर न पाने पर भी भीतर की उधेड़-बुन सिरदरद जैसी बीमारियाँ खड़ी कर देती है। इलाज कराते रहने पर भी कारगर लाभ नहीं होता। ऐसे लोग अपना मन हलका रखें, बैरभाव निकाल दें, हँसते-हँसाते रहें तो अनेक बीमारियों से ऐसे पिंड छूट जाता है मानो वे थी ही नहीं।

मन को हलका रखा जाए, सदैव मुस्कराते, दूसरों को प्रसन्न करते रहने की आदत डाल ली जाए, सात्विक विचार रखे जाएँ तो शरीर भी अनायास ही रोगमुक्त रहने लगेगा। स्वस्थ जीवन की यह एक महत्त्वपूर्ण कुँजी है। *—अखण्ड ज्योति-जून १९८६ पृष्ठ ५२*

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सर्वश्रेष्ठ कलाकारिता

कलाकार के हाथ अनगढ़ वस्तुओं को पकड़ते हैं और अपने उपकरणों के सहारे उन्हें नयनाभिराम सुंदरता से भरते और बहुमूल्य बनाते हैं। कुम्हार मिट्टी से सुंदर खिलौने बनाते हैं, मूर्तिकार पत्थर के टुकड़े को देवप्रतिमा में परिणत करता है। गायक बाँस के टुकड़े से बंशी की ध्वनि निनादित करता है। धातु का टुकड़ा स्वर्णकार के हथौड़े की चोट खाकर आकर्षक आभूषण बनता है। कागज, रंग और कलम से बहुमूल्य चित्र बनाने का चित्रकार का कर्तृत्व कितना चमत्कार उत्पन्न करता है, इसे कोई भी देख सकता है।

जीवन एक अनगढ़ तत्त्व है। इसे दयनीय दुर्गति से ग्रसित स्थिति में ही अधिकांश व्यक्ति किसी प्रकार गुजारते हैं। उससे लाभ और आनंद उठाना तो दूर उलटे भार की तरह ढोने में ही कमर टूटती और गरदन मुड़ती दिखाई देती है।

क्या वस्तुत: जीवन ऐसा ही है जिसे रोते-खीझते किसी प्रकार पूरा किया जाना है? इसके उत्तर में इतना ही कहा जा सकता है कि अनाड़ी हाथों में पड़कर हीरा भी उपेक्षित होता है तो बहुमूल्य मनुष्य-जीवन भी क्यों न भार बनकर लदा रहेगा। किंतु यदि उसे कलाकार की प्रतिभा से सँभाला, सँजोया जाए तो निश्चय ही उसे देवोपम स्तर का जिया जा सकता है।

साधना जीवन जीने की कला का नाम है। जो उसे अनगढ़ स्थिति से निकालकर सुसंस्कृत पद्धति से जी सका, उसे सर्वोपरि कलाकार कह सकते हैं। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८६ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''मन्युरसि मन्युमयि देहि''

जहाँ मन्यु अर्थात स्वस्थ—क्रोध निवास करता है, वहीं न्याय की, अधिकारों की रक्षा हो सकती है। जिस समाज में इसका अभाव हो जाता है, वह कायर, नपुंसक, दीन-हीन बन जाता है। उसकी नैतिक क्षमता और चरित्र भी गिर जाता है। जिस समाज में अन्यायी, आततायी के प्रति रोष नहीं, शोषणकर्त्ता, अपराधी, अत्याचारी से निपटने की भावना नहीं, वह समाज कायरों का समाज है।

ऋषियों की हड्डियों के ढेर देखकर राम का आक्रोश, समुद्र के अहंकार पर लक्ष्मण का कोप, क्षत्रियों के अत्याचारों पर परशुराम का क्षोभ, आततायी कंस के प्रति, कौरवों के प्रति श्रीकृष्ण का विरोध, इसी मन्यु शक्ति की स्थिति का परिचायक है। आज हमें इसी का आह्वान अपने जीवन में करना चाहिए जिससे हम अन्यायों से निपट सकें। दीन-हीन गरीब असहायों के अधिकारों की रक्षा कर सकें।

कहावत है—''इतने मीठे मत बनो कि लोग तुम्हें चट कर जाएँ, इतने कड़ुवे भी मत बनो कि लोग तुम्हें थूकते फिरें।'' यही बात क्रोध पर भी लागू होती है। जिस क्रोध की ज्वाला से हम स्वयं और दूसरे लोग दग्ध हों, हमारा, दूसरों का अहित हो वह त्याज्य है, लेकिन जो दवा बनकर हमारी सामाजिक बुराइयों की चिकित्सा करे, दूषित तत्त्वों का निवारण करे, बिगड़े हुओं को सुधरने के लिए मजबूर करे, भूल के लिए दंड दें, ऐसा स्वस्थ-क्रोध, आवश्यक भी है और अनिवार्य भी।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८६ पृष्ठ ३०

आत्मविजेता ही विश्वविजेता

साधना का तात्पर्य है—आत्मानुशासन। अपने ऊपर विजय प्राप्त करने वाले को सबसे बढ़कर योद्धा माना गया है। दूसरों पर आक्रमण करना सरल है। बेखबर लोगों पर हमला करना तो और भी सरल है। इसलिए आक्रमणकारियों को योद्धा कहने का औचित्य कम ही है।

असली शत्रु हमारे कुसंस्कार हैं, जो पशु-प्रवृत्तियों के रूप में अंतरंग की उत्कृष्टता की दिशा में एक कदम बढ़ाने की तैयारी करते ही भारी अड़चन बनकर द्वार रोकते हैं। इनसे निपटना कम बहादुरी का काम नहीं है।

घुन लकड़ी को और विषाणु स्वास्थ्य को चौपट करते हैं। व्यसन और दुर्गुण ही मनुष्य को नीचे गिराते हैं और उसके अभ्युदय का कोई प्रयास सफल नहीं होने देते।

यदि हम अपने असली शत्रुओं को समझ पाएँ और उनकी जड़ों को उखाड़ पाएँ तो समझना चाहिए कि परम पुरुषार्थ कर गुजरने में सफलता पाई। आत्मविजेता को ही विश्वविजेता कहा है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९८६ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अंधकार को दीपक की चुनौती

अंधकार की अपनी शक्ति है। जब उसकी अनुकूलता का रात्रिकाल आता है, तब प्रतीत होता है कि समस्त संसार को उसने अपने अंचल में लपेट लिया। उसका प्रभाव, पुरुषार्थ देखते ही बनता है। आँखें यथास्थान बनी रहती हैं। वस्तुएँ भी अपनी जगह पर रखी रहती हैं किंतु देखने लायक विडंबना यह है कि हाथ को हाथ नहीं सूझ पड़ता। पैरों के समीप रखी हुई वस्तुएँ ठोकर लगने का कुयोग बना देती है।

अंधकार डरावना होता है। उसके कारण एकाकीपन की अनुभति होती है और रस्सी का साँप, झाड़ी का भूत बनकर खड़ा हो जाता है। नींद को धन्यवाद है कि वह विस्मृति के गर्त में धकेल देती है अन्यथा जागने पर करवटें बदलते, वह अवधि पर्वत जैसी भारी पड़े।

इतनी बड़ी भयंकरता की सत्ता स्वीकार करते हुए भी हमें दीपक की सराहना करनी पड़ती है, जो जब अपनी छोटी सी लौ प्रज्वलित करता है तो स्थिति में कायाकल्प जैसा परिवर्तन हो जाता है। उसकी धुँधली आभा भी निकटवर्ती परिस्थिति तथा वस्तु व्यवस्था का ज्ञान करा देती है।

दीपक छोटा ही सही—अल्प मूल्य का सही, पर वह प्रकाश का अंशधर होने के नाते अंधकार के सुदूर फैलाव को चुनौती देता है और निराशा के वातावरण को आशा और उत्साह से भर देता है। इसी को कहते हैं नेतृत्व।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८६ पृष्ठ १

गहरे उतरें, विभूतियाँ हस्तगत करें

दृश्यमान व पदार्थ संपदा ही सब कुछ नहीं है जो गहराई में विद्यमान है, उसका भी महत्त्व है। पेड़ की छाया ऊपर दीखती है, पर जड़ें जमीन की गहराई में ही पाई जा सकती हैं।

समुद्र तट पर सीप और घोंघे बटोरे जा सकते हैं, पर मोती प्राप्त करने के लिए गहराई में उतरने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं। भूमि के ऊपर रेत और चट्टानें भी बिखरी पड़ी हैं, पर बहुमूल्य धातुओं के लिए जमीन खोदकर गहरी परतों तक प्रवेश करना पड़ता है।

पराक्रम के बलबूते वैभव हस्तगत किया जा सकता है किंतु मानवी गरिमा विकसित करने के लिए अंतर्मुखी बनना और पैनी दृष्टि से दोष-दुर्गुणों को बुहारना पड़ता है। दैवी विभूतियाँ जो अंतराल में विद्यमान हैं, गहन चिंतन का समुद्र मंथन करने पर ही हस्तगत हो सकती हैं। वैभव की तृष्णा एक लुभावनी चमक मात्र है। पर आंतरिक सत्प्रवृत्तियों का परिपोषण रत्नों को खोद निकालने के समान है।

सौंदर्य बाहर दीखता है पर वह वस्तुत: नेत्रों की ज्योति, अभिरुचि एवं आत्मीयता का समुच्चय मात्र है। अच्छा हो हम अपने अंतर का खजाना खोजें और उन विभूतियों को प्राप्त करें जो अपने कल्याण तथा समष्टि के कल्याण के लिए अनिवार्य रूप से आवश्यक हैं।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९८६ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुरदुर्लभ मनुष्य जन्म की सार्थकता

मनुष्य में महत्त्वाकांक्षाएँ उभरती रहती हैं, पर वे बहिर्मुखी होती हैं। उनमें लोकैषणा, वित्तैषणा, पुत्रैषणा का बाहुल्य होता है। यह सभी बहिर्जगत से संबंधित होती हैं। साधन व परिणाम भी बहिर्जगत से संबंधित हैं। पदार्थ द्रुतगति से चलता है। उसमें स्थिरता तनिक भी नहीं, क्षण भर के लिए भी नहीं। ऐसी दशा में विविध कामनाओं की पूर्ति के संदर्भ में भी यही क्रम चलता है। पानी में बुलबुले उठते और फूटते रहते हैं। यह अवरुद्ध हवा का व्यापक हवा से मिलने की व्याकुलता का खेल है। इसी खिलवाड़ में मनुष्य की जिंदगी बीत जाती है और जब प्रतीत होता है कि सिंहासन पाने जैसा अवसर बालू की भीत बनाने की खिलावड़ में बीत गया, तो पश्चात्ताप का ठिकाना नहीं रहता। यह अंतर्वेदना ही मृत्यु के समय भयंकर त्रास बनकर सामने आती है। जो समय महत्त्व प्राप्त करने का था, वह यदि विडंबनाओं में ही बीत जाए तो उसकी क्षतिपूर्ति कैसे हो सकती है?

मनुष्य जीवन सुर दुर्लभ है। इसकी एक-एक घड़ी हीरे-मोतियों जैसी बनने योग्य है। इतनी बड़ी संपदा का उपयोग किस प्रकार किया जाए, यह जान लेना और कर गुजरना ही सुयोग की सार्थकता है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८६ पृष्ठ २६

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

मानव जीवन की विशिष्टता एवं सार्थकता

भगवान ने मनुष्य जीवन के रूप में असाधारण उपहार प्रदान किया है, तो साथ में यह उत्तरदायित्व भी सौंपा है कि इस विभूति का समुचित सदुपयोग किया जाए।

दुरुपयोग से तो अमृत भी विष बन जाता है। धन-वैभव तक अनेकों ऐसी दुष्प्रवृत्तियाँ सिखा देता है, जो न केवल स्वयं के विदा होने का, अपितु साथ में स्वास्थ्य, संतुलन, यश और सहयोग भी छिन जाने का निमित्त कारण बनती हैं।

जीवधारी के लिए सबसे बड़ा सुयोग यह है कि वह मनुष्य जन्म प्राप्त कर सके। इनमें भी भाग्यवान वे हैं, जो उसका सदुपयोग जानते और कर पाते हैं। पेट भर लेने और इंद्रिय भोगों की सुविधा हर योनि में है। जिसका जैसा आकार और स्वरूप है, उसे उस स्तर की सुविधाएँ, सुख-संवेदनाएँ प्राप्त करने का अवसर भी है। यदि इतना ही बन पड़ा तो समझना चाहिए कि मनुष्य जीवन की गरिमा को समझने में भूल हुई है और दिन उसी प्रकार कट गए जैसे कि अन्य प्राणी काट लेते हैं।

मानव जीवन की विशेषता यह है कि वह अपने अंत:करण को, व्यक्तित्व को समुन्नत करे और ऐसे पदचिह्न छोड़े, जिन पर चलते हुए पीछे वालों को प्रगति के परमलक्ष्य तक पहुँचने की सुविधाएँ मिलें। संक्षेप में यही मानवी आदर्शवादिता है, जिसे अपनाने पर इस सुयोग की सार्थकता बन पड़ती है।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८७ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्थता का सदुपयोग

बेल पेड़ से लिपटकर ऊँची तो उठ सकती है, पर उसे अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए आवश्यक रसभूमि के भीतर से ही प्राप्त करना होगा। पेड़ बेल को सहारा भर दे सकता है, पर उसे जीवित नहीं रख सकता। अमरबेल जैसे अपवाद, उदाहरण या नियम नहीं बन सकते।

व्यक्ति का गौरव या वैभव बाहर बिखरा दीखता है। उसका बड़प्पन आँकने के लिए उसके साधन एवं सहायक आधारभूत कारण प्रतीत होते हैं, पर वस्तुतः बात ऐसी है नहीं। मानवी प्रगति के मूलभूत तत्त्व उसके अंतराल की गहराई में ही रहते हैं।

परिश्रमी, व्यवहारकुशल और मिलनसार प्रकृति के व्यक्ति संपत्ति उपार्जन में समर्थ होते हैं। जिनमें इन गुणों का अभाव है, वे पूर्वजों की छोड़ी संपदा की रखवाली तक नहीं कर सकते। भीतर का खोखलापन उन्हें बाहर से भी दरिद्र ही बनाए रहता है।

गरिमाशील व्यक्ति किसी देवी-देवता के अनुग्रह से महान नहीं बनते। संयमशीलता, उदारता और सज्जनता से मनुष्य सुदृढ़ बनता है, पर आवश्यक यह भी है कि उस दृढ़ता का उपयोग लोकमंगल के लिए किया जाए। आत्मशोधन की उपयोगिता तभी है, जब वह चंदन की तरह अपने समीपवर्ती वातावरण में सत्प्रवृत्तियों की सुगंध फैला सके। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९८७ पृष्ठ १*

आत्मैवेदं सर्वम्

शरीर—अन्न, जल और हवा के आधार पर जीवित रहता है। संपन्नता, परिश्रम, चातुर्य और साधनों पर अवलंबित है, किंतु अंतरात्मा को परिपोषण इनमें से किसी के सहारे भी नहीं मिल सकता। संपन्नता-सुविधा बढ़ाती है, उसके सहारे शरीरगत विलासिता, तृष्णा और अहंता का परिपोषण हो सकता है। चाटुकारों के मुँह प्रशंसा भी सुनी जा सकती है, किंतु आत्मिक विभूतियों को अर्जित किए बिना कोई तृप्ति, तुष्टि और शांति का रसास्वादन नहीं कर सकता।

समृद्धि दूसरों को चमत्कृत कर सकती है, किंतु श्रद्धा और सद्भावना उपलब्ध करने के लिए आंतरिक उत्कृष्टता की आवश्यकता पड़ती है। इसी का दूसरा नाम सज्जनता है। इसे पवित्रता, महानता, उदारता और संयमशीलता के मूल्य पर ही उपलब्ध किया जा सकता है।

यदि शरीर को ही सब कुछ माना जाए तो उसके लिए सुविधा-संपादन से, विलास-वैभव से काम चल सकता है, किंतु यदि ऐसा प्रतीत हो कि अपने भीतर अंतरात्मा नाम की भी कोई वस्तु है और अंतःकरण भी अपनी आवश्यकताएँ व्यक्त करता है, तो फिर यह अनिवार्य हो जाता है कि महानता और शालीनता को अपने चिंतन एवं चरित्र का अविच्छिन्न अंग बनाया जाए। निर्वाह भर से संतोष किया जाए और अपनी प्रतिभा को आत्मपरिष्कार के लिए नियोजित किया जाए।

—अखण्ड ज्योति-मई १९८७ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर का दर्शन—पवित्र अंत:करण में

समग्र स्वस्थता शरीर के सभी अवयवों के नीरोग एवं परिपुष्ट होने से विनिर्मित होती है। किसी अवयव विशेष के बढ़ जाने से तो विद्रूप विपन्नता ही उत्पन्न होती है। पैर फूलने पर फीलपाँव और पेट फूलने पर अपच की चिंताजनक स्थिति बनती है। किसी अंग विशेष में गाँठ उभर आने से प्रसन्नता नहीं, चिंता ही बढ़ती है।

पूजा-पाठ भी समग्र जीवन के विकास का एक छोटा भाग है। उसके लिए समय निकालना और अभ्यासक्रम चलना चाहिए। किंतु इतने भर में ही संतोष कर बैठना और आत्मकल्याण की समग्र आवश्यकता पूरी होने जैसी आशा नहीं करनी चाहिए। साथ में जीवन की पवित्रता और प्रखरता का समावेश भी उतना ही आवश्यक है। ईश्वर की झाँकी अंतरात्मा में ही हो सकती है। अन्यत्र उसे खोजना हो तो समस्त ब्रह्मांड में उसकी व्यापकता पर ही दृष्टि डालनी पड़ेगी। आत्मदर्शन ही ईश्वरदर्शन का सरलतम और निकटतम साधन है।

आत्मदर्शन का अर्थ है—अंत:करण में पवित्रता और प्रखरता का समुचित संवर्द्धन। दर्पण पर धूलि जमी हो या उसके भीतर का रंग उतर गया हो तो फिर उसमें मुख दीख पड़ने का सुयोग न बनेगा। जिसने अपने अंत:क्षेत्र को टटोला नहीं है, उसे धोया नहीं है, उसके लिए यह कठिन है कि उस गंदले क्षेत्र में ईश्वर का आगमन, अवतरण या दिव्यदर्शन की आशा करे। *—अखण्ड ज्योति-जून १९८७ पृष्ठ १*

वर्तमान का सदुपयोग—उज्ज्वल भविष्य का निर्माण

अप्रत्याशित लाभ मिल गया तो उसे संयोग ही कहना चाहिए और यदि घाटा हुआ तो उसे अपने क्रिया-कलापों में कहीं भूल रहना अथवा परिस्थितियों का उलटा-सीधा मोड़ ले लेना भी कारण समझा जा सकता है। प्रकृति की प्रतिकूलता भी अकाल, बाढ़, सूखा, भूकंप, महामारी आदि के रूप में टूट सकती है। इस प्रकृति प्रतिकूलता के पीछे भी मनुष्यों द्वारा अपनाई गई दुष्प्रवृत्तियाँ ही प्रधान कारण हो सकती हैं।

जिनका समाधान अपने कर्तृत्व के साथ नहीं जुड़ता उन यदा-कदा आ धमकने वाले अपवादों के संबंध में यह समझा जा सकता है कि यह अपने किसी पूर्वजन्मों के किए गए कृत्यों का परिणाम हो सकता है। आमतौर से दूध जिस दिन दुहा जाता है उसी दिन उसका उपयोग हो जाता है। कर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बच जाने पर उसे जमा देते हैं। दूसरे दिन उसका नाम, रूप, स्वाद, गुण सभी बदल जाता है। पूर्वसंचित कर्म इस जन्म में प्रारब्ध होकर प्रकट हो सकते हैं। वे अप्रत्याशित होते हैं और तात्कालिक क्रिया-कलाप के साथ उनकी संगति नहीं बैठती। ऐसी दशा में यह कहा जा सकता है कि किसी पूर्वकृत कर्म का उदय हुआ है। इसमें भी श्रेय या दोष अपना ही होता है, क्योंकि संचित कर्म भी तो अपने ही किए हुए थे। *—अखण्ड ज्योति-जून १९८७ पृष्ठ १४*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संपत्ति बनाम सदाशयता

आवश्यकता संपत्ति की उतनी नहीं जितनी सदाशयता की है। सदाशयता हमें हिल-मिलकर रहना और मिल-बाँटकर खाना सिखाती है। आपस में स्नेह और सहयोगपूर्वक कैसे रहा जाता है और जो सामने है, उसे मिल-बाँटकर कैसे खाया जाता है, यह ज्ञान का सार है। सोचने का तंत्र हमें मिला था, पर सोचने की कला से हम अपरिचित हैं। श्रम करने के लिए उपकरण हमें मिले हैं, पर क्या श्रम किया जाए और क्यों किया जाए, इसका भान कदाचित ही किसी को है।

संपत्ति के साथ सदाशयता का समावेश आवश्यक है, अन्यथा बासी रखा हुआ उपयोगी भोजन भी सड़ेगा और उसे जो कोई काम में लाएगा, वही बीमार पड़ेगा। संपत्ति के अभाव में कितने ही लोग कष्ट पाते हैं, पर उससे अधिक वे लोग हैं जो संपत्ति का उपयोग न जानने के कारण दुखी हैं। संपत्तिवानों को दुर्व्यसनों में ग्रस्त देखा जाता है। दुरुपयोग करने पर सुई भी अपने लिए घातक बन जाती है। कुकर्मों की भरमार संपन्नता के बाहुल्य से ही होती है। इसलिए संपत्ति से कहीं अधिक सदाशयता की आवश्यकता है। केवल सदाशयता की सहायता से जिंदगी हँसते-हँसते कट सकती है, किंतु केवल संपत्ति अपने और दूसरों के लिए संकट खड़े करेगी।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८७ पृष्ठ १

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

सच्चा मानवोचित पुरुषार्थ

अधिक उपभोग की लालसा में मत बँधो। इतना मत चाहो जो सर्वसाधारण को उपलब्ध नहीं है। इस प्रयास में घाटा ही घाटा है। प्रकृति किसी को भी नियत मर्यादा से अधिक न तो संग्रह करने देती है और न उपयोग ही।

वैभव अर्जित करने और उनका असीम उपयोग करने की लिप्सा किसी को कितना हैरान करती है, उसका दृश्य उन लोगों के आरंभ और अंत को देखने भर से किया जा सकता है। क्या आवश्यकता है कि उसका प्रयोग-अनुभव अपने ही ऊपर किया जाए? कँटीले मार्ग पर चलने वालों के पैर किस प्रकार लहू-लुहान होते हैं, यह दूसरों को वैसा करते देखकर या उनसे पूछकर भी जाना जा सकता है, फिर क्या अटकाव कि हर विपन्नता को अपनाया जाए और उसका त्रास सहा जाए।

मनुष्य-जन्म का बहुमूल्य अवसर उपहासास्पद पृष्ठ-पोषण में गँवाया जाए, इसमें कोई बुद्धिमानी नहीं। जिनने बहुत कमाया और बहुत उड़ाया उनकी अतंरात्मा क्या कहती है और लोक-भर्त्सना कितनी सहनी पड़ती है, यह अपने इर्द-गिर्द बिखरे हुए अनेकानेक उदाहरणों से भी जाना जा सकता है।

इस सुयोग के सदुपयोग के लिए अनेक प्रयोजन सामने विद्यमान हैं। क्यों न उन्हीं की ओर ध्यान दिया जाए? और क्यों न ऐसा मार्ग अपनाया जाए जिसका अनुगमन करके अन्यों को भी श्रेय और प्रकाश मिल सके?

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८७ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

समर्थ का आश्रय लें

जीवन स्थिर नहीं। उसके साथ जुड़ी हुई सुविधाओं का भी कोई ठिकाना नहीं। हँसता बचपन बोझिल जवानी की ओर बढ़ता है और कराह भरे बुढ़ापे में बदल जाता है। संपदा भी सदा किसका साथ देती है? और मित्र, सहयोगी भी पानी के बबूले की तरह उछलते और समय के साथ आगे चले जाते हैं। अनुकूलताएँ सदा नहीं रहतीं। समय के बाद वे भी प्रतिकूलता में बदल जाती हैं। सूरज, चाँद तक जब स्थिर नहीं तो और किससे सदा साथ देने की आशा की जाए? जब शरीर तक साथ छोड़ जाता है, तो स्वजन-संबंधियों से ही कब तक साथ देने की आशा की जाए?

स्थिर इस संसार में एक ही है, जिसे धर्म कहते हैं। धर्म ही ईश्वर है। ईश्वर अर्थात मानवी गरिमा के अनुरूप अपने को ढालने के लिए विवश करने की व्यवस्था। इन्हीं में सदा साथ देने और विश्वासपूर्वक मैत्री निभाने की क्षमता है। वे इतने सुदृढ़ और अटल हैं कि संसार का कोई अंधड़ उन्हें डगमगाने में समर्थ नहीं।

जिस-तिस का आश्रय तकने और साथ निभाने की आशा-अपेक्षा व्यर्थ है। जो स्वयं अस्थिर हैं, वे दूसरे किसका और कब तक साथ निभा सकेंगे। इस सृष्टि में मात्र धर्म और ईश्वर ही स्थिर व समर्थ हैं, जिन्हें अपनी परिष्कृत अंतरात्मा में पाया जा सकता है। उन्हीं का आश्रय अपनाना बुद्धिमत्तापूर्ण है।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८७ पृष्ठ १

अनंतपारा दुष्पूरा तृष्णा दोष—शता-वहा

संपत्ति मात्र एक सीमित मात्रा में अपने पास रखी जा सकती है। उससे अधिक रखने के लिए गोदाम अपने पास है ही नहीं। फिर तृष्णाजन्य उपार्जन से संकट यह खड़ा हो जाता है कि जो चाहा गया है, यदि उतना मिलता भी जाए तो वह संचित न रखा जा सकेगा। चीज चाही हुई हो, प्रिय भी हो और मूल्यवान भी, पर उसे रखने का प्रबंध किए बिना उसे जहाँ-तहाँ कैसे फेंक दिया जाए? स्थान बनाए बिना संग्रह कर लेना मुसीबत मोल लेने के समान है।

पेट में चार रोटी का स्थान है। मिष्टान्न सामने अधिक मात्रा में उपस्थित हो तो उन्हें छोड़ देने का मन न हो, रखने की जगह नहीं, ऐसी दशा में खाए जाने पर पेटदरद उठेगा ही। बाहर कहीं रखेंगे तो चोरी होने या सड़ जाने का संकट खड़ा होगा। यह है सांसारिक मुसीबतों की जड़। साधनों की कमी नहीं, पचाने की क्षमता नहीं। ऐसी दशा में तृष्णा अपनी ही होते हुए भी अपने लिए ही संकट उत्पन्न करती है।

संसार में असीम वैभव भरा पड़ा है। पर वह पात्रता के अनुरूप ही उपलब्ध है। भगवान सुख इतना देता है, जितना हजम हो सके। बिना पचे भी दरद होता है। यही है तृष्णाजन्य दु:ख अन्यथा इस वैभव से भरे संसार में हमें अकारण दु:ख क्यों उठाना पड़े? *—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९८७ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारणा का उच्चस्तरीय प्रवाह

अंकुरों को कोई व्यवधान आहत न करे तो उनके पौधा बनने और बढ़कर फूल-फलों से लदा वृक्ष बनने की संभावना सुनिश्चित ही रहेगी। विचार ही अंकुर हैं। वे ही आस्था के रूप में परिपक्व होने पर पौधा बनते हैं। जब उन्हें क्रियारूप में उतारा जाता है और वे आदत के रूप में स्वभाव के अंग बन जाते हैं, तब वे चरित्र बन जाते हैं। व्यक्तित्व के साथ घुल जाते हैं, सद्विचारों का क्रियारूप में परिणत होना और उनका हर कसौटी पर खरा उतरना ही चरित्र है। चरित्रवान पर बलवान, धनवान, बुद्धिमान सभी निछावर किए जा सकते हैं। बुद्धि के साथ धूर्तता और प्रवंचना भी घुली हो सकती है। धन-संपदा का अनीति द्वारा अर्जित होना भी संभव है। फिर वह दुर्व्यसनों की अग्नि में घास-फूस की तरह जल भी जाते हैं। बलिष्ठता और सुंदरता एक सीमित समय तक ही अपनी चकाचौंध दिखाती हैं। आयुष्य के ढलते ही उनका भी अंत हो जाता है। किंतु चरित्र अकेला ही ऐसा है, जो अपनी यशगाथा शरीर न रहने के उपरांत भी यथावत बना रहता है।

मस्तिष्क को बिना पैसे का सिनेमा दिखाते रहते हैं। किंतु यदि उन्हें उद्देश्यपूर्ण दिशा में ही प्रवाहित रहने की आदत डाली जाए तो वे ही दृष्टिकोण को परिष्कृत कर सकते हैं। जीवन जीने की संजीवनी विद्या जैसी कला में प्रवीण कर सकते हैं। व्यक्तित्व को इस स्तर तक उभार सकते हैं जिसे देवोपम कहा जा सके और जिसके साथ चिरस्थायी सुख-शांति जुड़ी रहे।

— अखण्ड ज्योति-नवंबर १९८७ पृष्ठ १८

उत्कर्ष का राजमार्ग

पालतू पशुओं को बंधन में बँधकर रहना पड़ता है, पर मनुष्य को यह सुविधा प्राप्त है कि स्वतंत्र जीवन जिए और इच्छित परिस्थितियों का वरण करे।

उत्थान और पतन के परस्पर विरोधी दो मार्गों में से हम जिसको भी चाहें अपना सकते हैं। पतन के गर्त में गिरने की छूट है। यहाँ तक कि आत्महत्या पर उतारू व्यक्ति को भी बलपूर्वक बहुत दिनों तक रोका नहीं जा सकता। यही बात उत्थान के संबंध में भी है। वह जिनता चाहे उतना ऊँचा उठ सकता है। पक्षी उन्मुक्त आकाश में विचरण करके लंबी दूरी पार करते, सृष्टि के सौंदर्य का दर्शन करते हैं। पतंग भी हवा के सहारे आकाश चूमती है। आँधी के संपर्क में धूलिकण और तिनके तक ऊँची उड़ानें भरते हैं, फिर मनुष्य को उत्कर्ष की दिशाधारा अपनाने से कौन रोक सकता है?

आश्चर्य है कि लोग अपनी क्षमता और बुद्धिमत्ता का उपयोग पतन के गर्त में गिरने के लिए करते हैं। यह तो अनायास भी हो सकता है। ढेला फेंकने पर नीचे गिरता है और बहाया हुआ पानी नीचे की दिशा में गति पकड़ लेता है।

दूरदर्शिता इसी में है कि ऊँचा उठने की बात सोची और वैसी योजना बनाई जाए। जिनके कदम इस दिशा में बढ़ते हैं, वे नर-पशु न रहकर महामानव बनते हैं।

— अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८७ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

विचारों की असाधारण सामर्थ्य और परिणति

सामान्यतया विचार शक्ति बिखरकर नष्ट होती रहती है। उसे केंद्रित करने एवं मानसिक शक्ति संपन्न बनने के लिए हमें उत्कृष्ट विचारों की संपदा बढ़ाने के साथ ही अपने 'स्व' का विकास करना होगा। यदि स्वार्थ के साथ लोकोपकार का समावेश हो जाए तो यह शक्ति अपरिमितता की ओर अग्रसर होने लगेगी। अहंभाव के विनाश से ही सशक्त मनोबल का सृजन होता है। सैद्धांतिक प्रतिकूलताओं से लोहा लेने पर मनुष्य की इच्छाशक्ति में वृद्धि होती जाती है। ऐसा आत्मविश्वास उत्पन्न होता है कि उसके सामने अशुभ विचार टिक ही नहीं सकते।

मानसिक शक्तियों के विकास में सहायक होता है--सरल एवं सदाचारी जीवन। चालाक एवं व्यवहारकुशल प्रदर्शन-पटु लोग अपने मन को चिंता एवं संशय का आश्रय बना लेते हैं। ऐसे चापलूस मित्रों द्वारा सद्मार्ग पर चलने का प्रोत्साहन कभी भी नहीं मिलता। इसके विपरीत सदाचारी व्यक्ति व्यवहार एवं विचार में सरल होता है।

अपने आप को प्रगति-पथ पर अग्रसर करने और सुखी-सुसंस्कृत बनाने के लिए सद्विचारों का अवलबंन लेना ही पड़ता है। इसका और कोई विकल्प नहीं। यही बात दूसरों के संबंध में भी है। दूसरों को सहयोगपरक सहायता का अपना महत्त्व है। पर किसी को रचनात्मक विचार देकर उसे स्वावलंबी और समुन्नत बनाया जा सके तो निश्चय ही उससे बढ़कर और कोई पुण्य-परमार्थ हो नहीं सकता।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८७ पृष्ठ १६

प्रतिकूलताएँ कभी बाधक नहीं बनतीं !

दरबारी बगीचों में लगे कोमल पौधे तनिक-सी गरमी-सरदी पाते ही हिचकियाँ भरने लगते और दम तोड़ने लगते हैं। छुई-मुई किसी के उँगली छू जाने से ही सकुचाती, सिकुड़ती और मुरझाई दीखती है, किंतु पर्वतों और रेगिस्तानों में उगने वाले पौधे ऋतु-प्रभावों की कठोरता को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए अपना अस्तित्व सुरक्षित रखे रहते हैं।

इसके विपरीत जिन्हें अभावों प्रतिकूलताओं का सामना करना पड़ता है, वे अपने भीतर ऐसी क्षमता विकसित करते हैं जो कठिनाइयों का सामना करते हुए अस्तित्व की रक्षा कर सके। हिमाच्छादित पर्वतों पर उगने वाले पेड़ों को उस तरह पाला नहीं मारता जैसे कि मध्यम ताप वाले प्रदेशों में तनिक-सी ठंढ बढ़ते ही उनका सिकुड़ना, सूखना आरंभ हो जाता है। रेगिस्तान सूखे इलाकों की तपती बालू और पानी की कमी में भी कैक्टस आदि पौधे भली प्रकार हरे-भरे बने रहते हैं। उत्तरी ध्रुव पर रहने वाले 'एस्किमो' बरफ की मोटी परतों पर ही समूचा जीवनयापन करते हैं। कठोर श्रम से आहार प्राप्त करने वाले वनवासी स्थिति के अनुरूप सुदृढ़ भी रहते हैं और अभ्यस्त तथा प्रसन्न भी।

कठिनाइयों से, प्रतिकूलताओं से घिरे होने पर भी जीवन का वास्तविक प्रयोजन समझने वाले व्यक्ति कभी निराश नहीं होते। वे हर प्रकार की परिस्थितियों में अपने लक्ष्य से ही प्रेरणा प्राप्त करते तथा श्रेष्ठता के पथ पर क्रमशः आगे बढ़ते जाते हैं।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८७ पृष्ठ ३८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का वा विमुक्तिर्विषये विरक्तिः

आनंद की उपलब्धि में, सफलता के सुयोग में एक ही बाधा है—अपनी स्वनिर्मित क्षुद्रता। हेय गतिविधियाँ अपनाकर ही मनुष्य अपने लिए संकट खड़े करता है और विपन्नताओं में फँसता है।

मकड़ी अपने लिए जाला स्वयं बुनती है और उसमें फँसकर स्वयं ही बंधन में बँधती है। जिस शिकार को पकड़ने के लिए यह श्रम किया गया था, उसकी सफलता में संदेह है। हो सकता है कि कोई शिकार न भी फँसे। पर अपने हाथ-पाँव जकड़ जाना तो निश्चित ही है। रेशम के कीड़े अपने लिए स्वयं ही खोल बनाते हैं और उनमें कैद रहकर दुर्भाग्य को कोसते हैं। गूलकर के भुनगे उसी छोटे दायरे में दिन गुजारते रहते हैं। वे चाहें तो तनिक-से प्रयास से छेद करके अपने को बाहर निकाल सकते हैं और स्वच्छंद वातावरण का आनंद ले सकते हैं।

दुर्गुणों को स्वभाव में सम्मिलित कर लेना और कुमार्ग पर चल पड़ना ही वह दुर्भाग्य है जो किसी के बुलाने और अभ्यास करने पर ही साथ देने को तैयार होता है। यह किसी का थोपा हुआ नहीं होता वरन अपने ही प्रयास द्वारा विनिर्मित किया जाता है। कोई चाहे तो इस प्रयास से अपना हाथ खींच सकता है और वह स्थिति प्राप्त कर सकता है जिसे सुख-शांति भरी बंधनमुक्ति कहा जा सके। मुक्ति वस्तुतः विषयों से वैराग्य पा लेने की मनःस्थिति का नाम है। *—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८८ पृष्ठ १*

मनुष्य अपना भविष्य अपने हाथ

किसके भाग्य में समृद्धि, प्रगति और प्रतिष्ठा बढ़ी है, इसे जानने के लिए किसी के गृह-नक्षत्र देखने की आवश्यकता नहीं है और न किसी पंडित-ज्योतिष से पूछने की आवश्यकता है। किसी का भी भला-बुरा भविष्य जानने के लिए इतनी जानकारी पर्याप्त है कि कौन अपने को अधिक सुयोग्य, सक्षम एवं सुसंस्कृत बनाने के लिए किस सीमा तक प्रयत्न कर रहा है?

आज का प्रयास ही कल परिणति बनकर सामने आता है। दूसरा कोई किसी को न ऊँचा उठाता है और न नीचे गिराता है। मनुष्य अपनी विचारणा और क्रियापद्धति के सहारे ही अपने को उत्कृष्ट और निकृष्ट बनाता है। तदनुरूप ही उसके सामने परिस्थितियाँ विनिर्मित होती और सामने आ खड़ी होती हैं।

दूसरों के दिए हुए अनुदान सुरक्षित रखने तथा उनका सदुपयोग कर सकने की क्षमता अपने भीतर से उत्पन्न होती है। जिनने अपने को शालीनता के ढाँचे में ढाला है, वे समर्थों और सज्जनों से सम्मान तथा सहयोग प्राप्त करते हैं और अपने क्रिया-कलाप के आधार पर ऊँचे उठते चले जाते हैं।

अनगढ़ व्यक्तियों की वाणी में कर्कशता, क्रिया-कलाप में अस्तव्यस्तता, चिंतन में निकृष्टता का समावेश होने से उनकी प्रकृति ऐसी बन जाती है, जिससे भविष्य हर दृष्टि से अंधकारमय ही बनता चला जाता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८८ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दृष्टिकोण का सम्यक परिष्कार

सम्यक-दृष्टि परिणाम को देखने-परखने के उपरांत कार्य आरंभ करती है। वर्तमान को सुखद संभावनाओं के लिए निछावर भी कर सकती है। वृक्ष बनने के लिए बीज को अपना वर्तमान स्वरूप गलाना पड़ता है। विज्ञजन भी आज की सुविधाओं की इसलिए उपेक्षा करते हैं कि उज्ज्वल भविष्य का दिग्दर्शन हो सके। अदूरदर्शी ही वर्तमान की सुविधा देखते हैं और उसके लिए आतुर होकर भविष्य को अंधकारमय बनाते हैं।

अपने को दरिद्र, क्षुद्र, मानस वाले मानते हैं, जिन्हें अपने शरीर का, ज्ञान का, पौरुष का, साहस का मूल्य मालूम है, वे उसका यथा-अवसर उपयोग करके इतनी बढ़ी-चढ़ी सफलताएँ प्राप्त कर गुजरते हैं, जिन्हें अनुकरणीय और अभिवंदनीय माना जा सके। अदूरदर्शी अपने से अधिक संपन्नों के साथ तुलना करते और अपने स्वरूप को स्वल्प मानकर आत्महीनता की ग्रंथियों से ग्रसित होते हैं, किंतु जिन्हें सही ढंग से सोचना आता है, वे पिछड़ों से अपनी तुलना करते हैं और सोचते हैं कि जो उपलब्ध है, वह भी इतना अधिक है कि उस पर गर्व किया जा सके और मोद मनाया जा सके।

दृष्टिकोण तुच्छ और निकृष्ट रहने पर अपनी स्थिति नाटकीय बन जाती है, पर उसमें सुधार होते ही चारों ओर स्वर्ग बिखरा दीखता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८८ पृष्ठ २०*

समर्थ और प्रसन्न जीवन की कुंजी

क्रोधी आदमी समझता है कि वह सत्य का पक्षपाती है। जो लोग गलती करते हैं, उन पर गुस्सा आता है। यह शब्द कहने-सुनने से निर्दोष मालूम पड़ते हैं, पर हैं तथ्यों से विपरीत। गलती करने वाले को क्रोध करने से कैसे दंडित किया जा सकता है या सुधारा जा सकता है, यह समझ से बाहर की बात है। कौन-किस कारण क्रोध करता है, यह जानने या पूछने की किसी को फुरसत नहीं। क्रोध में बोले हुए कटु वचन सर्वप्रथम व्यक्ति को दोषी ठहराते हैं और पूछताछ का सिलसिला चलने से पूर्व ही उसके विरोधी बन जाते हैं।

जिस कारण क्रोध किया गया था। उसका निराकरण हुआ या नहीं, यह बहुत पीछे की बात है। इससे पहले ही अपने स्वभाव की बदनामी, जीवनीशक्ति की घटोत्तरी और समस्या को सुलझा सकने की मानसिक दक्षता में कमी आदि अनेकों हानियाँ पहले ही हो लेती हैं। इसी प्रकार संकोची, डरपोक व्यक्ति भी अपनी बात स्पष्ट न कर पाने के कारण निर्दोष होते हुए भी दोषी बनते रहते हैं।

शरीर की स्थिरता, आर्थिक सुव्यवस्था, परिवार की सुख-शांति, गुत्थियों का समाधान, प्रगति का सुनियोजन आदि कितनी ही बातें जीवन की सफलता के लिए आवश्यक मानी जाती हैं। उन सबके मूल में मानसिक संतुलन की आवश्यकता है। हँसती-हँसाती आदतें बनाकर ही हम जीवनरथ को प्रगति-पथ पर सही रीति से अग्रगामी कर सकते हैं। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८८ पृष्ठ ५८*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्बुद्धि की अवधारणा

सद्बुद्धि का विकास किए बिना मानव जाति का उद्धार नहीं। मनुष्य की नियति यह है कि वह अपने को दूरदर्शी विवेकशीलता के साथ जोड़े, शालीनता अपनाए और सज्जनों की तरह जिए।

दुराग्रह और पक्षपात मनुष्य को उद्दंड बनाते हैं। अहंकारी अपने ही चिंतन और कर्तृत्व को सबसे ऊँचा और बढ़कर मानता है। उसे यह स्वीकार नहीं कि अपनी मान्यताओं और आकांक्षाओं को औचित्य की कसौटी पर कसे और यह देखे कि वे न्यायसंगत हैं या नहीं। जो चाहा सो कर गुजरना मनुष्य के अंदर काम करती पशु-प्रवृत्ति है। मनुष्य को यह सोचना होता है कि वह जो जानता, मानता है, चाहता और कहता है, वह सार्वजनिक हित में है या नहीं? धर्म और कर्त्तव्य उसे करने की छूट देते हैं या नहीं?

बुद्धि की महिमा है और चतुरता की भी, किंतु सबसे बड़ी बात है—विवेकशील न्यायनिष्ठा। हम अपने साथ न्याय करें और दूसरों के साथ भी। पर यह बन तभी पड़ेगा जब सद्बुद्धि की अवधारणा हो। हम आग्रह छोड़ें और सत्य को अपनाएँ।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९८८ पृष्ठ १

निष्ठा आत्मशक्ति की निर्झरिणी

आँधी-तूफान आते-जाते हैं पर सुदृढ़ पर्वत शिखर जहाँ के तहाँ खड़े रहते हैं। विशालकाय वटवृक्ष भी सरदी, गरमी सहते और अपने स्थान पर अडिग खड़े रहते हैं। निष्ठा में ऐसी ही सामर्थ्य है। वह बहुत-सोच-विचारकर किसी महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष पर पहुँचती है। जब कोई निश्चय कर लेती है तो उस पर दृढ़तापूर्वक सुस्थिर रहती है। डगमगाने वाले तत्त्वों के साथ जमकर संघर्ष करती है। अनीति के सामने झुकने का नाम नहीं लेती, भले ही उसे दबाव से टूटना ही क्यों न पड़े? उसका हर कदम इस प्रकार रखा जाता है, जिसमें फिसलने की आवश्यकता ही न पड़े।

निष्ठा आत्मा की गहराई से उभरने वाली शक्ति है। वह न तो लड़खड़ाना जानती है और न डगमगाना। उसे आदर्श प्राण प्रिय होते हैं। जिस प्रकार मछली पानी के बिना जीवित नहीं रह सकती, उसी प्रकार नैष्ठिकों को उत्कृष्टता भरे चिंतन, चरित्र, व्यवहार एवं वातावरण में ही जीवित रहने का अवसर मिलता है। कहते हैं कि राजहंस मोती चुगते हैं, कीड़े नहीं खाते। उसी प्रकार यह भी निश्चित है कि अध्यात्म मार्ग के पथिक अपनी उपासना, साधना और आराधना के प्रति निष्ठावान ही होकर जीवनयापन करते हैं।

—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९८८ पृष्ठ ५

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वच्छता एवं सुसंस्कारिता

धूलि हर कहीं बिखरी पड़ी है। वह प्रकृति का उद्‌भव है। मलिनता और कूड़ा-करकट कहीं भी बिखरा देखा जा सकता है। वह बिना बुलाए भी घर में घुस पड़ता है। कपड़े अनायास ही मैले होते रहते हैं। मनुष्य का मन भी ऐसा प्रमादी है जो पानी की तरह नीचे की ओर अनायास ही ढुलता रहता है। प्रमादी लोग कहीं भी मैले-कुचैले देखे जा सकते हैं। उनका रुझान सहज ही पतन-पराभव की दिशा में होता है। यदि सतर्कता न रखी जाए तो मलिनता से लदा और घिरा रहना पड़ेगा।

हमारे मन की आदत भी ऐसी ही है। वह सर्वत्र संव्याप्त मलिनता की ओर अनायास ही खिंच जाता है। प्रवाह के साथ बहने में उसे सरलता और सुविधा प्रतीत होती है।

सुरुचि संपन्न इस अनुपयुक्तता को ध्यान में रखते हैं और अपने को अनगढ़ समुदाय में सम्मिलित होने से बचाते रहते हैं। हाथी नदी में स्नान करने के उपरांत भी बाहर निकलते ही धूलि अपने ऊपर छिड़क लेता है। बच्चे धुला हुआ कपड़ा पहनने के बाद भी उसे लोट-पोटकर मैला कर लेते हैं। क्या हमें भी ऐसा ही करना चाहिए?

मनुष्य से सुसंस्कृत होने की आशा की जाती है और यह अनुमान लगाया जाता है कि वह अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग भीतरी और बाहरी स्वच्छता बनाए रखने के लिए करेगा।

—अखण्ड ज्योति-जून १९८८ पृष्ठ १

प्रतिकूलताओं में हड़बड़ाएँ नहीं

चंचलता-व्यग्रता की मन:स्थिति में सही निर्धारण और सही प्रयास करते-धरते नहीं बन पड़ता। असंतुष्ट और उद्विग्न व्यक्ति जो सोचता है, एकपक्षीय होता है और जो करता है, उसमें हड़बड़ी का समावेश रहता है। ऐसी मन:स्थिति में किए गए निर्धारण या प्रयास प्राय: असफल ही होते हैं।

आवेश या अवसाद दोनों ही व्यक्ति को लड़खड़ाती स्थिति में धकेल देते हैं। ऐसी दशा में निर्धारित कार्यों को पूरा कर सकना, साथियों के साथ उपयुक्त ताल-मेल बिठाए रह सकना कठिन जान पड़ता है। प्रतिकूलताएँ बाह्य परिस्थितियों के कारण जितनी आती हैं, उससे कहीं अधिक निज का असंतुलन काम को बिगाड़ता है, व्यक्ति को उपहासास्पद, अस्थिर, अप्रामाणिक बनाता है।

सबसे बड़ी बात यह है कि उत्तेजना शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। आक्रोश में भरे हुए उद्विग्न व्यक्ति न चैन से रहते हैं, न दूसरों को रहने देते हैं। रक्त उबलता रहता है, विचार क्षेत्र में तूफान उठता रहता है। फलत: जो व्यवस्थित था, वह भी यथास्थान नहीं रह पाता। पाचन तंत्र बिगड़ता है, रक्त-प्रवाह में व्यतिरेक उत्पन्न होता है, असंतुलित मस्तिष्क अनिद्रा, अर्द्धविक्षिप्तता जैसे रोगों से घिरकर स्वास्थ्य सुतंलन को गड़बड़ाता है। हमें हँसती-हँसाती स्थिति में ही रहना चाहिए। सफलता और प्रसन्नता का रहस्य इसी में सन्निहित है। यही जीवन जीने की सही रीति-नीति है।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९८८ पृष्ठ ५६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ज्ञान सबसे बड़ा देवता

दुर्भाग्य कभी आपके पीछे हाथ धोकर पड़ जाए। ऐसा लगने लगे कि कोई भी उपाय प्रगति-पथ पर स्थिर रखने में समर्थ नहीं है, चारों ओर असफलता ही असफलता, अंधकार ही अंधकार प्रतीत हो रहा है, तब आप महापुरुषों के ग्रंथ पढ़ें। उनके विचारों का नवनीत आपके जीवन में इपर से प्रकाश लाएगा, दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलेगा, प्रगति-पथ पर यात्रा को सरल बनाएगा। कभी भी ऐसा अवसर आए तो ज्ञान देवता की ही शरण लें।

समस्त शक्तियाँ साथ छोड़ दें, मित्र, पड़ोसी, कुटुंबी भी स्वार्थवश विरुद्ध हो जाएँ, जीवन-पथ पर चलने के लिए आपको असहाय एकाकी छोड़ दें, तब उत्तम पुस्तकों को मित्र बनाकर आगे बढ़ें। एकाकी और असहायपन के बीच भी आपको मौन-मैत्री व प्रकाश की वह किरण मिल जाएगी जो हाथ पकड़कर मार्गदर्शन करती हुई निर्दिष्ट लक्ष्य तक पहुँचा देगी।

देवालय टूटकर खंडहर बन सकते हैं, गिरकर समय के साथ नष्ट हो सकते हैं, लेकिन उत्तम ज्ञान और सद्विचार कभी भी नष्ट नहीं होते। ज्ञानदेवता का वरदान पाकर मानव निहाल हो जाता है। वह मानव से देवमानव बन जाता है। ज्ञान वह सीपी है जिसमें प्रवेश कर मानव जीवन मोती बन जाता है। इसीलिए मनीषी कहते हैं कि सद्ज्ञान की शरण लें।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८८ पृष्ठ १

मनुष्य एक भटका हुआ देवता

अपने आप को चिंतन, चरित्र और व्यवहार की कसौटियों पर खरा सिद्ध होना ही वह स्थिति है जिसे सौ टंच सोना कहते हैं। पेड़ पर फल-फूल ऊपर से टपककर नहीं लदते, वरन जड़ें जमीन से जो रस खींचती हैं, उसी से वृक्ष बढ़ता है और फलता-फूलता है। जड़ें अपने अंदर हैं, जो समूचे व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। इसी प्रखरता के आधार पर वे सिद्धियाँ-विभूतियाँ प्राप्त होती हैं, जिनके आधार पर आध्यात्मिक महानता और भौतिक प्रगतिशीलता के उभयपक्षीय लाभ मिलते हैं। यही उपासना, साधना और आराधना का समन्वित स्वरूप है। यही वह साधना है जिसके आधार पर सिद्धियाँ और सफलताएँ सुनिश्चित बनती हैं। दूसरे के सामने हाथ पसारने, गिड़गिड़ाने भर से पात्रता के अभाव में कुछ प्राप्त नहीं होता। भले ही वह दानी परमेश्वर ही क्यों न हो। कहा गया है कि ईश्वर केवल उनकी सहायता करता है, जो अपनी सहायता आप करते हैं। आत्मपरिष्कार, आत्मशोधन, यही जीवन साधना है। इसी को परम पुरुषार्थ कहा गया है। जिनने इस लक्ष्य को समझा, जानना चाहिए कि उनने अध्यात्म के तत्त्वज्ञान का रहस्य और मार्ग हस्तगत कर लिया, चरम लक्ष्य तक पहुँचने का राजमार्ग पा लिया।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८८ पृष्ठ १३

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिरस्थायी संपदा-चरित्रनिष्ठा

चरित्र ही जीवन की आधारशिला है। भौतिक एवं आध्यात्मिक सफलताओं का मूल भी यही है। विश्वास भी लोग उन्हीं का करते हैं, जिनके पास चरित्ररूपी संपदा है।

वस्तुतः चरित्र मनुष्य की मौलिक विशेषता एवं उसका निजी उत्पादन है। व्यक्ति इसे अपने बलबूते विनिर्मित करता है। इसमें उसके निजी दृष्टिकोण, निश्चय, संकल्प एवं साहस का पुट अधिक होता है। इसमें बाह्य परिस्थितियों का यत्किंचित ही योगदान रहता है। बाह्य परिस्थितियाँ तो सामान्य स्तर के लोगों पर ही हावी होती हैं। जिनमें मौलिक विशेषता है, वे नदी के प्रवाह से ठीक उलटी दिशा में मछली की तरह अपनी भुजाओं के बल पर चीरते-छरछराते चल सकते हैं। निजी पुरुषार्थ एवं अंतःशक्ति को उभारते हुए साहसी व्यक्ति अपने को प्रभावशाली बनाते व व्यक्तित्व के बल पर जन सम्मान जीतते देखे गए हैं। यह उनके चिंतन की उत्कृष्टता, चरित्र की श्रेष्ठता एवं अंतराल की विशालता के रूप में विकसित व्यक्तित्व की ही परिणति है।

चरित्र विकास ही जीवन का परम उद्देश्य होना चाहिए। इसी के आधार पर जीवनलक्ष्य प्राप्त होता है। इस संपदा के हस्तगत होने पर ही जीवन का वास्तविक आनंद प्राप्त किया जा सकता है। यही संपत्ति वास्तविक सुदृढ़ और चिरस्थायी होती है। अतः हर स्थिति में इस संजीवनी की रक्षा की जानी चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८८ पृष्ठ ५५

सिद्धि का केंद्र अपना ही अंतराल

चेतनसत्ता का केंद्र भीतर है। बाहर तो उसका कलेवर मात्र लिपटा हुआ है। परमाणुओं व जीवाणुओं के नाभिक मध्य में होते हैं। शक्ति के स्रोत यहीं पर हैं। बाहर तो उनका सुरक्षा-दुर्ग मात्र खड़ा होता है। सूर्य की ऊर्जा उत्पत्ति उसके अंतराल से होती है, बाहर तो विकिरण के वितरण भर की क्रिया चलती रहती है। अंतरात्मा कायकलेवर के अंतरंग में है। बाहर तो उसके निवास-निर्वाह का भवन मात्र खड़ा है।

जीवन की गरिमा बहिरंग के साधनों से नहीं और न शरीर के अवयवों पर उसकी निर्भरता है। उत्कर्ष भीतर से उदय होता है। बाहर तो मात्र हलचलें दिखाई देती हैं।

हम देखते भी बाहर हैं व खोजते भी बाहर हैं, जबकि जिसे देखना व पाना है, उसका अस्तित्व भीतर ही विद्यमान होता है। कस्तूरी के हिरन की तरह बाहर सुगंध खोजने के प्रयत्न निष्फल ही नहीं जाते, खीझ और निराशा भी गले बाँध जाते हैं। अभीष्ट की प्राप्ति के लिए नाभिसंस्थान का आश्रय लेने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं। मृगतृष्णा में भटकने के बजाय यदि अपने ही दृष्टिकोण को सुधार लिया जाए तो प्यास बुझाने के लिए उपयुक्त स्थान ढूँढ़ने और सार्थक प्रयास करने का अवसर मिल सकता है। समृद्धि और सर्वांगपूर्ण प्रगति के मूलतत्त्व भीतर हैं। तृप्ति, तुष्टि और शांति पानी हो तो अंतःकरण के रत्न भंडार को ही खोदना, कुरेदना पड़ेगा।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८८ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मेरा यहाँ कुछ नहीं, सब कुछ तेरा है!

अपनी कामनाओं को जितना ही बढ़ाते हैं, परिस्थितियों का दबाव उतना ही अधिक पड़ता है। फलस्वरूप लोग दैव को दोष लगाते हैं। परमात्मा की अकृपा समझते हैं किंतु विचारपूर्वक देखें तो बात ऐसी नहीं है। परमात्मा का विधान सबके लिए सदैव मंगलदायक ही होता है। हमें उसी की रचना, उसी के विधि-विधान के साथ अपने जीवन का तालमेल पैदा करना चाहिए। वह जो कुछ भी करेगा हमारे हित के लिए ही करेगा, इस विश्वास से आत्मा में बड़ा बल बढ़ता है।

देह के साधनों और संबंधों को ही सत्य मानना मनुष्य की सबसे बड़ी भूल है। शरीर के सुख की ही बात सोचना बुद्धिसंगत कदापि नहीं हो सकती। हमें जन्म से पूर्व और मृत्यु के बाद वाले स्वरूप का भी विचार करना पड़ेगा। तात्त्विक दृष्टि से हमारा पिता, हमारी माता, भाई, स्वजन स्नेही सब कुछ वही है। वह हमारा संरक्षक है। उसी ने हमें जीवन दिया है। सुख के अनेकों साधन भी उसी ने जुटाए हैं। परम कृपालु स्वामी सहृदय सखा भी वही है। मनुष्य जीवन देकर उसने हमारा कितना बड़ा उपकार किया है। क्या हमें इस कृतज्ञता को भूल जाना चाहिए? क्या उससे बिलग रहकर हम कभी सुखी रह सकेंगे? एक ही उत्तर है कि उसकी शरणागति के बिना सुख नहीं मिल सकता। उसे पाने के लिए तो पूर्ण रूप से समर्पण करना ही पड़ेगा। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८८ पृष्ठ ३०*

भाग्य का निर्णय मनुष्य स्वयं करता है

नियति की यह इच्छा है कि मनुष्य ऊँचा उठे। उसे आगे बढ़ाने के लिए प्रकृति की शक्तियाँ निरंतर सक्रिय रहती हैं। ईश्वर के राजकुमार को सुखी और सुसंपन्न बनाना ही प्रकृति का क्रम है। उसे स्रष्टा ने इसीलिए रचा और खड़ा किया है।

इतने पर भी यह अधिकार मनुष्य के हाथों ही सुरक्षित रखा गया है कि वह प्रगति किस दशा में करे? चयन की यह स्वतंत्रता उसे प्राप्त है। किसी दूसरे को इसमें हस्तक्षेप का अवसर नहीं दिया जाता है। ईश्वर विश्व का नियंता है। उसका ज्येष्ठ पुत्र स्वभाग्य निर्माता तो होना ही चाहिए। प्रकृति उसकी सहायता भर करती है।

अंत:करण की आकांक्षा का चयन एवं उसका निर्धारण मनुष्य का प्रथम पुरुषार्थ है। यह निर्धारण होते ही आत्मसत्ता उसकी पूर्ति के लिए जुट जाती है। मन:तंत्र अपनी विचारशक्ति को और शरीरतंत्र अपनी क्रियाशक्ति को इसी आदेश के पालन में जुटा देता है। संपर्क क्षेत्र से वैसा ही सहयोग मिलने लगता है और परिस्थितियाँ अभीष्ट मनोरथ की पूर्ति हेतु अनुकूलता उत्पन्न करने लगती हैं।

पतन अभीष्ट है या उत्कर्ष? असुरताप्रिय है या देवत्व? क्षुद्रता चाहिए या महानता? यह निर्णय मनुष्य स्वयं करता है। पतन के पथ पर नारकीय दु:ख सहने पड़ते हैं और उत्कर्ष के पथ पर स्वर्गोपम सुख-शांति मिलती है। *—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८८ पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन साधना के कुछ सुनिश्चित सूत्र

पेट भरने और परिवार के लिए मरते-खपते रहना किसी भी गरिमाशील के लिए पर्याप्त नहीं हो सकता। इस नीति को पशु-पक्षी और कीट-पतंग ही अपनाते रहते हैं और मौत के दिन किसी प्रकार पूरे कर लेते हैं। यदि मनुष्य भी इसी कुचक्र में पिसता और दूसरों को पीसता रहे तो समझना चाहिए कि उसने मनुष्य जन्म जैसी देव-दुर्लभ संपदा को कौड़ी मोल गँवा दिया।

नित्य आत्मविश्लेषण, सुधार, सत्प्रवृत्तियों के अभिवर्द्धन का क्रम यदि जारी रखा जाए तो प्रगति के लक्ष्य उपलब्ध करने की दिशा में अपने क्रम से बढ़ चलना संभव हो जाता है—यह एक प्रकार का तप है। तप से संपत्ति और संपत्ति से सिद्धि प्राप्त होने का तथ्य सर्वविदित है। दुष्प्रवृत्तियों से अपने को बचाते रहने की संयमशीलता किसी को भी सशक्त बना सकने में समर्थ हो सकती है। यह राजमार्ग अपनाकर कोई भी समुन्नत होते हुए अपने आप को देख सकता है।

समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी के चार सद्गुण यदि अपने व्यक्तित्व के अंग बनाए जा सके, उन्हें पुण्य-परमार्थ स्तर का माना जा सके तो अपना आपा देखते-देखते इस स्तर का बन जाता है कि अपने सुख बाँटने और दूसरों का दु:ख बँटा लेने की उदार मनोदशा विनिर्मित होने लगे। जीवन साधना इसी आधार पर सधती है। मनुष्य जन्म को सार्थक इन्हीं आधारों को अपनाकर बनाया जा सकता है।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८९ पृष्ठ ३०

जड़ें गहरी और मजबूत हों

शरीर से परिपुष्ट दीखने से ही कोई व्यक्ति बलिष्ठ नहीं हो जाता। शक्तिवान वे हैं, जिनमें मनोबल की अभीष्ट मात्रा मौजूद है। दुर्बल काया लेकर कर्मक्षेत्र में उतरे ऐसे महापुरुषों की संख्या अगणित हैं, जिन्होंने अपने मनोबल के कारण अपने को ऊँचा उठाया और अगणित लोगों के भविष्य का निर्माण किया। गांधी जी जैसे दुर्बल काय किंतु मनोबल के धनी व्यक्ति कितने महत्त्वपूर्ण काम कर सकने में समर्थ हुए हैं। ऐसे उदाहरणों से इतिहास के पन्ने भरे पड़े हैं। आद्य शंकराचार्य जैसे भयानक भगंदर व्रण से रुग्ण व्यक्ति भी अपने छोटे से जीवन में चकित कर देने वाली सफलताएँ प्राप्त करते रहे हैं। शरीरबल की नहीं मनोबल की महत्ता को ही यह उदाहरण प्रतिपादित करते हैं। शरीरबल और मनोबल की तुलना करनी हो तो विशालकाय हाथी और मनस्वी सिंह के मल्लयुद्ध का प्रतिफल हमें सहज जी वस्तुस्थिति समझा सकता है।

हमें जीवन की जड़ों को मजबूत बनाना चाहिए और उन्हें सींचने में दत्तचित्त रहना चाहिए। शरीर को मजबूत और नीरोग बनाने के लिए जितना ध्यान रखा जाता है, साधन जुटाया जाता है, उससे अधिक प्रयत्न यह रहना चाहिए कि हमारी मन:स्थिति की दृढ़ता बढ़ती चली जाए, हिम्मत कम न पड़े कठिनाइयाँ सामने आने पर उनसे लड़ने की बहादुरी इतनी अधिक बनी रहे कि संघर्षों से निबटना एक मनोरंजक खेल भर बनकर रह जाए।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९८९ पृष्ठ ५९

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पगडंडियों में न भटकें

जीवन एक वन हैं, जिसमें फूल भी हैं और काँटे भी। जिसमें हरी-भरी सुरम्य घाटियाँ भी हैं और ऊबड़-खाबड़ जमीन भी। अधिकतर वनों में वन्य पशुओं और वनवासियों के आने-जाने से छोटी-मोटी पगडंडियाँ बन जाती हैं। सुव्यवस्थित दीखते हुए भी ये जंगलों में जाकर लुप्त हो जाती हैं। आसानी और शीघ्रता के लिए बहुधा यात्री इन पगडंडियों को पकड़ लेते हैं, वह सही रास्ते से भटक जाते हैं।

जीवन-वन भी ऐसा ही पगडंडियों से भरा है जो बहुत हैं, छोटी दीखती हैं, पर गतंव्य स्थान तक पहुँचती नहीं हैं। जल्दबाज पगडंडियाँ ही ढूँढ़ते हैं, किंतु उनको यह मालूम नहीं होता है कि ये अंत तक नहीं पहुँचती और जल्दी काम हो जाने का लालच दिखाकर दलदल में फँसा देती हैं।

पाप और अनीति का मार्ग जंगल में पगडंडी, मछली की वंशी और चिड़ियों के जाल की तरह है। अभीष्ट कामनाओं की जल्दी से जल्दी, अधिक से अधिक मात्रा में पूर्ति हो जाए, इस लालच से लोग वह रास्ता पकड़ते हैं जो जल्दी ही सफलता की मंजिल तक पहुँचा दे। जल्दी और अधिकता दोनों ही वांछनीय हैं, पर उतावली में उद्देश्य को नष्ट कर देना तो बुद्धिमत्ता नहीं कही जाएगी।

जीवन-वन का राजमार्ग सदाचार और धर्म है। उस पर चलते हुए लक्ष्य तक पहुँचना समयसाध्य तो है, पर पर जोखिम उसमें नहीं है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८९ पृष्ठ १

कामनाओं की नहीं संकल्पों की पूर्ति

संकल्प में निश्चित लक्ष्य पर पहुँचने के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ करने की लगन होती है, उसमें प्रतिफल के लिए उतावली नहीं होती, उसका निश्चय होता है। उतावली में आदमी समय अधिक लगने पर अधीर हो उठता है। व्यवधान पड़ जाने पर भी उसे अपनाए रहने और कठिनाइयों से जूझते रहने का भी साहस नहीं होता, कार्यपद्धति में कोई हेर-फेर अभीष्ट हो तो उसे करने के लिए भी सूझ-बूझ साथ देती है। संकल्प में इच्छाशक्ति और भावनाशक्ति दोनों ही जुड़ी होती हैं। उसकी रूपरेखा विचारपूर्वक बनाई जाती है और उसे उपलब्ध करने के लिए जिन साधनों और सहयोग की अपेक्षा है, उनकी भी समय रहते व्यवस्था जुटा ली गई होती है। उसके पीछे सुनियोजित भावना रहती है, किंतु मनोकामना तो एक प्रकार का भावावेश है। उसके पीछे न दूरदर्शी विवेकशीलता का समावेश होता है और न समुचित तैयारी वाली परिकल्पना एवं साधन संपन्नता का। प्रतिरोधों की चिंता भी समय रहते कर ली जाती है।

संसार का कोई कार्य इतना सरल नहीं है कि वह चुटकी बजाते ही तुरत-फुरत पूरा हो जाया करे। सभी प्रयासों के लिए प्रतिस्पर्द्धा में उतरना पड़ता है और अपनी क्षमता का इतना विकास करना पड़ता है कि कठिनाइयाँ विचलित न कर सकें। देर लगने पर मन उतावली न करने लगे। किंतु संकल्प शब्दभेदी बाण की तरह है, जो निशाना वेधकर ही रहता है। हम कामनाओं की नहीं, संकल्पों की पूर्ति में अपना पुरुषार्थ जुटाएँ यही मानवोचित है।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८९ पृष्ठ २

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है स्वर्ग यहीं, अपवर्ग यहीं !

दुष्प्रवृत्तियाँ मन:क्षेत्र में एक प्रकार का कोहराम मचाए रहती हैं। फलत: अंतराल में ऐसी विपन्नता छाई रहती है जो शारीरिक और मानसिक रोगों का सृजन करती रहे और उस आधार पर व्यक्ति हाथोंहाथ दंड-पुरस्कार प्राप्त करता रहे। शरीर की विधि व्यवस्था मात्र रक्त-मांस से ही नहीं चलती। उसका सूत्र-संचालन करने वाली प्राणशक्ति का उद्गम मस्तिष्क में रहता है।

जिसे सत्कर्म करने, सद्भाव एवं सज्जनतापूर्ण व्यवहार का अभ्यास रहता है, उसकी प्राणचेतना में प्रगतिशील तत्त्व भरे रहते हैं। अतएव उनके गुण-कर्म-स्वभाव में ऐसे तत्त्वों का बाहुल्य रहता है, जिसके सहारे मन प्रसन्न रहे। उत्साह, साहस और परमार्थ भरी उमंगों की कमी न पड़े। ऐसे व्यक्ति सर्वोपरि योजनाएँ बनाते हैं और अपने आत्मबल के सहारे उन्हें पूरी कर गुजरते हैं। जिस व्यक्तित्व का पर्यवेक्षण करने से अनेक का उत्साह बढ़े, अनेक सन्मार्ग पर चलें, अनेक अपनी कुचाल का परित्याग करें, समझना चाहिए कि वह मनुष्य से ऊँचा उठकर देव श्रेणी में गिना जाने योग्य हो गया। देवता पारस पत्थर के समान होते हैं जो भी संपर्क में आता है, वह सोने का बन जाता है। जिनने अपने जीवन में ऐसी विभूतियाँ अर्जित कर ली, उनका जीवन हर दृष्टि से धन्य ही माना जाता है। वे देवमानव, ऋषि बन जाते हैं। भूसुर कहलाते हैं। वे स्वर्ग स्तर का जीवन यहीं जीते हैं, यहीं मुक्ति पाते हैं।

—अखण्ड ज्योति-फरवरी १९८९ पृष्ठ ३४

ईश्वर उपासना से जुड़ी श्रेष्ठ भावनाएँ

उपासना प्रतिदिन करनी चाहिए। जिसने सूरज-चाँद बनाए, फूल-फल और पौधे उगाए, कई वर्ण, कई जाति के प्राणी बनाए, उसके समीप बैठेंगे नहीं तो विश्व की यथार्थता का पता कैसे चलेगा? शुद्ध हृदय से कीर्तन, भजन, प्रवचन में भाग लेना प्रभु की स्तुति है उससे अपने देह, मन और बुद्धि के वह सूक्ष्म संस्थान जाग्रत होते हैं, जो मनुष्य को सफल, सद्गुणी और दूरदर्शी बनाते हैं। उपासना का जीवन के विकास से अद्वितीय संबंध है, किंतु केवल प्रार्थना ही प्रभु का स्तवन नहीं है। हम कर्म से भी भगवान की उपासना करते हैं। भगवान कोई मनुष्य नहीं है, वह तो सर्वव्यापक एवं सर्वशक्तिमान क्रियाशील सत्ता है, इसलिए उपासना का अभाव रहने पर भी उसके निमित्त कर्म करने वाला मनुष्य बहुत शीघ्र आत्मज्ञान प्राप्त कर लेता है। लकड़ी काटना, सड़क के पत्थर फोड़ना, मकान की सफाई, सजावट और खलिहान में अन्न निकालना, आदि भी भगवान की ही स्तुति हैं। यदि हम यह सारे कार्य-कर्म, इस आशय से करें कि इससे विश्वात्मा का कल्याण होगा। कर्त्तव्य भावना से किए गए कर्म, परोपकारों से भगवान जितना प्रसन्न होता है, उतना कीर्तन और भजन से नहीं। स्वार्थ के लिए नहीं आत्मसंतोष के लिए किए गए कर्म से बढ़कर फलदायक ईश्वर की भक्ति और उपासना पद्धति और कोई दूसरी नहीं हो सकती।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९८९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उद्दंडता का उपचार विपत्ति के रूप में

व्यक्ति और समाज परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। उदंड व्यक्ति अपने अनगढ़ कृत्यों से समूचे समाज को प्रभावित करता और अशांति फैलाता है। क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। अवांछनीय तत्त्वों को देर तक सहन नहीं किया जाता। उन्हें अवरोध उत्पन्न करने की छूट सदा ही नहीं मिल सकती।

व्यक्ति की अनुपयुक्त गतिविधियाँ व्यापक विक्षोभ उत्पन्न करती हैं और समाज तथा प्रकृति की ओर से ऐसे लोगों को नियंत्रण में लाने की, कड़ुवा सबक सिखाने की प्रतिक्रिया चल पड़ती है। इसी का नाम विपत्ति है। विपत्ति से घिरा व्यक्ति सीखता है कि अपने को उबारने के लिए उसे दूसरों की कठिनाई समझनी चाहिए जैसा कि बुद्धिमान लोग विपत्ति खड़ी होने से पूर्व ही कर लिया करते हैं।

सज्जनता किसी पर उपकार करना नहीं है, वरन अपने आप को भर्त्सना, विरोध, आक्रोश से बचाना है। प्रकृति के कठोर विधान का व्यतिक्रम करके अपने ऊपर विपत्ति टूट पड़ने से समय रहते बचाव कर लेना है।

उद्दंडता प्रकृति को असहनीय है। समाज भी उसका विरोध करता है और शासन भी। इन सबसे बड़ा अपना अंत:करण है जो उद्दंडता की अवस्था छुड़ाने के लिए विपत्तियों को जहाँ-तहाँ से न्योत बुलाता है। अनीति का यही उपचार भी है। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९८९ पृष्ठ १*

समर्पण का आनंद और उसकी अनुभूति

शरणागति-समर्पण तभी वास्तविक माना जा सकता है, जब अपने तन, मन, धन को नियंता की मरजी पर चलने के लिए छोड़ दिया जाए। यहाँ यह बात भी स्मरणीय है कि भगवद् इच्छा सदा उच्चस्तरीय ही होती है और उसके साथ उत्कृष्ट आदर्श जुड़े होते हैं। जब भी अंतराल में ऐसा उत्साह उभरे तो उसे ईश्वर की मरजी समझना चाहिए। किंतु यदि निकृष्टता का खुमार चढ़ा हो तो समझना चाहिए कि यह शैतान की करतूत है। कई व्यक्ति अपने भीतर से उठने वाले अनौचित्य को भी ईश्वर की इच्छा मानकर कुकृत्य करने पर उतारू हो जाते हैं, उन्हें समझना चाहिए कि निकृष्टता ही ईश्वर का आदेश बनकर धोखा दे रही है।

शरणागति से तात्पर्य है—निस्स्वार्थ होना। उच्चस्तरीय आदर्श को अपने चिंतन, चरित्र और व्यवहार में ओत-प्रोत कर लेना। इससे कम में ईश्वरीय सत्ता का आत्मसत्ता में समावेश बन ही नहीं पड़ता।

ईश्वरेच्छा होने की एक ही कसौटी है कि अपने आप को अधिकाधिक सद्भावनाओं से ओत-प्रोत किया जाए और बुद्धि को ऐसा निर्णय करने दिया जाए, जिससे सत्प्रवृत्तियों का संवर्द्धन होता है, सत्कर्म बन पड़ता हो और नीति-मर्यादा एवं शालीनता का परिपालन होता हो। भगवद् समीपता का मार्ग सर्वतोमुखी सदाशयता है। समर्पण करने वालों की यही इष्ट और लक्ष्य होता है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९८९ पृष्ठ २८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शक्ति का संचय भी अनिवार्य

आपके जीवन में कोई दु:ख है, तो समझिए कि आपके साथ कोई निर्बलता अवश्य बँधी हुई है। शरीर की कमजोरी से रोग घेरते हैं मानसिक कमजोरी से चिंताएँ सताती हैं। अपनी बौद्धिक क्षमताएँ दुर्बल पड़ी हों, तो यह निश्चित है कि आप पराधीनता के पाश में जकड़े होंगे। अपनी उन्नति के लिए किसी और की गाँठ टटोल रहे होंगे। सांस्कृतिक, सामाजिक और राष्ट्रीय दृष्टि से जो जातियाँ संगठित नहीं होतीं, उन्हें ही बाहरी आक्रमण सताते हैं। कैसी भी हों दुर्बलताएँ ही नारकीय-यंत्रणाओं का कारण होती हैं। इसीलिए निर्बलता पाप है। पापी व्यक्ति की तरह निर्बलों को भी पृथ्वी पर सुख से जीने का अधिकार प्रकृति नहीं देती है।

ऐश्वर्य की इस संसार में कोई कमी नहीं, संपदाएँ और विभूतियाँ पग-पग पर बिछी पड़ी हैं। सुखोपभोग के साधनों के लिए भटकना नहीं पड़ता। शर्त इतनी ही है कि आपके पास उन्हें प्राप्त करने और उपभोग करने का बल और शक्ति भी है अथवा नहीं। यदि आप निर्बल हैं तो आपके पास की रही-सही संपत्ति और विभूतियाँ भी छिनने ही वाली हैं। इसीलिए श्रुति कहती है—"**बलमुपास्व**" अर्थात बल की उपासना करो। शक्ति के अभाव में ही पाप पनपते हैं, इसलिए यदि आप शक्तिशाली नहीं हैं, तो कितना ही ईश्वर भक्त क्यों न हों, पाप की वृद्धि के आप भी भागीदार हैं।

—अखण्ड ज्योति-जून १९८९ पृष्ठ १

कर्मों की फलती-फूलती खेती

मनुष्य जीवन एक खेत है, जिसमें कर्म बोए जाते हैं और उन्हीं के अच्छे-बुरे फल काटे जाते हैं। जो अच्छे कर्म करता है, वह अच्छे फल पाता है, बुरे कर्म करने वाला बुराई समेटता है। कहावत है—आम बोएगा, वह आम खाएगा, बबूल बोएगा वह कांटे पाएगा। बबूल बोकर जिस तरह आम प्राप्त करना प्रकृति का सत्य नहीं, उसी प्रकार बुराई के बीज बोकर भलाई पा लेने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

मनुष्य जीवन में इस सत्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। भलाई का फल सुख, शांति और प्रगति के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता, वैसे ही बुराई का प्रतिफल बुराई न हो—ऐसा आज तक न कभी हुआ और न आगे होगा। इतिहास इसका साक्षी है।

कार्य कभी कारणरहित नहीं होते और उसी तरह कोई भी क्रिया परिणामरहित नहीं होती। स्थूल और सूक्ष्म दोनों दृष्टि से सृष्टि का यह मौलिक नियम है कि भाग्य कभी अपने आप नहीं बनते वरन वह व्यक्ति के कर्मों की कलम से लिखे जाते हैं। अच्छा या बुरा भाग्य सदैव अपने ही कर्म का फल होता है।

व्यक्ति हो, समाज या राष्ट्र हो, वह बुराई से पनपा, यह एक भ्रम है। जीवन हर क्षण का लेखा-जोखा रखता है। धोखे की सफलताएँ अंतत: पतन और अपयश का ही कारण बनती हैं। अंत तक साथ देने वाली सफलता भलाई की है। उसी से मनुष्य का यह लोक और परलोक सुधरता है। कर्मफल तो अकाट्य है।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभा के बीजांकुर हर किसी में विद्यमान

अध्यात्म दर्शन का सार निष्कर्ष इतना भर है कि अपने को जानो "**आत्मानं विद्धि, आत्मैव इदं ज्ञातव्यः**" अपने को विकसित करो और ऐसी राह पर चलो जो कहीं अपने लक्ष्य तक पहुँचती हो। यह शिक्षा अपने आप के लिए है। इसे स्वीकार-अंगीकार करने के उपरांत ही वह प्रयोजन सधता है, जिसमें दूसरों से कुछ समर्थन, सहयोग, अनुदान पाने की आशा की जाए। देवता भी तपस्वियों को ही वरदान देते हैं, बाकी तो फूल प्रसाद के दोने लिए देवस्थानों के इर्द-गिर्द चक्कर लगाते रहते हैं। भिखारी कितना कुछ कमा लेता है, इसे सभी जानते हैं। उन्हें जीवनभर अभावों की, उपेक्षा की शिकायत ही बनी रहती है। श्रीमंतों की मुट्ठियाँ भी उनके लिए सिकुड़ी हुई ही रहती हैं।

वस्तुस्थिति समझने के उपरांत उसी निमित्त उन्मुख होना चाहिए कि अपने को अधिक प्रामाणिक और अधिक प्रखर बनाने में जुट पड़ा जाए। मनौती मनाते रहने की अपेक्षा यही अवलंबन सही और सच्चा है। इस हेतु कुछ कदम बढ़ाने से पूर्व यह अनुमान लगा लेना चाहिए कि अपने भीतर सामर्थ्य का अपरिमित भंडार भरा पड़ा है। स्रष्टा ने मनुष्य को असाधारण सफलताएँ उपलब्ध कर सकने की संभावनाओं से भरा-पूरा बनाया है। आवश्यकता मात्र इतनी है कि अवरोध की झीनी दीवार को गिराने के लिए साहस जुटाया जाए।

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८९ पृष्ठ १८

प्रतिभा-संवर्द्धन की दो महानतम उपलब्धियाँ

"अपना सुधार संसार की सबसे बड़ी सेवा है।" अपने को सुधार लेना, संसार को सुधार लेने की क्षमता का परिचय देता है। जो दूसरों को जीते वह वीर, जो अपने को जीते वह महावीर। मानवी गरिमा के अनुरूप अपने गुण-कर्म-स्वभाव को विनिर्मित कर लेना, संसार में एक नए देवता की अभिवृद्धि करना है। व्यक्ति के बहिरंग पर जो कुछ आच्छादित है, उसका अनेकानेक अनुकरण करते और प्रभाव से अनुप्राणित होते हैं। यहाँ तक कि उनके मरने के उपरांत भी हरिश्चंद्र-भगीरथ जैसों की कथा-गाथा अक्षुण्ण बनी रहती और अनेकानेक को प्रकाश देती रहती है। यही बात अंतरंग के संबंध में भी है। चिंतन, चरित्र, व्यवस्था, आस्था, विश्वास, श्रद्धा, प्रज्ञा, निष्ठा की यदि उच्चस्तरीय स्थिति हो तो उसका प्रभाव-परिणाम धारणकर्त्ता तक ही सीमित नहीं रहता, वह उड़ते बादलों की तरह अपने कार्यक्षेत्र में अन्न-जल से लेकर प्राण ऊर्जा तक न जाने क्या-क्या बरसाते रहने में लगा रहता है। उसका तेजोवलय न जाने कितनों पर विशेषतया संपर्क क्षेत्र वालों पर शक्तिपात की, उठाने-उछालने की क्रिया-प्रक्रिया संपन्न करता है। तेजोवलय अंतरिक्ष में उड़ता और जहाँ भी पहुँचता है, वहीं अपने अनुरूप चेतना-वसंत खिलाता चलता है। *—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९८९ पृष्ठ ३५*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ईश्वर का दर्शन और संभाषण

प्रतिमाओं में देखे जाने वाले भगवान बोलते नहीं, पर अंत:करण वाले भगवान जब दर्शन देते हैं तो बात करने के लिए भी व्याकुल दीखते हैं। यदि हमारे कान हों तो सुनें—वे एक ही बात कहते चले जाएँगे—''मेरे इस अनुपम उपहार—मनुष्य जीवन को इस तरह न बिताया जाना चाहिए जैसे कि बिताया जा रहा है। ऐसे न गँवाना चाहिए जैसे कि गँवाया जा रहा है। यह बड़े प्रयोजन के लिए है। ओछी रीति-नीति अपनाकर मेरे प्रयास-अनुदान का उपहास न बनाया जाना चाहिए।''

जब और भी बारीकी से उनकी भाव-भंगिमा और मुखाकृति को देखें तो प्रतीत होगा कि वे विचार-विनिमय करना चाहते हैं और कहना चाहते हैं कि बताओ तो इस जीवन-संपदा का इससे अच्छा उपयोग क्या और कुछ नहीं हो सकता जैसा कि किया जा रहा है? वे उत्तर चाहते हैं और संभाषण को जारी रखना चाहते हैं।

अंतरंग में अवस्थित भगवान की झाँकी, दर्शन, परामर्श और पथ-प्रदर्शन तक ही पर्याप्त नहीं है। उसमें गाय बछड़े जैसा वात्सल्य भी विह्वल दीखता है। परमात्मा हमें अपना अमृत-दुग्ध, अजस्र अनुदान के रूप में पिलाना चाहते हैं। पति और पत्नी की तरह भिन्नता को अभिन्नता में बदलना चाहते हैं। आत्मसात कर लेने की उनकी उत्कंठा कितनी प्रबल दृष्टिगोचर होती है।

हम ईश्वर के बनें, उसके लिए जिएँ। अपने को इच्छा और कामनाओं से खाली कर दें। उसकी इच्छा और प्रेरणा के आधार पर चलने के लिए आत्मसर्मपण कर दें, तो परमेश्वर को अपने कण-कण में लिपटा हुआ, आनंद की वर्षा करता हुआ पाएँगे। ऐसा दर्शन कर सकें तो हम धन्य हो जाएँ।

—अखण्ड ज्योति-अगस्त १९८९ पृष्ठ १

चिंतन की दृष्टि से हम प्रौढ़ बनें !

लोग आयु की दृष्टि से तो बड़े हो जाते हैं, पर चिंतन की दृष्टि से बालक जैसे अविकसित ही बने रहते हैं। पड़ोसियों का ढर्रा अपनाकर गतिविधियाँ बनती हैं और यथार्थता, दूरदर्शिता तथा उपयोगिता की परख करना अनावश्यक मान लिया जाता है। यह अपरिपक्वता ही मानव जीवन की आंतरिक प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है।

बुद्धिमत्ता का अर्थ है—सुलझे हुए विचार, स्पष्ट दृष्टिकोण और उत्तरदायित्व समझने एवं निभाने की परिपक्वता। परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाना—किन्हें, किस प्रकार बदला, सुधारा जाना चाहिए और किन्हें, किस सीमा तक सहन किया जाना चाहिए? यह सब निष्कर्ष दूरदर्शिता, विवेकशीलता के आधार पर ही निकाले जा सकते हैं।

विचारों की प्रौढ़ता, दृष्टिकोण की परिपक्वता ही मानव जीवन की वह विशेषता है जिसे उपलब्ध करने पर व्यक्तित्व प्रतिभाशाली बनता है और बड़ी सफलताएँ प्राप्त कर सकने की संभावना सुनिश्चत होती है। ओछे मनुष्य वे नहीं जो वजन, लंबाई या आयु की दृष्टि से छोटे हैं, जिनकी विचारणा तथा आकांक्षा उथली और बचकानी हैं, जो गए-गुजरे लोगों की तरह सोचते और घटिया आकांक्षाएँ पूरी करने के लिए ओछे हथकंडे, अपनाते हैं, उन्हें कोई चतुर भले ही कह ले, पर वस्तुत: वे व्यक्तित्व की दृष्टि से बौने, अपंग लोगों की श्रेणी में ही माने जा सकेंगे।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रार्थना जीवन का अविच्छिन्न अंग बने

विचारों के अनुरूप ही मानसिक चेतना का स्वरूप गठित होता तथा जीवनक्रम का नियोजन बन पड़ता है। इन्हीं के अनुरूप ईश्वरीय चेतना से संबंध का स्थापन अथवा विच्छेदन होता है। पोषक विचार और पोषक शब्द हमारे शुभ की भूमिका हैं। वे आने वाले प्रभात की सुनहली रश्मियाँ हैं। विधेयात्मक विचारों से जीवन एवं जगत में हमारे लिए शुभ के आविर्भाव की भूमिका बन जाती है। शुभ विचारों का अवतरण निश्चित हो जाता है।

इसके विपरीत, विरोधी विचार शुभ की भूमिका को नष्ट करते हैं। इनका प्रवाह हमें अंधकार की ओर ले जाता है। इनका जमघट हमारे जीवन में क्या भीतर, क्या बाहर हर ओर दु:ख का जमघट लगा देता है। इस प्रवाह से मानसिक चेतना पूर्णतया क्षुब्ध और अशांत हो जाती है। ऐसी स्थिति में आंतरिक शक्तियों की अभिव्यक्ति की सारी संभावनाएँ समाप्तप्राय हो जाती हैं।

विरोधी विचार 'निर्वाण' हैं, तो पोषक विचार 'निर्माण' हैं। ईश्वर मंगलमय है 'शिवत्व' से परिपूर्ण है। वह हमारे लिए मंगल का विधान करते हैं। हमारे पोषक विचार, प्रार्थनाएँ ईश्वरीय चेतना से सामंजस्य का स्थापन करते हैं। परम चेतना के प्रवाह का पथ प्रशस्त कर देते हैं। पर ज्यों ही विरोधी विचार आते हैं, ईश्वर के मंगलमय विधान के अभिव्यक्त होने में बाधा उपस्थित करते हैं। वे राह में काँटे बिखेर देते हैं।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८९ पृष्ठ ४

प्रतिकूलताएँ निखारती हैं, व्यक्तित्व को

विषम परिस्थितियाँ मनुष्य के लिए वरदान रूप ही होती हैं। पर इन वरदानों का लाभ वही उठा सकता है, जिसमें इनको सँभालने की शक्ति हो। पुरुषार्थी और साहसी व्यक्ति ही इनको फलीभूत करके अनेक विभूतियाँ पाता है। जबकि आलसी, कायर, अकर्मण्य इनकी चपेट में आकर जीवन के सुखों से हाथ धो बैठता है। विषमताओं का मूल्य गहरा है। इन पर विजय पाने वाला ही, इनसे बहुत कुछ पाता है।

कष्ट के समय को जो लोग विवेक, धैर्य, पुरुषार्थ की कसौटी समझकर परीक्षा देते हैं, वे जीवन के वास्तविक सुख-शांति से लाभान्वित होते हैं। सही माने में सुखों का सूर्य दु:खों के बादलों के पीछे छिपा रहता है। जो बादलों की गर्जन-तर्जन से भय किए बिना इन्हें पार करता है। उसी को इसकी प्राप्ति होती है।

इसके अलावा दु:ख-कष्ट का सबसे बड़ा लाभ यह है कि इनके आने पर परमात्मा का सच्चे हृदय से स्मरण हो पाता है। इसी कारण पांडवों की माता कुंती ने भगवान श्रीकृष्ण से दु:खों का वरदान माँगा था। कष्टों की तीव्रता व्यक्ति में ईश्वर की अनुभूति पैदा कर उसके पास पहुँचा देती है।

कठिनाइयों को जो दु:ख देने वाला मानकर पलायन करता है, उसे वे दु:ख रूप में ही पीछे लग जाती हैं। जो साहसी बुद्धिमान इन्हें सुखमूलक मान इनका स्वागत करता है, उसे देवदूतों की तरह वरदान देने वाली होती हैं।

—अखण्ड ज्योति-सितंबर १९८९ पृष्ठ ८

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रतिभाएँ यह तथ्य समझें-समझाएँ

पानी को गरम करने से वह भाप बनता है और बादलों के रूप में बरसता है। वाष्पीकृत जल ही स्टीम इंजन चलाता है, प्रेशर कुकर के रूप में अपनी उपयोगिता दिखाता है। चिकित्सा के काम आने वाली बहुमूल्य रसायनें तभी बनती हैं, जब उनके अनेक अग्नि संस्कार होते हैं। तपाने, पकाने पर ही अनगढ़ खाद्य स्वादिष्ट व्यंजनों के रूप में परिणत होता है। सूर्य की ऊर्जा तप से उपजी है। प्राणियों और वनस्पतियों में प्राण-संचार करने में समर्थ होती है। घोर शीत के रहते तो जीवन का किसी रूप में उदय संभव नहीं हो पाता। सौर मंडल में दूरवर्ती ग्रह-उपग्रह इसी कारण निर्जीव हैं कि उन तक सूर्यताप अभीष्ट मात्रा में पहुँच नहीं पाता।

मनुष्य जीवन पर तो यह बात शत-प्रतिशत घटित होती है कि तप साधना अपनाकर ही प्रगतिशीलता और वरिष्ठता का लाभ उपलब्ध होता है। शरीर का स्वाभाविक तापमान घटने पर निष्क्रियता आ दबोचती है और मृत्यु आ धमकती है। ताप आवश्यक है। विषाणु उसी के प्रभाव से मरते हैं। धूप पाकर ही उद्यान में फूल खिलने और फलने लगते हैं।

उच्च उद्देश्यों के लिए किया गया पराक्रम या कष्ट सहना ही तप है। इसका प्रतिफल महान प्रयोजन में नियोजित हुआ देखा जाता है। *—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८९ पृष्ठ १५*

प्रसन्नता—एक सुलझी हुई मनःस्थिति

प्रतिकूलताएँ सामने आने पर जो अपने धैर्य, साहस और प्रयास का अनुपात बढ़ा देते हैं, वे उस संकट को पार ही नहीं कर लेते वरन सर्वसाधारण की दृष्टि में अपनी गरिमा में चार चाँद लगा देते हैं।

सोने का खरा होना, कसौटी पर कसे जाने और आग में तपने पर ही सिद्ध होता है। इसके बिना उसकी प्रामाणिकता पर कहाँ कोई विश्वास करता है? मानने को तो किसान भी अभागा कहा जा सकता है, जो पूरे साल भर कड़ी मेहनत करता और ऋतु प्रतिकूलताओं से जूझता है। पर जब उस प्रयास के फलस्वरूप कोठे भरा अनाज घर में आता है तो सभी की बाछें खिल उठती हैं और समझा जाता है कि कठोर परिश्रम में निरत होना और कठिनाइयों से जूझना उस समय कैसा ही क्यों न लगे पर अंततः संतोष और आनंद का निमित्त कारण ही होता है। आनंद क्या है? उसके उत्तर में वैभव, विलास और शोभा-शृंगार के साथ ही उसे नहीं जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि उनके कारण शक्तियों का क्षरण ही होता है और मनुष्य क्रमशः निर्बल, निस्तेज बनता जाता है। प्रसन्नता एक मनःस्थिति है जिसे उपयोगी कार्य करते हुए शौर्य पराक्रम के साथ जोड़ा जा सकता है। कर्त्तव्यपालन का आनंद ही वास्तविक है। उसके रहते प्रतिकूलताएँ भी अनुकूलताओं जैसा संतोष प्रदान करती हैं।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८९ पृष्ठ ४४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

चिंतन की अनगढ़ता ही दरिद्रता है !

बहुसंख्यक लोगों की मान्यताएँ, आस्थाएँ, विचारणाएँ, इच्छाएँ और गतिविधियाँ ऐसी हैं जिन्हें दूरदर्शी विवेकशीलता की कसौटी पर सही नहीं माना जा सकता। तात्कालिक लाभ की कल्पना में आकुल-व्याकुल होकर लोग कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। इन्हें इतनी फुरसत नहीं होती कि क्रिया की प्रतिक्रिया का अनुमान लगा सकें और यह सोच सकें कि आज की उतावली कल कितने बड़े दुष्परिणाम उपस्थित कर सकती है। ऐसा उत्कट आभास न होने पर गाड़ी ढर्रे पर चलती रहती है। भरी-बुरी आदतें अपने स्थान पर जमी रहती हैं और मनुष्य व्यामोहग्रस्तों की तरह वैसा ही करता रहता है जैसा कि दूरदर्शी विवेकशीलता के रहते वैसा करना अनुचित एवं हानिकर माना जाता।

मनुष्य स्वभाव से अनुकरणप्रिय है। इर्द-गिर्द के लोगों को जैसा करते देखता है उसी की नकल बनाने लगता है। उचित-अनुचित का विवेक करने के लिए तो विकसित विवेकशीलता चाहिए। उसका प्राय: अभाव रहता है। जैसा कुछ अधिकांश लोगों को करते देखा जाता है, उसी को सही मानने और अनुकरण करने का मन बन जाता है। दुर्व्यसन प्राय: इसी कारण छूत की बीमारी की तरह फैलते हैं। क्योंकि उन्हें अधिकांश लोग अपनाते दीखते हैं। अस्तु, विचारों के सुनियोजन पर सावधानीपूर्वक ध्यान दिया जाना चाहिए। चिंतन को सुघड़ बनाने के लिए सतत प्रयासरत रहना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९८९ पृष्ठ ४८

क्षुद्रता अपनाने से हानि ही हानि

अपनेपन को छोटा करते-करते क्षुद्रता इतनी बढ़ जाती है कि मात्र विलास तक ही मनुष्य की सत्ता सीमाबद्ध होकर रह जाती है। क्षुद्रताग्रस्त विचारों की भरमार से मस्तिष्क श्मशान की तरह मनोविकारों की चिता में जलता रहता है। आनंद और उल्लास के भाव भरे सुमन जिस उद्यान में खिले रह सकते हैं और संबद्ध वातावरण को सुरम्य बनाए रख सकते हैं, उस नंदनवन में पतझड़ की स्थिति उत्पन्न करने में क्षुद्रता का हिमपात ही प्रधान कारण होता है।

क्षुद्रता न पत्नी को विकसित होने देती है और न बच्चों को सुसंस्कृत बनने देती है। वयोवृद्धों को सम्मान देने में और उनका दुलार पाने में न तो वस्तुएँ कम पड़ती हैं और न अवकाश की ही कमी रहती है। ओछेपन और उपेक्षा भरे बरताव के कारण ही छोटों और बड़ों के बीच खाई बनी रहती है।

हर व्यक्ति अपने संपर्क क्षेत्र में सम्मान और विश्वास का पात्र बनकर भावभरा सहयोग प्राप्त कर सकता है। उदारमना लोगों के लिए यह सारा संसार उदार है। सज्जनता की प्रतिक्रिया सज्जनोचित सहायता के रूप में वापस लौट आती है। क्षुद्रता देखने भर में लाभदायक प्रतीत होती है और उससे स्वार्थ सधता लगता है, पर वस्तुत: उसकी हानि अपार है। उसे अपनाकर मनुष्य न केवल छोटा और बौना रह जाता है वरन हानि, विपत्ति तथा प्रताड़ना का भी भाजन बनता है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९८९ पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मविश्वास—एक जीवन मूरि

जब चारों ओर विपत्तियों के काले बादल गहरा रहे हों, संसार-सागर की गर्जन-तर्जन के बीच जीवन-नौका को किनारा न मिल रहा हो, नाव अब डूबे तब डूबे की स्थिति में हो तो ऐसी स्थिति में आत्मविश्वास ही मनुष्य को बचा सकता है।

आत्मविश्वास की इस ज्योति को जलाने, उसे प्रज्वलित रखने के लिए आंतरिक स्वाधीनता की आवश्यकता है। जो मनुष्य अपने मानसिक विकारों, चिंता, भय आदि से जकड़ा हुआ है, वह स्वाधीन नहीं हो सकता। वह तो परतंत्र है, उसे ये विकार अपनी इच्छानुसार जहाँ-तहाँ भटकाते हैं। ऐसी परतंत्रता में आत्मविश्वास का निवास नहीं होता जो अपने आंतरिक बाह्य जीवन पर शासन करता है, वही इसकी शक्ति को पाता है और इसी से मनुष्य की साधारण शक्तियाँ असाधारण बन जाती हैं तथा वह महान कार्य कर सकने में सक्षम होता है।

हमें अपने जीवन को महान, उत्कृष्ट, उपयोगी बनाने के लिए संसार पर अपनी अमिट छाप छोड़ने के लिए आत्मविश्वास की ज्योति अपने हृदय-मंदिर में जलानी होगी। अपने अंतर के दिव्य गुणों एवं शक्तियों का परिचय प्राप्त करना होगा। इस दिव्य ज्योति के सहारे ही हम संसार के दुर्द्धर्ष पर जीवन-नौका को बढ़ा सकेंगे। विश्वास! विश्वास!! अपने आप में विश्वास, अपने आत्मदेव की अपार शक्तियों में विश्वास, यही जीवन की सफलता और महानता का रहस्य है।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९८९ पृष्ठ ३६

अपनी परिधि का विस्तार करें !

आत्मा का विकास परमात्मा के समान विस्तृत होने में है। जो सीमित है, संकीर्ण है, वह क्षुद्र है। जिसने अपनी परिधि बढ़ा ली, वही महान है। हम क्षुद्र न रहें, महान बनें। थोड़ा मिल जाए, तो अधिक पाने की इच्छा रहती है। सुरसा के मुख की तरह तृष्णा अधिक पाने के लिए मुँह फाड़ती चली जाती है। आग में घी डालने से वह बुझती कहाँ है ? अधिक ही बढ़ती है। समग्र को पा सकना स्वल्प पाने की अपेक्षा सरल है।

मान्यता को विस्तृत कीजिए—यह सारा विश्व मेरा है। नीला विशाल आकाश मेरा। हीरे-मोतियों की तरह, झाड़-फानूसों की तरह जगमगाते हुए सितारे मेरे, सातों समुद्र मेरी संपदा, हिमालय मेरा, गंगा मेरी, पवन देवता मेरे, बादल मेरी संपत्ति—इस मान्यता में कोई बाधा नहीं, किसी की रोक नहीं। समुद्र में तैरिए, गंगा में नहाइए, पर्वत पर चढ़िए, पवन का आनंद लूटिए, प्रकृति की सुषमा देखकर उल्लसित हूजिए। कोई बंधन नहीं, कोई प्रतिरोध नहीं। सभी मनुष्य मेरे, सभी मेरे की परिधि इतनी विस्तृत करनी चाहिए कि समस्त चेतन जगत उसमें समा जाए। अपनी सीमित पीड़ा से कराहेंगे, तो कष्ट होगा और दुःख होगा, पर जब मानवता की व्यथा को अपनी व्यथा मान लेंगे और लोकपीड़ा की कसक अपने भीतर अनुभव करेंगे, तो मनुष्य नहीं, ऋषि, देवता और भगवान जैसी अपनी अंतःस्थिति हो जाएगी।

—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९९० पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन देवता को कैसे साधें ?

मन:शास्त्र के विज्ञानी कहते हैं—मन:स्थिति ही परिस्थितियों की जन्मदात्री है। मनुष्य जैसा सोचता है, वैसा ही करता है एवं वैसा ही बन जाता है। किए हुए भले-बुरे कर्म ही संकट एवं सौभाग्य बनकर सामने आते हैं। उन्हीं के आधार पर रोने-हँसने का संयोग आ धमकता है। इसलिए परिस्थितियों की अनुकूलता और बाहरी सहायता प्राप्त करने की फिराक में फिरने की अपेक्षा, यह हजार दर्जे अच्छा है कि भावना, मान्यता, आकांक्षा, विचारणा और गतिविधियों को परिष्कृत किया जाए। नया साहस जुटाकर, नया कार्यक्रम बनाकर प्रयत्नरत हुआ जाए और अपने बोए हुए को काटने के सुनिश्चित तथ्य पर विश्वास किया जाए। बिना भटकाव का, यही एक सुनिश्चित मार्ग है।

मानव जीवन का परम पुरुषार्थ, सर्वोच्च स्तर का सौभाग्य एक ही है कि वह अपनी निकृष्ट मानसिकता से त्राण पाएँ। भूल समझ में आने पर उलटे पैरों लौट पड़ने में भी कोई बुराई नहीं है। गिनती गिनना भूल जाने पर, दोबारा नए सिरे से गिनना आरंभ करने में किसी समझदार को संकोच नहीं करना चाहिए। जीवन सच्चे अर्थों में धरती पर रहने वाला देवता है। नर-कीटक, नर-पशु, नर-पिशाच जैसी स्थिति तो उसने अपनी मनमरजी से स्वीकार की है। यदि वह कायाकल्प जैसे परिवर्तन की बात सोच सके, तो उसे नर-नारायण, महामानव बनने में भी देर न लगेगी। आखिर वह है तो ऋषियों, तपस्वियों और मनीषियों का वंशधर ही। *—अखण्ड ज्योति-जनवरी १९९० पृष्ठ १८*

इस दिव्य अनुदान को व्यर्थ न जाने दें

परमात्मा का सबसे बहुमूल्य उपहार मनुष्य जन्म प्राप्त करने के सौभाग्य के उपरांत दूसरा सौभाग्य एक ही है उसका सदुपयोग। यह कार्य मनुष्य की बुद्धिमत्ता पर छोड़ा गया है। वह प्रगति, अवगति या स्थिरता में से कोई मार्ग चुन ले और उस चुनाव एवं प्रयास के कडुए-मीठे फल भोगे। हम सब इस चक्र पर घूम रहे हैं। कर्तृत्व अपना किंतु उसका दोष दूसरों को देकर अपना मन बहलाने की आत्मप्रवंचना करते रहते हैं।

मनुष्य जन्म धारण करने के उपरांत, स्वयं करने योग्य काम इतना ही रह जाता है कि अपने सौभाग्य से परिचित हों, सामर्थ्यों को पहचानें और आंतरिक दुर्बलताओं से लड़ पड़ें। गीता में अर्जुन को इसी महाभारत में लड़ने के लिए भगवान ने कहा था। विवेक को मान्यता दें, औचित्य को अपनाएँ और इसकी परवाह न करें कि दूसरे लोग क्या कहते और क्या करते हैं ? मार्ग निर्धारण करने की बुद्धिमत्ता और लक्ष्य की दिशा में चल पड़ने की साहसिकता अपनाने के उपरांत आधी मंजिल पार हो जाती है। कुसंस्कारों से जूझने के लिए साधनाओं का उपक्रम और भटकाव की वेला में किसी समर्थ का मार्गदर्शन अभीष्ट है। ये दोनों ही कार्य सरल हैं लेकिन उतने नहीं जितने कि समझे जाते हैं।

—अखण्ड ज्योति-मार्च १९९० पृष्ठ ३४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मात्र वर्तमान का ही विचार करें !

जिनसे मात्र घटनाओं का ही स्मरण हो, उन्हें भूलने का ही प्रयत्न करना चाहिए। स्वप्नों को याद करते रहना निरर्थक है। उनसे किन्हीं भावनाओं का उत्तेजन भर हो सकता है। समय बेकार जाता है। इसलिए पिछले दिन बन पड़ी निरर्थक घटनाओं को स्मरण करते रहना निरर्थक ही सिद्ध होता है।

वृद्ध व्यक्ति प्राय: पिछली घटनाओं को ही याद करते रहते हैं, क्योंकि वही उनकी संचित संपदा है। यद्यपि उनसे निरर्थक भावनाओं को उत्तेजित करने के अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं मिलता।

भविष्य की कल्पनाओं—भूतकाल की घटनाओं को याद रखना निरुद्देश्य है, निरर्थक है। अपने हाथ में केवल वर्तमान है। इसी का श्रेष्ठतम सदुपयोग करना बुद्धिमानी है। खाली मस्तिष्क जब कभी हो, तब भूत या भविष्य की कल्पनाएँ करते रहने की अपेक्षा यही अच्छा है कि वर्तमान के श्रेष्ठतम उपयोग की बात सोची जाए और संभव हो तो वैसा ही किया भी जाए। किसी ने सही कहा है कि बीता हुआ कल कैंसिल्ड चैक है, आने वाला कल प्रॉमिसरी नोट है किंतु वर्तमान तो पूरा नकद (रेडीकैश) है। यदि इसी का सदुपयोग हो सके तो निश्चय ही प्रगति-पथ पर निश्चिंत हो बढ़ा जा सकता है। *—अखण्ड ज्योति-मार्च १९९० पृष्ठ ३९*

हम में से कोई सचमुच ही बुद्धिमान है क्या ?

बुद्धिमत्ता यथार्थता समझने और दूरदर्शी विवेकशीलता से जुड़ी हुई होनी चाहिए। जहाँ वह वस्तुत: होगी, वहाँ सद्विचारों को अपनाए जाना सदाचार पर आरूढ़ होने और सद्व्यवहार के रूप में सेवा साधना के पथ पर अग्रसर होने का प्रमाण मिलना चाहिए। धर्मधारणा का एक ही प्रमाण-परिचय है कि मनुष्य स्वयं को अपने प्रति कठोर और दूसरों के प्रति उदार बनाए, अपने को तपाए, गलाए और देवमानवों के अनुरूप दृष्टिोण और क्रिया-कलाप का उपक्रम बनाए। यदि वैसा कुछ न बन पड़े, तो समझना चाहिए कि लोभ-मोह के भवबंधनों की हथकड़ी-बेड़ी जान-बूझकर पहन ली गई है।

परमेश्वर का वरिष्ठ राजकुमार अपने पिता के आदर्शों, अनुशासनों का निर्वाह करते हुए दीख पड़ना चाहिए। उसे सूर्य-चंद्र की तरह असंख्यों को प्रकाश-प्रेरणा देते रहने में सतत संलग्न रहना चाहिए। उसकी आभा और ऊर्जा से सत्प्रवृत्तियों को अग्रगामी बनाने में योगदान मिलना चाहिए। इसी भावना, मान्यता, विचारणा और क्रियापद्धति अपनाने में उसका आत्मगौरव है। उसकी ओर से मुँह मोड़ने पर तो यही कहा जाएगा कि सिंहशावक ने भेड़ों के झुंड को अपना परिवार मान लिया है और उन्हीं की तरह मिमियाना सीख लिया है। जब आत्मस्वरूप का बोध हो और दिशाधारा में कायकल्प जैसा परिवर्तन प्रस्तुत हो, तभी समझना चाहिए कि मनुष्य को बुद्धिमान समझे जाने की बात अपने सही स्वरूप में उभर रही है। *—अखण्ड ज्योति-अप्रैल १९९० पृष्ठ १*

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मविस्तार ही सर्वोच्च धर्म

जीवन का एक लक्ष्य है ज्ञान और द्वितीय सुख। ज्ञान और सुख के समन्वय का ही नाम मुक्ति है। आत्मचिंतन के द्वारा हम माया बंधनों और सांसारिक अज्ञान को काट लेते हैं तथा विषय वासनाओं से छूट जाते हैं तो हम मुक्त हो जाते हैं। किंतु ऐसी मुक्ति तब तक नहीं मिल सकती, जब तक कि सृष्टि के शेष प्राणी बंधन में पड़े हैं।

जब हम किसी को क्षति पहुँचाते हैं तो अपने आप को क्षति पहुँचाते हैं। हम में और हमारे भाई में कोई अंतर नहीं है। जिस तरह छोटे-छोटे अवयवों से मिलकर शरीर बनता है, उसी प्रकार छोटे-छोटे प्राणियों से मिलकर संसार बना है। कान को दु:ख होता है तो आँख रोती है। उसी तरह समाज के किसी भी व्यक्ति का दु:ख हमारे पास पहुँचता है, इसलिए केवल अपने दु:ख से मुक्ति की कल्पना नहीं की जा सकती।

विश्व में जो कुछ अशुभ है, उसका उत्तरदायित्व प्रत्येक व्यक्ति पर है। अपने भाई से अपने को कोई पृथक नहीं कर सकता। सब अनंत के अंश हैं। सब एकदूसरे के रक्षक और सहयोगी हैं। वास्तव में वही सच्चा योगी है, जो अपने में संपूर्ण विश्व को और संपूर्ण विश्व में अपने को देखता है। अपने लिए अधिकारों की माँग करना पुण्य नहीं है। पुण्य तो यह है कि हम छोटे से छोटे जीव के प्रति अपने कर्त्तव्य का पालन कर सकते हैं या नहीं। इस लोक में यही सबसे बड़ा पुण्य है। आत्मविस्तार ही इस संसार का सर्वोच्च धर्म है। इसे सौ टके की एक बात समझकर हृदयंगम करना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-मई १९९० पृष्ठ १

विचारधारा का प्रगतिशील परिष्कार

प्रत्यक्ष को बनाने और बढ़ाने का प्रयत्न किया जाता है, पर यह भुला दिया जाता है कि समय एवं चिंतन जैसी सर्वोपरि संपदा का सही नियोजन हो रहा है या नहीं। इन दोनों का अपव्यय उससे कहीं अधिक घातक है जितना कि वैभव को क्षति पहुँचने पर होता है। इन दोनों में भी विचारों के सदुपयोग-दुरुपयोग का महत्त्व सर्वोपरि है। यदि चिंतन-प्रवाह गड़बड़ाने लगे तो स्थिति अर्द्धविक्षिप्त जैसी बन जाती है। अनगढ़ स्थिति में लोग मात्र इसी एक कारण में पड़े रहते हैं कि उन्हें प्रगति-पथ पर चलने का आकांक्षा जगा सकने का अवसर नहीं मिलता। वे यह नहीं सोचते कि अबकी अपेक्षा भविष्य में अधिक अच्छी स्थिति प्राप्त करने के लिए विचारों में क्या परिवर्तन करना चाहिए और तदनुरूप अवसर ढूँढ़ने के लिए क्रिया-कलापों को किस दिशा में मोड़ना, मरोड़ना, धकेलना चाहिए?

बीज आधारभूत कारण है, वृक्ष उसका प्रगति-परिणाम। विचारों की प्रगतिशीलता, उमंग भरी साहसिकता उस बीज के समान है जो मनुष्य में उमंग उभारती, उकसाती और ऐसा कुछ करने के लिए बाधित करती है जो अबकी अपेक्षा भविष्य को अधिक सुंदर, समुन्नत, व्यवस्थित एवं अग्रगामी बना सकें। इस तथ्य को समझ लेना और आधार को अपना लेना उन्नतिशील भविष्य के निर्माण का सुनिश्चित मार्ग है।

—अखण्ड ज्योति-मई १९९० पृष्ठ २६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

क्या सुंदर, क्या असुंदर ?

ईर्ष्या, द्वेष एवं घृणा की स्थिति में मन के धरातल में कंपन शीघ्र होने से नए-नए कुविचार शीघ्रता से उठते हैं, जबकि शांत एवं स्थिर मन तटस्थ चिंतन करता है। ऐसी स्थिति में भावनाएँ, विचारणाएँ सात्विक ढंग से निस्सृत होती हैं और उनका आरोपण जिस किसी पर भी होगा, उसी में अपनत्व भरी तरंगों का प्रवाह प्रस्फुटित होने लगेगा। ऐसी दशा में स्वयं को प्रसन्नता होती है, स्नायुमंडल को विश्राम मिलता है मन एवं उसकी शक्तियों का बिखराव भी रुकता है। यही शक्तियाँ मूलस्रोत पर पहुँचकर घनीभूत होती और तन, मन को स्वस्थ बनाती हैं।

चिंता एवं घृणा से मुक्त मन, घनीभूत शक्तियों सहित अनंत चेतनसत्ता से विराट ब्रह्म से जुड़कर, व्यापक प्रेम की अनुभूति कराने में सक्षम हो जाता है। इससे मनोभावनाएँ शुद्ध व पवित्र तो बनती ही हैं, समूचा व्यक्तित्व भी प्रभावित-परिवर्तित हुए बिना नहीं रहता। यही क्रिया अंतराल को देवत्व स्तर का बना देती है।

वस्तुत: इस संसार में कोई व्यक्ति या पदार्थ असुंदर नहीं। स्रष्टा की इस धरित्री पर कुछ भी कुरूप नहीं है। यदि अपना दृष्टिकोण बदलकर आत्मीयता का—अपनत्व का प्रकाश डालें और स्रष्टा के सौंदर्य को सराहें उसकी उपयोगिता पर ध्यान दें, तो ऐसा मानसिक कायाकल्प हो सकता है, जिसके कारण विश्व में कहीं भी कुरूपता दृष्टिगोचर न हो।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

—अखण्ड ज्योति-मई १९९० पृष्ठ २७

संग्रह से कलह और विग्रह ही हाथ लगेगा

बँटवारा करके अलग-अलग रखने की नीति अव्यावहारिक है। धरती कितनी बड़ी है, यह अपने ही पिता की बनाई है। इसलिए अपना हक बाँटने और उसे अलग-अलग रखने से सारी धरती के टुकड़े कट जाएँगे और अपने हिस्से का टुकड़ा इतना छोटा रह जाएगा जितने पर जरूरत की सभी चीजें न उगाई जा सकेंगी और न सँभालकर रखी जा सकती हैं।

नदी, पर्वत, उद्यान सभी तो अपने पिता के बनाए हुए हैं। इनका बँटवारा करने पर इतने छोटे टुकड़े हिस्से में आवेंगे कि या तो उतने में काम न चलेगा या बँटवारा हो जाने पर वे किसी के काम के न रहेंगे। पक्षी आकाश बाँट लें तो उतने भर से उड़ने का क्या आनंद रहेगा ? सरोवर का पानी बाँटकर रहें तो उतने भर से किसका काम चलेगा ? बँटवारे को लेकर आएदिन का कलह खड़ा होता रहेगा।

बँटवारा संभव नहीं। इस विश्व वैभव की उपयोगिता उसी में है कि सब मिल-बाँटकर खाएँ। सब मिलकर इसे सँजोएँ और अपने महान वैभव की प्रचुरता का आनंद उठाएँ। संसार एक है, सबका है। जितना अपने लिए आवश्यक है, उतना उपयोग करके शेष दूसरों के लिए छोड़ दें, इसी में दूरदर्शिता है। संग्रह से तो कलह और विग्रह ही हाथ लगेगा। ब्राह्मण सही अर्थों में वही कहलाता है जो संग्रह से दूर रहता है, अपरिग्रह की रीति-नीति अपनाता है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९९० पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनस्वी—तेजस्वी

शक्ति वस्तुतः साहस पर केंद्रित रहती है। साहस न हो तो फिर हाथों से जो करते बन पड़ता है, वह निस्तेज-निरर्थक बनकर रह जाता है। बिजली का करेंट कम होने पर कोई उपकरण पूरी तरह काम नहीं करता, मात्र टिमटिमाता भर रहता है। उसके द्वारा जो काम होते दीखते हैं, उसे चिह्नपूजा स्तर का ही गिना जा सकता है। साहस की कमी का परिणाम भी यही होता है। उत्साह के अभाव में उदास मन से किए गए काम भी ऐसे ही होते हैं। मन की उदासी किए गए कामों की कुरूपता, अधूरेपन के रूप में दीख पड़ती है।

मनस्विता, तेजस्विता अपने हाथ की बात है। मन की उदासी कहीं बाहर से नहीं आती। किसी घटना से भी संबंधित नहीं होती। वह मनुष्य के अपने स्वभाव पर निर्भर है जिसे इच्छानुसार घटाया या बढ़ाया जा सकता है। यह एक प्रकार का आत्मविश्वास है। आत्मनिर्भर मनुष्य को हाथ में लिए काम की सफलता पर विश्वास होता है।

इंद्रियों को शक्तितंत्र माना जाता है। पैनी दृष्टि सूक्ष्म-बूझ से काम लेने पर यह वरदान जैसी प्रतीत होती है और उनके द्वारा बन पड़े कामों को सौभाग्य स्तर का गिना जाता है, पर वस्तुतः बात ऐसी है नहीं। आत्मविश्वासी मनुष्य की एक ही पहचान है—उसका उत्साह। उत्साह रहने पर साहस बढ़ता है और उसी उत्साह के सहारे शरीर के अंग-प्रत्यंग बढ़-चढ़कर काम करने लगते हैं। उनसे सफलता का बोध होता है।

—अखण्ड ज्योति-जून १९९० पृष्ठ ३४

बुद्धि नहीं, भावना प्रधान

बौद्धिकता से जीवन संबंधी सुख-सुविधाओं का अंबार तो लगाया जा सकता है, पर चेतना की ऊँचाईयों को पा सकना भावनाशील के लिए ही संभव है। हृदयशून्य व्यक्ति भौतिक जीवन में वह कितना ही सक्षम क्यों न हो! आत्मिकी के क्षेत्र में पूरी तरह से अक्षम ही सिद्ध होगा। जबकि अल्पबुद्धि वाला भावनाशील व्यक्ति भी ईश्वर सानिध्य पा सकता है। संत रैदास, कबीर, दादू आदि के जीवन इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

आज बुद्धि की प्रखरता की कोई कमी नहीं, परंतु भावनाओं से शून्य होने के कारण उच्चकोटि के बुद्धिवादी अधिकांश वैज्ञानिक मानवता के विनाश की सामग्री जुटाने में लगे हैं। इस बुद्धिवाद को दिशा देना तभी संभव है, जब उत्कृष्ट भावनाओं तथा बुद्धि का सुनियोजित सामंजस्य स्थापति हो सके।

भावनाशीलता को अपनाकर व्यावहारिक जीवन में क्रियान्वित करके ही निज के व्यक्तित्व को सेवा, दया, करुणा प्रेम से अंलकृत करना तथा कोरे बुद्धिवाद को दिशा प्रदान कर मानव जाति को एकसूत्र में पिरोकर "**वसुधैव कुटंबकम्**" के स्वप्न को साकार करने के प्रयत्न कर सकना संभव है। उत्कृष्ट तथा उज्ज्वल भावनाएँ ही मानव की गरिमा महानता की उपलब्धि का सबल आधार हैं।

—अखण्ड ज्योति-जून १९९० पृष्ठ ३६

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वर्ग और नरक अपने ही हाथ में

अंत:करण की पवित्रता स्वर्ग और उसकी मलिनता ही नरक है। इन दोनों दशाओं का भोग करने के लिए मनुष्य को अन्यत्र किसी लोक में नहीं जाना पड़ता। वह इन दोनों ही अवस्थाओं को अपने अंत:करण की स्थिति के माध्यम से घर में, बाहर, सोते-जागते, खाते-पीते, उठते-बैठते हर समय भोगता रहता है।

पवित्र अंत:करण वाला मनुष्य मानो अपनी जेब में स्वर्ग डालकर घूमता है और मलिन अंत:करण वाला मानो नरक की विभीषिका लिए फिरता है। पवित्र अंत:करण का अर्थ है—एक पुलक, एक सिहरन, एक अलौकिक सुख, एक आनंद तथा मलिन अंत:करण का अर्थ है—एक त्रास, एक यंत्रणा, भयानक अस्तव्यस्तता, एक जलन। दोनों में से एक अनुकूल है, अभीष्ट है, दूसरा प्रतिकूल है, त्याज्य है।

पाप से बचना है, ताप से अपनी रक्षा करनी है; आनंद की अनुभूति पानी है, देवत्व का अनुभव करना है तो अंत:करण को परिष्कृत करना होगा। दुष्प्रवृत्तियों की कँटीली झाड़ियाँ उखाड़कर सद्विचारों के सुंदर, सुकुमार प्रसून बोने होंगे।

स्वर्ग और नरक जाना अपने ही हाथ में है। अंत:करण की अवज्ञा कर अंतर्दृष्टि की आग में जलना और आत्मप्रताड़ना सहना भी अपने ही हाथ है। यह हम पर ही निर्भर करता है, हम अपने लिए क्या निर्धारण करते व क्या कदम उठाते हैं ?

—अखण्ड ज्योति-जुलाई १९९० पृष्ठ १

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

अंत:करण की पुकार अनसुनी न करें

जब मनुष्य नितांत एकाकी होता है, उसके पास, आस-पास कोई भी नहीं होता, तब कोई पाप करने में उसे जो भय लगता है, एक आशंका बनी रहती है, वह किस कारण होती है ? बार-बार ऐसा क्यों लगता है कि कोई अदृश्य आँखें उसके दुष्कर्म को देख रही हैं ? क्यों पूरे उत्साह के साथ उसका मन पापकर्म में नियोजित नहीं हो पाता ? क्या कभी कोई इस पर विचार करता है कि जब कोई उसके पाप को देखने वाला प्रत्यक्ष मौजूद नहीं, तब उसे भय किसका है, वह किससे डर रहा है ? वह कौन है जो उसके मन, प्राण व काया में कंपन उत्पन्न कर देता है ?

निस्संदेह यह उसका अपना अंत:करण ही है, जो उसे पापकर्म से विरत करने के सतत प्रयासों द्वारा विविध प्रकार की शंकाओं, संदेहों व भय की कल्पना जैसे अनुभवों से वैसा न करने का संकेत देता रहता है। जो मनुष्य अपने अंदर बैठे चित्रगुप्त के इन संकेतों की उपेक्षा नहीं करता, वह पापकर्म से बच जाता है। जो मनुष्य अवहेलना करता है व ऐसा कर बैठता है, उसका अंत:करण एक न एक दिन उसकी गवाही देकर उसे दंड का भागी बनाता है। यह संभव है कि किसी का दुष्कर्म दुनिया से छिपा रहे किंतु उसके अपने अंत:करण से कदापि नहीं छिप सकता। यदि किसी कारणवश मनुष्य को अपने पाप का दंड नहीं मिल पाता तो समय आने पर अंत:करण स्वयं उसे दंडित करता है। उचित यही है कि हम अंत:करण में विद्यमान परमात्मा की पुकार सुनें और उसका अनुसरण करें।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९९० पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सद्ज्ञान वह जो सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा दे

जानकारियाँ वे संग्रह की जानी चाहिए, जो जीवन को सन्मार्ग पर अग्रगामी बनाने में, प्रत्यक्ष और प्रमुख भूमिका निभाने में कारगर सिद्ध हो सकें। इसके अतिरिक्त जो कुछ पढ़ा-सुना जाता है उसे कौतुक-कुतूहल या मनोरंजन की पूर्ति भर समझना चाहिए।

ज्ञान की उपयोगिता, आवश्यकता और महत्ता कम करके नहीं समझी जानी चाहिए। उसे योजनाबद्ध और दिशाबद्ध रहना चाहिए। जिस प्रकार भोजन करते समय आहार के संबंध में यह जाना-परखा जाता है कि उसमें उपयोगी, पौष्टिक तत्त्व हैं या नहीं। उसी प्रकार ज्ञान संपादन करते समय यह कसौटी लगी रहनी चाहिए कि उसमें ऐसे तत्त्व हैं या नहीं, जो व्यक्तित्व और कर्त्तव्य को ऊर्ध्वगामी बना सकने की क्षमता रखते हैं। अंदर से जो ऐसा हो उसी को अपनाया जाए। राजहंस प्रवृत्ति से अपने दृष्टिकोण को परिवर्तित किया जाए। नीर-क्षीर विवेक का मानस बने। मोती चुगने और कीड़े छोड़ देने की प्रवृत्ति को अपनाने का प्रयास अनवरत रूप से चलता रहे। मनोरंजन के लिए जो पढ़ा, सुना, देखा, जाना है; उसमें कटौती करके इस स्तर का ज्ञान संपादन करते रहा जाए, जो व्यक्ति के अंतराल में समाहित प्रसुप्त महानताओं का जागरण कर सके। गुण-कर्म-स्वभाव में मानवी गरिमा के अनुरूप सत्प्रवृत्तियों को उभारने, बढ़ाने परिपक्व एवं सुविस्तृत, सुदृढ़ बनाने में समर्थ हो सके।

—अखण्ड ज्योति-अक्टूबर १९९० पृष्ठ १०

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

उपलब्धियों का सदुपयोग ही सफलताओं का मूल

प्राप्त करना उतना कठिन नहीं है, जितना कि उपलब्धि का सदुपयोग करना। संपत्ति अनायास या स्थितिवश भी मिल सकती है पर उसका सदुपयोग करने के लिए अत्यंत दूरदर्शी, विवेकशीलता और संतुलित बुद्धि की आवश्यकता पड़ेगी।

मनुष्य में बीज रूप से समस्त संभावनाएँ विद्यमान हैं जो अब तक कहीं भी किसी व्यक्ति में देखी-पाई गईं हैं। प्रयत्न करके पर उन्हें जगाया और बढ़ाया जा सकता है। कोई भी लगनशील मनस्वी व्यक्ति अपने को इच्छित दिशा में सफलता प्राप्त करने की आवश्यक क्षमताएँ उत्पन्न कर सकता और उनका सदुपयोग करके मन चाही सफलता प्राप्त कर सकता है। जो नहीं है उसे पाने के लिए अधिकांश मनुष्य लालायित देखे जाते हैं। अप्राप्त को पाने के लिए व्याकुल रहने वालों की कमी नहीं, पर ऐसे कोई बिरले ही होते हैं जो आज की अपनी उपलब्धियों और क्षमताओं की गरिमा का मूल्यांकन कर सकें। जो मिला हुआ है वह इतना अधिक है कि उसका सही और संतुलित उपयोग करके प्रगति के पथ पर बहुत दूर तक आगे बढ़ा जा सकता है। अधिक पाने के लिए प्रयत्न करना उचित है, पर उससे भी अधिक आवश्यक यह है कि जो उपलब्ध है उसका श्रेष्ठतम् सदुपयोग करने के लिए योजनाबद्ध रूप से आगे बढ़ा जाए। जो ऐसा कर सके उन्हें जीवन में असफल रहने का दुर्भाग्य कभी भी सहन नहीं करना पड़ा है। यह एक शाश्वत चिरंतन सत्य है।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९९० पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अतिवाद न बरता जाए

जो अपने को सुधारने में कठोर बनता है, प्रकृति उसके लिए दयालु बनती है, पर जो भूल पर भूल करता जाता है, गलतियों को खोजने और उन्हें सुधारने में उपेक्षा बरतता है, उसे किए का दंड भी भुगतना पड़ता है। प्रकृति के अनेक अनुग्रहों में एक प्रताड़ना भी है। जो लोग अपनी सूझ-बूझ का उपयोग नहीं करते, परिणामों पर विचार नहीं करते और उद्दंडतापूर्वक कुछ भी कर गुजरने के लिए उतावले रहते हैं, वे उस विधान से बच नहीं पाते जो ढीठता बरतने वालों के कान उमेठकर रास्ते पर लाना भी जानता है।

शांति और धैर्यपूर्वक चलने के लिए जो अपनी रीति-नीति बना लेते हैं और उन्नति की उत्कंठा बनाए हुए भी औचित्य का ध्यान रखे रहते हैं, वे ही सही समय पर सही मंजिल पूरी कर पाते हैं।

सहनशक्ति की इस दुनिया में कमी नहीं। लोग दूसरों की गलतियों को भी सहन कर लेते हैं और बहुधा क्षमा भी कर देते हैं, किंतु देखा यह भी गया है कि बात जब आगे तक पहुँचती है, तो फिर सृष्टि का वह नियम भी लागू होता है, जिसमें ढीठता के अहंकार को नीचे उतारने की व्यवस्था है और बदमाशों की हेकड़ी को रास्ते पर चलने के लिए विवश किया जाता है। अन्य मर्यादाओं का भी ध्यान रखना चाहिए, महत्त्वाकांक्षाओं की दिशा में कदम बढ़ाते समय भी।

—अखण्ड ज्योति-नवंबर १९९० पृष्ठ १४

परिष्कृत दृष्टिकोण ही स्वर्ग है

धन-वैभव से शारीरिक सुख-साधन मिल सकते हैं। विलास-सामग्री कुछ क्षण इंद्रियों में गुदगुदी पैदा कर सकती है, पर उनसे आंतरिक एवं आत्मिक उल्लास मिलने में कोई सहायता नहीं मिलती। धूप-छाँव की तरह क्षण-क्षण में आते-जाते रहने वाले सुख-दुःख शरीर और जीवन के धर्म हैं। इनसे छुटकारा नहीं मिल सकता। जिनने अपनी प्रसन्नता इन बाह्य आधारों पर निर्भर कर रखी है, उन्हें असंतोष एवं असफलता का ही अनुभव होता रहेगा। वे अपने को सदा दुखी ही अनुभव करेंगे।

सच्चा एवं चिरस्थाई सुख आत्मिक संपदा बढ़ाने के साथ बढ़ता है। गुण-कर्म-स्वभाव में जितनी उत्कृष्टता आती है, उतना ही अंतःकरण निर्मल बनता है। इस निर्मलता के द्वारा परिष्कृत दृष्टिकोण हर व्यक्ति, हर घटना एवं हर पदार्थ के बारे में रचनात्मक ढंग से सोचता और उज्ज्वल पहलू देखता है। इस दृष्टिकोण की प्रेरणा से जो भी क्रियापद्धति बनती है, उसमें सत्य, धर्म एवं सेवा का ही समावेश होता है।

वस्तुतः परिष्कृत दृष्टिकोण का नाम ही स्वर्ग है। स्वर्ग किसी स्थान विशेष का नाम नहीं, वह तो मनुष्य के सोचने, देखने और करने की उत्कृष्टता मिश्रित प्रक्रिया मात्र है। जो केवल ऊँचा ही सोचता और अच्छा ही करता है, उसे हर घड़ी स्वर्ग का आनंद मिलेगा। उसके सुख का कभी अंत नहीं।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९९० पृष्ठ १

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अहिंसा के नूतन आयाम

हिंसा वहाँ से आरंभ होती है, जहाँ दूसरों को पराया समझकर अपने संकीर्ण स्वार्थ की सिद्धि के लिए अनीतिपूर्वक दूसरों को कष्ट पहुँचाया जाए, जिससे निर्दोषों को उत्पीड़न सहना पड़े जिसके साथ अनीति का आधार जुड़ा हुआ हो।

हिंसा शारीरिक आघात तक सीमित नहीं है, उसका मानसिक आघात भी एक पक्ष है। अपमान, तिरस्कार, दुर्व्यवहार भी हिंसा का ही एक रूप है, जिससे मन को, सम्मान को आघात लगे उसे भी हिंसा ही कहा जाएगा। किसी को गलत परामर्श देकर कुमार्ग पर चलने के लिए सहमत कर लेने से तत्काल न सही, परिणाम सामने आने पर तो कष्ट उठाना ही पड़ता है। इस प्रकार का जिसने कुचक्र रचा उसे भी हिंसक ही कहा जाएगा।

हिंसा का तात्पर्य है, अन्यायपूर्वक उत्पीड़न। मात्र शारीरिक या मानसिक कष्ट पहुँचाना हिंसा नहीं है। कुकर्मियों और कुमार्गगामियों को जब समझाने-बुझाने से सही राह पर लाना संभव नहीं रहता, जब दुरात्माओं का अहंकार, दुराग्रह और आतंक चरम सीमा तक पहुँच जाता है तब वे दया, क्षमा को कर्त्ता की दुर्बलता मानते हैं और इस प्रकार के सौम्य व्यवहार को अपनी जीत मानकर अनीति पर और भी अधिक वेग के साथ उतरते हैं। ऐसी दशा में प्रताड़ना के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं रह जाता। शठ को शठता की भाषा ही समझ में आती है। उन्हें सुधारने के लिए जो विवेकपूर्ण हिंसा प्रयुक्त की जाती है उसे अहिंसा ही कहना चाहिए।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९९० पृष्ठ २६

धर्म का वास्तविक तात्पर्य

धर्म का वास्तविक तात्पर्य है—मानवी चेतना में ऐसी सत्प्रवृत्तियों का समावेश जो सदाचरण और कर्त्तव्यपालन के रूप में वातावरण को उल्लासपूर्ण बनाने में समर्थ हो। सहिष्णुता, दया, प्रेम, विवेक, उदारता, संयम, सेवा जैसे गुणों से सच्ची धर्मनिष्ठा का परिचय मिलता है। कर्त्तव्यपरायणता को, आदर्शवाद को जीवन में प्रमुखता देने वाला व्यक्ति धर्मात्मा कहा जा सकता है, किंतु आज तो इन सबकी उपेक्षा करके मात्र पूजा-पाठ के ढकोसले में निरत रहना ही धर्मपरायणता का चिह्न बन गया है।

धर्म तो कर्त्तव्यपरायणता का पर्यायवाचक है। धर्मनिष्ठा और कर्मनिष्ठा समान अर्थबोधक हैं। दूरदर्शी दृष्टिकोण अपनाकर अपनी और अपने संपर्क क्षेत्र की समस्याओं का समाधान करने की क्षमता का विकास ही सच्ची धार्मिकता है। इसी विशेषता के कारण धर्मतत्त्व को मानव जीवन में सम्मान और उच्च स्थान मिला है।

धार्मिकता का तत्त्वज्ञान हमें कर्त्तव्यपरायण बने रहने और जीवन संग्राम के हर मोर्चे पर आदर्शों की लड़ाई लड़ने का शौर्य-साहस प्रदान करता है। क्या ये उपलब्धियाँ जीवन को सार्थक बनाने के लिए पर्याप्त नहीं हैं ? धर्म और अध्यात्म को पलायनवाद का पर्याय क्यों बनाया जाय, जबकि उसमें सज्जनता, शालीनता एवं प्रखरता प्रदान करने वाली विभूतियाँ आदि से अंत तक भरी पड़ी हैं।

—अखण्ड ज्योति-दिसंबर १९९० पृष्ठ ३४

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना

शतसूत्रीय कार्यक्रम

१. स्वस्थ शरीर

व्यक्तिगत

१. दो बार भोजन, शेष पेय
२. भोजन को ठीक तरह चबाना
३. भोजन अधिक न खाना
४. स्वाद की आदत का परित्याग
५. शाक-फलों का अधिक प्रयोग
६. पकवान, मिठाई आदि हानिकारक पदार्थों से दूर
७. भाप का पकाया हुआ भोजन ही खाएँ
८. स्वास्थ्य रक्षा के लिए सफाई आवश्यक (घर, वस्त्र, शरीर)
९. खुली व शुद्ध वायु में रहना
१०. ब्रह्मचर्य का पालन कड़ाई से करना

सामूहिक प्रयास

११. वनस्पति उत्पादन
१२. पकाने की पद्धतियों में सुधार
१३. सात्विक आहार के चुनाव में सुधार
१४. आस-पास की गंदगी दूर करना
१५. नशेबाजी का त्याग
१६. व्यायाम-सूर्य नमस्कार उसका प्रशिक्षण
१७. साप्ताहिक उपवास
१८. बड़ी दावतें व जूठन पर प्रतिबंध
१९. संतान की सीमा, मर्यादा रखना
२०. प्राकृतिक चिकित्सा की जानकारी

२. स्वच्छ मन

अशिक्षा दूर हो

२१. छात्रवृद्धि-अभियान, अशिक्षा दूर हो
२२. शिक्षितों की पत्नियाँ भी शिक्षित हों
२३. प्रौढ़ पाठशालाओं का आयोजन
२४. प्रौढ़ महिलाओं की शिक्षा-व्यवस्था
२५. शिक्षा के साथ दीक्षा भी
२६. जनसहयोग से नए विद्यालय
२७. रात्रि पाठशालाएँ
२८. शिक्षित ज्ञानऋण चुकाएँ
२९. पुस्तकालय-वाचनालय
३०. अध्ययन की रुचि जगाई जाए

आस्तिकता बढ़े

३१. आस्तिकता में आस्था
३२. स्वास्थ्य की साधना
३३. संस्कारित जीवन
३४. पर्व और त्योहारों का संदेश
३५. जन्मदिवस समारोह
३६. व्रतशीलता की धर्मधारणा
३७. मंदिर जनजागरण के केंद्र बनें
३८. युग निर्माण के ज्ञान मंदिरों की स्थापना
३९. साधु-ब्राह्मण भी कर्त्तव्यपालन करें
४०. वानप्रस्थ का पुनर्जीवन

३. सभ्य समाज

सभ्य समाज की स्वस्थ रचना

४१. सम्मिलित कुटुंब-प्रथा
४२. पारिवारिक विचारगोष्ठी
४३. सत्प्रवृत्ति का अभ्यास
४४. संतान और उसकी जिम्मेदारी
४५. सत्कार्यों का अभिनंदन
४६. सज्जनता का सहयोग
४७. नैतिक कर्त्तव्यों का पालन
४८. सहयोग और सामूहिकता
४९. कंजूसी और विलासिता छूटे
५०. श्रम का सम्मान

कुरीतियाँ उन्मूलन

५१. वर्ण-व्यवस्था का शुद्ध स्वरूप
५२. उपजातियों का भेदभाव मिटे
५३. नर-नारी का भेदभाव मिटे
५४. अश्लीलता का प्रतिकार
५५. विवाहों में अपव्यय समाप्त हो
५६. बाल विवाह एवं अनमेल विवाह पर प्रतिबंध
५७. भिक्षा व्यवसाय की भर्त्सना
५८. मृत्युभोज की व्यर्थता
५९. जेवरों में धन की बरबादी
६०. भूत, पलीत, बलिप्रथा का अंत

विभूतिवान व्यक्ति यह करें

६१. लेखकों और पत्रकारों से अनुरोध
६२. युग साहित्य के नवनिर्माता
६३. प्रत्येक भाषा में प्रकाशन
६४. अनुवाद कार्य का विस्तार
६५. पत्रिकाओं की संख्या में वृद्धि
६६. प्रकाशन की सुगठित शृंखला
६७. युग निर्माण प्रेस
६८. कविताओं की रचना व प्रसार

कला का सदुपयोग

६९. संगीत शिक्षा का प्रबंध
७०. गायकों का संगठन
७१. चित्रकला का आयोजन एवं उपयोग
७२. प्रदर्शनियों का आयोजन
७३. अभिनय और लीलाएँ
७४. नाटक, एकांकी, नृत्य आदि
७५. वक्तृत्व कला का विकास
७६. कला के वैज्ञानिक माध्यम टेप रिकार्ड, रिकार्ड प्लेयर, प्रोजैक्टर आदि

सद्भावनाएँ बढ़ाने का प्रयास

७७. सेवा कार्यों में अभिरुचि, नि:शुल्क चिकित्सा शिविर
७८. स्काउट शिक्षा, एन. सी. सी.
७९. सार्वजनिक उपयोग के उपकरणों का सदुपयोग
८०. सम्मेलन-संगोष्ठियाँ
८१. नवरात्र के शिक्षण शिविर
८२. पदयात्रा द्वारा धर्मप्रचार
८३. आदर्श वाक्य-लेखन
८४. छोटे स्थानीय शिक्षण सत्र
८५. संजीवनी विद्या का विधिवत प्रशिक्षण

राजनीति और सच्चरित्रता

८६. गीता के माध्यम से जनजागरण
८७. मतदान और मतदाता
८८. सीधा, सस्ता, सरल कार्य
८९. अपराधों के प्रति कड़ाई
९०. शिक्षापद्धति का स्तर
९१. सस्ता, शीघ्र और सरल न्याय
९२. अधिकारियों की प्रामाणिकता
९३. आर्थिक विषमता घटे

युग निर्माण की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि

९४. गायत्री उपासना
९५. यज्ञ की आवश्यकता
९६. समय दान
९७. आत्मचिंतन और सत्संकल्प
९८. अविच्छिन्न दान परंपरा
९९. सत्याग्रही स्वयंसेवक सेना
१००. बौद्धिक क्रांति की तैयारी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आत्मीय पाठक बंधुओं से हमारा स्नेह भरा अनुरोध

आशा है कि इस पुस्तक के स्वाध्याय ने आपके चिंतन और भावनाओं को अवश्य झकझोरा होगा। आपको एक नई दिशा, नया मार्गदर्शन और नई चेतना मिली होगी। मनुष्य समाज की इकाई है। सामाजिक परिवेश उसको हठात अपने सामूहिक चिंतन की ओर धकेलता है। परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देकर समाज की रीति-नीति की विपरीत दिशा में चलना जनसामान्य के लिए संभव नहीं है। इसीलिए परिवर्तन एकाकी भी लाभदायक तो है, लेकिन युग परिवर्तन के लिए परिवर्तन का प्रवाह सारे समाज में फैलना चाहिए। इस ग्रंथ के स्वाध्याय से युगऋषि पूज्य पं० श्रीराम शर्मा आचार्य के प्रति आपकी श्रद्धा अवश्य परिपक्व हुई होगी। यदि आपके हृदय में इन विचारों को समाज में फैलाने की एक हूक उठी हो, तो आप निश्चित समझ लें कि आपका स्वाध्याय सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है। जैसे हम बने हैं, वैसा ही यह संसार बन जाए, ऐसी भावनाएँ यदि अंत:करण में उठ रही हों, तो आइए युगऋषि के चिंतन को जन-जन तक फैलाने के लिए कुछ योजनाएँ प्रारंभ की गई हैं, उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ दे रहे हैं ? योजनाओं की विस्तृत जानकारी के लिए एवं प्रत्येक योजना में क्या करें, कैसे करें ? जानने के लिए विचारक्रांति अभियान, युगनिर्माण योजना, मथुरा-२८१००३ के पते पर पत्र-व्यवहार करें।

ज्ञानयज्ञ की क्रांतिकारी योजनाएँ

पूज्य गुरुदेव ने लिखा है—युग निर्माण विद्या विस्तार से होगा। युग निर्माण जितना जल्द करना चाहते हैं, विद्या विस्तार की गति उसी अनुपात में बढ़ानी पड़ेगी। आज विद्या विस्तार की गति अत्यंत धीमी है। वर्तमान में युग निर्माण मिशन का एकमात्र लक्ष्य विद्या विस्तार होना चाहिए, जो ज्ञानयज्ञ के माध्यम से ही संभव है। पूज्य गुरुदेव ने लिखा—''हमारे साहित्य को घर-घर में पढ़ाओ, तो मेरा दावा है कि युग अवश्य बदलेगा। इससे कम में काम न बनेगा।'' पूज्यवर के साहित्य को घर-घर में पढ़ाना ही आज का समय धर्म है। पूज्यवर ने लिखा—''यदि समग्र रूपांतरण चाहते हैं, तो हमारे साहित्य को पढ़ो, समझो और सीखो। युग साहित्य के स्वाध्याय में ही मानव में देवत्व का उदय, धरती पर स्वर्ग का अवतरण और युग निर्माण सत्संकल्प पूरा करने की शक्ति है। उत्तम ग्रंथों का अध्ययन करके मनुष्य महापुरुष, महात्मा, ऋषि व देवता बन सकता है। विद्या विस्तार ही सबसे बड़ा धर्म, पूजा और यज्ञ है। जितना पुण्य धन-धान्य सहित इस समस्त पृथ्वी को दान देने से मिलता है, उससे तीन गुना अधिक पुण्य स्वाध्याय करने वाले को मिलता है।'' स्वाध्याय करने का इतना पुण्य है, तो स्वाध्याय कराने वालों को कितना पुण्य मिलेगा, यह विचारणीय है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीराम झोला पुस्तकालय

पूज्यवर ने लिखा है कि विश्वशांति के लिए किए गए समस्त उपायों में ज्ञानयज्ञ सर्वोपरि है। इस महान अभियान के लिए क्या हम तनिक भी सहयोग नहीं दे सकते? इस युग के सबसे प्रबल और महान अभियान में क्या हमारा कुछ भी योगदान नहीं हो सकता? यह प्रश्न अपने आप से पूछना चाहिए और यदि अंतरात्मा कहे कि कुछ तो हो ही सकता है, तो सबसे पहले झोला पुस्तकालय चलाना चाहिए।

पूज्यवर ने लिखा है कि संसार के समस्त दु:खों का, व्यक्ति के समस्त कष्टों का, समाज के समस्त संकटों का एकमात्र कारण विचारों का विकृत हो जाना ही है। आज यदि दु:खों के स्थान पर सुखों की स्थापना अभीष्ट हो, तो इसका एक ही उपाय है कि लोगों को सही ढंग से सोचने की कला सिखाएँ, जो काम झोला पुस्तकालय द्वारा आसानी से हो सकता है। झोला पुस्तकालय के माध्यम से वही कार्य हो सकता है, जो प्राचीनकाल के साधु-ब्राह्मण अपने बहुमूल्य जीवन को उत्सर्ग करके संपादित करते थे। झोला पुस्तकालय चलाने वाले इस युग के सच्चे लोकसेवक, सच्चे धर्मार्थी, सच्चे ज्ञानी, सच्चे विवेकवान और सच्चे ईश्वर भक्त माने जाएँगे। आज की स्थिति में एक ही उपाय है, जिससे युगांतरकारी प्रबल प्रेरणा को घर-घर, जन-जन तक पहुँचाया जा सकता है। झोला पुस्तकालय चलाना सबसे बड़ा यज्ञ है, सबसे बड़ा तप है, सबसे बड़ा दान है, सबसे बड़ा पुण्य है, सबसे बड़ा परमार्थ है और सबसे बड़ी साधना है। यानि झोला पुस्तकालय चलाने वाले को उपासना, साधना और आराधना तीनों का फल मिलता है।

युगऋषि के उक्त आश्वासन पर श्रद्धा रखते हुए हमें झोला पुस्तकालय चलाने का संकल्प आज ही ले लेना चाहिए।

माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय

(१) प्रत्येक पॉकेट बुक पर माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय की योजना लिखी है। इसके अनुसार प्रत्येक पाठक पुस्तक पढ़कर एक सप्ताह बाद दूसरे पात्र व्यक्ति को देता रहेगा।

(२) इन पुस्तकों को आप अपने मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों, व्यापारी अपने ग्राहकों, सहयोगियों को भेंट स्वरूप दे सकते हैं। परिवार में कोई मांगलिक कार्यक्रम, पर्व, त्योहार, नववर्ष, क्रिसमस, ईद, वैशाखी, जन्मदिन, विवाह दिन आदि अवसरों पर वितरित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त सभा-सम्मेलन, गोष्ठी आदि अवसरों पर भी वितरित कर सकते हैं।

(३) सभी पॉकेट बुक्स में सौजन्य से.....के नीचे खाली स्थान छोड़ा गया है, जहाँ परिजन अपनी फर्म अथवा नाम व पते की मुहर लगा सकते हैं अथवा हाथ से सुंदर लिपि में लिखकर भी काम चला सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(४) सभी परिजन ज्ञानघट एवं मासिक अंशदान का उपयोग इस योजना में कर सकते हैं। कम से कम पचास पैसा प्रतिदिन अंशदान ज्ञानघट में डालने वाले परिजन १५ रुपया प्रतिमाह की १० पॉकेट बुक्स स्नेहसलिला वंदनीया माता जी के प्रति श्रद्धांजलि स्वरूप माता भगवती स्वचालित पुस्तकालय योजना में वितरित कर ज्ञानयज्ञ में सहयोग दे सकते हैं।

गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना

अब तक हम लोगों ने अरबों रुपए खरच करके गायत्री यज्ञ संपन्न किए हैं। आइए, अब बिना खरच किए अरबों का लाभ पहुँचाने वाला गायत्री ज्ञानयज्ञ करें। पूज्य गुरुदेव लिखते हैं—साहित्य सजीव होता है। साहित्य में लेखक की आत्मा निवास करती है। हम लोगों ने अनजाने में भावनावश पूज्य गुरुदेव की आत्मा, जो उनके साहित्य एवं पत्रिकाओं में निवास करती है, को आलमारी अथवा बोरों में बंद कर दिया है। यह सर्वथा अनुचित है। पूज्यवर की आत्मा घर-घर जाने के लिए छटपटा रही है। धन की तीन गतियाँ—उपभोग, दान व नाश होती हैं। उसी प्रकार साहित्य को पढ़ना उसका सदुपयोग, दूसरों को देना ज्ञानयज्ञ अन्यथा कीड़ों द्वारा नाश अवश्यंभावी है। पूज्यवर के साहित्य का कोई पन्ना रद्दी में न जाए, नष्ट न हो, इसका दायित्व हम सब पर है। पूज्यवर का साहित्य शाश्वत सनातन है। कभी पुराना नहीं होता है। पुरानी पत्रिकाओं अथवा पुस्तकों पर गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप लगाकर, अपना नाम व पता लिखकर पात्र व्यक्तियों को दान कर देनी चाहिए। पात्रता यह है कि व्यक्ति उसे पढ़ ले और किसी अन्य व्यक्ति को दे दे। गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना की स्लिप आप किसी व्यक्ति द्वारा यहाँ से मँगा सकते हैं, डाक से भेजना संभव नहीं है। ऐसी स्लिप आप स्थानीय स्तर पर भी छपवा सकते हैं। मिशन की समस्त पत्रिकाएँ लगभग १५,००,००० परिवारों में जाती हैं। यदि वे गायत्री ज्ञानयज्ञ योजना द्वारा एक परिवार से दूसरे परिवार में जाएँ और औसतन ५ परिवारों में जाकर पत्रिका रुक भी जाए तो ७५ लाख परिवारों में पत्रिका पहुँच जाएगी, जबकि खरच, स्याही, कागज आदि उतना ही लगेगा। इस योजना में सभी को सहयोग करना चाहिए। युग निर्माण योजना पत्रिका के मुख पृष्ठ पर यह मैटर नियमित छापा जा रहा है।

युग निर्माण विद्या परिषद् (पत्राचार पाठ्यक्रम)

अध्यात्म का व्यावहारिक ज्ञान प्रत्येक मनुष्य को होना चाहिए। पेट-प्रजनन मात्र के लिए जीने वाले मनुष्य आहार, निद्रा, भय और मैथुन जैसे पशुता के गुणों से संपन्न होने के कारण अपने अमूल्य जीवन को व्यर्थ ही बरबाद करके संसार से विदा हो जाते हैं। दुर्लभ मानव जीवन को कौड़ी के मोल गँवा देते हैं। श्रेष्ठ मानव जीवन व्यतीत करके अपने लौकिक और पारलौकिक जीवन को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफल बनाने का प्रयास सभी को करना चाहिए। संजीवनी विद्या अर्थात जीवन जीने की कला सीखने के लिए प्राचीनकाल में गुरुकुल और आरण्यक जाकर मार्गदर्शन प्राप्त करने की व्यवस्था थी। वर्तमान में यह व्यवस्था लगभग समाप्त हो गई है। पत्राचार द्वारा संजीवनी विद्या एवं अध्यात्म का व्यावहारिक ज्ञान घर बैठे प्राप्त करने की योजना प्रारंभ की जा रही है। इस पाठ्यक्रम में १५ वर्ष की आयु से अधिक के भाई-बहन जो भलीभाँति पढ़कर समझ सकते हों, शामिल हो सकते हैं।

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि युग निर्माण विद्या परिषद् द्वारा पत्राचार पाठ्यक्रम के अंतर्गत जीवन जीने की कला एवं स्वस्थ रहने की कला का प्रशिक्षण देश भर के २००० केंद्रों पर चल रहा है। पाठ्यक्रम से लाभ उठाने वाले और अपने जीवन में परिवर्तन अनुभव करने वाले हजारों प्रशंसापत्र इस बात के प्रमाण हैं कि पाठ्यक्रम जन सामान्य में बहुत लोकप्रियता प्राप्त करता चला जा रहा है। हमारे प्राणवान कार्यकर्त्ता भाई-बहन अपने क्षेत्र में इस पाठ्यक्रम के केंद्र बड़ी सफलता के साथ चला रहे हैं। एक वर्ष में चार सत्र चलते हैं। जनवरी से मार्च, अप्रैल से जून, जुलाई से सितंबर, अक्टूबर से दिसंबर तक तीन माह में २४ पाठ याद करने होते हैं। मार्च जून, सितंबर एवं दिसंबर के अंतिम रविवार को परीक्षा होती है। तैंतीस प्रतिशत अंक लाने वाले प्रशिक्षणार्थियों को जीवनसाधक का प्रमाणपत्र प्रदान किया जाता है। पूज्य गुरुदेव के विचारों के आधार पर जन सामान्य को जीवन जीने की कला एवं स्वस्थ रहने की कला सिखाने हेतु आपका सहयोग मिलेगा, ऐसी आशा है। प्रशिक्षण केंद्र चलाने के लिए विस्तृत जानकारी के लिए विवरण पुस्तिका पत्र डालकर मँगा लेनी चाहिए।

अपना मूल्यांकन भी करते रहें

यह निर्विवाद सत्य है कि धर्म और सदाचार के आदर्शवादी सिद्धांतों का प्रशिक्षण भाषणों और लेखों से पूरा नहीं हो सकता। ये दोनों माध्यम महत्त्वपूर्ण तो हैं, पर इनका उपयोग इतना ही है कि वातावरण तैयार कर सकें। वास्तविक प्रभाव तो तभी पड़ता है, जब अपना अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करके किसी को प्रभावित किया जाए। चूँकि हमें नए समाज की, नए आदर्शों की, जनमानस में प्रतिष्ठापना करनी है, इसलिए यह अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि युग निर्माण परिवार के सदस्य दूसरों के सामने अपना अनुकरणीय आदर्श रखें। प्रचार का यही श्रेष्ठ तरीका है। इस पद्धति को अपनाए बिना जनमानस को उत्कृष्टता की दिशा में प्रभावित एवं प्रेरित किया जाना संभव नहीं। इसलिए सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य यह है कि परिवार का प्रत्येक सदस्य इस बात की चेष्टा करे कि उनके

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जीवन में आलस्य, प्रमाद, अव्यवस्था एवं अनैतिकता की जो दुर्बलताएँ समाई हुई हों, उनका गंभीरतापूर्वक निरीक्षण करे और इस आत्मचिंतन में जो-जो दोष दृष्टिगोचर हों, उन्हें सुधारने के लिए एक क्रमबद्ध योजना बनाकर आगे बढ़ चले।

आत्मचिंतन के लिए हम में से हर एक को अपने से निम्न प्रश्न पूछने चाहिए और उनके उत्तरों को नोट करना चाहिए।

(१) समय जैसी जीवन की बहुमूल्य निधि का हम ठीक प्रकार सदुपयोग करते हैं या नहीं? आलस्य और प्रमाद में उसकी बरबादी तो नहीं होती?

(२) जीवन-लक्ष्य की प्राप्ति का हमें ध्यान है या नहीं? शरीर-सज्जा में ही इस अमूल्य अवसर को नष्ट तो नहीं कर रहे? देश, धर्म, समाज और संस्कृति की सेवा के पुनीत कर्त्तव्य की उपेक्षा तो नहीं करते?

(३) अपनी विचारधारा एवं गतिविधियों को हमने अंधानुकरण के आधार पर बनाया है या विवेक, दूरदर्शिता एवं आदर्शवादिता के अनुसार उनका निर्धारण किया है?

(४) मनोविकारों और कुसंस्कारों के शमन करने के लिए हम संघर्षशील रहते हैं या नहीं? छोटे-छोटे कारणों को लेकर हम अपनी मानसिक शांति से हाथ धो बैठने और प्रगति के सारे मार्ग अवरुद्ध करने की भूल तो नहीं करते।

(५) कटु भाषण, छिद्रान्वेषण एवं अशुभ कल्पनाएँ करते रहने की आदतें छोड़कर सदा संतुष्ट, प्रयत्नशील एवं हँसमुख रहने की आदत हम डाल रहे हैं या नहीं?

(६) शरीर, वस्त्र घर तथा वस्तुओं को स्वच्छ एवं सुव्यवस्थित रखने का अभ्यास आरंभ किया या नहीं? श्रम से घृणा तो नहीं करते?

(७) परिवार को सुसंस्कारी बनाने के लिए आवश्यक ध्यान एवं समय लगाते हैं या नहीं?

(८) आहार सात्विकता प्रधान होता है, न? चटोरपन की आदत छोड़ी जा रही है न? सप्ताह में एक समय उपवास, जल्दी सोना, जल्दी उठना, आवश्यक ब्रह्मचर्य का नियम पालते हैं या नहीं?

(९) ईश्वर उपासना, आत्मचिंतन, स्वाध्याय को अपने नित्य-नियम में स्थान दे रखा है न?

(१०) आमदनी से अधिक खरच तो नहीं करते? कोई दुर्व्यसन तो नहीं? बचत करते हैं न?

उपरोक्त दस प्रश्न नित्य अपने आप से पूछते रहने वाले को जो उत्तर आत्मा दे, उन पर विचार करना चाहिए और जो त्रुटियाँ दृष्टिगोचर हों, उन्हें सुधारने का नित्य ही प्रयत्न करना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युग निर्माण योजना के सात आंदोलन

पिछले हजार वर्षों से जिस अज्ञानांधकार युग में हमें रहना पड़ा है, उसके फलस्वरूप हमारे चिंतन की दिशा में विकृतियों की मात्रा इतनी बढ़ गई कि प्रगति के लिए किए गए सभी प्रयत्न उल्टे पड़ते हैं। सुधार एवं प्रगति की सभी योजनाएँ चारित्रिक दुर्बलता से टकराकर निष्फल हो जाती हैं। कारण की तह तक हमें जाना होगा और भावनात्मक नवनिर्माण के लिए एक ऐसा प्रचंड अभियान चलाना होगा, जो जनमासन को चरित्रनिष्ठा, आदर्शवादिता, मानवीय सद्भावना, प्रचंड कर्मठता और औचित्य को अपनाने की साहसिकता से ओत-प्रोत कर दे। इस आंदोलन को जितनी सफलता मिलती जाएगी, उसी क्रम से प्रगति का पथ प्रशस्त होता चला जाएगा। युग निर्माण आंदोलन अगले दिनों जिस प्रचंड रूप से मूर्तिमान होगा, उसकी रहस्यमय भूमिका कम ही लोगों को विदित है, पर यह निश्चित है कि यह आंदोलन बहुत ही प्रखर और प्रचंड रूप से उठेगा और पूर्ण सफल होगा। सफलता का श्रेय किन व्यक्तियों एवं किन संस्थाओं को मिलेगा, इससे कुछ बनता-बिगड़ता नहीं, पर होना यह निश्चित रूप से है। इस उज्ज्वल भविष्य की कृषि को बोने, उगाने एवं सींचने के लिए जिन कर्मठ भुजाओं की आवश्यकता है, उनकी आज जरूरत पड़ रही है।

आंदोलन का अंतिम चरण संघर्षात्मक होगा, क्योंकि असुरता केवल अनुरोध एवं विनय से मिटने वाली नहीं है। उसके लिए पग-पग पर लड़े जाने वाले संघर्ष की आवश्यकता पड़ेगी। व्यक्तिगत तृष्णा, वासना, संकीर्णता, स्वार्थपरता, विलासिता, कामचोरी और अशिष्टता जैसी बुराइयों से आत्मसुधार एवं आत्मनिर्माण के आत्मसाधना स्तर पर लड़ा जाएगा। व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व स्तर की विकृतियों से उसी स्तर के हथियारों से लड़ा जाएगा। समग्र परिवर्तन का उद्देश्य लेकर प्रारंभ किया गया युग निर्माण आंदोलन अब संघर्षात्मक कार्यक्रमों तक आ पहुँचा है। यह इस आंदोलन का अंतिम चरण है, जिसमें समग्र परिवर्तन की सुनिश्चित संभावनाएँ विद्यमान हैं।

(१) आस्तिकता संवर्द्धन आंदोलन—आस्तिक व्यक्ति ही सच्चा क्रांतिकारी हो सकता है। जबरन थोपा हुआ परिवर्तन स्थायी भी नहीं रहता और परिवर्तनों के प्रति जनश्रद्धा नहीं होती तो जनता में उल्लास, उमंग एवं प्रसन्नता का स्रोत सूखा ही रहता है। भारत की भूमि पर क्रांतिकारी, संत-महात्मा ही हुए हैं। कोई भी जन आंदोलन धार्मिकता और आस्तिकता का संबल लिए बिना सफल हो सकेगा, इसमें संदेह ही रहता। इस आंदोलन के योद्धा आस्तिक हों, हर प्राणी में ईश्वर का आभास उन्हें होगा तो हर प्राणी की सेवा ईश्वर-सेवा मानकर करेंगे। ऐसे आस्तिक योद्धा जन-जन को आस्तिक बनाएँ तो आस्तिकता का अमृत, प्रेम, भाईचारा, सहृदयता, दया, करुणा, सहयोग के रूप में समाज में फैले

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तो अन्य आंदोलनों को चलाने की आवश्यकता ही न पड़े। आस्तिकता की भावनाएँ जहाँ-जहाँ पहुँचती जाएँगी, वहाँ-वहाँ समाज का कायाकल्प होता हुआ नजर आएगा।

(२) स्वास्थ्य-संवर्द्धन आंदोलन—प्रसन्नता से भरे समाज का निर्माण व्यक्तियों के शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। समग्र स्वास्थ्य-संवर्द्धन का आंदोलन जन-जन तक पहुँचाया जाए। शारीरिक स्वास्थ्य हेतु आहार-विहार, मानसिक स्वास्थ्य हेतु आचार-विचार और आत्मिक स्वास्थ्य हेतु उपासना द्वारा कषाय-कल्मष विहीन पवित्रता आवश्यक है। समग्र रूप से स्वस्थ व्यक्ति ही संघर्ष में सहयोगी होते हैं। जन-जन को स्वास्थ्य के नियमों की जानकारी देना, स्वस्थ रहने के तरीकों से अवगत कराना, इस आंदोलन के मुख्य कार्यक्रम हैं।

(३) नारी-जागरण आंदोलन—समाज की आधी जनसंख्या को पददलित और अपंग बनाकर पुरुष वर्ग ने कुछ खोया ही है, पाया कुछ नहीं है। इस मिशन का यह आंदोलन पश्चिम के 'नारी मुक्ति आंदोलन' से भिन्न है। जहाँ नारी मुक्ति आंदोलन नारी को मनमाने, उच्छृंखल और अशिष्ट व्यवहार हेतु मुक्त कराता है, वहाँ नारी जागरण आंदोलन समाज को नारी की गौरव-गरिमा एवं उसकी आत्मिक संपदा से अवगत कराकर उसे सम्मानित कराता है तथा उस पर लगे अनावश्यक प्रतिबंधों को हटाने की माँग करता है। साथ ही नारी को उसके कर्त्तव्य के प्रति भी सचेत करता है। बच्चों तथा परिवार में अच्छे संस्कार एवं परंपराएँ डालना, प्रगतिशील नारी द्वारा ही संभव है। इस देश की नारी पर से अनावश्यक प्रतिबंध हटा लिए जाएँ और उसे आगे बढ़ने का पूरा अवसर प्रदान किया जाए तो समाज का कायाकल्प हो सकता है। २१वीं सदी मातृ सदी के रूप में आ रही है। इसमें नारी केवल अपनी गौरव-गरिमा को ही प्राप्त नहीं करेगी वरन बहुत ही आश्चर्यजनक उपलब्धियाँ प्राप्त करेगी।

(४) सत्प्रवृत्ति संवर्द्धन-दुष्प्रवृत्ति उन्मूलन आंदोलन—समाज में यदि सत्प्रवृत्तियों की हवा फैले तो दुष्प्रवृत्तियों की जड़ उखड़ जाएगी। यह आंदोलन हमें अपने आप से संघर्ष कराएगा। हमें अपनी एवं अपने स्वजनों की दुष्प्रवृत्तियों से संघर्ष करना पड़ेगा। परिवार एवं समाज में फैली मूढ़ मान्यताओं एवं दुष्प्रवृत्तियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ेगा।

(५) कुरीति उन्मूलन आंदोलन—समाज में सभी व्यक्ति विवेक से काम लेकर अपने कार्यों का निर्धारण नहीं करते। अधिकांश व्यक्ति परंपरावादी होते हैं और प्रचलित रीति-रिवाजों को बिना तर्क की कसौटी पर कसे अपनाते रहते हैं। बहुत-सी कुरीतियाँ समाज के लिए बहुत हानिकारक भी हैं। इन कुरीतियों को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए प्राणवान, जुझारू एवं संघर्षशील व्यक्तियों की आवश्यकता होगी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

(६) व्यसन मुक्ति आंदोलन—तंबाकू, शराब आदि व्यसन समाज को खोखला किए दे रहे हैं। मनुष्य को शारीरिक एवं मानसिक रूप से अस्वस्थ बनाने में इन व्यसनों की बहुत बड़ी भूमिका है। पारिवारिक कलह एवं विनाश में तथा समाज में व्याप्त अपराधों के लिए व्यसन मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। समाज को यदि व्यसन मुक्त बनाया जा सका, तो नवनिर्माण का उद्देश्य पूरा होता हुआ दिखाई देगा।

(७) विवाहोन्माद प्रतिरोध आंदोलन—विश्व के हर धर्म तथा हर देश में विवाह एक बिना खरच वाला सामान्य-सा कृत्य है, लेकिन दुर्भाग्यवश हिंदू समाज में इस अत्यंत महत्त्वपूर्ण धार्मिक संस्कार को इतनी विकृतियों से भर दिया गया है कि इस संस्कार की मूल भावनाएँ बिलकुल समाप्त हो गईं हैं। दहेज जैसे पिशाच ने इस यज्ञ में हड्डियाँ डालकर जो विघ्न डाला है, उससे इस यज्ञ की रक्षा हेतु राम और लक्ष्मण जैसे वीर और क्रांतिकारियों की आवश्यकता होगी। खरचीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाती हैं। यह चिंतन युवावर्ग में विशेष रूप से फैलाना है।

उपरोक्त सात आंदोलन की विस्तृत जानकारी 'क्रांति की रूपरेखा' पुस्तक में दी गई है। प्रत्येक गाँव, मुहल्ले में लगभग २४ युग सैनिकों का एक 'युग सेना संगठन' बनाया जाना चाहिए, जो इन आंदोलनों को अपने क्षेत्र में सफलतापूर्वक चला सके। युग सेना संगठन बनाने की योजना और शपथपत्र युग सेना प्रकोष्ठ, युग निर्माण योजना, मथुरा-२८१००३ को पत्र डालकर मँगा सकते हैं।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org